धर्मपरीक्षानो रास.

श्रीनेमविजय महाराजविरचित

धर्मपरीक्षानो रास.

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक.

मुंबई.

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां छापी प्रसिद्ध कर्यो.

प्रथमावृत्ति.

संवत् १९६९. सने १९१३.

श्रीजिनाय नमः

श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

अथ श्रीधर्मपरीक्षानो रास.

दुहा.

प्रथम जिनेश्वर पय नमुं, वृषभनुं लंछन जास ॥ मरुदेवी नंदन ऋषभ, नाभीराय कुल तास ॥ १ ॥ अढार वर्ष आरा तणां, सागर कोडाकोड ॥ गयो धर्म वाळ्यो जिणे, तेह नमुं कर जोड ॥ २ ॥ आदि चारित्र आदरी, दीधो द्विधा धर्म ॥ मन वच काया वश करी, छेदी आठे कर्म ॥ ३ ॥ शिवपुरना वासी थया, अजरामर सुख ठाम ॥ चोवीशे तीर्थंकरा, तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥ समरुं श्रुतदेवी सदा, आपे वचन विलास ॥ तुष्टमान थाजो तमे, सफल फले मुज आश ॥ ५ ॥ गुरु दीवो गुरु देवता, गुरु तुठे गम होय ॥ गुरु कहीए माता पिता, गुरुथी अधिक न कोय ॥ ६ ॥ भवियण भावे सांभलो, धरमाधरम विचार ॥ द्वेष बुद्धि दूरे करी, परीक्षा करजो सार ॥ ७ ॥ उत्पत्ति तेहनी

उचरुं, धर्मपरीक्षा रास ॥ वातो विविध प्रकारनी, आणी हरख उल्लास ॥८॥ सांजलतां सुख उपजे, मत नावे मन मांय ॥ सौ जाणे साचो धरम, जाख्यो तिमज कहाय ॥ ए ॥

ढाल १ ली.

देशी चोपाइनी.

जंबूद्वीप जोयण एक लाख, जंबू वृक्षनी नामे साख ॥ असंख्याता सायर द्वीप कह्या, केवली जाख्या ते में लह्या ॥ १ ॥ जंबूद्वीप मध्य मेरु जोय, सुदर्शन नामे ते होय ॥ बीजा पर्वत कह्या अनेक, मेरु लाख जोयणनो एक ॥ २ ॥ तेथी दक्षिण दिश जणी कह्युं, जरत क्षेत्र ते शास्त्रे लह्युं ॥ पांचसें छवीश ने छ कला, बत्रीश सहस देश निरमला ॥ ३ ॥ साढा पचवीश आरज देश, बीजा अनारज कहीए लेश ॥ आरज धरम मरमनो जाण, म्लेछ वर्णनो अनारज ठाण ॥ ४ ॥ पचास जोयणनो परमाण, रूपामय वैताढ्य वखाण ॥ एहवो पर्वत शाश्वतो मान, श्वेत वर्ण जलहलते वान ॥ ५ ॥ पचवीश जोयण जूमि मांहि, उंचो पचीश जोयण उछांहिं ॥ दश जोयण डुंगरथी जोय, दक्षिण दिश जणी ते होय ॥ ६ ॥ कह्यां नगर मोटां पचास, नगर पुंठ कोरु गाम निवास ॥ मुख्य पचास नगरमां जेह, वैजयंतपुर कहीए तेह

॥ ७ ॥ बार जोयणनो लांबो अछे, नव जोयणनो पोहोलो पछे ॥ गढ मढ मंदिर पोल प्रकार, सोहे उलाउल आगार ॥ ८ ॥ वाव्य कुवा सरोवर जिहां, जिननां शिवनां मंदिर तिहां ॥ धर्म तणी पोशालो घणी, एवी नगरी विद्याधर तणी ॥ ए ॥ वसे विप्र विद्याना धणी, वनिता रूपे रलीआमणी ॥ वणिक करे मोटा व्यापार, वस्तुना नाना अंबार ॥ १० ॥ बावन वीर तणां त्यां स्थान, वित्तधारीनां मुख पर वान ॥ नव नारु नव कारु लोक, वस्त्र पव्यां पचरंगी थोक ॥ ११ ॥ विद्या शक्तिए चाले आकाश, विमान रचना जाणे आवास ॥ तीर्थयात्रा करतां दिन जाय, पुण्ये प्राणी निगमे आय ॥ १२ ॥ तिण नगरी जीतारि नूप, अद्भुत इंद्र सरिखुं रूप ॥ न्याय-मारगमां चाले राय, रामचंद्र उपम कहेवाय ॥ १३ ॥ राय तणी राणीनुं नाम, पवन-वेगाथी वाधे काम ॥ दंपति बेहुने वाध्यो नेह, हरख थाये जिम आवे मेह ॥ १४ ॥ रूपे अद्भुत दीसे नार, इंद्राणी जाणे अवतार ॥ बेने धर्म तणो छे राग, केवली नाख्यो पाले माग ॥ १५ ॥ एम नोगवतां सुख अथाग, आवी उपन्यो कर्मने नाग ॥ राणी कुखे थया नव मास, प्रसव्यो पुत्र सफल थइ आश ॥ १६ ॥ उछव महोछव कीधा घणा, साजन आव्या पोता तणा, जमाड्या नोजन पकवान, ते साखे आप्युं

अभिधान ॥ १७ ॥ मनोवेग नामे कुमार, देखी रंजे सहु नरनार ॥ नणी गणीने प्रौढो थयो, मात पिता मन आनंद नयो ॥ १८ ॥ शीखी विद्या नवनवी रीत, मीठुं बोले वाधे प्रीत ॥ वन उपवनना खेले ख्याल, जीव नाषाना जोवे फाल ॥ १९ ॥ जमी मूलीना जाणे नेद, मंत्र जंत्रथी पूरे उमेद ॥ ढाल नेमविजये ए कही, प्रथम खंडनी पहेली सही ॥ २० ॥

दुहा.

जो वैताढ्यगिरि थकी, उत्तर श्रेणि कहाय ॥ दश जोजन दूरे कह्यां, साठ नगर समुदाय ॥ १ ॥ एक एक नगर प्रत्ये कह्यां, कोमु कोमु छे गाम ॥ मानव लोक वसे तिहां, विद्याधरनां गाम ॥ २ ॥ साठ नगरमां शोनतुं, नयर त्रिजयपुर नाम ॥ लंक समोवमु जाणीए, अलखत छे अनिराम ॥ ३ ॥ प्रनास नामे नृपति, पाले राज अखंमु ॥ मान्य करे मिथ्यातने, पापी मांहे प्रचंमु ॥ ४ ॥ विपुला राणी तेहनी, सुख नोगवतां सार ॥ पुत्र थयो एक एहवो, पवनवेग कुमार ॥ ५ ॥ जोवन पाम्यो अनुक्रमे, मिथ्यामतनी बुद्धि ॥ माने नहीं जिनधर्मने, एहवी जेनी शुद्धि ॥ ६ ॥ विद्या तणी शकते करी, उमी जाय आकाश ॥ फिरतो हरतो आवीउं, मनोवेगनी पास ॥ ७ ॥ बे जण

वेठा एकठा, बहु बंधाणो नेह ॥ नित्य आवे एकेकने, फरी फरीने गेह ॥ ७ ॥ वातो विविध प्रकारनी, करता मांहोमांह ॥ धर्म वखाणे आपणो, अन्यो अन्य उछांह ॥ ए ॥

ढाल बीजी.

रे जीवका दीधानां फल जोय—ए देशी.

मनोवेग कहे सांजलोजी, जैनधरम जग सार ॥ केवली जाषित निरमलोजी; उतारे जव पार रे जाइ ॥ धरम समो नहीं कोय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दान शीयल तप जावनाजी; धर्मना चार प्रकार ॥ जीवदया जतने करीजी, जे पाले नरनाररे ॥ जा० ध० ॥ २ ॥ सुक्ष्म बादर जाणीएजी, त्रस थावर दोय जीव ॥ सन्नीउं असन्नीउंजी, संमुर्छिम गर्जज हीवरे ॥ जा० ध० ॥ ३ ॥ अनेक जेद छे धर्मनाजी; कहेतां नावे पार ॥ तव पवनवेग बोलीउंजी, हुं नवी जाणुं लगाररे ॥ जा० ध० ॥ ४ ॥ त्यांथी बे जण आवीआजी, पुष्फदंत गुरु पास ॥ अध्यारु छे आदिनोजी, छात्र जणावे तासरे ॥ जा० ध० ॥ ५ ॥ जणवा बेठा बे जणाजी, ज्योतिष वैदक सार ॥ मंत्र जंत्र जरी मूलीजी, वेद शास्त्र अपाररे ॥ जा० ध० ॥ ६ ॥ जणी गणी प्रौढा थयाजी, पाम्या परम आनंद ॥ मनोवेग श्रावक जलोजी; पवनवेग मिथ्या कंदरे ॥ जा० ध० ॥ ७ ॥ विमाने बेसी दोय

चालीआजी, रामत कीधारे काज ॥ कुल पर्वत वाव्यो नदीजी, सर ड्रह गिरि सीरताजरे ॥ ना० ध० ॥ ७ ॥ गीत नृत्य गाता फरेजी, स्नान जोजन तंबोल ॥ हास्य विनोद कौतक करेजी, एक एकनो राखे तोलरे ॥ ना० ध० ॥ ए ॥ एक दिन मनोवेग बोलीउजी, सांजल जाइ तुं वात ॥ आपण कीजे पारखुंजी, धर्म पापनी तांतरे ॥ ना० ध० ॥ १० ॥ सारजूत संसारमांजी, जैनधरमनोरे जोग ॥ जो तमे ते पालो सहीजी, पामशो बोहोलो जोगरे ॥ना० ध०॥ ११ ॥ पवनवेग एम सांजलीजी, बोल्यो नहीं मुख वाण ॥ जाणे मनमां प्रीतडीजी, तुटे बोल्ये ताणरे ॥ ना० ध० ॥ १२ ॥ मनोवेग मन चिंतवेजी, बुद्धि करुं कोइ हेव ॥ मिथ्या धंधे ए पड्योजी, नवी माने जिनदेवरे ॥ ना० ध०॥ १३ ॥ विमाने बेसी एकलोजी, आकाशमारग जाय ॥ अढीद्वीप मांही फिरेजी जात्रा करे जिनरायरे ॥ ना० ध० ॥ १४ ॥ अनुक्रमे फरतो आवीउजी, मालव देश मोझार ॥ उजेणीने परिसरेजी, विमान थंज्युं तेणी वाररे ॥ ना० ध० ॥१५॥ वासुपूज्य मुनि केवलीजी, दीठा त्रिजुवन स्वाम ॥ हेठो आव्यो उतरीजी, वांद्या मुनिने तामरे ॥ ना० ॥ ध० ॥ १६ ॥ धर्मकथा मुनिवर कहीजी, सांजली हरख्यो राय ॥ श्रावकव्रत सुधां लहीजी, वली वली प्रणमे पायरे ॥ ना० ध० ॥१७॥ कर जोडी करे विनतिजी,

स्वामिन् तुं अवधार ॥ पवनवेग मुज मित्र बेजी, तेहनो कहो विचाररे ॥ ना० ध० ॥ १० ॥ नव्य जीव बे तेहनोजी, किंवा अनव्य नर एह ॥ कदाग्रही माने नहींजी, जिनवर वचनज तेहरे ॥ ना० ध० ॥ १ए ॥ मुनिवर कहे तुमे सांजलोजी, मनोवेग राय सुजाण ॥ नेमविजय ढाल वीजीएजी, प्रथम खंमनी परमाणरे ॥ ना० ध० ॥२०॥

डुहा.

पवनवेग तुज मित्र जे, उत्तम जीव बे तेह ॥ नव्य जीव करी जाणजो, एमां नहीं संदेह ॥ १ ॥ ते माटे तमने कहुं, एनो एक उपाय ॥ पामलीपुर दक्षिण दिशे, तुमे जाजो तिणे ठाय ॥ २ ॥ बिहुं बंधव मली एकठा, अपूरव करीने वेश ॥ वादी लोक वसे तिहां, डुरधर दक्षिण देश ॥ ३ ॥ ब्राह्मण नाती मली तिहां, जाग जग्नो ठाम ॥ आडंबर अधिके करी, करे होमनां काम ॥ ४ ॥ होमे हिंसा बे घणी, बकाय विराधन थाय ॥ पंचेंडि जीव मोटका, होमे अग्नि मांय ॥ ५ ॥ त्यां तुमे वाद करो जइ, विप्रना उतारो नाद[1] ॥ लान थशे तुमने घणो, जब सांजलशे साद ॥ ६ ॥ गुप्त राखजो जिनधरम, नाखजो मरम पुराण ॥ अगम थइ आधा जइ, केजो कथा कुपुराण ॥ ७ ॥ पवनवेग

---

१ अहंकार.

तुम मित्रनो, जाशे मन संदेह ॥ जैनधरम आदर करी, पालशे तव सही तेह ॥ ८ ॥ वाणी मुनिनी सांजली, हरख्यो हयडा मांय ॥ प्रणमीने चाल्यो तुरत, बेसी विमान जठांय ॥ ए ॥ मन चिंता करतो घणी, बंधव मलशे कयांहिं ॥ जोवाने फिरतो फिरे, देश विदेशज त्यांहिं ॥ १० ॥ एम करतां आवी मल्यो, पूछी कुशलनी वात ॥ मोहे विंध्या बे जणा, थया हरख सुख सात ॥ ११ ॥

ढाल २ जी.

फतमल पाणीडा गइती तलाव, लश्कर आयो हाडा रायरो—ए देशी.

वीरा मारा पवनवेग कहे वात, आज मुने हरख वधामणा ॥ वीरा मारा जोयां में गामोगाम, साजन पूछ्या में तुम तणा ॥ १ ॥ वीरा मारा आवी मल्या मुने आज, एता दिवस तुमे क्यां हता ॥ वीरा कहो धुरथी ते वात, कीहां जइ आव्या थया छता ॥ वीरा० ॥ २ ॥ वीरा मनोवेग कहे तव एम, देश विदेशे हुं जम्यो ॥ वीरा कौतिक दीठां अनेक, अढीद्वीप मांहे हुं रम्यो ॥ वी० ॥ ३ ॥ वीरा काश्मीर अने गुजरात, गोड चौड सोहामणां ॥ वीरा जोट आजीर सोजीर, कुंकण कलिंग कनोज तणां ॥ वी०॥४॥ वीरा मलबार सोरठ हालार, हीरंजज मुलतान जाणीए ॥ वीरा अंग वंग कुलंग ति-

ल्यंग, मरुधर देश वखाणीए ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीरा वागड लाट कर्णाट, कानड मेवारु माळवो ॥ वीरा वैराट वच्छ कच्छ नाम, कजळ नेपाळ जाळवो ॥ वी० ॥ ३ ॥ वीरा कणवीर कानन देश, कावील वील्यंग मेवातमां ॥ वीरा गंधार वैदर्भनो गाम, बवर कामरु जातिमां ॥ वी० ॥ ७ ॥ वीरा जोतां जोतां जग मांहे, फरतो दक्षिण दिश आवीउं ॥ वीरा पाडलीपुर नगर मांहे, दीठे हरख बहु व्यापीउं ॥ वी० ॥ ८ ॥ वीरा बार जोयणने विस्तार, नयर पाडलीपुर जाणीए ॥ वीरा चार पोळ तुंग प्राकार, गढ मढ कोरणी वखाणीए ॥ वी० ॥ ए ॥ वीरा चोराशी चोवटां बजार, हाटनी श्रेणी सोहामणी ॥ वीरा सात भूमि मोहोल आवास, गोख भरुखे चितरामणी ॥वी०॥१०॥ वीरा माणिक मोती व्यापार, रतन प्रवालानी नहीं मणा ॥ वीरा हीरा भवेर सुवर्ण, वणिज चलावे वणिक घणा ॥ वी० ॥ ११ ॥ वीरा ब्राह्मण वरण विशेष, विद्या भणावे विद्यारथी ॥ वीरा वेदीया वेद विचार, सांभले वेगा स्वारथी ॥वी०॥ १२ ॥ वीरा यज्ञ करी मांड्या याग, मध मदिरा दूध दहीं घणां ॥ वीरा ज्वलित खारेक खांड, सरसव घृत टोपरां तणां ॥ वी० ॥ १३ ॥ वीरा जोगी तापस संन्यास, तेहना मठ रलियामणा ॥ वीरा देवल दीसे अनेक, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तणां ॥ वी० ॥ १४ ॥ वीरा हनुमंत गौरी

गणपति, यक्ष शेषनाग ने नागणी ॥ वीरा ज्ञवानी खेतरपाल, चंडी चामुंडी नरसिंह धणी ॥ वी० ॥ १५ ॥ वीरा गम गम देवल पोशाल, गीत नृत्य वाजिंत्र घणां ॥ वीरा वादी विविध प्रकार, वेद निर्घोष बोले जणां ॥ वी० ॥ १६ ॥ वीरा ज्ञक्ति करे ज्ञोला लोक, घरघर पुराणनी वारता ॥ वीरा जंगम साकज सैव, ज्ञाट ज्ञोजक दिल गरता ॥ वी० ॥ १७ ॥ वीरा नगर विलोकतां वार, लागी कतुहल जोवतां ॥ वीरा बोल्यो पवनवेग मन, केम चाल्युं मने मेलतां ॥ वी० ॥ १८ ॥ वीरा मित्रनां लक्षण एह, सुख डुःख ज्ञेलां ते जोगवे ॥ वीरा प्रीत बंधाणी होय जेह, रुडे प्रकारे ज्ञोगवे ॥ वी० ॥१९॥ वीरा मित्राइ साची तेह, तेडीने साथे संचरे ॥ वीरा नेमविजय कहे एम, ढाल त्रीजी दिल एम गरे ॥ वी० ॥ २० ॥

डुहा.

पयने पाणीनी परे, प्रीत रीत कही एम ॥ स्वारथ कीधो तुम तणो, कूडो दीसे प्रेम ॥ १ ॥ डुष्ट हृदयना गे धणी, बोलो मीगा बोल ॥ निश्चे निरवाहो नहीं, कोरूनो तुम तोल ॥ २ ॥ विश्वासघाती होय जे, कृतघ्न कहीए तेह ॥ गुण अवगुण जाणे नहीं, डुरजनना गुण एह ॥ ३ ॥ ज्ञाइ तुमे खोटा सही, (मुज) मूकी जोया देश ॥

पाडलीपुर जोवा तणी, मुजने होंश विशेष ॥४॥ देखाम्रो नहीं जो तुमे, रुसणो करशुं एम ॥ अमे जाशुं घर आपणे, मुख नवी जोशुं तम ॥ ५ ॥ मनोवेग बोल्यो तिहां, मित्रजी म करो रोष ॥ जाशुं आपण बे जणा, जो छे तुमने शोष ॥ ६ ॥ पाडलीपुर तुम दाखवुं, हइडे राखो हाम ॥ कशी न करशो शोचना, करशुं सही ए काम ॥७॥ पवनवेग ते सांभली, थयो मन्न रलियात ॥ बे जण बेसी एकठा, करवा मांडी वात ॥ ८ ॥ निज घर जइ परवारीने, चालो जइए त्यांहिं ॥ शोभे छे शणगारथी, अद्भुत तरु उपवांहिं ॥ ए ॥ परठण करीने उठीआ, आववा निज आवास ॥ मनोवेग लटपट करी, मित्र तेडीउ तास ॥ १० ॥

ढाल चोथी.

ते तरियारे भाइ ते तरिया—ए देशी.

उष्ण पाणीए स्नान करावी, देवपूजा कीधी रंगेरे ॥ चुआ चंदननी अर्चा कीधी, अनोपम वस्त्र पहेर्यां अंगेरे ॥ प्रीतिनी रीत जुउ तुमे भाइ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ भोजन करवा बे जण बेठा, भेला साजन मांहेरे ॥ पीरसवा मांडी सुखडी सारी,

१ ठराव.

अनोपम अधिक उछांहेरे ॥प्री०॥२॥ घेवर मोतीचूर ने लाडु, खाजां खुरमां ने पूरीरे ॥ सांटां फीणी हेसमी मरकी, जलेबी मेसुब चूरीरे ॥ प्री० ॥ ३ ॥ सेव सुंहाली लापसी ताजी, खीर खांड आंबां केलांरे ॥ अखोड द्राख ने खजुर खारेक, सुगंधी शाको भेलांरे ॥ प्री० ॥ ४ ॥ कुरदाली दधि दूध उपर, घृत जाने परनालरे ॥ सालेवां पापड तली वे वडीउं, जमी उठ्या ततकालरे ॥ प्री० ॥ ५ ॥ पान सोपारी लवींग एलची, मुख तंबोल दीधां वारुरे ॥ कपुर वास्यां नीर मंगावी, शौच थया चालवा सारुरे ॥ प्री० ॥ ६ ॥ चंदन कपुर केशर घोली, अंग विलेपन कीधरे ॥ कुसुममाला पहेरी कोटे, मुहूरत वेला लीधरे ॥ प्री० ॥ ७ ॥ साज लेइने सामग्री कीधी, विमानमां वेसी तामरे ॥ आव्या ततक्षण पाडली परिसर, दीठां मनोहर ठामरे ॥ प्री० ॥ ८ ॥ उतरी हेठ विमान मांहेथी, पहेर्यां वस्त्र ते साररे ॥ माथे मुकुट काने कुंडल, कोटे मोतीनो हाररे ॥ प्री० ॥ ९ ॥ बांहे बाजुबंध बेरखा बांध्या, मुद्रिका कटी कंदोरारे ॥ पाये मोजडी सोल शणगारे, वशीकरण पासे मोहोरारे ॥ प्री०॥ १० ॥ एकने मस्तक खडनो भारो, बीजाने मस्तक काठीरे ॥ हाथ कोहाडो दातरडां लेइ, बीजा हाथमां लाठीरे ॥ प्री०

१ जात दाल.

॥ ११ ॥ रूप कवाडीनो करी आव्या, नगर प्रवेश ते कीधोरे ॥ रूप जोइने अचंबो पाम्या, लोकने आशिष दीधोरे ॥ प्री० ॥ १२ ॥ भेरी वजाडी मोटे सादे, घंटानाद सुणायोरे ॥ पूरव दिशे वादीनी शाला, जोवा अनेक लोक आयोरे ॥ प्री० ॥ १३ ॥ सिंहासन बेठा बे जाइ, अचरिज सहुने आवेरे ॥ गुण गिरुआ बेहु पुरुष अनोपम, किहांथी आव्या किहां जावेरे ॥ प्री० ॥ १४ ॥ सारा नगरमां शब्द सुणायो, भेर घंटानो नादरे ॥ द्विज सघला सांभलीने आव्या, करवा विद्यानो वादरे ॥ प्री०॥१५॥ वादी कहे अमे वाद करीशुं, ज्ञानी कहे जोशुं वेदरे ॥ एहने पूछशुं जो तुमे जाणो, तो कहो मांहेलो भेदरे ॥ प्री० ॥ १६ ॥ जोतिषी जंपे जोष अमारो,जोइ काढो कोइ दोषरे ॥ सवालाख ज्योतिषनुं मान छे, केतोक केशे जोषरे ॥ प्री०॥ १७ ॥ भट्ट कहे अमे भारत मांहेलो, गहन अरथ पूछी लेशुंरे ॥ कवि बोले अमे छंदनी जाति, पूछीने देशोटो देशुंरे ॥ प्री० ॥ १८ ॥ व्यास वदे अमे पुराण वातो, जाणुं केम हवे जाशेरे ॥ कामी कहे अमे कामने जाणुं, अम आगल स्पष्ट थाशेरे ॥ प्री० ॥ १९ ॥ वैद कहे अमे नाडीनी विधिमां, भांगशुं एहना होमरे ॥ व्याकरणी कहे वाद ते अमशुं, केम करशे पमशे खोडरे ॥ प्री० ॥ २० ॥ पाठक पंड्या बोल्या ततखिणे, ढीक पाठुना

प्रहाररे ॥ हुंहुंकार करंता आव्या, अनुक्रमे सहु तेणी वाररे ॥ प्री० ॥ २१ ॥ क्रोध मान माया लोन नरीया, राग द्वेषनां गेहरे ॥ पहेला खंडनी ढाल चोथीमां, नेमविजय कहे एहरे ॥ प्री० ॥ २२ ॥

दुहा.

तखत उपर वेगा चढी, दीठो सहु परिवार ॥ आलोचे मनमां तिहां, ए कुण कहीए कुमार ॥ १ ॥ आनूषण अधिके करी, पहेर्या सोल शणगार ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र ए, अथवा देवकुमार ॥ २ ॥ अन्यो अन्य सांसे[1] पड्या, नक्ति करे बहु नेव ॥ जगन्य जागना होमथी, आव्या सही ए देव ॥ ३ ॥ पुण्य आपणां पाधरां, आव्या बे परमेश ॥ तुष्टमान थाशे सही, धर्या अनोपम वेश ॥ ४ ॥ कोइ कहे ए बे सही, नारायणनुं रूप ॥ आपण सहुने तारशे, पड्या ठीए नवकूप ॥ ५ ॥ कोइ कहे महादेवजी, आव्या आपणी सेव ॥ हरहर मुख जपे सहु, सहुथी अधिको देव ॥ ६ ॥ कोइ कहे ब्रह्माजी तणो, अनुपम रूप आकार ॥ ब्रह्मलोकथी आवीया, तारे सहु नरनार ॥ ७ ॥ कोइ कहे ए इंद्र बे, को कहे सूरज चंद्र ॥ को वासी पातालनो,

---

१ संशयमां.

शेपनाग नागेंद्र ॥ ८ ॥ द्विज पमीया सांसे सहु, प्रणमे वारोवार ॥ जांव जगति करतां घणी, कलना न पमी लगार ॥ ९ ॥ विप्र एक बोल्यो तिहां, सघला दीसो मूढ ॥ प्रणति करो छो तमे घणी, गुण नवी जाणो गूढ ॥ १० ॥ विष्णु रूप जग ए नहीं, शंख चक्र नवी पास ॥ ईश्वरनुं रूप केम कहो, त्रिशुल त्रिलोचन तास ॥ ११ ॥ चार वेद ब्रह्मा मुखे, अज्ञानी तुमे लोक ॥ शुज्ज शणगारो देखीया, काष्ठ ऊपाडे थोक ॥१२॥

ढाल पांचमी.

आ चित्रशाली आ सुख सज्यांरे, जो मन माने तो करो लज्जारे–ए देशी.

अकल सरूपी दीसे छे एहरे, करीने विचार पूछशुं तेहरे ॥ साच जूठनुं पारखुं कीजेरे, नहींतर एहने देशोटो दीजेरे ॥ १ ॥ ब्राह्मण सघला बोल्या वाणीरे, कवण नगरीथी आव्या जाणीरे ॥ कवण जातिना छो तुमे जाइरे, किण कारण आव्या रूप बनाइरे ॥ २ ॥ कवण धरम करो छो साररे, कवण शास्त्र जण्या गुण धाररे ॥ वाद करो अमशुं निरधाररे, तो अम ऊपजे हरख अपाररे ॥ ३ ॥ मनोवेग कहे सांजलो विप्ररे, अमे छीए कवामी क्षीप्ररे ॥ वाद कहो केम कीजे तुमशुंरे, तमे सहु आव्या मलीने अमशुंरे ॥४॥ न्याय पुराणनी नवी जाणुं वातोरे, धरमाधरमनी न बुझुं तांतोरे ॥

रान मांहे रोजमा जेम जीवरे, ते सरिखा अमे बुं सदैवरे ॥ ५ ॥ द्विजवर तव कोपानल थाएरे, जो नवी जाणो तुमे बेहु कांएरे ॥ तो घंटानो केम कीधो नादरे, जेरी वजाडी पाड्यो तुमे सादरे ॥ ६ ॥ गर्व घणो आणी मन मांहींरे, उंचा चढी बेठा बो उबांहीरे ॥ अति घणो कीधो तुमे अन्यायरे, नरम थइ बोलो हवे न्यायरे ॥ ७ ॥ मनोवेग कहे अमे एमरे, नाद कीयो ते कौतुक जेमरे ॥ ते माटे तमे सहु मली आव्यारे, तुमने अमे बे दिलमां नाव्यारे ॥ ८ ॥ जो न गमे सिंहासन पर बेठारे, तो अमे उतरी बेसुं हेठारे ॥ रीस न करो अमने तुमे देवरे, ज्यांथी आव्या जाशुं ततखेवरे ॥ ए ॥ राजी थइने विप्र कहे न्याइरे, रूप देखीने कहीए चित्त लाइरे ॥ वस्त्र आभूषणे दीसो ताजारे, मीठाबोला मोटी माजारे॥ १० ॥ नीच काम कां करो कुमाररे, खड इंधणना आणो जाररे ॥ साच कहो जूठुं मत बोलरे, जेहवा रूपे बो तेहवो तोलरे ॥ ११ ॥ नाति जातिनो कुल मत लोपोरे, साचुं कहेतां रखे तुमे कोपोरे ॥ मनोवेग कहे तुमे बो मोटारे, न्याय पुराणमां अमे बुं खोटारे ॥ १२ ॥ नीच तणां आदर्यां अमे कामरे, केम पुराय विवादे हामरे ॥ बहु बलवंता संगाते वादरे, कीजे तो वधे विखवादरे॥ १३ ॥ अमे एकाकी परदेशी लोकरे, जे बोलुं ते सर्वे थाए फोकरे॥

सगां साजन नहीं इहां कोयरे, तो अमारो साखी कोण होयरे ॥ १४ ॥ ब्राह्मण सहु बोल्या तेणी वाररे, तुमे वेहु जाइ देवकुमाररे ॥ साची वात कहेजो निरधाररे, कयां पुराण साचां सिरदाररे ॥ १५ ॥ न्याय नीति साची कहो वातरे, असत्य भाख्याथी होशे घातरे ॥ मनोवेग कहे सांभलो वाचरे, घात होये बोलतां साचरे ॥१६॥ सोल मूठीउ नर कह्यो एकरे, साच बोल्याथी पाम्यो ठेकरे ॥ गरदन उपर सोल मूठ खाधीरे, ते नर नीत रह्यो तिहां बांधीरे ॥१७॥ द्विज सघला तव कहे कर जोडरे, अमने सांभलवानो छे कोडरे ॥ सोल मूठीया नर तणी वातोरे, साच बोल्याथी केम पाम्यो घातोरे ॥१८॥ मनोवेग बोल्यो गुणवंतरे, मलवार देश देशोमां संतरे॥ मंगलपुर नामे छे गामरे, वृक्ष वाडीए करी अभिरामरे ॥१९॥ अगर तगर उंचा छे तालरे, श्रीफल फोफल फणस तमालरे ॥ मरी लवींग सहकारनां ठामरे, धनवंत लोक वसे तेणे गामरे ॥२०॥ भमर नामे कुणबी छे एकरे, रूपणी नामे नार सुविवेकरे॥ पहेला खंडनी पांचमी ढालरे, नेमविजय कहे यह उजमालरे ॥ २१ ॥

दुहा.

मधुकर नामे पुत्र छे, क्रोधी मूरख रीसाल ॥ निज घरनुं धन खोइने, विणस्यो

खेती माल ॥१॥ एक दिन बापे पुत्रने, मोटी कीधी रीस ॥ कोप चढावी चालीयो, गयो गाम दश वीश ॥२॥ आहीर देशमां आवीयो, पिंपल नामे गाम ॥ धान खेत्रनां आणी- ने, (खलां) कीधां ठामोठाम ॥३॥ मधुकर कहे लोको जणी, (आ) धान तणा अंबार ॥ घउं चणा चोला घणा, मग मठनो नहीं पार ॥ ४ ॥ देश तुमारामां सही, निपन्यां एहवां धान ॥ देश अमारे एहवां, निपजे फोफल पान ॥ ५ ॥ मरी लवींग ने एलची, श्रीफल केलां डाख ॥ अनेक वस्तु उपजे, आंबा केरी शाख ॥ ६ ॥ वात मधुकरनी सुणी, अचरिज पाम्या लोक ॥ एक कहे नवी मानीए, जे बोले ते फोक ॥ ७ ॥ पटेल तलाटी एम कहे, एहने कीजे केम ॥ ठाकोर तेडी पूछीए, करशुं कहेशे जेम ॥७॥ कोप करी ठाकोर कहे, खोडे[1] घालो एह ॥ छेदो नाक पटेल के', तलाटी बोले तेह ॥ए॥ हाथ पाय छेदो परा, जूठाबोलो लोक ॥ तेह राखवो नवि घटे, कलंक मूके फोक ॥१०॥

ढाल छही.

राम सीताने धीज करावेरे, त्रणसें हाथ खाइ खणावेरे—ए देशी.

देवो शेठ बोल्या दयावंतरे, स्वामी एह दीसे छे संतरे ॥ चीजडां चोरने बूसट

१ हेडमां.

दीजेरे, एवडो ए काम केम कीजेरे ॥ १ ॥ आठ ढींक गरदन मांहींरे, दीजे वात कही सत तांहींरे ॥ राजा आदे वात सहु मानीरे, दीधी आठ ढींक तेहने ठानीरे ॥ २ ॥ मधुकर चिंतवे मन मांहींरे, साच बोल्ये खाधो मार आंहींरे ॥ जीवतो निज पूर जो जाउंरे, तो एहवो मार नवी खाउंरे ॥३॥ एम चिंतवी चाल्यो तेणी वाररे, वेगे आयो देश मलबाररे ॥ लवींग एलची मरी देखीरे, लोको प्रते कहे तव चेखीरे ॥ ४ ॥ सांभलो तुमे मलबारी लोकरे, वयण माहरुं मत जाणो फोकरे ॥ एक आहीर देश छे एहवोरे, में जइ जोयो ते कहेवोरे ॥५॥ घउं साली चणानी राशरे, मग मठ चोला जव ते खासरे ॥ एलची ने लवींग सोपारीरे, शुं करीए जुवो चित्त धारीरे ॥ ६ ॥ मलबारी लोको सुणी कोप्यारे, मधुकरनां वयण ते लोप्यांरे ॥ पूरव रीति तेणे कीधीरे, आठ मूठीनी मार ते दीधीरे ॥ ७ ॥ खोटाबोलो नर छे एहरे, अन्यो अन्य कहे सहु तेहरे ॥ लोक आगे कही सत्य वातरे, सोल मूठीनी खाधी घातरे ॥ ८ ॥ मलबारी लोके तेणे ठामरे, सोल मूठीउ धराव्युं नामरे ॥ मनोवेग कहे विप्र आगेरे, साच बोल्ये वयर ते जागेरे ॥ ए ॥ निज निज देश तणी जे वाचरे, अवर देश न माने साचरे ॥ आपणा मत आगल जे वातरे, न गमे कोइक थाय उत्पातरे

॥ १० ॥ तेम तुम आगे कहीए वातरे, ते थापो साची होय ख्यातरे ॥ एम करतां उपजे विरोधरे, अति वाधे मन मांही क्रोधरे ॥ ११ ॥ विप्र बोल्या सांभली वाणीरे, उपजे नहीं दुःखनी खाणीरे ॥ एवो अज्ञानी नथी आंहि कोइरे, कहेशो वात तुमारी जोइरे ॥ १२ ॥ मनोवेग कहे तुमे वादीरे, वाद करवाने उन्मादीरे ॥ शंका अम मन मांहे एहवीरे, मानो नहीं सही तेहवीरे ॥ १३ ॥ विप्र सांभलीने तव जंपेरे, साच कह्याथी कुण कंपेरे ॥ साच तणो जे कह्यो गूढरे, अममां नहीं कोइ मूढरे ॥ १४ ॥ मनोवेग अहो तुमे जाणरे, वात कहो साची परमाणरे ॥ कहेजो कोइ वात विचारी रे, कोइ न करे मारी तारीरे ॥ १५ ॥ मनोवेग कहे सहु साथरे, तुमे सांभलो विद्याना आर्थरे[1] ॥ मूढ उपर कथा कहुं जेहरे, जूठ बोल्या उपर तेहरे ॥ १६ ॥ कहेशुं कथा ते तो रुडीरे, मत जाणो तुमे कोइ कुडीरे ॥ कंठपुर एहवुं एक छाजेरे, नगर अवरमांहीं विराजेरे ॥ १७ ॥ प्रजापाल नामे तिहां राजारे, तेहनी छे मोटी माजारे ॥ ब्राह्मण वरणना वासरे, वेद भणावे अति खासरे ॥ १८ ॥ भूतमति नामे छे एकरे, विद्यावंत विनय विवेकरे ॥ वरस पचास थयां वारुरे, निरधनमां सिरदारुरे

---

१ भंडार.

॥ १९ ॥ समस्त मलीने परणाव्योरे, जगनदत्ता नारीने लाव्योरे ॥ पहेला खंडनी ढाल ते ठठीरे ॥ नेमविजये जाखी ते मीठीरे ॥

दुहा.

घर आव्युं सघले मली, मंडावी निशाल ॥ ब्राह्मण पुत्र जणे घणा, जमण दीये कुरदाल ॥ १ ॥ जूतमति ब्राह्मण जलो, जगन जाग करे होम ॥ नगरलोक माने घणुं, राखे मनमां जोम[1] ॥ २ ॥ जगनदत्ता नारी जणी, क्रीडा उपर जाव ॥ गरढो मोह्यो बे घणो, खेले अवसर दाव ॥ ३ ॥ रात दिवस सुख जोगवे, विद्यानो अज्यास ॥ देशी परदेशी घणा, माने वेदज व्यास ॥ ४ ॥ आव्यो एक विद्यारथी, देवदत्त बे नाम ॥ जूतमतिने वांदीने, बेठो जइ एक ठाम ॥ ५ ॥ जूतमतिए पूछीयुं, तुम आव्या कुण काज ॥ रूप सोजागे आगला, कहो अमने महाराज ॥ ६ ॥ देवदत्त तव विनवे, बे कर जोडी ताम ॥ अम आव्या जणवा जणी, तुम पासे सुण स्वाम ॥ ७ ॥ जूतमतिए राखीयो, मांड्यो शास्त्र अज्यास ॥ वेद जणावे निरमला, रात दिवस ते पास ॥ ८ ॥ जगनदत्ता नारी थकी, करतां व्होली हास ॥ जोड मली विहु सारखी,

---

[1] जोर.

हसतां हास्य विलास ॥ ए ॥ इम अनुदिन ते बेहुने, बाझ्यो बोहोलो नेह ॥ कांति कला वाधी घणी, रूप अनोपम देह ॥ १० ॥

ढाल सातमी.

सीता ते रूपे रुडी, जाणे आंबा माले सूडी हो सीता अति सोहे—ए देशी.

एक दिन आव्या जण चार, मथुरां नगरीथी तेणी वार हो ॥ ज्ञावे ज्ञवि सुणो ॥ ज्ञूतमति तेरूवा सारु, विनति करे आवी ते वारु हो ॥ज्ञा०॥ १ ॥ पधारो अमारे देश, सेवा चाकरी करशुं विशेष हो ॥ ज्ञा०॥ अश्व अजामेध थाशे, मोटो जगन जाग कहेवाशे ॥ज्ञा०॥२॥ तुम विना ते कोण जाणे, तेणे कारण मेल्या टाणे हो ॥ज्ञा०॥ तिहां आव्या लोक अनेक, कोण जाणे जगन विवेक हो ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ ज्ञूतमतिए हा वाली, साच वेणनी दीधी ताली हो ॥ ज्ञा० ॥ नारीने तेमी एकांते, शिखामण दे ज्ञली ज्ञाते हो ॥ज्ञा०॥४॥ घर मांही पोढजो राते, लंछन लागे कोइ वाते हो ॥ज्ञा०॥ ते तुमे मत करो काम, फरशो हरशो मां कोइ गाम हो ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ जोवनमां जोखम लागे, मोह वाधे मदन बहु जागे हो ॥ज्ञा०॥ अति घणुं शुं कहुं तुमने, मास चार थाशे तिहां अमने हो ॥ज्ञा० ॥ ६ ॥ देवदत्तने बोलाव्यो, घर ए तुमने ज्ञलाव्यो हो ॥

जा०॥ शिखामण कहुं छुं सारी, एकली घरमां छे नारी हो ॥जा०॥ ७ ॥ जणजो गण. जो ने रहेजो,मरजादे करीने वहेजो हो ॥जा०॥ राते ओटले आवी सूजो, तेफशो मां कोइ न झूजो हो ॥जा०॥ ८ ॥ एम कहीने चाल्यो साथ,एक एकना ग्रहीने हाथ हो ॥जा०॥ मथुरा नगरीमां पहोता, त्यां सहु साथ वाट जोता हो ॥जा०॥ ए ॥ मान दइ वेसाड्या ठाम, सहु लाग्या आपणे काम हो ॥जा०॥ घरे जगनदत्ता नारी, नव जोवन वालकुमारी हो ॥जा०॥ १० ॥ देवदत्त विद्यारथी तेह, मांड्या घणो तेहथी सनेह हो ॥जा०॥ वोले जगनदत्ता नारी, मुजशुं राखो एकतारी हो ॥ जा० ॥११॥ गरढो गयो छे गाम, आपण वेहुनुं थयुं छे काम हो ॥ जा० ॥ अस्थी[1] नारीने जाणी, देवदत्त वोले हवे वाणी हो ॥ जा० ॥ १२ ॥ गोराणी नाम कहावे, तेणे मनमां शंका आवे हो ॥ जा० ॥ शुं करीए कर्मनी केम वातो, मेलीए वयण तुम जातो हो ॥जा०॥ १३ ॥ हरि हर ब्रह्मादिक देव, कामे पीडाणा ततखेव हो ॥जा०॥ आपण छीए मानवी देह,त्रिकरण केम राखे तेह हो ॥जा० ॥१४॥ तुम वयण केम लोपाए, ब्रह्महत्या मुजने थाए हो ॥जा०॥ वेधक वयणे एम मलीयां, एक एकनां हृदयथी जलीयां हो॥ जा० ॥ १५ ॥ गोराणी देवदत्त छात्र, क्रीडा करवा

---

१ गरजाउ.

लाग्या सुख पात्र हो ॥जा०॥ बेहुनो सरखो मळ्यो जोग, राति दिवस माणे जोग हो जा०॥१६॥ एम करतां चारे मासे,गया बेहु जण बेसी विमासे हो ॥जा०॥ आवशे तुम जव प्यारो, तव मुजने मेलशो न्यारो हो ॥ जा०॥ १७ ॥ एकांते बेहु जण बेसी, वात करतां नारी ठहेसी हो ॥जा०॥ तुमे दिलगीर मत थाउं, मेलुं नहीं जीव जो जाउं हो ॥जा० ॥ १८ ॥ प्रपंच करुं एक एहवो, आपण जेलां रहुं तेहवो हो ॥जा०॥ तो मुजने साची जाणो, तुमे दुःख हइए मत आणो हो ॥ जा०॥ १९ ॥ जगनदत्ता तव चाली, मध्य रात्रि झाली करवाली[1] हो ॥जा०॥ पहेला खंमनी सातमी ढाल, नेमविजय कहे ततकाल हो ॥ जा० ॥ २० ॥

दुहा.

मसाणमां गइ एकली, आण्यां मर्दां बे रंग ॥ एक मूक्युं निज ढोलीए, अवर उटला चंग ॥ १ ॥ धन सघलो काढी लीयो, घरे लगावी आग ॥ मध्य रात्रि दो नीकल्यां, चाल्यां उत्तर जाग ॥ २ ॥ मंदिर लाग्युं अति घणुं, मलीया लोक अपार ॥ करता हाहाकार त्यां, सर्व बल्युं तेणी वार ॥ ३ ॥ जल छांटीने उलव्युं, बल्यां दीठां

१ तरवार.

वेहु जिन्न ॥ शोक करे ब्राह्मण घणा, थया खेदथी खिन्न ॥ ४ ॥ राम राम सहु उचरे, सती शिरोमणि तेह ॥ मीठांबोली गोरडी, एहवी नहीं गुणगेह ॥ ५ ॥ विष्णु विष्णु एक कहे, मोटो हुओ अखत्र ॥ गुरुनक्ति विद्यारथी, नस्म थयो द्विज पुत्र ॥ ६ ॥ शोक करे जन त्यां घणा, कीधां स्नान अपार ॥ ब्राह्मण सहु विचारता, नफर मेलीए सार ॥ ७ ॥ लेख लखीने ब्राह्मणे, नफर मूक्यो निरधार ॥ नूतमति आवो जलद, ढील म करो लगार ॥ ८ ॥ वली गयुं घर तम तणुं, विद्यारथी वनिताय ॥ अगनिमां वलीयां वेहु, थयुं अघटतुं आंय ॥९॥ उना नव रहेशो तिहां, पाणी पीवा काज ॥ दहन थयुं घर तुम तणुं, घणुं शुं लखीए राज ॥ १० ॥

ढाल आठमी.

ढोलो ठे मुख मारुरे, एहनी आंखडीए ऊलक्यो दारुरे,मारा धणुंरे सवाइरे ढोला—ए देशी.

मथुरां पहोतो क्षिप्र, जिहां नूतमति ठे विप्ररे ॥ मारा परम सनेही सुणजो ॥ ए टेक ॥ करी प्रणाम पत्र दीधो, नूतमतिए हाथे लीधोरे ॥ मा० ॥ १ ॥ शोक आण्यो मन मांहीं, दुःख दोहग उपन्यो त्यांहिंरे ॥ मा० ॥ आव्यो कंठपुर शीघ्र, घर परजल्यो दीठो विप्ररे॥ मा० ॥ २ ॥ मूरछा आवी ततकाल, तिहां मलीयां वाल गोपालरे ॥ मा०

कीधो सचेत तेणी वार, मांड्यो करवा पोकाररे ॥ मा० ॥ ३ ॥ हैयुं दडे माथुं कूटे, हाहा दैव शुं चुंटेरे ॥ मा०॥ एहवी नहीं मले नारी, घरनुं सुख गयो हुं हारीरे॥ मा० ॥ ४ ॥ मस्तक मूठना केश, लोच करे छोडी वेशरे॥ मा०॥ आंसुनी धार विछुटी, पडी धारू जाणे लीधो लुंटीरे ॥ मा० ॥५॥ जगनदत्ता सुण नारी, मुज मूकी गइ निरधारीरे ॥ मा०॥ तुं प्राण प्रिया गुण भारी, मुज दर्शन दे एक वारीरे ॥मा०॥६॥ तुज चंद्रवदन हरीलंक, कनक कलश कुच शंकरे ॥मा०॥ तुज विण दीसुं हुं रंक, मुज मेली गइ विण वंकरे ॥ मा० ॥ ७ ॥ अगनि देव तें शुं कीधुं, मुज रामा प्राण हरी लीधुंरे ॥ मा०॥ अरे पापी तुं दैव ब्रह्म, हत्या कीधी तें सैवरे॥ मा० ॥ ८ ॥ मुज हरि हर ब्रह्मा रुठ्या, सघला पड्या ते जूठारे ॥ मा० ॥ करता गोत्रजनी सेव, ते नाठो गुरुकुल देवरे ॥ मा० ॥ ए ॥ विद्यारथी तुं पवित्र, परदुःख भंजननो मित्ररे ॥ मा० ॥ हाहा द्विजवर पुत्र, किम रहेशे तुज घर सूत्ररे॥ मा० ॥ १० ॥ ब्रह्मचारी तुं धीर, परस्त्रीनो सहोदर वीररे॥ मा० ॥ तुं सुतो छंटला तीर, तुज दाहे बल्युं शरीररे ॥ मा० ॥ ११ ॥ मरजो ए ब्राह्मण पापी, मुज तेडी गया मीसापीरे ॥ मा० ॥ यज्ञ कारण सहु व्यापी, मुज घरधरणी भस्मापीरे॥ मा० ॥ १२ ॥ तिणे अवसर ब्राह्मण एक, आवी कहे वातो विवेकरे॥ मा०॥ नारी कारण

तुमे एम, डुःख जोगवो ठो खोटुं जेमरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ प्राये नारी कही ठे खोटी, कूड कपटनी मति ठे ठोटीरे ॥मा०॥ हैयानी वात नवि खोले; सजावे जूठुं बोलेरे ॥मा०॥१४॥ वार द्वार अशुचिनां ठाम, लोजी निरदयनी हामरे ॥ मा० ॥ शोक करो किण काम, लोक मांहीं जासे तुम मामरे ॥मा०॥ १५ ॥ तुमे पंडित मोटा जानी, जण्या गण्या ठो गुण ज्ञानीरे ॥ मा० ॥ धरी वैराग मन मांहीं, राम नाम लांजे ठठांहींरे ॥ मा० ॥ १६ ॥ जूतमति सांजली कोप्यो, ब्राह्मणनो वयण ते लोप्योरे ॥ मा० ॥ तुं शुं जाणे अजाण, मुज आगे वात परमाणरे ॥ मा० ॥ १७ ॥ हरि हर ब्रह्मादिक जेह, नारीने वश पड्या तेहरे॥ मा०॥ अम सरिखा पाठक पंड्या, शास्त्र विद्यानी वाते मंड्यारे ॥ मा० ॥ १८ ॥ मति तुं अमने आपे, एहवी बुद्धि अमारी उथापेरे ॥ मा० ॥ मह्रा रांकना जा तुं इहांथी, मति देवा आव्यो ठे क्यांथीरे॥ मा० ॥ १९ ॥ ते ब्राह्मण गयो एम वारी, जूतमतिए बुद्धि विचारीरे॥ मा०॥ पहेले खंडे कही ढाल आठ,नेमविजय कहे जुर्ज ठाठ रे॥मा०॥२०॥

डुहा.

वेहु तुंब हाथे ग्रही, अस्थि घाल्यां मांहीं ॥ स्त्री विद्यारथी बे तणां, लइ चाल्यो ठठांही ॥ १ ॥ गंगाजी जात्रा जणी, मारग जातां गाम ॥ आव्यो एमां ए गयो,

मल्यो विद्यारथी ताम ॥ २ ॥ जूतमति जणी उंलख्यो, आवी लाग्यो पाय ॥ विद्यारथी हुं तुम तणो, तुम पंमित महाराज ॥ ३ ॥ अपराधी हुं ताहरो, गुनोह करजो माफ ॥ पगे लागवा आवीउं, मारा ठो मावाप ॥ ४ ॥ पापी में तुम नारीनुं, हरण करीयुं आंहीं ॥ आवीने इहां रह्यो, देजो मुजने बांहीं ॥ ५ ॥ जूतमति सुणीने कहे, दीसे दासी-पुत्र ॥ कुण तुं क्यांथी आवीउं, धूरत दीसे कुत्र ॥ ६ ॥ बोले खोटुं तुं सही, ब्रह्मचारी अम नार ॥ देवदत्त विद्यारथी, एहनो नहीं आचार ॥ ७ ॥ अस्थि ठे ए बेहुनां, कावम मांहीं जेह ॥ गंगाजी मांहे जइ, तरतां मेलीश तेह ॥ ८ ॥ तेमी आण्यो घर जणी, देवदत्त कुमार ॥ ज्ञानी बेठो चिंतवे, ए कोण दीसे नार ॥ ए ॥ जगनदत्ता मन चिंतवे, जानी आव्यो पास ॥ पगे लागीने विनवे, अपराध खमजो स्वाम ॥ १० ॥

ढाल नवमी.

कपूर होवे अति उजलो रे—ए देशी.

कामनी कहे स्वामी सुणोरे, संजालो पूरव प्रीत ॥ वमपणे परण्या मुजनेरे, राखो तेहीज रीतरे ॥ साजन सांजलजो सहु कोय ॥ ए आंकणी ॥१॥ कोपे जानी कहे तिहांरे, तुं केहेनी कहे रांड ॥ आ गाम तणां लोक एहवांरे, फोक बोले मांरु मांमरे ॥सा०

॥ २ ॥ मुज रामा सती निरमलीरे, अगनिमां परजली तेह ॥ विद्यारथी मुज नारीनांरे, अस्थि लइ जाउं एहरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ मनोवेगे कथा कहीरे, सांजलो विप्र विचार ॥ अज्ञानी तेणे वापडेरे, वचन न मान्युं साररे ॥ सा० ॥ ४ ॥ जूतमतिए जेम कह्योरे, तेम तुमे करशो आज ॥ सत्य वचन मुज बोलतांरे, नवी मानो गुणजाजरे ॥ सा० ॥ ५ ॥ कथा सुणी द्विजवर कहेरे, सांजलो तुमे कुमार ॥ एवो नहीं अममां कोइरे, स्त्रीमोही मूढ गमाररे ॥ सा० ॥ ६ ॥ सत्य वचन तुम जाषतांरे, द्विजवर नहीं आणे खेद ॥ जेवुं होय तेहवुं कहोरे, अमे करी मानशुं वेदरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ तुमने देखी अम तणेरे, कौतिक उपजे आज ॥ राजकुमार रलिआमणारे, केम कीजे नीच काजरे ॥ सा० ॥ ८ ॥ रूप सोजागे रुयमारे, हीन करम वली कांय ॥ बिहु वानां घटतां नथीरे, स्वरूप कहो वली तायरे ॥ सा० ॥ ९ ॥ मनोवेग तव बोलीउंरे, सांजलो जट्ट विचार ॥ एकमना मन आणजोरे, उत्तर देजो साररे ॥ सा० ॥ १० ॥ राजकुमर अमे रुअमारे, नीच करुं वली काम ॥ ते बेहु वानां घटतां कहुंरे, ब्राह्मण सुणजो तामरे ॥ सा० ॥ ११ ॥ पूर्वापर विचारजोरे, करजो वचन विचार ॥ विष्णुवाद कहुं रुअडोरे, संक्षेपे छे ते साररे ॥ सा० ॥ १२ ॥ जमुना नदी रलीआमणीरे, तेह तणे उपकंठ ॥ गोकुल वन विस्तार

ठेरे, तिहां वसे श्रीकंठरे ॥ सा० ॥१३॥ नारायण देव तुम तणोरे, चौद भुवन विख्यात ॥ चौद भुवन मुखमां वसेरे, शत्रु तणो करे घातरे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पुरुषोत्तम पवित्र भलोरे, चौद भुवननो राय ॥ लोक सहुने उधरेरे, वांदे तेह तणा पायरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शंख चक्र गदा धरेरे, सारंग धनुष वली सार ॥ मस्तक मुगट सोहामणोरे, कंठे एकावल हाररे ॥ सा० ॥ १६ ॥ काने कुंमल झलकतांरे, बहेरखा बांहिं अपार ॥ सोल आभूषण शोभतांरे, गुण नवि लाभे पाररे ॥ सा० ॥ १७ ॥ दामोदर एहवो कह्योरे, अथवा साचुं के जूठ ॥ विप्र विचारी बोलजोरे, उचरीए नहीं कुठरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ पुराण प्रसिद्ध ए जाणीएरे, महीतल मोटो देव ॥ तुम वचन मान्यां खरांरे, अमे करीए एनी सेवरे ॥ सा० ॥ १९ ॥ ब्राह्मण तव सहु हरखीयारे, कर जोडी कहे सार ॥ साचां वयणां तुमे कह्योरे, खोटां नहीं लगाररे ॥ सा० ॥ २० ॥ ए वात साची अमे लहुंरे, तुमे कही तत-काल ॥ पहेले खंडे मुनि भलीरे, नेमविजय उजमालरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

दुहा.

मनोवेग तव बोलीउ, सुणो द्विजवर वाण ॥ नंद गोप गोवालीउ, नीच कुले ते जाण ॥ १ ॥ गाय भेंस तेहने घणी, बालांनो नहीं पार ॥ ते सहु चारे कानुडो, वारु वन

राज पाले गुण धार ॥ २ ॥ डुर्योधन राज करे तिहां, कौरव शत नाइ साथ ॥ राज्य-
द्वेष आणे घणा, पांमवशुं लीए बाथ ॥ ३ ॥ एक वार कूरू कपटे करी, जुवटे हार्यो
देश ॥ देशोटो बार वरस तणो, चाल्या धरी द्विजवेष ॥ ४ ॥ वैराट देशमां जइ रह्या,
वैराट तणी करे सेव ॥ गोकुल वाल्यो कौरवे, संग्राम कीधो तिणे खेव ॥ ५ ॥
पांमव द्वारिकापुरी गया, नारायण नेट्या तेह ॥ कृष्णे काज विमासीउं, मान दइ
राख्या गेह ॥ ६ ॥ स्नेह धरी परणावीया, सुनद्रा अर्जुन ताम ॥ सुख नोगवे पांमव
तिहां, सेव करे कृष्ण राम ॥ ७ ॥ अरजुने तव विनवीया, दामोदर ते राय ॥ काज
करो तुम अम तणां, दूतपणुं धरी काय ॥ ८ ॥ हस्तीनागपुर जायवुं, नांजवो कौरव
धीश ॥ नगर पांच आपुं तुमने, आनंद धरी नामो शीश ॥ ए ॥ सेवावरती थइ रहो,
जाइ कहो तुम देव ॥ कर जोमी कहे त्रीकमो, काम करशुं अमे हेव ॥ १० ॥ दूतपणुं
लइ चालीया, हस्तीनागपुर पोत्या कान ॥ दासीपुत्र विडुर घरे, कृष्ण गया दीधां
मान ॥ ११ ॥ आदर तेणे दीधा घणा, शाक ने नोजन दीध ॥ अवसर जोइ नेटणुं,
डुर्योधन राजानुं कीध ॥ १२ ॥ कौरवे मान दीधां घणां, पूब्युं केम आव्या कान ॥
नारायण तव बोलीया, सुणो वयण अमारां तान ॥ १३ ॥ दूत थइ अमे आवीया,

करजो पांडवशुं प्रीत ॥ नगर पांच लेई तुमे, सेवा करजो ए रीत ॥ १४ ॥ बोल अमारो मानजो, सबला पुरुषना पाय ॥ सत्य वचन कहुं बुं अमे, नहीं तो मराशो राय ॥ १५ ॥ डुर्योधन तव बोलीया, फेरुं[1] पांमवनां गाम ॥ विष्णु एवुं मंत कहो, नीच करमनां काम ॥ १६ ॥ नाठा पांचे पांडव तिहां, पेठा तुमारे गेह ॥ काज करो तेहनां घणां, दूत थइ आव्या जेह ॥ १७ ॥ बीजुं अघटतुं तमे कर्युं, नीच घरे जोजन कीध ॥ दासीपुत्र विडुर घरे, ज़ुंडापणुं ते लीध ॥ १८ ॥ पांडव डूत थइ आवीया, ठाकोर फीटी थया दास ॥ कठिण बोल तुमे कह्या, फेडुं तुम तणा वास ॥ १९ ॥ पांमवने कहेजो तुमे जइ, करजो संग्रामनी त्यारी ॥ ढाल दशमी पहेला खंडनी, नेमविजये कही सारी ॥ २० ॥

डुहा.

सांजली नारायण वयण, आव्या निज आवास ॥ पांमव तेमी एम कहे, हवे जुध करशुं तास ॥ १ ॥ कटक करी चाल्या तिहां, कौरव उपर तेह ॥ अर्जुन कहे केशव सुणो, रथ खेमो तुमे एह ॥ २ ॥ सारथी थाजो अम तणा, अमे थाशुं जुकार ॥ कौरव तणा कटक जणी, माथे पडशे मार ॥ ३ ॥ गोविंदे त्यां हा जणी, रथ चडी

---

१ नाश करुं.

बेठा त्यांहिं ॥ रास परोणो कर ग्रही, हवे रथ खेडे आंहि ॥ ४ ॥ कौरव सेना उपरे, मार पडी तेणी वार ॥ पांच पांडव जय पामीया, जगमां जस विस्तार ॥ ५ ॥ जीती निज घर आवीया, पहोता निज निज ठाम ॥ कथा पुराणे ते कही, मनोवेग कहे तमाम ॥ ६ ॥ ब्राह्मण सहुको सांभलो, पांडव दूत मोरार ॥ गाडीत करम कर्यो सही, नीच करम आचार ॥ ७ ॥ नारायण रुखमणी बंने, जोतरी रथ डुरवासाय ॥ चावक चोडे तेहने, कीधां कांणां ताय ॥ ८ ॥ विश्वलोक विठल तणां, सुर रुषि पूजे पाय ॥ रथ खेडे ते केम जाणी, विप्र विचारो कांय ॥ ए ॥

ढाल अगीआरमी.

डुंगर आंबा आंबलीरे, डुंगर दाडिम ध्राख–ए देशी.

विप्र विचारो तुमे जलारे, विष्णु विगोव्यो अपार ॥ वेद पुराणे जे कह्युंरे, सत्य वचन कहुं सार ॥ सज्जन जन मनशुं करोरे विचार ॥ ए आंकणी ॥१॥ जरमांगद रुषि तप करेरे, ईश्वरनुं धरे ध्यान ॥ पंचाग्नि साधी खरीरे, बार वरस गयां मान ॥स०॥२॥ वृषभ चड्या ईश ऊमीयारे, मारग दीठो ताम ॥ गौरी पूछे ईश्वर जाणीरे, ए ध्याये केहनुं नाम ॥ स० ॥ ३ ॥ महादेव कहे सुण नारी तुंरे, मुजने ध्याये सहु लोक ॥

गोरी जणे तो शुं एहनेरे, केम होये दर्शन फोक ॥स० ॥ ४ ॥ तव तुठ्या हर तपसीनेरे, मागो आपुं वरदान ॥ तपसी चिंते ए पार्वतीरे, त्रिजुवन मांहे निधान ॥ स० ॥ ५ ॥ शंकर मारी हुं जोगवुंरे, जस्मांगद जणे सार ॥ जो तुठ्या आपो अमेरे, वंछित फल दातार ॥स० ॥ ६ ॥ जेने माथे मूकुं हाथमोरे, जस्म थाये वली तेह ॥ महादेवे दीधो वर जलोरे, दानव पुंठे थयो जेह ॥ स० ॥ ७ ॥ ईश्वर नाठा जाय सहीरे, तापसे तव कीधी केम ॥ ईश्वर चिंतवे मन मांहिरे, हाथशुं घाली में हेड ॥ स० ॥ ८ ॥ नासीने किहां जायवुंरे, पापी लाग्यो मुज पुंठ ॥ हुं अज्ञानी घेलो थयोरे, नारी बोले एने तुठ ॥ स० ॥ए॥ सघला देव तुमे सांजलोरे, हुं दुःख पामुं छुं आज ॥ दानवने मारो तुमेरे, नवि आपुं वरराज ॥ स० ॥ १० ॥ ब्रह्मा विष्णु पधारजोरे, ए पापीनो करो नाश ॥ एक मूरति त्रिहुंनी आपणीरे, वेगे धाउं सहु पास ॥ स० ॥ ११ ॥ केशव ज्ञान विचारी-नेरे, ईश्वरनी जाणी वात ॥ पार्वती रूप करी तदारे, दैत्यनो करवा घात ॥ स०॥१२॥ वेगे आवी देवी उमीयारे, दीधुं कंकण तिण खेव ॥ हर गौरी दोय उलख्यांरे, घाल्युं कंकण कर देव ॥ स० ॥ १३ ॥ रूप थयुं पार्वती तणुंरे, उमीया बोली तेणी वार ॥ कुण रूप कुण तमे अछोरे, तापसीने कहे तेणी वार ॥ स० ॥ १४ ॥ सांजलो गौरी तुमे कहुंरे,

भस्मासुर मारुं नाम ॥ बार वरस तप आचर्यांरे, शंकर तुठ्या ताम ॥ स० ॥ १५ ॥ तेह प्रसादे हर मारशुंरे, भोगवशुं तुम देह ॥ हसी करी गौरी भणेरे, सांभलो स्वामी कहुं तेह ॥ स० ॥ १६ ॥ ईश्वर मुजने नवी गमेरे, बांडे वृषभ चढी जाय ॥ भस्म लगावे देहनेरे, भांग धंतुरो घणो खाय ॥ स० ॥ १७ ॥ सर्प तणो हार कोटमांरे, किन्नरी वाये निज हाथ ॥ कांख कोली भिक्षा भमेरे, मूढ थइ घाले बाथ ॥ स० ॥ १८ ॥ घर अने हाट एने नहींरे, मसाण गुफा निज वास ॥ नागो बीहामणो दीसतोरे, गंधाये एहनो सास ॥ स० ॥ १९ ॥ दीठो आंखे नवी गमेरे, ईश्वरनो संजोग ॥ आ मनमां माहरे हतोरे, रुषिशुं माणशुं भोग ॥ स० ॥ २० ॥ ए धूरत नासी गयोरे, आपणने हुउ रंग ॥ इंद्र तणां सुख माणशुंरे, वंछित फले वली चंग ॥ स० ॥ २१ ॥ मन मांहे आनंद धरीरे, जो करो नाटिक स्वामी ॥ तो मुजने संतोष होयेरे, भोगवीए भोग कामी ॥ स० ॥ २२ ॥ तापसी वचन अंगीकरीरे, ईश्वर वेष धरी तेह ॥ उमीया आगल नृत्य करेरे, तान मान गुणगेह ॥ स० ॥ २३ ॥ जिम जिम उमीया शीखवेरे, तेम नाचे रुषि सार ॥ मस्तक हाथ मूकावीयोरे, तापस वली थयो छार ॥ स० ॥ २४ ॥ तेणे अवसर तिहां आवीयोरे, नृप विरोचन नाम ॥ गौरी रूप देखी करीरे, हरख पाम्यो नृप ताम ॥ स० ॥ २५ ॥ तेडी

निज घर लेइ गयोरे, रात दिवस माणे जोग ॥ नारायणशुं नेह धरीरे, संसारनां सुख संजोग ॥ स० ॥२६॥ मनोवेग बोले तिहांरे, जो जो ईश्वरनां काम ॥ पहेले खंडे अग्यारमीरे, नेमविजय कहे ताम ॥ स० ॥ २७ ॥

डुहा.

ब्राह्मण सांभलजो तुमे, हरि रमे स्त्रीरूप ॥ नानां भूषण वस्त्र रस, चूआ चंदननो चूप ॥ १ ॥फल तंबोल सुगंध बहु, वंछित विरोचन राय ॥ हास्य विलास रंग रोलमें, घणो काल एम जाय ॥२॥ रह्यो गर्भ करमे करी, पंच मासे अघरणी कीध ॥ नाति जाति संतोषीने, गर्भ महोत्सव सिध ॥ ३ ॥ एक दिन नारद आवीया, दीठो नारी स्वरूप ॥ ज्ञान बले विचारीयुं, दामोदर एह रूप ॥ ४ ॥ आनंद थयो ऋषिने घणो, कौतुक जोशुं एह ॥ ब्रह्मा शंकर शोधे सहु, जाइ कहेशुं तेह ॥ ५ ॥ सहस्र अठ्याशी ऋषीश्वरे, शोध्या विष्णु सोय ॥ सकल देव जोया सहु, (पण) केशव गोत न कोय ॥ ६ ॥ नारद तिहांथी चालीया, (ऋषि) देवने कीध प्रणाम ॥ दामोदर देखाडीए, जेम सरे तुमारुं काम ॥ ७ ॥ ब्रह्मादिकने तेमीया, विरोचन पटसाल ॥ ऋषि देव भेला मल्या, जोवा काज ततकाल ॥८॥ घरमांथी राय नीकली, ब्रह्मादिकने पाय ॥ कहो स्वामि

केम आवीया, सफल जमारो थाय ॥ ए ॥ नारद बोल्या ततखिणे, विरोचन सुखनी खाण ॥ तुम धरणीने जोइने, अमने सफल विहाण ॥ १० ॥

ढाल बारमी.

फुलडी ते काजल सारे, ए तो जमर नजारां मारे राज ॥ ए तो फुलमीनो रूप रंग जोजो–ए देशी.

राजाए तव आणी नार राज, कर कांकण ठोड्युं तेणी वार राज ॥ तुमे सांजलजो सहु कोइ ॥ ए आंकणी ॥ नारायण हुवा तव त्यार राज, विस्मय पाम्या लोक अपार राज ॥ तु० ॥१॥ एक कहे कारण केस्युं राज, नांदी जेवडुं पेटज एस्युं राज ॥ तु०॥ एक कहे नारायण नोहे राज, विपरीत रूप सही सोहे राज ॥ तु० ॥२॥ एक कहे गोविंदनी लील राज, देव चरित्र जाणे नवि सील राज ॥तु०॥ एक कहे केम वाध्युं पेट राज, जइ पूठीए राजाने ठेठ राज ॥ तु० ॥३॥ तव पूछ्या विरोचन राज राज, तुमे शुं कीधुं एह अकाज राज ॥तु०॥ विष्णु तणुं वधार्युं पेट राज, पापे करी जाशो तुमे हेठ राज ॥ तु० ॥ ४ ॥ राजा तव कांखो थयो त्यांहिं राज,कालुं मुख लेइ गयो घर मांहीं राज ॥तु०॥ डुःख सोग करे अपार राज, हुं केम छुटीश एह संसार राज ॥ तु० ॥ ५ ॥ हर ब्रह्माए तेड्या

ताम राज, विष्णु देव पधारो आम राज ॥ तु० ॥ कहो कारण हुवुं छे केहवुं राज, विपरीत रूप दीसे एहवुं राज ॥ तु० ॥ ६ ॥ नारायणे कह्युं तव मांभी राज, शरीर वितक जेवुं लह्युं बांभी राज ॥ तु० ॥ खमखड ते सहु हसीया राज, सांभली वात अचंबे वसीया राज ॥ तु० ॥ ७ ॥ महादेवे हाकोट्या अति घणा राज, काला मुख हुआ तेह तणा राज ॥ तु० ॥ देव दामोदर त्रिभुवन राय राज, सहुको लागे एहने पाय राज ॥ तु० ॥ ८ ॥ प्रीठ्या वचन महेसर मली राज, पूज्या पाय नारायणना वली राज ॥ तु० ॥ क्षमा करजो स्वामी हे देव राज, अमे अपराधी हुवा ततखेव राज ॥ तु० ॥ ९ ॥ सघला मली विमासण करे राज, गर्भ काढशुं हवे केणी परे राज ॥ तु० ॥ ब्रह्मा शंकर बोल्या भेद राज, जांग वाढी करी काढो छेद राज ॥ तु०॥१०॥ तेह वचन मनमां धरी राज, देव सघले हास्यज करी राज ॥ तु०॥ जोर करी काढ्युं छोकरुं राज, ते कारण बलि नामज धर्युं राज ॥ तु० ॥ ११ ॥ विष्णु सदन वैकुंठज थया राज, देव सहु निज ठामज गया राज ॥तु०॥ मनोवेग कहे कह्यो संखेव राज, अवर पुराण सांभलजो हेव राज ॥ तु० ॥ १२ ॥ बलि राजा बलवंता जाम राज, राज रिद्धि पाम्यो तेणे ठाम राज ॥ तु० ॥ अपूरव इंद्र थवा तणी राज, इच्छा

उपनी मनमां घणी राज ॥ तु० ॥१३॥ जगन मांड्या हवे तेणे क्षिप्र राज, अनेक तेड़ा-
व्या त्यां विप्र राज ॥ तु० ॥ होम हुताशन परजले राज, पुण्यदान दे जे नर मले राज
॥ तु० ॥ १४ ॥ जाग नवाणुं थया जब पूरा राज, कंप्युं इंद्रासन थइ सनुरा राज
॥ तु० ॥ ज्ञाने करी विचार्युं जेह राज, मुज पदवी लेशे सही तेह राज ॥ तु० ॥१५॥
विष्णु मंदिर मघवा गयो राज, सांभल गोविंद वात उच्चयो राज ॥तु०॥ बलि राजा
जगन बहु करे राज, मुज पदवी तणो घातज हरे राज ॥ तु० ॥१६॥ कूरू रचो जगनाथ
देव राज, नाश करो दैत्य तणो ततखेव राज ॥ तु० ॥ बलिने छलो करीने उपाय राज,
आश पुरो मनोरथ थाय राज ॥ तु० ॥ १७ ॥ कृपा करी बोल्या तव हरि राज, जाउं
तुमे आपणे गाम फरी राज ॥ तु० ॥ निज पदवी जोगवो जाइ राज, अमे करशुं
काम तुम साइ राज ॥ तु० ॥ १८ ॥ रच्यो दामोदरे विचार राज, काश्यप ऋषि तस
नार राज ॥ तु० ॥ आदिति नामे कही नार राज, तेहनी कूखे लीयो अवतार राज
॥ तु० ॥ १९ ॥ जाणीए त्रेतायुग मांही राज, वामन रूप धरी उच्छांही राज ॥ तु० ॥
पहेले खंडे बारमी ढाल राज, नेमविजय कहे तेणे ताल राज ॥ तु० ॥ २० ॥

डुहा.

लीयो अवतार ए पांचमो, वसिष्ठ गुरु छे तास ॥ नित्य नमे ते गुरु जणी, राखीने विश्वास ॥ १ ॥ भृगु क्षेत्र जणी चालीयो, बांधवा बलिने उपाय ॥ जाग मंडपमां आवीयो, सौ सज्जन पुंठे थाय ॥ २ ॥ हाथ पाय टुंका अछे, धोतकषांबर अंग ॥ चुयांचली वाली काछमी, मस्तक फालीउं चंग ॥ ३ ॥ छाग लीयो कर एकवमो, दर्न डुर्वा वली लीध॥ कंठ जनोइ निरमली, कसवटे टीपणुं कीध ॥४॥ द्वादश तिलक कर्या नलां, चार नणे मुख वेद ॥ अचंन्या द्विज देखीने, अपर वचन हुवा छेद ॥ ५ ॥ काठीधरे पूछ्यो वामणा, कहोजी स्वरूप तुम देव ॥ द्विज बोल्यो नाइ आवीयो, जाचवाने बलि देव॥ ६ ॥ हुं नीखारी ब्राह्मणो, अमने मेलवो नूप ॥ रखवाले जइ विनव्युं, वामन कह्युं स्वरूप ॥ ७ ॥ बलि आव्या वामन कने, वेद सुणी हरख्यो चित्त ॥ कर जोमीने बलि नणे, मागो वंछित वित्त ॥ ८ ॥ देश गाम मागो घणां, मागो मंदिर कलत्र ॥ गाय नेंस मागो डूक्ती,गज रथ घोमा छत्र ॥ ए ॥ मणि माणिक मोती घणां,नू कनक रूपुं फार॥ शुक नणे सांनल बलि, विप्र नहीं ए सार ॥ १०॥

ढाल तेरमी.

वीर वखाणी राणी चेलणाजी—ए देशी.

वामन रूप धरी केशवोजी, कपट करी मागे दान ॥ छेतरशे तुने छल करीजी, जजमान गइ तुज सान ॥ सूरिजन सांजलजो कथाजी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दान म देजो एहनेजी, मानो अमारो तमे बोल ॥ बलि बोल्या मम बोलनोजी, शुक्र तमे नवी जाणो तोल ॥ सू० ॥ २ ॥ वासुदेव जाचक थइ आवीयाजी, धन धन मुज अवतार ॥ जे जोइए ते मागो वामणाजी, राज रिद्धि आपुं अपार ॥ सू० ॥ ३ ॥ वामन वाडव बोलीयोजी, मारे नहीं बहु काज ॥ मढली करवाने कारणेजी, त्रिण क्रम द्यो महा-राज ॥ सू० ॥ ४ ॥ आणी उदक कोरे करवमेजी, दान दीए बलि सार ॥ जाचक मोटा श्रीकंठनेजी, हस्त मांहीं धरे जलधार ॥ सू० ॥ ५ ॥ नालुउं शुक्रे रुंधीउंजी, डाज घाली फोड्युं नेत्र ॥ दानव गुरु काणो हुउंजी, स्वस्ति कह्यो द्विज मित्र ॥ सू० ॥ ६ ॥ नारायण अंग वधारीयोजी, ब्रह्मलोके लाग्यो शरीर ॥ जूमि सघली जरी बेहु क्रमेजी, एक क्रम मागे ते धीर ॥सू०॥ ७ ॥ बलि राजाए पुंठ धरीजी, वचन राखवाने काज ॥ वैकुंठे पग मूक्यो त्रीजोजी, चांपवा लाग्यो बलि राय ॥ सू० ॥ ८ ॥ तुष्टमान हुवा जग-

धणीजी, सेवकने सुख थाय ॥ वामन रूप करी आवीयाजी, जय जय हुवा जग मांय ॥ सु० ॥ए॥ तुठ्या तो आपो दामोदराजी, सेवावरती थाउं सार ॥ मुज किंकरपणुं तमे करो जी, काठी धरी रहो वार ॥सु०॥१०॥ महा विष्णु सेवक थयाजी, काठी धरी रह्या हाथ ॥ वचन वांध्या डुःखीआ थयाजी, कष्ट पाम्या जगनाथ ॥सू० ॥ ११ ॥ दीवालीए ठाण तणोजी, बलि राणो करे लोक ॥ गोयर घरघर थापीएजी, कृष्ण तणां करी फोक ॥ सू० ॥ १२ ॥ वेद पुराणे कथा कहीजी, विप्र जाणो तुमे नेद ॥ खोटुं के साचुं होयेजी, कहो विचारी वेद ॥सू०॥ १३ ॥ विप्र वचन वलतुं कहेजी, खोटुं नहींय लगार ॥ वेद पुराणे नाखीयोजी, सत्य वचन तुम सार ॥ सू० ॥ १४ ॥ मनोवेग वली बोलीयोजी, सांनलो विप्र सुजाण ॥ लोककथा कहुं एक नलीजी, मधुरी सुललित वाण ॥ सू० ॥ ॥ १५ ॥ दक्षिण देश मांहे नलोजी, गाम ते वसे कच्छ नाम ॥ श्रीपुरजी सुचिकार ठे तिहांजी, नामो सुत सह काम ॥ सू० ॥ १६ ॥ श्रीपुरजी हरिनक्त हवेजी, विष्णु देहरे नित्य जाय ॥ पंचामृत थाली करीजी, तेह विण अन्न न खाय ॥ सू० ॥ १७ ॥ श्रीपुरजी परगाम चालतांजी, नामा सुतने देइ शीख ॥ दामोदर देहरे जाजे सहीजी, जेम तुज टले नवनीख ॥ सू० ॥ १८ ॥ पंचामृत नोजन देजोजी, एम कही चाल्यो

गाम ॥ दूध लइने नामो गयोजी, हरिनुं उचरे नाम ॥ सु० ॥ १९ ॥ दूध लइने मुख आगलेजी, कहे पीयो नारायण देव ॥ पाषाण बिंब बोले नहींजी, बालक रडे पडे खेव ॥ सू० ॥ २० ॥ तव हरिने दया उपनीजी, दूध पीधुं ततकाल ॥ पहेले खंडे ढाल तेरमीजी, नेमविजय सुविसाल ॥ सू० ॥ २१ ॥

दुहा.

सुचिकार श्रीपुरजी, तेहनो सुत ततकाल ॥ तुठ्या नारायण नामाने, जगति जलो ए बाल ॥१॥ एक वार नामो जमे, जमतां चिंते ताम ॥ आवे नारायण इण समे, जाखरी आपुं राम ॥ २ ॥ ज्ञानदृष्टे करी जोइयुं, (नामो) जोये माहरी वाट ॥ श्वान रूप धरी आवीया, दीठो जाखर थाट ॥ ३ ॥ दोय चार मुखमां ग्रही, नाठा श्वान तिणे रूप ॥ नामो पुंठे धाइउं, ग्रही लेउं हरि जूप ॥४॥ आघा जइ रूप फेरव्युं, नामो गयो निज गेह ॥ नामो घर ठांये एकलो, विष्णु आव्या स्वयं देह ॥ ५ ॥ गोविंदे घर ठांइउं, (घर) ठेंडी नामे कीध ॥ पोली लइ हरि हरखीया, पोहोता वैकुंठ सिद्ध ॥ ६ ॥ विप्र सुणो तमे बुद्धिबला, नीच करम कीया देव ॥ पुराण वचन लोक वातथी, सत्य के जूठुं हेव ॥ ७ ॥ विष्णु उदर मांही जला, चौद ज्ञुवन रहे थेट ॥ बलि राजाए

किंकरी, मोटो हुवो केम पेट ॥ ८ ॥ माह्या थइ विचारजो, गर्धव अश्व न होय ॥ पुरुष नारी केम संभवे, विप्र विचारी जोय ॥ ९ ॥ चौद भुवनपति जे कह्यो, ते केम वामन वास ॥ दीन भीखारी बांभणो, बलि जाच्यो थइ दास ॥ १० ॥

ढाल चौदमी.

हमिरीया तारा ने मारा टोडीया, चरता एकण नाल—ए देशी.

लोक प्रसिद्ध वली सांभलो, दामोदर थया श्वान ॥ सनेही ॥ नामा सुइनी भाखरी, लेइ नाठा भगवान ॥ सनेही ॥ सूरिजन सांभलजो कथा ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ घर ठायो नामा तणो, पोली आपी कान ॥ स० ॥ नीच करम नहीं ए थकी, विचार करो सावधान ॥ स० ॥ सू० ॥ २ ॥ दोय वानां नवि संभवे, मुज माता एह विध्य ॥ स० ॥ नारी बेटा घर घणां, ब्रह्मचारी काछबंध ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ परनारी चंद्रावली, राधा गोवालणी जेह ॥ स० ॥ भोगवी स्त्री गोवालणी, न्यायवंत किम तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ सिद्ध स्वरूपी जे हवा, ते किम धरे अवतार ॥ स० ॥ पहेलो अवतार मच्छ तणो, संखाशूर संहार ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ बीजो अवतार कच्छनो, कैटभ मार्यो ताम ॥ स० ॥ भव त्रीजो वाराहनो, दाणव मार्यो ठाम ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ चोथे नरसिंह

अवतर्या, हिरणकश्यपनो नाश ॥ स० ॥ पांचमे वामन रूप लीयो, बलि चांप्यो भूमि पास ॥ स० ॥ सू० ॥ ७ ॥ फरसराम छठे सुणो, सहसार्जुन फेड्यो ठाम ॥ स० ॥ सातमे राम हुवो भलो, रावण टाल्युं नाम ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥ केशव आठमे अवतर्यो, जरासिंध हण्यो कंस ॥ स० ॥ अढार क्षोणी दल रण हण्यो, क्षय कर्यो जादव वंश ॥ स० ॥ सू० ॥ ९ ॥ नवमो बोध भवांतरे, म्लेच्छ मांही कीधो व्याप ॥ स० ॥ दशमे कलंकी राजीउं, जननी चंडालणी द्विज बाप ॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ एकाकार करी घणुं, अचरावे अनाचार ॥ स० ॥ देव निरंजन जे हवा, ते केम लीये अवतार ॥ स० ॥ सू० ॥ ११ ॥ घृत जेम दूध ते नवि थाये, सिद्ध संसारी न होय ॥ स० ॥ पाको धान मही नवि उगे, सिध्यो जीव तेम जोय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ पाषाण मथी सोनुं काढीयुं, ते केम पत्थर थाय ॥ स० ॥ कर्म हणी जे सिद्ध हुवा, ते केम पुद्गल पाय ॥ स० ॥ सू० ॥ १३ ॥ देव दयाल नर जे कह्या, केम करे जीव संहार ॥ स० ॥ राग द्वेष मद मच्छर नहीं, दैत्यने किम ते मार ॥ स० ॥ सू० ॥ १४ ॥ नारी विजोग पड्यो रामने, सीता सीता पोकार ॥ स० ॥ नर तरु पशुने पूछे घणुं, दरशन होशे मुज नार ॥ स० ॥ सू० ॥ १५ ॥ सर्वज्ञ ते जाणे सहु, पूछे बीजाने केम ॥ स० ॥ चौद भूवन मुख मांहि छे, चढे केम लंका जेम

॥स०॥ सू० ॥ १६ ॥ विप्र विचारो देवनां, लक्षण कहीए संखेव ॥ स०॥ सिद्ध स्वरूपी जे होये, तेहने ए नहीं टेव ॥ स० ॥ सू० ॥ १७ ॥ दूध मांहि घृत रस रहे, विश्वानल काष्ठ मांहि ॥ स० ॥ तिल मांहे तेल जिम रहे, जीव कलेवर आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥ १८ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तणा, जे कह्या पालणहार ॥ स० ॥ लख चोराशी फेरीने, नावे नर अवतार ॥ स० ॥ सू० ॥ १९ ॥ ध्यान शुकल मन ध्यावतां, मुगति रमणी होये हाथ ॥ स० ॥ पहेले खंडे ढाल चौदमी, नेम कहे सांभलो साथ ॥ स० ॥ सू० ॥ २० ॥

दुहा.

रूप रस गंध वरण नहीं, जदादिकादि नांहिं ॥ जेह निरंजन नित्य छे, ज्ञानमय थाये त्यांहिं ॥ १ ॥ ते विष्णु सदाशिव भणी, ते किम कहीए देव ॥ अवर अज्ञानी जे नरा, तेहनी करे छे सेव ॥ २ ॥ नाम मात्र जे उपन्या, गुण अवगुण जे होय ॥ बुद्धि विना केम उपजे, सुणो वात सौ कोय ॥ ३ ॥ वलतो उत्तर केम होये, विप्र तणां मन भंग ॥ हाथ जोडी प्रणिपति करी, कहे सहु अनुषंग ॥ ४ ॥ वाद करंता हारीया, जीत्या तमे वेहु भाय ॥ कथा कहो कोइक नवी, सांभलवा होंश थाय ॥ ५ ॥ मनोवेग बोल्यो तिहां, संखेपे कहुं एक ॥ गणेश विचार विवरी करी,

ब्राह्मण सुणो विवेक ॥ ६ ॥ नीच उंच कर्मो कर्या, ब्राह्मण सुणजो मर्म ॥ धूरथी मांमीने कहुं, ए देवमां श्यो धर्म ॥ ७ ॥ गौरी नंदन गणपति, सकल देवमां सार ॥ प्रथम विनायक सहु जपे, विघन हरे नर नार ॥ ८ ॥ गजवदन गिरुउ अछे, डुंदालो दीदार ॥ मूषक वाहन शुजगति, पाय घुघरी घमकार ॥ ए ॥ सिद्धि नामे नारी छे, लक्ष लाज वली देय ॥ मोटा मोदक आपे सही, कुटुंब मागे सहु तेय ॥ १० ॥ महीमां मोटो देवता, सुर नर सारे सेव ॥ प्राणीनां विघन हरे, काम करे ततखेव ॥ ११ ॥ विवाह कामे पूजीए, (घर) हाट वखारे तेह ॥ गणपतिने संजारीए, अवसर आवे एह ॥ १२ ॥

ढाल पंदरमी.

मीहरीया मन लाग्यो–ए देशी.

रावण विमासे मन इस्युं, आराधन करुं देवरे ॥ साजन सांजलो ॥ विनायक आवे जो इहां, विघन जांजे सहु देवरे ॥ सा० ॥ १ ॥ प्रपंच रची साधुं एहने, पछी सुर नर साधुं जेहरे ॥ सा० ॥ किंबहुना गणेश साधीउ, बंधीखाने घाल्यो तेहरे ॥ सा० ॥ २ ॥ विघनराजे हाथ जोमीया, विनवीयो रावण रायरे ॥ सा० ॥ काज तमारां स्वामि हुं

करुं, अहनीश सेवुं पायरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ रावणे मूक्यो विनायक जणी, रासन चरावो हेवरे ॥ सा० ॥ काठी जारो लेता आवजो, दातरडुं कोहाडो देवरे ॥ सा० ॥ ४ ॥ रासन चारे रावण तणा, नीच करम करे नित्यरे ॥ सा० ॥ जारो लेइ मस्तक प्रते, रासन हांके एणी रीतरे ॥सा० ॥५॥ खरू कापी जारो करे, अणजपरूतो लीए शिशरे ॥ सा० ॥ आणी चारे रासन जणी, करम जोगवे निशदिशरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ रासन राख्या नवी रहे, वाडि कांखरनी करे तामरे ॥ सा० ॥ विघनराज करणी करे, पाप तणुं फल आमरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ करम करे देव एहवां, तो अमने श्यो दोषरे ॥ सा० ॥ विचार संखेपे करी कह्यो, ब्राह्मण राखजो संतोषरे ॥ सा० ॥८॥ मनोवेग तव बोलीयो, सांजलो बाऋव वातरे ॥ सा० ॥ खोटुं के में साचुं कह्युं, उत्तर देजो ज्रातरे॥ सा० ॥ ए ॥ विप्र वचन वलतां जण्या, सत्य वचन तुमे जायरे ॥ सा० ॥ वेद पुराणे एम कह्युं, ते अम केम लोपायरे ॥ सा० ॥ १० ॥ मित्र वदन अवलोकीयुं, सामुं जोयुं तामरे ॥ सा० ॥ समस्या करीने आवीया, पूरवले वन ठामरे ॥ सा० ॥११॥ पवनवेग प्रतिबोधवा, मनोवेग कहे साररे ॥ सा० ॥ पूर्वापर विरोध नहीं, जैनसूत्रे सुविचा-

रे ॥सा०॥१२॥ मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग तुमे साररे ॥सा०॥ नारायणउत्पत्ति कहुं, जैनशासननो विचाररे ॥सा०॥१३॥ सुखम सुखम पहेला जएयो, बीजो सुखमज कालरे ॥सा०॥ सुखम डुखम त्रीजो सुएयो, डुखम सुखम सुविशालरे॥सा०॥१४॥पांचमो डुखम दोहीलो, दुखम डुखम विकरालरे ॥सा०॥ नाम तेहवां परिणाम बे, चडतो पमतो बे कालरे ॥सा०॥ १५ ॥ सुखम डुखम अंते अवतर्या, आदिनाथ जवताररे ॥सा०॥ तेहनो पुत्र जरतेसरो, प्रथम जिन चक्री ते साररे ॥सा०॥ १६ ॥ चोथे काले त्रेवीश हुवा, तीर्थंकर गुणधाररे ॥ सा० ॥ अजितादि ए जाणजो, महावीर अंतिम साररे॥सा०॥ १७ ॥ जरतादिक ब्रह्मदत्त लगे, चक्री द्वादश जाणरे ॥ सा० ॥नव नारायण निरमला, त्रिपिष्ट आदि सुख खाणरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ हयग्रीव आदे जरासंध ये, पर्यंत नव ए होयरे ॥ सा०॥ प्रतिनारायण चक्रधरा, अढार अधोगति जोयरे॥ सा० ॥१९॥ विजय हलधर धूरे कह्यो, अंते महापद्म नामरे ॥सा०॥ नव बलजद्र बलवंत जला, ऊर्ध्वगामी अजिरामरे॥ सा० ॥ २० ॥ त्रिषष्टि पुरुष ए रुयडा, जव्य जीव जवताररे ॥ सा० ॥ पन्नरमी ढाल पहेला खंमनी, नेमविजय निरधाररे ॥ सा० ॥ २१ ॥

दुहा.

कह्या महापुराणमां, सुणजो त्यां विस्तार ॥ विचार कहुं हवे वर्णवी, निश्चय करी निरधार ॥ १ ॥ नुमानी वली स्थिति कहुं, निरंजन कहे मूढ लोक ॥ पूर्वे नवे वहु परे जम्यो, निर्नामिक हुउं सोक ॥ २ ॥ दुःखे दीक्षा आचरी, राज रिद्ध देखी ताम ॥ निदान बांध्यो निर्नामिके, स्वर्ग लह्यो सुखठाम ॥ ३ ॥ तिहां थकी चवी करी, वसुदेव देवकी चंग ॥ कुखे आवी अवतर्यो, कृष्ण हुउं उत्तंग ॥ ४ ॥ त्रण खंड साध्या जला, सेवे सुर नर राय ॥ न्यायवंत दामोदरो, परनारी सहु माय ॥ ५ ॥ लाख वेंतालीश रथ जला, तेटला गजवर सार ॥ नव कोड घोडा हणहणे, जोगवे त्रिखंड मोरार ॥ ६ ॥ सोल सहस्र राणी जली, तेहशुं सुख विलास ॥ लोक लंपट लंपट लवे, परनारीशुं निवास ॥ ७ ॥ तेटला जूप सेवा करे, सुर किंकर ठे सार ॥ राज रिद्ध केशव तणी, कहेतां न लहुं पार ॥ ८ ॥ आवती चोवीशीए जलो, अरिहंत होशे देव ॥ पंच कल्याणकनो धणी, सुर नर करशे सेव ॥ ए ॥ पवनवेग तुमे सांजलो, वलि वंधन विचार ॥ जिनवाणी ठे रुअडी, संखेपे कहुं सार ॥ १० ॥

ढाल सोलमी.

रंग मोहोलमां राधिका, मुखकमल निहाले ॥ दरपण लेइ मुख देखती, सीणगार संभाले—ए देशी.

मालव देश मांहिं भली, नयरी उजेणी तेह ॥ श्रीब्रह्मा राज करे तिहां, श्रीमती राणी जेह ॥ १ ॥ चार मंत्री चतुर भला, बलि बृहस्पति प्रव्हाद ॥ नमुचि मिथ्याते आगलो, जैनशुं करे बहु वाद ॥ २ ॥ गोख उपर बेठा थका, जाता दीठा लोक ॥ नरपति मंत्रीने कहे, किहां जाय छे ए थोक ॥ ३ ॥ बलि प्रधान तव बोलीउं, सांभल स्वामी राय ॥ श्रावकलोक अति घणा, साधु वंदण जाय ॥ ४ ॥ श्रीब्रह्मा नृप हरखीयो, जतिवर वांदण जाय ॥ चार मंत्री साथे लीया, परिवार पार न पाय ॥ ५ ॥ प्रथम कथा तुमे सांभलो, उजेणी वन मांहे ॥ अकंपनाचार्य आवीया, सातसें मुनि छे सहाए ॥ ६ ॥ ज्ञानी गुरु ते अति भला, शिख दीये मुनिराय ॥ जो राजपुरुषशुं बोलशो, तो विघन होशे एणे ठाय ॥ ७ ॥ गुरु वचन मनमां धर्यां, धरी ध्यान तेणे ठाम ॥ राजा तव तिहां आवीयो, मुनि वांद्या नृपे ताम ॥ ८ ॥ ते साधुने बोलावीया, उत्तर वलतो न दीध ॥ ढोर अज्ञानी बापडा, मंत्रीए निंदा कीध ॥ ९ ॥ राजा तव पाछो वल्यो,

आव्यो नगर मोझार ॥ श्रुतसागर मुनि भेटीया, विद्या तणोरे भंडार ॥ १० ॥ दुष्ट वाक्य मंत्री बोलीया, वाद कीधो तिहां सार ॥ विप्र चार हरावीया, मान खंड्युं तेणी वार ॥ ११ ॥ नरपतिए निभ्रंछीया, एके हराव्या आज ॥ मुरखा गर्व न आणीए, करो न एवां काज ॥ १२ ॥ झखवाणा पडी गया, नीचे जुवे निज पाय ॥ कृष्ण वदन तेहनां हुआं, मारवा कीधो उपाय ॥ १३ ॥ ब्राह्मण वादे हरावीया, गुरु आगे कहे वात ॥ आचार्य त्यां तव बोलीया, मुनिवरनो होशे घात ॥ १४ ॥ श्रुतसागरे गुरु पूछीया, विघन किम दूरे जाय ॥ गुरुजीए तव भाखीयुं, वादस्थानके तुमे जाय ॥ १५ ॥ ध्यान धरजो रुयडो, उपसर्ग जाशे तेम ॥ सांभलीने मुनि तिहां गयो, कायोत्सर्ग रह्यो जेम ॥ १६ ॥ चार मंत्री तिहां आवीया, खड्ग काढी ते वार ॥ चारे जण एक घा करे, खील्या जक्षे ते सार ॥ १७ ॥ सूर्योदये तिहां आवीया, लोक तणां वली वृंद ॥ फट फट भुंडा सहु भणे, पाप तणां एह कंद ॥ १८ ॥ राजा तव तिहां आवीयो, गाल दीए अघोर ॥ ध्यान पारी मुनि बोलीयो, उखेलो एह चोर ॥ १९ ॥ राजाए दंडी करी, खर रोहण वली कीध ॥ विगोइने काढीया, देसोटो तिहां दीध ॥ २० ॥ पहेला खंडनी सोलमी, ढाल कही सुविसाल ॥ नेमविजय कहे सांभलो, आगल वात रसाल ॥ २१ ॥

दुहा.

अपर कथा तुमे सांजलो, संखेपे कहुं सार ॥ हस्तीनागपुर रुयडो, उत्तर देश मोकार ॥ १ ॥ मेघरथ नृपति जलो, पदमावती जरतार ॥ पदम लघु विष्णु वडो, पुत्र बेहु बे उदार ॥ २ ॥ मेघरथ विष्णु मुनि हुवा, पदमरथ आपी राज ॥ चारित्र पाले रुअमो, बेहु करे आतम काज ॥ ३ ॥ गजपुरमां तव आवीया, द्विज मंत्री ते चार ॥ राजाने जइ जेटीया, दान मान दीधां सार ॥ ४ ॥ मंत्रीपद आप्यां जलां, सुख पाम्या ते चार ॥ सिंहवली शत्रु तेह तणो, देश उजाम्री अपार ॥ ५ ॥ राजाने चिंता घणी, दिन दिन अंगे खीण ॥ मंत्रीए तव पूढीउं, शरीर दीसे कां हीण ॥ ६ ॥ पदमरथ राजा कहे, सुणो तमे बलि प्रधान ॥ सिंहवली वयरी अम अछे, तेणे करी नहीं सुख मान ॥ ७ ॥ आदेश लइ नृपति तणो, प्रधाने कर्यो प्रयाण ॥ सैन्य सुजट निज सज करी, बलि मंत्री बुद्धिजाण ॥ ८ ॥ सबल संग्राम तिहां जइ कीयो, शत्रु कटक हुवो जंग ॥ सिंहवलीने बांध्यो तदा, पाम्या जय जय रंग ॥ ए ॥ वयरी बांधी आणीने, जेट रायने कीध ॥ पदमरथ आणंद हुउं, बलिने वरदान दीध ॥ १० ॥ वलतो मंत्री बोलीयो, सांजलो श्रीमहाराज ॥ मागुं त्यारे आपजो, वर आवे मुज काज ॥ ११ ॥

नरपतिए तव हा नणी, वलि हवो हरख अपार॥ सुखन्नर राज्य करे सदा, अवर कथा कहुं सार ॥ १२ ॥

ढाल सतरमी.

यतनीनी देशी.

हस्तीनागपुर वन मांहे, अकंपनाचार्य आव्या त्यांहे ॥ सातसें मुनिवर वे साथे, विद्या तणी बहु आथे ॥ १ ॥ वलि मंत्री तेडने देखी, वयर नावे पूरव लेखी ॥ पदमरथ राय पासे आवी, विनति करे तिहां समजावी ॥ २ ॥ वर आपो अमने आज, दिवस सातनुं आपो राज ॥ काज सारो अमारुं प्रभुजी, तुम विना कोण वीजो विभुजी ॥ ३ ॥ राजाए तव वर आप्यो, राजभार तेहनो थाप्यो ॥ पापी कूड कपट मन मांहीं, धरी सहीये क्रोधातुर तांहीं ॥ ४ ॥ वाड करी मुनिने वींट्या, साधुने घणुंए आपेट्या ॥ नरमेध जगन जाग मांड्यो, जति कारण वीजो काम छांड्यो ॥५॥ जलचर ने थलचर जीव, नन्नचर ते पाकतां रिव ॥ वेद पाठक ब्राह्मण आव्या, घणुं उजमाल थइ मन नाव्या ॥ ६ ॥ जीव हणवा वारुव मलीया, हवन करवा हरखमां नलीया ॥ चरम अस्थि लेइ शिर नाखे, मुनि उपर सहु मली थांखे ॥ ७ ॥ एहुं

नाखे अति घणुं विप्र, रेवणी करे धुम्र गोटे विप्र ॥ एहवा उपसर्ग करी संतापे, तोही मुनि चुके नहीं जापे ॥ ७ ॥ अवर वात कहुं एक एहवी, पवनवेग सुणो तुमे जेहवी ॥ मेघरथ विष्णुकुमार, गिरि उपर तप करे अपार ॥ ए ॥ श्रवण नक्षत्र आकाशे कंपे, विष्णु मुनि गुरु प्रते जंपे ॥ कहो स्वामि नक्षत्र कंपे, कुण कारण एह अजंपे ॥ १० ॥ अवधिज्ञानी मुनि एम बोले, गजपुरने नहीं कोइ तोले ॥ तिहां मुनि बेठा ध्यान थापी, उपसर्ग करे विप्र पापी ॥ ११ ॥ तिण कारण कंपे श्रवण, विष्णु कहे उपाय कवण ॥ मेघरथ मुनि जाणे शिष्य, वच्छ ब्राह्मणने देशुं शीख ॥ १२ ॥ वैक्रियलबधि करो सार, वामन रूप धारो निरधार ॥ मुनिवरनां जतन करो जाइ, वेगे करो एहनी सजाइ ॥ १३ ॥ फोरवी ततक्षण लबधि, उत्पत्ति जाए केइ उदधि ॥ गजपुर नगरमां आव्यो, पदमरथ रायने नमाव्यो ॥ १४ ॥ वर आप्यो हतो तमे तेहने, घणुं शुं कहुं जाइ तुमने ॥ मुनिवरनो मांड्यो घात, थाशे तेहथी घणो उतपात ॥ १५ ॥ पदमरथ कहे सुणो जाइ, वचन पाळुं अमे नवी थाइ ॥ कोइ करो तमे उपाय, तेथी विघन सवे वली जाय ॥ १६ ॥ विष्णु चाल्यो मंरूप देश, वामन विप्रनो धर्यो वेष ॥ दर्न डुर्वा जनोइ कंठ, पहेरी धोती ने हाथमें लंठ ॥ १७ ॥ वेदनी ध्वनि उचरे मुख, विप्र

सांजली पामे सुख ॥ बलि राजा हयडे हरखी, वामन रूप नजरे परखी ॥ १८ ॥ वामन वांधो पगीने पाये, विनति करे कर जोमी तांये ॥ जे जोइए ते मागो स्वामि, मुज पासे अंतरजामी ॥ १९ ॥ वामन विप्र बोल्या ताम, मुज नहीं नृप लोजे काम ॥ त्रण क्रमनी नूमि जरी आपो, मठ वांधवा सारुं थापो ॥ २० ॥ वलतुं बलि बोले एहवुं, विप्र कहो माग्युं केहवुं ॥ मागोने कोइ राज नंमार, घोमा हाथी वृषन अपार ॥२१॥ विप्र कहे सुणो महाराज, अवर मारे ठे नहीं काज ॥ क्रम त्रण मठ करवाने, मही मांहि नूमि नरवाने ॥२२॥ पात्र लेइ कर दीए धार, स्वस्ति दान दीधुं तेणी वार ॥ मुनिवरे वधार्यो अंग, अति घणो देखी थया नंग ॥२३॥ प्रथम पाय ठव्यो ज्यां मेर, मानुषोत्तर वीजो ठेर ॥ पाय त्रीजानो नहीं ठाम, विष्णु कोप्यो बोले ताम ॥ २४ ॥ बलि बांधी पूठे पाय दीधो, सुर नर मली जय जय कीधो ॥ हाथ जोडीने मुनिवरने, कहे क्षमा करो स्वामि अमने ॥ २५ ॥ एह बंधन ठोमो स्वामि, क्रोध न कीजे गुणग्रामी ॥ उपशममें थया साधु, बलिबंधन ठोड्यो निरावाधु ॥ २६ ॥ विष्णुने सहु लाग्या पाये, मंत्रीए धर्म आचर्यो ध्याये ॥ समकित लीधुं सहु लोके, जिनधर्म पाले जन थोके ॥ २७ ॥ श्रावकव्रत बलिए लीधां, मुनिवर वांदे सुख सीधां ॥ पद्मरथ राजाए आण्यो

नाव, मुनि वांदीने सेजे जाय ॥२८॥ विष्णुकुमार वाठल्य कीधो, सातसें मुनि रक्षण लीधो ॥ राखमी बांधे लोक तेथी, बलेवनो दिन कह्यो एथी ॥२९॥ विष्णुकुमार गुरु कने जाइ, लीधो प्रायश्चित व्रत धाइ ॥ निरमल नाव धरीने साधे, क्रिया तप जप ज्ञान ते लाधे ॥३०॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांनलो, पवनवेग विवेक ॥ जिनशासन महीमां खरो, के मिथ्या धर्म ठेक ॥ १ ॥ पवनवेग बोल्यो तुरत, निश्चय करी सुख ठाम ॥ सत्य वचन तुमे जे कह्यां, रही तुमारी माम[1] ॥ २ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुनविजय कवि शिष ॥ नावविजय नावे करी, नमुं तेहने निशदिश ॥ ३ ॥ सिद्धिविजय शिष्य तेहना, रूपविजय कविराय ॥ कृष्णविजय कर जोडीने, रंगविजय रंग लाय ॥ ४ ॥ पहेलो खंड पूरो थयो, सतरे ढाले करी सत्य ॥ नेमविजय कहे नेहथी, श्रोता सुणो एक चित्त ॥५॥

इति श्री विष्णुवाद, ब्रह्मविवाद, गणेशोत्पत्ति नीच करमाचरणे,

प्रथमोल्लास प्रथम खंम संपूर्ण

---

१ लाज, शोना.

खंड २ जो.

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुम भाय ॥ विप्र पुराणनी वारता, पूर्वापर चित्त लाय ॥१॥ विरोध घणां हुं दाखवुं, अघटतां असत्य तेह ॥ सांभलतां थाशो खुशी, एमां नही संदेह ॥ २ ॥ पवनवेग कहे तुमे, जोइ शास्त्र विचार ॥ शिघ्र भाइ मुज दाखवो, विनोद तणो भंडार ॥ ३ ॥

ढाल पहेली.

लाख चोराशी रथ भला ए, तेहना वृषभ धोरी सुकुमाल—ए देशी.

विद्या प्रभावे बेहु जणे ए, भील तणुं रूप कीध ॥ साजन सहु सांभलो ए ॥ कृष्ण वरण बीहामणा ए, धनुषबाण कर लीध ॥ सा० ॥ १ ॥ मस्तक केश छे बाबरा ए, चोपडा नाक वली मुछ ॥ सा० ॥ रातां नेत्र गुंजा समां ए, दांत लांबा होठ भूंछ ॥ सा० ॥२॥ कठिण हैया करकस देही ए, फुक वेला शिर भार ॥ सा० ॥ मयूर पिंछ घरेणां धर्या ए, लोह कंकण गुंजाहार ॥ सा० ॥ ३ ॥ विद्यावल मंजार कर्यो ए, घट मांही देइ धर्यो

तेह ॥ सा० ॥ काने बुचो कालो घणो ए, लेइ चाल्या नर बेय ॥ सा० ॥ ४ ॥ ब्रह्मशाला उत्तर दिशे ए, भील आव्या दोय ताम ॥ सा० ॥ घंटानाद भेरी ताकीने ए, बेठा सिंहासन ठाम ॥ सा० ॥ ५ ॥ नाद सुणी विप्र आवीया ए, वाद करीशुं अपार ॥ सा० ॥ वचन खंडशुं तेह तणां ए, जीतीने कुटशुं ते वार ॥ सा० ॥ ६ ॥ देखीने वाडव कोपीया ए, रेरे अधम नर तिम ॥ सा० ॥ सिंहासन चोव्या तुमे ए, भेर वजाडी किम ॥ सा० ॥ ७ ॥ अघट काम कर्युं घणुं ए, आव्या कहो कोण काज ॥ सा० ॥ मनोवेग तव बोलीयो ए, सांभलो तमे द्विजराज ॥ सा० ॥ ८ ॥ मीलडो वेचवा आवीया ए, पुलिंदे अमारी जात ॥ सा० ॥ विप्र वचन वलतो भणे ए, जुओ जुओ मूर्खनी वात ॥ सा० ॥ ए ॥ लंठ मोटा महा रंडना ए, घंटानाद कियो जेण ॥ सा० ॥ विप्रशुं वाद कर्या विना ए, बेठा सिंहासन तेण ॥ सा० ॥ १० ॥ मनोवेग भणे सांभलो ए, विप्र म धरशो रोष ॥ सा० ॥ भेर घंटारव अमे कर्यो ए, विनोद कारण नहीं दोष ॥ सा० ॥ ११ ॥ जो तुमने बेठा नवी गमे ए, तो उतरी बेसुं हेठ ॥ सा० ॥ क्षमा करो द्विज तुमे भला ए, हर्ष धरी चित्त ठेठ ॥ सा० ॥ १२ ॥ विप्र भणे सुण भील-

१ भील.

डा ए, मिंजारना गुण केत ॥ सा० ॥ मनोवेग कहे सांजलो ए, मुज मिंजार गुण एत ॥ सा० ॥ १३ ॥ एह शरीर गंध विस्तरे ए, बार जोयण परिमाण ॥ सा० ॥ मूषक नावे त्यां लगे ए, ए अपूरव गुण जाण ॥ सा० ॥ १४ ॥ सांजलीने विप्र हरखीया ए, मांहो-मांहे बोले ताम ॥ सा० ॥ लीजीए मीनडो रुयडो ए, तो सरे सहुनां काम ॥सा०॥१५॥ आपणे गाम उंदर घणा ए, हाण करे कणसूल ॥ सा० ॥ वेचातो लीजे मीनको ए, जील कहो तुमे मूल ॥ सा० ॥ १६ ॥ एह मीनो अमे लेयशुं ए, सत्य वचन जाखो सार ॥ सा० ॥ मनोवेग कहे सांजलो ए, एहनो मूल साठ दीनार ॥ सा० ॥ १७ ॥ विप्र सहुए विचारीयुं ए, मूल थोडो मिंजार ॥ सा० ॥ एटलो जान एक दिवसे होये ए, मूषक करे घरबार ॥ सा० ॥ १८ ॥ एक कहे मूज धोतीयां ए, एक कहे नारी घाट ॥ सा० ॥ चीर साको फाको उंदरे ए, एक कहे खएयुं हाट ॥ सा० ॥ १९ ॥ एक कहे करड्यां कापडां ए, एक कहे खाधां धान ॥ सा० ॥ एक कहे पग दोय तणा ए, अंगुलीये वही वान ॥ सा० ॥ २० ॥ एम कही मलीया सहु ए, एकेक लीधो दाम ॥ सा० ॥ साठ सोनैया जोकीया ए, आव्या शालाए ताम ॥ सा० ॥ २१ ॥ वाकव कहे जीलका

---

१ पाक.

सुणो ए, द्रव्य लइ आपो मीन ॥सा०॥ मनोवेग कहे परीक्षा करी ए, लेउं पछे कहेशो हीन ॥ सा० ॥ २२ ॥ एक कहे साचुं सही ए, घट मांहीथी काढ्यो तेह ॥सा०॥ द्विज सहुए मीनो नीरखीउं ए, बुचो रुधिर ज्रयों देह ॥ सा० ॥ २३ ॥ विप्र ज्रणे सुण जीलमा ए, मीनमो बुचोसें कान ॥ सा० ॥ रुधिरालो दीसे वली ए, कहो कारण गुणवान ॥ सा० ॥ २४ ॥ पहेली ढाल बीजा खंडनी ए, रंगविजय कविराय ॥ सा० ॥ तस शिष्य नेमविजय कहे ए, वात सुणो चित्त लाय ॥ सा० ॥ २५ ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांजलो, वनवासी अमे जील ॥ अपूरव दीठो मीनमो, लीधो जाणी गुण मील ॥ १ ॥ पाली पोषी मोटो कर्यो, द्रव्य जोइए छे आज ॥ घटमां घाली मीनमो, आव्या वेचवा काज ॥ २ ॥ जूमि घणी चाली करी, आव्या वाडव गाम ॥ दिवस गयो रजनी थइ, विश्राम रह्या एक ठाम ॥ ३ ॥ थाक्यो जूख्यो मीनडो, घट थकी काढ्यो दीन ॥ एक ठामे पमी रह्यो, निद्रा आवी खेद खीन ॥ ४ ॥ अमे सुता निद्रावशे, नीकली उंदर श्रेण ॥ सुतो दीठो मीनडो, मूषक मली करे केण ॥ ५ ॥ सबल शत्रु छे आपणो, दुःखीउं कीजे एह ॥ मोटो उंदर आवीयो, (मीनो) सुतो

दीठो तेह ॥ ६ ॥ कान दोय तेणे करमीया, बुचो थयो तिणी वार ॥ सांजली ब्राह्मण कोपीया, खोटो नील गमार ॥ ७ ॥ वार जोजन गंधे करी, उंदर नासे दूर ॥ तेना कान केम करडीया, निद्रा तणे जरपूर ॥ ८ ॥ एहवी अचेतन जेहने, डुर्गंध दीसे क्रूर ॥ तेहने कहो किम लीजीए, आजमीये केम जूर ॥ ए ॥ मनोवेग तव बोलीयो, सांजलो विप्र सुजाण ॥ एक दोष मंजारनो, अवर गुणनी खाण ॥ १० ॥ विप्र वदे ए केम घटे, आवण विणसे दूध ॥ स्नेह तूटे लोज स्वल्पथी, विचारी जुउ निज बुद्ध ॥ ११ ॥ सुगंधी वस्तुमां एक कली, लसण करे डुर्गंध ॥ गुण घणा शुं कीजीए, एक दोष टले बंध ॥ १२ ॥ मनोवेग कहे द्विज सुणो, जो कीजे वादनी वात ॥ मिंजार दोष हुं परहरुं, तो द्विज करे मुज घात ॥ १३ ॥ सत्य वचन मुज जापतां, लोक न माने आज ॥ कदाग्रही राजकुमर परे, केम कीजे द्विजराज ॥ १४ ॥

ढाल बीजी.

तुमे पितांवर पहेरी आव्याजी, मुखने मरकलडे—ए देशी.

सकल बाम्ब बोल्या वाणीजी, जाइ तुमे सांजलो ॥ पुलिंद तमे गुण खाणीजी ॥ १ ॥ कदाग्रही पुरुष ते केहवोजी ॥ जा० ॥ तेहनो गुण हतो जेहवोजी ॥ जा० ॥ वात सुणावो

ते अमनेजी ॥ ना० ॥ शाबाशी दीजे तमनेजी ॥ ना० ॥ २ ॥ वचन सुणी मनोवेगजी ॥ना०॥ कहे तुमे राखजो नेगजी ॥ना०॥ कथा सुणी रखे कोपोजी ॥ना०॥ वचन माहरो रखे लोपोजी ॥ ना०॥३॥ बगलाण देश मोझारजी ॥ना०॥ नंदरबार नगर उदारजी ॥ना०॥ नरपति नामे छे राजाजी ॥ना०॥ रूपिण राणीना गुण ताजाजी ॥ ना० ॥४॥ पुत्र हुउ जनम अंधजी ॥ना०॥ सहु कहे कुमार अंधजी ॥ना०॥ नाट नीखारीने तेहजी ॥ना०॥ शृंगार दान दीए एहजी ॥ ना० ॥ ५ ॥ नित नवां दीए आनरणजी ॥ ना० ॥ मंत्री विनवे जइ राय चरणजी ॥ ना० ॥ कुमार करे धन हाणजी ॥ना०॥ नंमारीने कहे तिण गणजी ॥ ना० ॥ ६ ॥ कुमारे माग्यां अलंकारजी ॥ना०॥ नंमारी कहे तिणी वारजी ॥ ना० ॥ आनूषण खुट्यां नंडारजी ॥ ना०॥ शुं आपुं तुमने कुमारजी ॥ ना० ॥ ७ ॥ अंध कुमरे तज्यां अन्नपानजी ॥ ना० ॥ डुमनो थइ सुतो एक थानजी ॥ नरपतिए सांनली वातजी ॥ना०॥ प्रधान तेमीने एकांतजी ॥ ना० ॥८॥ अम घर एकज पुत्रजी ॥ना०॥ तेह रुठ्यो नाखे जबूत्रजी ॥ना०॥ बुद्धिसागर मंत्री कहे तामजी ॥ना०॥ कुमर मनावुं हुं आमजी ॥ ना० ॥ ए ॥ मंत्रीए तेड्या सोनारजी ॥ना०॥ लोहना घमी आपो

१ प्रीति.

शृंगारजी ॥ ज्ञा० ॥ सोनीए घडीने आप्याजी ॥ ज्ञा० ॥ कुमरने हाथे जइ थाप्याजी ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ जोजन कराव्युं कुमारजी ॥ज्ञा०॥ मंत्री बोले तिणी वारजी ॥ ज्ञा० ॥ कुमर सुणो तुमे वातजी ॥ज्ञा०॥ जंकारमांथी काढ्या तुम तातजी ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥ एह शृंगार छे एहवाजी ॥ज्ञा०॥ विघन निवारे तेहवाजी ॥ ज्ञा० ॥ आपशो मां तुमे कोइनेजी ॥ज्ञा०॥ अमे अपायुं तुम जोइनेजी ॥ज्ञा०॥ १२ ॥ जे कोइ कहे लोहाजरणजी ॥ज्ञा०॥ तेहने मार देजो आवे मरणजी ॥ ज्ञा० ॥ कुमरे मान्यो तेहनो बोलजी ॥ज्ञा०॥ राख्यो मंत्रीनो तव तोलजी ॥ १३ ॥ लोक जणे ए अलंकारजी ॥ज्ञा०॥ लोढानां आपे निरधारजी ॥ ज्ञा० ॥ ताम कुमर करे तव रीसजी ॥ज्ञा०॥ लकुटी मारे तस शिशजी ॥ ज्ञा० ॥ १४ ॥ दुःखीआ थया सहु लोकजी ॥ ज्ञा० ॥ कदाग्रही नाम दीयो थोकजी ॥ ज्ञा० ॥ जेहवो हुउं तेहवो बोलजी ॥ज्ञा०॥ कदाग्रहीनी परे शो तोलजी ॥ १५ ॥ मनोवेग कहे सारजी ॥ ज्ञा० ॥ सत्य वचन निरधारजी ॥ ज्ञा० ॥ विप्र न मानो तुमे बोलजी ॥ज्ञा०॥ केम रहे अमारो तोलजी ॥ ज्ञा० ॥ १६ ॥ तुम तणां वेद पुराणजी ॥ज्ञा०॥ अरथ करतां करो जो हेराणजी ॥ज्ञा०॥ ते माटे केम कहेवायजी ॥ज्ञा०॥ अम तणी लाज लोपायजी ॥ ज्ञा० ॥ १७ ॥ जेणे आदर्युं काम वली जेहजी ॥ज्ञा०॥ ते जाणे

खरुं सही तेहजी ॥ ना० ॥ अतिमोही नर एक मूढजी ॥ना०॥ तेहनी कथा चित्त धरो गूढजी ॥१७॥ बीजा खंडनी ढाल कही बीजीजी ॥ना०॥ श्रोता सहु कहेजो जीजीजी ॥ ना० ॥ रंगविजय कविनो शिष्यजी ॥ना०॥ नेमविजय प्रणमे निशदिशजी ॥ १९ ॥

दुहा.

विप्र वचन तव बोलीया, सुणरे नील सुजाण ॥ कथा कहो अतिमोही तणी, सांन-लवा सावधान ॥ १ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, ब्राह्मण सुणजो सार ॥ कथा कहुं हुं रुयमी, विनोद तणो नंडार ॥ २ ॥ नमीयाम देशमां निरमली, नर्मदा नदी वहे सार ॥ दक्षिण तट तिहां गाममो, शामंत नाम अपार ॥ ३ ॥ लोक वसे तिहां रुयमा, धर्म करे अनिराम ॥ माधव मेहेतो अति नलो, अधिकारी तिण गाम ॥ ४ ॥ सुंदरी नारी तेह तणी, शीयलवंत गुणवंत ॥ ते बेहु जणथी पुत्र हुवो, सोनपाल नाम महंत ॥ ५ ॥ पुत्र प्रसुत हुवा पठी, माधव न गमे तेह ॥ सुंदरी रूप शुं कीजीए, जोवन नाठुं देह ॥ ६ ॥ शामंत गाम वसुदत्त वसे, सुरंगी नार सुचंग ॥ कुरंगी पुत्री ते तणी, रूप कला सुरंग ॥ ७ ॥ माधवे धन आपी घणुं, परणी कुरंगी नार ॥ जोवननर रलीआमणी, तेहशुं नेह अपार ॥ ८ ॥ काम कुतूहल करे घणुं, इंद्री लंपट तेह ॥

कुरंगीए अति मोहीयो, जोगवे जोग तस देह ॥ ए ॥ सेजे कुरंगी कुलक्षणी, अपर-शुं वांछे जोग ॥ कामे पीडी कामिनी, न मले तेने जोग ॥ १० ॥

ढाल त्रीजी.

कंत तमाकु परिहरो—ए देशी.

सुंदरीनां लक्षण जलां, शीलवंती शुज नार ॥ मोरा लाल ॥ पर नर दीठो नवि गमे, पाले शुद्ध आचार ॥ मो० ॥ १ ॥ सूरिजन सांजलजो कथा ॥ ए आंकणी ॥ सुंदरीनो शील नवी गमे, कुरंगी करेरे कुरंग ॥ मो० ॥ कोपे चडी नित्य कलकले, आप वखाणे अंग ॥ मो० ॥ सू० ॥ २ ॥ जरतारनो वली बल घणो, दीये अघटतां आल ॥ मो० ॥ सापण सरीखी फुंफुंए, मुख मोडी बोले गाल ॥ मो० ॥ सू० ॥ ३ ॥ सुंदरी मनमां खीमा धरी, उपशमे आणे अंग ॥ मो० ॥ अशुज कर्म कीधां में घणां, धर्म तणो कीयो जंग ॥ मो० ॥ सू० ॥ ४ ॥ कुरंगी कंथ आगल कहे, सांजलो स्वामि एकंत ॥ मो० ॥ वडी नारी तुम न रुयडी, अवगुणनो नहीं अंत ॥ मो० ॥ सू० ॥ ५ ॥ शोकनी वात कशी कहुं, कहेतां आवे मुज लाज ॥ मो० ॥ द्वेष माटे तुमे जाणशो, नहीं कहीए ते आज ॥ मो० ॥ सू० ॥ ६ ॥ माधव कोप्यो धडहड्यो, तेहना सांजली बोल ॥ मो० ॥

वनितानो विश्वास करे, ते जाणीए निटोल ॥ मो० ॥ सू० ॥ ७ ॥ माधवे सुंदरी परहरी,
अलगुं आप्युं गेह ॥ मो० ॥ पुत्र सरसी जुइ करी, वहेंची आप्युं तेह ॥ मो० ॥ सू०
॥ ८ ॥ आठ बलद आप्या जला, दश आपी वली गाय ॥ मो० ॥ जाग करी सहु वेंचीयो,
लोके कीधो न्याय ॥ मो० ॥सू०॥९॥ अपर मंदिर सुंदरी रहे, नंदन सरसी तेह ॥मो०॥
सद्गुरु ते प्रतिबोधीया, जैन धरममां बेह ॥मो०॥सू० ॥१०॥ माधव कुरंगीशुं मोहीयो,
बोले जीजी नाष ॥ मो० ॥ अबलानी आणा धरे, तेह तणो हुउं दास ॥ मो० ॥ सू०
॥ ११ ॥ कटकाइए चालीयो, देश तणो महीपाल ॥ मो० ॥ माधव नणी दूत मोकल्यो,
तेडी लावो ततकाल ॥ मो० ॥ सू० ॥ १२ ॥ दूते तव आवी कह्युं, माधव म लाउं
वार ॥मो०॥ राजा कटके चालीयो, बोलाव्या कुंआर ॥ मो० ॥सू०॥१३॥ माधवने तव उ-
पन्यो, कुरंगी उपर मोह ॥ मो० ॥ नारीने तेडी वीनवे, आपण होशे विछोह ॥ मो०
सू० ॥ १४ ॥ कुरंगी कहे स्वामि सुणो, तुम विण घडीय न जाय ॥ मो० ॥ अन्नपान
ते नवि रुचे, दिवस वरसां सो थाय ॥ मो० ॥ सू० ॥ १५ ॥ अमे तुम साथे आवशुं,
नहीं तो करशुं आपघात ॥ मो० ॥ मुज उपर किरपा करी, मानो अम तणी वात ॥ मो०
॥ सू० ॥१६॥ तव माधव इम बोलीयो, सांजल शीलवंती नार ॥ मो० ॥ थोडे दिवसे अमे

॥ ३४ ॥

आवशुं, रुडी परे रहेजो घरबार ॥ मो० ॥ सू० ॥ १७ ॥ तुज सतीमां गुण छे घणा, लंपट लोक इह गाम ॥ मो० ॥ जगनी सुत महाबुद्धिने, शीष दइ करजो घरकाम ॥ मो० ॥ सू० ॥ १८ ॥ एम कहीने ते चालीयो, पहोतो कटक मोझार ॥ मो० ॥ माधव मनमां चिंतवे, सदाए कुरंगी नार ॥ मो० ॥ सू० ॥ १९ ॥ ढाल त्रीजी बीजा खंडनी, रंगविजय कविराय ॥ मो० ॥ तस शिष्य नेमविजय कहे, आगे कहुं वात बनाय ॥ मो० ॥ सू० ॥ २० ॥

दुहा.

कटके जब कंत चालीयो, तब हुवो हर्ष अपार ॥ कुरंगीने काम व्यापीयो, मांड्यो कुव्यापार ॥ १ ॥ योवनभर रूपे भलो, सोनार चंगो नाम ॥ प्रपंच करी घर तेडीयो, एकांत बोली ताम ॥ २ ॥ सांभलो स्वामि रुयडा, रूप तणा भंडार ॥ जोवनवंतां बेहु जणां, लाहो लीजे संसार ॥ ३ ॥ बुद्धि माधव अम धणी, इंड काटलुं तेह ॥ सफल जनम थाय आपणो, तुम मले सुख थाय देह ॥ ४ ॥ धूरत चंगो बोलीयो, सांभल भोली नार ॥ सात व्यसन सेवुं सदा, ए मुज गमे विचार ॥ ५ ॥ तुम वचन मुज लोपतां, ब्रह्महत्यादिक होय ॥ वेद पुराणे आदर्युं, चतुर नर लोपे कोय ॥ ६ ॥

एम कही बिहु जण मल्यां, भोगवे भोग विलास ॥ रात दिवस व्यभिचारीआ, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन चउ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ धूरत धन लेइ गयो, ठाली कीध अपार ॥ ए ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह धरंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

ढाल चोथी.

राणकपुर रलीयामणुंरे लाल—ए देशी.

भोजन भलां वेगे करोरे लाल, भूख्या छे भरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने झांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, बेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वडी बेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम॥ स०॥ सू० ॥२॥ तुं बाइ वडी भामनीरे लाल, हुं नानी छुं तेह ॥ स० ॥ भोजन करावो भरतारनेरे लाल, राखो वडपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तव सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ भोजन नहीं करे मुज घरेरे लाल, कुरंगी सुण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ जमाडुं

तुज घर कंतनेरे लाल, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरल स्वभाव सुंदरी तणोरे लाल, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे लाल, मोह धरी वेगो वार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे सादज करेरे लाल, उत्तर दीयो कुरंगी नार० ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ घणे दीवसे अमे आवीयारे लाल, (हवे) सर्यां बेहुनां काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाल, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥ सू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक बहु मळ्यारे लाल, (तेणे) कह्युं कां पोकारो नार ॥ स० ॥ सबल लंपट ठपी रहीरे लाल, गाली कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥ माधव कहे जूठ कां लवोरे लाल, शीलवंती मुज एह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां गयोरे लाल, पाय पडी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ९ ॥ हुं भूख्यो भोजन दीयोरे लाल, लाज न कीजे भरतार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी भणेरे लाल, तुं मोटो जतार ॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाल, भोजन रंधाव्युं तें त्यांहिं ॥ स० ॥ उठ जा घरमां तेह तणेरे लाल, पाखंड करी आव्यो आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥ ॥ ११ ॥ सोनपाल नंदन बोलीयोरे लाल, बापना प्रणमी पाय ॥ स० ॥ मंदिर पधारो पिता आपणेरे लाल, रसोइ नीपाइ मुज माय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ वयण सांभली तव

पुत्रनांरे लाल, जय पाम्यो माधव ताम ॥ स० ॥ बोल बोले कुरंगी आकरारे लाल, मुख निहाले नारी तणुं आम ॥स०॥सू०॥ १३॥ कोहाड डसी दांत एम कहेरे लाल, इहां थकी जा जा धूतार ॥ स० ॥ ठेक करवाने आव्यो इहांरे लाल, जणनारने जा घरबार ॥ स० ॥ सू० ॥ १४ ॥ कोप नारीनो जाणी आवीयोरे लाल, सुंदरी घरे ततकाल ॥ स० ॥ मान दीधुं घणुं आवतांरे लाल, सुंदरी मनमां उजमाल ॥ स० ॥ सू० ॥ १५ ॥ लेखे अवतार आज आवीयोरे लाल, स्नान करावे सुंदरी नार ॥ स० ॥ थाल मांड्यो जमवा जणीरे लाल, पासे कचोलांनी हार ॥ स० ॥ सू० ॥ १६ ॥ पक्-वान्न पीरस्यां प्रेमे करीरे लाल, साल दाल घृत पूर ॥ स० ॥ माधव महेतो मन चिंतवेरे लाल, कुरंगी रूठी दुःख जूर ॥ स० ॥ सू० ॥ १७ ॥ मधुरी वाण सुंदरी कहेरे लाल, जोजन नवी करो केम ॥ स० ॥ तव माधव एम उचरेरे लाल, नवि जावे अन्न मुज जेम ॥ स० ॥सू०॥१८॥ लघु जामनी शाक आणे इहांरे लाल, तो अमृत लागे अन्न ॥ स० ॥ तव सुंदरी लेवा गइरे लाल, हाथ कचोलो लेइ मन ॥ स० ॥ सू० ॥ १९ ॥ ढाल चोथी बीजा खंडनीरे लाल, रंगविजय कवि शिष्य ॥ स० ॥ नेमविजय कहे नित प्रतेरे लाल, प्रणति करुं निशदिश ॥ स० ॥ सू० ॥ २० ॥

डुहा.

कुरंगी वेन तमे सांजलो, न करे जोजन जरतार ॥ मुजने मोकली लेवा जणी, शाक उपर बहु प्यार ॥ १ ॥ कुरंगी जाएयुं कंत मोहीयो, परीक्षा करुं हवे एह ॥ वृद्ध बलदनो ठाण देखीने, चणा दाल खाधी जेह ॥ २ ॥ ठाण कचोळुं जरी करी, आप्यो सुंदरी हाथ ॥ माधव जणी जइ आपीयो, उष्ण शाक छे नाथ ॥ ३ ॥ कुरंगीए शाक मोकल्युं, देखी रीझ्यो नाथ ॥ जमतां वखाणे घणुं, रुडा एहना हाथ ॥४॥ जमी उठ्या माधव तिहां, तेड्यो निज जाणेज ॥ एकांत जइ पूछे सही, केम उतार्यो कुरंगी हेज ॥ ५ ॥ महाबुद्धि तव बोलीयो, सुण मामा एक वात ॥ शील लोप्युं तुम कामनी, खाधुं धन जार संघात ॥ ६ ॥ माधव बोल्यो सांजली, सांजल तुं लघु नार ॥ संपदा सघली किहां अछे, तुमे वावरी कुण ठार ॥ ७ ॥ कुरंगी बोली तलक्षीणे, जाणेजनो ए जेद ॥ सांजलजो धुरथी सहु, वात कहुं ध्रुव वेद ॥८॥ मुजशुं हास्य करे बहु, एक दिन वलग्यो तेण॥हृदय वलुर्युं मुज तणुं,अधिक कहुं शुं एण॥ए॥पुण्य तणा परजावथी, शील राख्युं में नेठ ॥ कष्ट दीधुं मुजने घणुं, घणी पाडी मुज वेठ ॥ १० ॥ धन खाधुं एणे बहु, तस्करी करतो नित्य ॥ जइ परने देतो सदा, वावर्युं एम घर वित्त ॥११॥ सुणी माधव

कोपे चड्यो, तेडावी ततकाल ॥ भाणेज भणी ढींक पाटुए, मार दीधी तेणे ताल ॥१२॥ घरथी काढी मेलीयो, लोक करे अपवाद ॥ वांक नहीं भाणेजनो, विण वांके कीधो वाद ॥१३॥ लोके मली विचारीने, माधवनो दीयो नाम ॥ अतिमोही नर एहवो, सहु कहे गामोगाम ॥१४॥

ढाल पांचमी.

जंबूद्वीपना भरतमां, एलावरधनपुर सारोरे—ए देशी.

मनोवेग कहे सांभलो, विप्र विचारो जेमरे ॥ अतिमोही नरनी परे, तुमे करशो वली तेमरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथा ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जे जेणे वस्तु मोहीया, ते जाणे एह साररे ॥ शुभ अशुभ जाणे नहीं, भूला भमे गमाररे ॥ सू० ॥ २ ॥ वेद पुराण जे तुम तणां, तेणे मोह्या अपाररे ॥ वचन तेह तणां आदरी, अघटतुं करे संसाररे ॥ सू० ॥ ३ ॥ यथार्थ वचन मुज भाखतां, जो होय शिक्षा पातरे ॥ भाणेज महाबुद्धिनी परे, (केम न) होये अम तणो घातरे ॥ सू० ॥ ४ ॥ भक्ष अभक्ष अंतर कह्यो, पेय अपेय विचाररे ॥ अनाचार आचार नहीं, ते नर मूढ गमाररे ॥ सू० ॥ ५ ॥ ब्राह्मण वयण तव बोलीया, सांभलो भाइ भीलोरे ॥ अम मांहीं मूढ को नहीं, अतिमोही कुशीलोरे ॥ सू० ॥ ६ ॥ वारुव कहे भाइ सांभलो, मंजारमां एक

दोषरे ॥ केम परहरशो अमने कहो, कोइ न करें तुम रोषरे ॥ सू० ॥
॥ ७ ॥ मनोवेग कहे सांजलो, विप्र सहुको सुजाणरे॥ वेद पुराणमां जे कह्युं, तेहवी
बोलुं अमे वाणरे ॥ ८ ॥ नर्मदा नीर वहे निरमलुं, ते कांठे वन सोहे साररे ॥
तापसी पल्ली तिहां अछे, तापस तपसी अपाररे ॥ सू० ॥ ए ॥ मंडपकोशीक तप
करे, अहोरात्रि जपे हरि रामरे॥ तापस सर्व बहु तप तपे, स्नान मज्जन रेवा ठामरे ॥
सू० ॥ १० ॥ पंचाग्नि धुम्रपानशुं, कंद मूल जक्षण तेहरे ॥ मोटी जटा मस्तक धरे,
पांच इंडि दमे देहरे ॥ सू० ॥ ११ ॥ सोमदत्त जजमान जलो, तपसीयांने दीये
दानरे ॥ एकदा तापसी नोतर्या, तेह्या सहु देइ मानरे ॥ सू० ॥१२॥ विविध प्रकारे
जोजन कर्या, बेसणां मांड्यां हारबंधरे ॥ थाल कचोलां मांड्यां घणां, शाक पकूवान्न सुगंधरे
॥ सू० ॥ १३ ॥ मंरूपकोशीक देखीने, बीजे तापसे निंदा कीधरे ॥ थाल मूकीने
चाल्या सहु, कोपे दंताधर लीधरे ॥ सू० ॥ १४ ॥ धाइ जजमाने पूछीआ, जमवा
वेगा उठ्या केमरे ॥ शुं अपराध अमारडो, काज विणास्यो मुज तेमरे ॥ सू० ॥१५॥
वृद्ध तापस तिहां बोलीया, सांजलो सोमदत्त देवरे ॥ मंडपकोशीक तमे नोतर्या,
पंक्तिमां बेसाड्यो खेवरे ॥सू०॥१६॥ मंरूपकोशीके पूछीउं, में शुं कीधो अपराधरे ॥ दोष

काढ्यो तापसे श्रम तणो, फोगट विगोयो कांइ साधरे ॥ सू० ॥ १७ ॥ घरढा तापस तव बोलीया, सांजल मूढ गमाररे ॥ नारी विना तुं वांकीयो, ब्रह्महत्या पग पग साररे ॥ सू० ॥ १७ ॥ पुत्र विना सद्गति नहीं, स्वर्ग मुक्ति नवि होयरे ॥ पुत्र तणुं मुख जोइने, तापस दीक्षा धरे सोयरे ॥ सू० ॥ १ए ॥ मोटो अपराध तुमे कर्यो, थाल विचे चोढ्यो तेहरे ॥ पापी नर जाणी उठीया, मूकी जाणां जयां गेहरे ॥ सू० ॥ ॥ २० ॥ मंडपकौशीक एम जणे, सांजलो तापस राजरे ॥ बुढो देखी मुज कोण दीए, विप्र कन्या सारे काजरे ॥ २१ ॥ तापस बोल्या सुणो तापस, पुराण स्मृति बोल्युं एमरे ॥ पांच आपद जे स्त्रीने होये, परणो ते मांहेनी तेमरे ॥ सू० ॥ २२ ॥ नासी गयो नर जेहनो, मरण पाम्यो वली जेहरे ॥ तापस थयो नारी तजी, नपुंसक हुवो पछे तेहरे ॥ सू० ॥ २३ ॥ घरमो हुउ कंत जे तणो, नारीने आपदा पंचरे ॥ एह मांही जेहवी मले, एक परणो करी संचरे ॥ सू० ॥ २४ ॥ नष्टे मृते प्रव्रजे च, क्लिबे च पतिते पतौ ॥ पंचस्वापत्सु नारीणां, पतिरन्यो विधीयते ॥ २५ ॥ बीजा खंड तणी कही, ढाल पांचमी वारुरे ॥ रंगविजय कविरायनो, नेम कहे श्रोता सारुरे ॥ सू० ॥ २६ ॥

दुहा.

अपत्य सहित जे कामिनी, पुरुष चाल्यो परदेश ॥ आठ वरष वाट जोइने, अन्य नर साथ प्रवेश ॥ १ ॥ संतान रहित जे ब्राह्मणी, कंत गयो व्यापार ॥ चार वरष लगे वाट जोइ, पछे अवर जरथार ॥ २ ॥ स्मृति वाक्यम् ॥ अष्टौ वर्षाणि पश्येत, ब्राह्मणी पतिते पतौ ॥ अप्रसूता च चत्वारि, पुरतोऽन्यः समाचरेत् ॥ वचन सुणी तापस तणां, मंरूप हरख्यो ताम ॥ रांभी ब्राह्मणी परणीउं, पंभाणी तेहनुं नाम ॥ ३ ॥ जोग जोगवतां बेहु थकी, पुत्री हुइ गुण माल ॥ स्वर्ग रंभा जाणे अवतरी, छाया नाम रसाल ॥ ४ ॥ आठ वरषनी जव थइ, (कहे) मंडपकौशीक सार ॥ सांभल भामनी तुज कहुं, तीरथ जात्रा कीजे अपार ॥ ५ ॥ छाया (पुत्री) मूकीशुं किहां, ठाम कहो मुज खास ॥ तापसी कहे स्वामि सुणो, मेलो थापण शंकर पास ॥ ६ ॥ मंडपकौशीक एम भणे, सांभल भोली नार ॥ हर लंपट चंचल सदा, नवि छोडे कन्या सार ॥ ७ ॥ कामनी कहे बोलो कशुं, महादेव त्रिभुवन धीश ॥ लोक सहु पूजे तेहने, व्यभिचारी नोहे ईश ॥ ८ ॥ तापस कहे सुण कामनी, ईश्वरचरित्र कहुं जेह ॥ महीमंरूल मोटो भलो, कैलास पर्वत तेह ॥ ९ ॥ गौरी शंकर सुख भोगवे, करे तप जप धरी ध्यान ॥

त्रिकाल संध्या कारणे, गंगाए गया जगवान् ॥ १० ॥ स्नान करी देव पूजीया, संध्या वंदन कर्युं सार ॥ तिणे अवसर कांठे देखीउं, गंगा नारी रूप फार ॥ ११ ॥ गंगा देखी विह्वल थयो, कामबाण पीड्यो ईश ॥ ध्यान मूकी मन चिंतवे, उर्वशी रंजा सुरीश ॥ १२ ॥ एह कन्या मुजने वरे, सफल देह पण थाय ॥ रूप रच्युं कुंवर तणुं, लघु वय कोमल काय ॥ १३ ॥

ढाल ठठी.

एणे पुर कंबल कोइ न लेशी, फेर पाठा चाल्या परदेशी—ए देशी.

फेरवी रूप हुवो जग त्रात, गंगा सरसी मांमी वात॥ सांजल कुमरी मनोहर नार, मुज वाणी तुं हृदय विचार ॥ १ ॥ एकला वनमां कारण कशुं, मारुं मन तुज उपर वस्युं ॥ त्रिजुवन मांहिं तुं रुमी नार, जोवन सफल करो संसार ॥ २ ॥ कुमरी कहे मुज गंगा नाम, परणी नथी कंथ अजिराम ॥ केम करीए मोटो व्यजिचार, ए नोहे उत्तम आचार ॥ ३ ॥ शंकर कहे सांजल कुमारी, हुं कुंवारो वुं निरधारी ॥ सरीखो जोग मल्यो बे घणो, करीए कारण विवाह तणो ॥ ४ ॥ गंगा वचन गम्युं ते सार, संक्षेपे कीधो आचार ॥ काम क्रीमा कीधी बेहु घणी, सुख पाम्यो तव ईश्वर धणी

॥ ५ ॥ कैलास चडवा चाल्यो जाम, कामनीए कंथ पूछ्युं ताम ॥ परणीने क्यां जाशो नाथ, अमे आवीशुं तमारे साथ ॥ ६ ॥ शंकर कहे सांभल तुं सुंदरी, मुज मंदिर छे गिरि उपरी ॥ तिहां रही निरमल ध्यान धरुं, नारी संगति तव परिहरुं ॥ ७ ॥ त्रण काल आवुं तुम भणी, काम क्रीडा करशुं बेहु घणी ॥ तमे रहेजो तमारे गाम, शीघ्र आवीशुं अमे करी काम ॥ ८ ॥ एम कही ते चाल्यो जाम, पुंठे लागी गंगा ताम ॥ कैलास उपर चढीआं बेय, पारवतीए दीठां तेय ॥ ए ॥ गौरी कहे सांभल सुंदरी, कोण नारी तुं केने वरी ॥ गंगा कहे सांभलरे संत, अमे जान्हवी ए मुज कंथ ॥ १० ॥ पारवती कहे तुमे अंभ, केम भोगवशो मुज वालंभ ॥ गंगा कहे पूछो वृतांत, मुज रतिक्रीडा कहेशे कंथ ॥ ११ ॥ उमीया कहे सांभलो भरतार, कुण कामनी ए केहेनी नार ॥ शंकर पभणे सुण सुंदरी, क्रीडा करतां में गंगा वरी ॥ १२ ॥ गौरी कहे सुण निर्लज्ज निठोर, लंपट धुतारो तुं छे भोर ॥ असंतोषी कामी तुं सही, हुं नारीए तृप्ति तुज नहीं ॥ १३ ॥ गंगा सरीखो करशो नेह, तो हुं मारी मूकीश देह ॥ सांभली शंकर बोल्या ताम, रूपवती तुं छे अभिराम ॥ १४ ॥ तुज उपर मुज प्रेम अपार, गंगा तणो करशुं परिहार ॥ संतोषी पारवती सार, मूकवा चाल्यो गंगा नार

॥ १५ ॥ जान्हवी तीरे लाव्यो जाम, कामं कुतूहल कीधो ताम ॥ गंगा राखी जटा मोझार, नारी बेशुं करे व्यापार ॥१६॥ मंरूपकौशीक कहे वृतांत, शंकर न होये एहज संत ॥ सुर नर खेचर जाणे सहु, महादेव व्यभिचारी बहु ॥१७॥ थापण ठवीए ईश्वर पास, तो सही पामे पुत्री विणास ॥ दूध भलावीए जो मंजार, तो शंकर शुं करो व्यापार ॥ १८ ॥ तापस नारी बोली ताम, ईश्वर मोटो एहनो गाम ॥ छायाने मूकीशुं तिहां, विचार करीने बीजो जिहां ॥ १९ ॥ कामनी कहे सांभलो तुमे कंत, छाया ठवीए पासे अनंत ॥ वासुदेव भुवन त्रय राय, सुर नर जेना सेव पाय ॥ २० ॥ तापस कहे सांभलरे नार, ए मोटो गोवालणीनो जार ॥ केम ठवीए ए पासे बाल, सहु जाणे ए परस्त्री काल ॥ २१ ॥ तापसीए विनवीया कंत, स्वामि कथा कहो ते संत ॥ मंरूपकौशीक बोल्यो ताम, सांभलजो नारी अभिराम ॥ २२ ॥ ढाल छठी बीजा खंमनी सारी, नेमविजय कहे निरधारी ॥ श्रोता सांभलजो सहु कोय, वात कहुं जे आगल होय ॥ २३ ॥

दुहा.

द्वारामती नगरी अछे, दामोदर त्यां राय ॥ नारी सोल सहस्रनो, अधिपति ते कहेवाय ॥ १ ॥ एक दिन दीठी गोवालणी, राधा जेनुं नाम ॥ मही मटुकी मस्तक

धरी, वेचण आवी ताम ॥ २ ॥ दहीं दूध जाजन जरी, आवी केशव पास ॥ अचरिज पाम्या रूपथी, ते वितक सुण तास ॥ ३ ॥ कामे पीमाणो घणो, विरहानल संताप ॥ अवर नारी ते नवि गमे, लेह लागी ते आप ॥४॥ सोल सहस्र गोपी तणो, त्यां उतार्यो मोह ॥ राधा उपर अति घणो, पाम्यो त्यां व्यामोह ॥ ५ ॥ सुण राधा गोवालणी, तुजशुं रंग अपार ॥ अवर नार मुज नवि गमे, तुज सम को नहीं संसार ॥६॥ दाण आप मटुकी तणुं, सांजल मारी वाण ॥ प्रेम धरो अमशुं तमे, म करो खेंचा ताण ॥ ७ ॥ तव बोली राधा तिहां, सांजल राजा राम ॥ पुरुषोत्तम ए वातमां, किम सीजे तुम काम ॥ ८ ॥ नारायण सुर नर कहे, अयुक्त बोलो आज ॥ मोटा पण खोटा हिये, राखो तुमारी लाज ॥ ए ॥ नीच जाति आहीरनी, जोला अमे जरवारू ॥ तेहने एवुं केम घटे, पेखी किम पमो खारू ॥ १० ॥

ढाल सातमी.

कर जोमी कामनी जंपे, कहेतां थरहर काया कंपे—ए देशी.

सांजलो धर्मशास्त्र विचार, ए नहीं उत्तम आचार ॥ परनारी लंपट नर जेह, मरीने डुरगति जाये तेह ॥ हो लाल ॥ सुणजो साजन सहुको ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

रात दिवस जे बांधे पाप, नगर मांहीं लहे तें संताप ॥ सदा जव होये अशुन्न ध्यान, तेहने को नवि दीये मान ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २ ॥ कर्मजोगे जो राजा जाणे, बेदन न्नेदन बहु करे कामे ॥ दंडे मुंडे लोकने बांधे, करावे गर्दन्न रोहण खांधे ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ३ ॥ लिंग नासिका होये बेद, सज्जन सहुको पामे खेद ॥ कालां मुख होवे बांधव तणां, लज्जा पामे कुलवंत घणा ॥ हो ला० ॥सु०॥४॥ फिट फिट करे सहु कोय, मित्रवर्ग सहु डुःखीउं होय ॥ दान पूजा जश लोपाय,कृष्ण वदन लोकमां थाय ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ५ ॥ ते उपर कथा सुणो एक, जेथी आवे तुमने विवेक ॥ कोइ गाम रहे एक शेठ, राज काजनी करे बे वेठ ॥ हो ला० ॥सु०॥ ६ ॥ तेहने श्रीमती नामे नारी, रूपे रंन्ना सुर अवतारी ॥ शेठने प्रोहीतशुं मित्राइ, नित आवे जावे घर धाइ ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ७ ॥ एक दिन ते शेठ विचारी, परदेश चाल्या परवारी ॥ प्रोहीतने न्नलावी गेह, तस नारीशुं मांड्यो नेह ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ७ ॥ शीलवंत नारी कहे ताम, केम कहो बो मुजने आम ॥ तव बोल्या प्रोहीत तेह, जो करशो मुंजशुं नेह ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ए ॥ तो सुख थाशे तुमने, राजी करशो जो अमने ॥ जे कहेशो ते विधि करशुं, तुम वयण अमे दिल धरशुं ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १० ॥ तव चिंतवे नारी एम, शील रहेशे माहरुं

केम ॥ एवी बुद्धि कोइक उपाउं, प्रोहीतनी लाज लोपावुं ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ११ ॥ एम चिंतवी बुद्धि उपाइ, प्रोहीतने कहे समजाइ ॥ पोहोर रात्रि जाये तेणी वार, आवजो थाइ हुशियार ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १२ ॥ प्रोहीत थयो तव राजी, गयो निज घर मनमां गाजी ॥ कोटवाल पासे गइ नारी, तमे छो नगर तणा अधिकारी ॥ हो ला० ॥ सु० ॥१३॥ प्रोहीत वांछे मुजशुं प्रीत, तेनी कहेवा आवी छुं रीत ॥ सांभली कोटवाल तव बोले, नहीं नारी अवर तुम तोले ॥ हो ला० ॥ १४ ॥ अमशुं जो राखशो राग, तो प्रोहीतनो शो लाग ॥ एम सांभली नारी कहे वात, बीजे पोहोरे आवजो रात ॥ हो ला० ॥ १५ ॥ तिहांथी गइ सचीवनी पासे, वात धुरथी कही उल्लासे ॥ तुमे नगर तणा अधिकारी, कोटवालने राखो वारी ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १६ ॥ कामांध थयो ना-री देखी, कोटवालने नाखुं उवेखी ॥ मुज आगे बल श्यो एहनो, वयण मानशो मां कांइ कहेनो ॥ हो ला० ॥सु०॥१७॥ सचीव कहे मुज साथे, मेलो मेलव्यो छे जगनाथे॥ सुंदरी कहे त्रीजे पहोरे, आवजो थइ आपणे तोरे ॥ हो ला० ॥ सु० ॥१८॥ राजा भ-णी चाली आवी, वात धुरथी कही संभलावी ॥ राजा पण रीझ्यो जोइने, बीसो मां वयण कहे कोइने ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १९॥ हुं गाम तणो छुं राजा, कोण लोपे माहरी

माजा ॥ प्रोहीत प्रधान कोटवाल, तेहने काढी मूकुंरे ततकाल ॥ हो ला० ॥ सु० ॥२०॥
हुं थापुं करी पटराणी, बीजी तुम आणे पाणी ॥ तव सुंदरी कहे तुमे राय, चोथे पो-
हरे मुज घर मांय ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २१ ॥ त्यांथी आवी निज घर मांहे, पाडोसण
डोसी छे त्यांहे ॥ तेहने तेडी समजावे एम, कागल लखी आपुं जेम ॥ हो ला० ॥
सु० ॥ २२ ॥ बीजा खंडनी सातमी ढाल, नेमविजय कहे उजमाल ॥ तुमे सुणजो बाल
गोपाल, आगल कहुं वात रसाल ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २३ ॥

दुहा.

कागल लइ उतावली, रात रहे घडी चार ॥ रोती रडती आवजे, करती अति
पोकार ॥ १ ॥ समजावी पाडोसणी, घरमां एक मजूस ॥ तेहमां खानां चार छे, चोखी
करी लइ लूस ॥ १ ॥ एम करतां संध्या थइ, आव्यो प्रोहीत जाम ॥ आदरमान दीधो
घणो, लटपट करती ताम ॥ ३ ॥ भोजन भाजन करे घणां, सजी सोल शणगार ॥
हाव भाव देखाडती, पोहोर रात तेणी वार ॥ ४ ॥ कोटवाल रही बारणे, कहे
कमाड उघाड ॥ मांहीं थकी बोली तिहां, हुं जोतीती वाट ॥ ५ ॥ तव प्रोहीत नारी
भणी, कहे हवे कोण हेवाल ॥ जो जाणे मुजने सही, टाले ठाम ततकाल ॥ ६ ॥

मजूस एक छे माहरी, तुम पेसो ते मांहिं ॥ गम न पडे कोइने कशी, मौन करी रहो त्यांहिं ॥ ७ ॥ प्रोहीतने मांहिं घालीयो, यंत्र जमीने द्वार ॥ तलार घरमां तेमीयो, बोलावे तेणी वार ॥ ८ ॥ खातां पीतां खांतशुं, दोय पोहोर गइ रात ॥ त्रीजा पोहो-रे आवीयो, सचीव थइ रलियात ॥ ए ॥ बीन्यो कोटवाल एम कहे, मुज सांतो कोइ ठाम ॥ मुजने देखे जो इहां, न रहे माहरी माम ॥ १० ॥ बीजे खाने घालीयो, सची-वने लीधो मांय ॥ गीत गान करती थकी, सचीव तणो गुण गाय ॥ ११ ॥ चोथो पोहोर जब आवीयो, राजा बोल्यो वाण ॥ कमाम उघाडो उतावलां, देखे कोइ अजाण ॥ १२ ॥ सचीवे सादज सांजल्यो, थरथर ध्रुजे काय ॥ नारी जणी बोले तिहां, मुज सांतो कोइ ठाय ॥ १३ ॥ त्रीजे खाने घालीयो, राजा लीधो मांहिं ॥ नयण बाण लगामती, रीझवे राजा तांहिं ॥ १४ ॥ चार घमी रात पाछली, आवी पामोसण नार ॥ कागल हाथमां लेइ करी, निपट करती पोकार ॥ १५ ॥

ढाल आठमी.

करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे—ए देशी.

उठ उठ रे रांम तुं सूइ रहीरे, मूउं तुज जरतार ॥ कागल आव्योरे आज परद्धी-

पनोरे, सांजल मूर्ख निरधार ॥ सांजलजो श्रोतारे, कथा अचरिज तणीरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सांजली नारी रुदन करे अति घणुंरे, कुटे हृदय ने शीष ॥ सगां साजन सहु आवी मल्यांरे, द्वार जनां पाडे चीस ॥ सां० ॥ २ ॥ मांहे बेठो राजा मन चिंतवेरे, हुवो रंगमां जंग ॥ मुजने सांतो कोइ एकांतमांरे, आवी लाग्यो व्यंग ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ नारी कहे तुमे मोटा राजवीरे, किहां सांतुं नथी ठाम ॥ कहो तो मजूस एक मोटो अछेरे, मौन करी रहो धाम ॥सां०॥४॥ कहे राजा तुमे शीघ्र थइ हवेरे,म करो ढील लगार ॥ चोथे खाने राजाने घालीयोरे, प्रपंच करी तेणी वार ॥ सां० ॥ ५ ॥ नर नारी आव्यां घरमां वहीरे, आरीम कारीम कीध ॥ एम करतां परजात थयो हवेरे, वात थइ परसीध ॥ सां० ॥ ६ ॥ वात सुणी दरबारमां राणीएरे, खबर करो जइ राय ॥ चाकर दोड्या नृपने शोधवारे, दीठा नहीं कोइ राय ॥ सां० ॥ ७ ॥ सचीवने शोध्या सारा शहेरमांरे, दीसे नहीं कोटवाल ॥ प्रोहीतने जोया वली चिहुं दिशेरे, फरी आव्या ततकाल ॥ सां० ॥ ८ ॥ राणी कहे ए शेठ हतो वांझीयोरे, एहनो माल होये जेह ॥ राणी जाणे गुपत राजा वच्चेरे, मंगावी लेउं तेह ॥ सां० ॥ ॥ ए ॥ सेवक दोडाव्या राणीए ततखणेरे, एहना घरमां वस्तु सार ॥ लावो जइने

कोइ जाणे नहींरे, ढील म करजो लगार ॥ सां० ॥ १० ॥ चाकर चाल्या सहु थइ एक मनारे, पहोंत्या शेठने गेह ॥ नारीए दीधो आदरभाव आवतांरे, बोल्या अनुक्रमे तेह ॥ सां० ॥ ११ ॥ सार वस्तु जे तुज घरमां होयेरे, ते आपो अमने आज ॥ तव बोली ते नारी सांभलीरे, साचा कहुं तुमे राज ॥ सां० ॥ १२ ॥ मजूस मोटी घरमां अछेरे, माल मांहीं छे सार ॥ वृषभ जोडी लेइ जावो तुमेरे, मेल्यो छे मुज भरतार ॥ सां० ॥ १३ ॥ सांभली दोड्या अनुचर उतावलारे, वृषभ आण्या तत-काल ॥ जोडी वृषभ तणावी लेइ गयारे, राणी थइ उजमाल ॥ सां० ॥ १४ ॥ तालां उघाडी मांहेथी काढीयोरे, प्रोहीतने तेणी वार ॥ राणी कहे तुमे पेठा केम इहांरे, अद्भुत वात अपार ॥ सां० ॥ १५ ॥ तव प्रोहीत कहे बीजुं बारणुंरे, उघाडी देखो देव ॥ ततक्षण उघाड्यो जव सहु मलीरे, दीठो कोटवाल ततखेव ॥ सां० ॥ १६ ॥ अचरिज देखी राणी एम कहेरे, चोकी करवा काज ॥ तस्कर पकडवा पेठा तुमेरे, भली राखी तुमे लाज ॥ सां० ॥ १७ ॥ मुख ढांकीने कोटवाल एम कहेरे, उघाडो त्रीजुं बार ॥ तेहवे राणीए कपाट उघाडीउंरे, सचीव दीठो तेणी वार ॥ सां० ॥ ॥ १८ ॥ राणी कहे तुमे दफतर मांडवारे, जइ पेठा एकांत ॥ सचीव कहे तुमे मुजने

शुं कहोरे, केम थइ रह्या निचिंत ॥ सां० ॥ १ए ॥ राजाजी साथे सहु मली अमे गयारे, चोथो उघाम्यो गम ॥ ततक्षण राणीए द्वार उघाम्रीयुंरे, नीचुं घाल्युं ताम ॥ सां० ॥ २० ॥ चादर उंढी मुखने सांतीयुंरे, फिट फिट करे सहु लोक ॥ उठी त्यांथी गया निज निज घेरेरे, चिंतवे मनशुं फोक ॥ सां० ॥ २१ ॥ वीजा खंमनी ढाल ए आठमीरे, नेमविजय कहे सार ॥ श्रोता सांजलजो सहु एक मनारे, जे वात होये निरधार ॥ सां० ॥ २२ ॥

दुहा.

चारे मली मन चुंपशुं, आणी शुद्धि विवेक ॥ सासरवासो करीये सही, तो उतरे आपणी ठेक ॥ १ ॥ ते नारी तेडावीने, कीधी जगनी तेह ॥ सासरवासो करी जलो, वोलावी फरी गेह ॥ २ ॥ एम राधा केशव जणी, समजावे कही वात ॥ परनारीना संगथी, उपजावे उतपात ॥ ३ ॥ नारायण मोटा देवता, लागी जुंडी टेव ॥ दामोदर बोल्या तुरत, सांजलो राधा हेव ॥ ४ ॥ धर्मशास्त्र जाणुं अमे, वचन म लोपो आज ॥ परउपगारी परगजु, मोटी तुमारी लाज ॥ ५ ॥ अमे जामनी बहु उधरी, कुबजा सरखा केय ॥ पुराण प्रसिद्ध जाणे सहु, नाकारो मत देय ॥ ६ ॥ राधा तव

राजी थइ, ठालो घर कोइ जोय ॥ तेमां गइ उतावली, बेहु जण मलीयां सोय ॥ ७ ॥ वैकुंठे संतोषी घणुं, राधा जोमी हाथ ॥ कहे स्वामी मुज जाण द्यो, रीस करशे मुज नाथ ॥ ८ ॥ काम काज घरमां घणां, लुच्चो मुज जरतार ॥ क्रोधी गाल आपे घणी, जो जाणे व्यजिचार ॥ ए ॥ राते मुज घर आवजो, गुप्त करी तुम देह ॥ वर निशानी सौ कही, पोहोती निज घर तेह ॥ १० ॥

ढाल नवमी.

कीसके चेले कीसके पूत, आतम एकीला हे अवधूत–ए देशी–(राग बंगाली.)
विरहानल वाध्यो गोविंद, सघले देखे राधा वृंद ॥ मन मान वे ॥ तालावेलि[1] टलवले तन, कोड सूरज वले आकाशे मन ॥ म० ॥ १ ॥ शीत लागे वे अगनी समान, एम करतां आथमीयो जाण ॥ म० ॥ रात पमी हुवो अंधकार, गोविंद पहोंतो गोवालणी बार ॥ म० ॥ २ ॥ तस्करनी परे आव्या देव, द्वार दीधां दीठां ततखेव ॥ म० ॥ वैकुंठनाथ विमासे ताम, लोक सुता वे एणे ठाम ॥ म० ॥ ३ ॥ बोलावीश तो जागशे लोक, चाम चोरी पमशे मुज फोक ॥ म० ॥ मौन धरुं तो काम न होय,

१ एकज ध्यान.

बोलुं तो जाणे सहु कोय ॥ म० ॥ ४ ॥ अंगुलीनो संचल कीध, टपोरे कपाटे दीध ॥ म० ॥ राधा बोली जोती वाट, अंगुलीए कोण हणे कपाट ॥ म० ॥५॥ अमे माधव बुं ते महंत, राधा कहे तुमे बो वसंत ॥ म० ॥ नहींरे कामनी हुं चक्रीश, राधा कहे कुंजारनो ईश ॥ म० ॥ ६ ॥ धरणीधर हुं मोटो देव, शेषनाग तुं आव्यो हेव ॥ म० ॥ नारे अहीमर्दन अजिराम, राधा कहे गरुड तुज नाम ॥ म० ॥ ७ ॥ नहींरे हुं हरि जगदीश, राधा कहे तुं वानर ईश ॥ म० ॥ विष्णु कहे राधा म करो हठ, उत्तर देवाने अमे बुं ठठ ॥ म० ॥ ७ ॥ राधा रंगे हास्युं एम करी, बार उघाडी लीधा मांहे हरि ॥म०॥ काम कुतूहल मांड्यो ताम, जानूदय पाम्यो वली जाम ॥ म०॥ए॥ रात्रिए जइ अन्यायज करे, दिवसे आवी राज्य उधरे ॥ म० ॥ नारायण लक्षण बे एह, बाल गोपाल जाणे बे तेह ॥ म०॥ १० ॥ तापस कहे सांजल तापसी, वात विचारी जुउने असि ॥म०॥ सोल सहस्र स्त्री नहीं संतोष, हरिने मोटो परनारी दोष ॥ म० ॥ ११ ॥ थापण ठवीए हरिनी पास, तो पुत्रीनो होये नाश ॥ म०॥ अवर विचार करीशुं जेम, गया बाला मूकीए तेम ॥ म० ॥ १२ ॥ ताम तापसी वदे वर वाण, सांजलो स्वामि तुमे बो जाण ॥ म० ॥ वात कहुं एम विचारी एक, सृष्टि निपाइ ब्रह्माए विवेक

॥ १३ ॥ तप जप संजम करता एह, ऋषि सघलामां मूलगो तेह ॥ म० ॥ सुर नर मांहीं कहीए सार, ढाया पुत्री चलावो कुंवार ॥ म०॥ १४ ॥ आपण जइए जात्राने काज, तो आपणी रहे जगमां लाज ॥ म० ॥ खंम बीजानी नवमी ढाल, नेमविजय कहे थइ उजमाल म० ॥ १५ ॥

दुहा.

नारी वचन सुणी करी, तापस कहे गुणधार ॥ ब्रह्मा लंपट नहीं चलो, नवी छोडे परनार ॥ १ ॥ पुराण मांहे कह्युं इस्युं, ते सहु जाणे लोक ॥ कांता कपटी ए कह्यो, मुज वाणी नहीं फोक ॥ २ ॥ ब्रह्मा तप जप करे घणो, गंगा कांठे निवास ॥ कंठ जनोइ करवडो[1], जप माला जपे जास ॥ ३ ॥ मृग चर्म ओढे पाथरे, इंद्रि दमे अपार ॥ क्रोध लोभ माया तजी, ब्रह्म ध्यान ध्याये सार ॥ ४ ॥ सहस्र अठ्याशी ऋषिने, वेगो नवी जोये नेत्र ॥ इंद्रासनने कारणे, कष्ट करे पुण्य क्षेत्र ॥ ५ ॥ चोकमी उंठ काल गयो जव, तप करतां ब्रह्मराज ॥ तव इंद्रासन डोलीयुं, सुरपति कहे कुण काज ॥ ६ ॥ बृहस्पतिने इंद्रे पूछीयुं, कहो गुरु कारण एह ॥ मुज आसन कंप्युं चलुं, शुं होशे

१ नालवालुं वासण.

कह्यो तेह ॥ ७ ॥ गुरु कहे इंद्र सांजलो, ब्रह्मा तप करे अघोर ॥ अरधी चोकमी हुवा पछी, तुम पद लेशे जोर ॥ ७ ॥ सांजली इंद्र उपाय रचे, अपछरा तेडी तिण काज ॥ ब्रह्मा तपथी चालवो, जिम रहे आपणो राज ॥ ए ॥ नृत्यकी कहे देवेंद्र सुणो, ए नवि होय अमशुं काम ॥ गरढो कपटी कोपशे, श्राप देइ फेडे ठाम ॥ १० ॥

ढाल दशमी.

नणदलनी देशी.

प्रीतम हे प्रीतम इंद्र, कहे सघली मली ॥ तिल तिल दीउं मुज रूप ॥ प्री० ॥ तिलोत्तमा निपजावीशुं,सर्व कलानो कूप ॥प्री०॥ सुणजो साजन वातलमी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तिल तिल रूप नृत्यकी दीयो, तिलोत्तमा घमी सुरराज ॥प्री०॥ कर जोमी उन्नी रही,आदेश द्यो कोण छे काज ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २ ॥ अमरपति कहे रंन्ना सुणो, ब्रह्मा तप करो नाश ॥ प्री० ॥ एह चिंता सहुने घणी, पूरो अमारी आश ॥प्री०॥सु०॥३॥ तिलोत्तमा बीकुं धरी, नारद तुंमर देव ॥ प्री० ॥ तप करतो ब्रह्मा जिहां, तिहां आवी ततखेव ॥प्री०॥सुण॥ ४ ॥ सनमुख नाटक मांडीयुं, धप मप धौं धौं कार ॥ प्री० ॥ मादल वाजे मधुर स्वरे, ऊं ऊं ऊेरी विस्तार ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ५ ॥ घम घम घुघरी घमकती,

कड कड मोकी काय ॥ प्री० ॥ हाव जाव देखारुती, नव रस नाटिक थाय ॥प्री०॥सु०॥ ॥ ६ ॥ जेम जेम नीरखे नारीने, तेम तेम ध्यान गयो दूर ॥ प्री० ॥ तिलोत्तमा रूप देखी करी, हरख उपन्यो जरपूर ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ७ ॥ सा री ग म प ध नी गायतां, चलीयुं रुषिनुं चित्त ॥प्री०॥ विकल रूप ब्रह्मा हुवो, श्रवणे सुणी ते गीत ॥प्री०॥सु०॥ ॥ ८ ॥ ब्रह्मा चल चित्त जाणीने, वामांगे मांड्यो नाट ॥ प्री० ॥ ठ राग ठत्रीशे श्रालवी, ताल मेले नहीं घाट ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ए ॥ मोह पाम्यो ब्रह्मा घणुं, चिंतवे मन मांहे एम ॥ प्री० ॥ रुषि सघलामां हुं वमो, मुख फेरवी जोउं केम ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १० ॥ जो नवी नीरखुं नृत्यकी, तो मुज डुःख होये देह ॥ प्री० ॥ नयणे निहालुं तिलोत्तमा, सफल जनम मुज तेह ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ११ ॥ एक चोकमी तपने फले, मुख होजो मावे पास ॥ प्री० ॥ वदन बीजुं ब्रह्मानुं हुवो, देखी रूप विलास ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १२ ॥ पीन पयोधर पेखतां, रंज्या धाता जाम ॥ प्री० ॥ नाटक रचीयुं पाठले, श्रानंद नृत्य तिहां ताम ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १३ ॥ सा री ग म प ध नी गायतां, ब्रह्मा विमासे तेह ॥ प्री० ॥ पाठुं फरी श्रवलोकतां, लाज श्रावे मुज देह ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १४ ॥ बीजी चोकमी तपे करी, नीकलजो मुख पुंठ ॥ प्री० ॥ वदन हुवो ब्रह्मा तणो, रूप जोइ हृदये

तूठ ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १५ ॥ चित्त चढ्युं जाणी करी, नाटक मांड्युं जमणे अंग ॥ प्री० ॥ नाव भेद देखाडे घणा, ब्रह्मा नवि जोये रंग ॥ प्री० ॥सु०॥१६॥ कामबाणे वींध्यो तदा, मन मांहीं चिंते ताम ॥ प्री० ॥ लाज लागे मुख फेरतां, विण जोए विणसे काम ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १७ ॥ चोकडी त्रीजी तपे करी, मुख नीकलजो सार ॥ प्री० ॥ चोथुं वदन हुवुं नलुं, दीसे दक्षिण नार ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १८ ॥ तव नाटिक गगने कर्युं, नव रस ब्रह्म विलास ॥ प्री० ॥ सृष्टिकर्ता मन चिंतवे, केम करी देखुं आकाश ॥ प्री० ॥ सु० ॥१९॥ ऊंचुं जोतां हास्युं हसे, जोया विण न रहाय ॥प्री०॥ अरध चोकडी तप तणे फले, मुज मुख गगने थाय ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २० ॥ गर्दन्न वदन नीकल्युं तदा, भूंकारव करे विकराल ॥प्री० ॥ तव नाठी तिलोत्तमा, स्वर्ग गइ इंद्रने कहे हेवाल ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २१ ॥ दशमी ढाल बीजा खंडनी, रंगविजय कविराय ॥ प्री० ॥ तस शिष्य नेमविजय कहे, सांनलजो चित्त लाय ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २२ ॥

दुहा.

सांनलजो स्वामि तुमे, ब्रह्मानो तप जेह ॥ ऊंठ चोकडीनो कष्ट कर्यो, विफल थयो सहु तेह ॥ १ ॥ मुख चारे मुज देखीने, पांचमुं रासजनुं होय ॥ विकल थयो नृत्य जोवतां,

जूं जूं करे मुख तोय ॥२॥ आचंभ्या सुर सामटा, आव्या जोवा काज ॥ विपरीत रूपने देखीने, खरू खरू हसत समाज ॥३॥ तव ब्रह्मा कोपे चढ्यो, सुर उपर कीधी केरू ॥ जूंजूंकार करतो थको, धायो केरू नाठा जाए घर भणी, तोहि नाव्यो नीवेरू ॥ ४ ॥ के खाशे के मारशे, जाय ॥ कोलाहल स्वर्गमें थयो, अचरिज सहुने थाय ॥ ५ ॥ तप जप मूकी तास ॥ ६ ॥ नाठा त्रिभुवनमां पड्यो त्रास ॥ भय पाम्या तापस सहु, सुर नर किंनर आगले, आवे करतां मार मार लोक बहु धुजता, केइ पाडे पोकार ॥ ब्रह्मा संतापे छे घणुं, दुःख भांजो ॥ ७ ॥ ईश्वर शरणे आवीया, कहे मुज राखो देव ॥ पीडा उपनी ब्रह्मा घ-श्रम देव ॥ ८ ॥ रुद्र भाव रुद्रे कर्यो, खुंयुं मस्तक खर नख ॥ मस्तक मा-णी, बोले मुखथी अशब्द ॥ ९ ॥ हत हत्यारा पापीया, तुजने भुंडो देव ॥ हरुं तोडीयुं, हत्या चड तुज देव ॥ १० ॥

ढाल अगीयारमी.

साहेबा मोती द्यो हमारो, मोहना मोती द्यो—ए देशी.

मुज कपाल चडो तुज हाथ, जेम न करे एहवो किहां साथ ॥ मानो तुमे वयण हमारो, सही करी मन मांही धारो ॥ ए आंकणी ॥ श्रापे ईश्वर थयो तव कालो, महादेव

कहे मतवालो ॥ मा० ॥ १ ॥ शंकर लागे ब्रह्मा पाय, कर जोडी कह्यो जग राय ॥ मा० ॥ में पापीए कीधो बाध, खीमा करी खमजो अपराध ॥ मा० ॥ २ ॥ मुज पापीनी हत्या जाय, स्वामि ते कहेजो उपाय ॥ मा० ॥ खर कपाल पस्के वली जेम, वचन जा-खजो ब्रह्मा तेम ॥ मा० ॥ ३ ॥ कोमल वचने कृपा तव कीध, कोप तजी शिखामण दीध ॥मा०॥ ब्रह्मा कहे सांजलरे ईश, पापी मोटो तुं जगदीश ॥मा०॥४॥ हत्या माहरी आ उतरे एम, वचन कहुं ते करे तुं तेम ॥मा०॥ जटा जूट माथे हर राखो, मसाण राख विलेपन राखो ॥मा०॥५॥ नर कपाल तणो रचो हार, अस्थि रोम मांहीं गुंथो फार ॥मा०॥ कोटे घालो ते वली माल, देखीती मोटी विकराल ॥मा०॥६॥ जाक ने किन्नरी वाउ अपार, जांग धंतुरो खाउ फार ॥मा०॥ नगन थइ हींमो गामो गाम, जिक्षा मागो ठामो ठाम ॥म ०॥७॥ वरणावरण म करशो जेद, सघले लेजो जिक्षा ठेद ॥मा०॥ मुज कपाल मांहीं ालो जेह, रात दिवस तमे जमजो तेह ॥मा०॥८॥ एणी परे हत्या जाशे तारी, ए शिखामण सारी ॥ मा० ॥ रुधिर लेइ को पुरशे कपाल, खर मस्तक पडशे तत्काल ॥ मा० ॥ ए ॥ ब्रह्मा वचन सुणी तव ईश, जोगी रूप धर्युं जगदीश ॥ मा० ॥ कपालीक धरीयो तेह नाम, रात दिवस हींमे गामो गाम ॥मा०॥१०॥ एम करतां गयो घणो काल, मसाण जूमि सेवी

उजमाल ॥मा०॥ पापीने घरे गयो ततकाल,रुधिर पूर्युं ब्रह्मा कपाल ॥मा०॥११॥ ईश्वरनी जमी लीधी हत्या, हाथ थकी तुंबमीपमी धरत्या ॥मा०॥ कपालीक शंकरनो नाम, लोक कहे जपो शिव ठाम॥मा०॥१२॥ वेद पुराण कथा ठे एह, वाल गोपाल जाणे ठे तेह ॥मा०॥ ब्रह्मानी सांजलजो वात, तप संजम कीधो ठे घात ॥ मा० ॥ १३ ॥ अंबर गइ तिलो-त्तमा जाम, कामे पीड्यो ब्रह्मा ताम ॥ मा०॥ विकल रूप हुवो ठे अपार, जुवन जर्युं देखे ते नार ॥ मा० ॥ १४ ॥ विह्वल थयो मलवाने धाय, नर नारी सहु नाठां जाय ॥ मा० ॥ झाड वीमने सांइ देय, देवी जाणे तिलोत्तमा एय ॥ मा० ॥ १५ ॥ मृग पशु तणे धामे जाम, लंपट देखी नासे ताम ॥ मा० ॥ रींठमी एक मली वन मांय, लथवथ करीने तेहने साय ॥मा०॥१६॥ रूप जाएयुं रंजानुं एह, वृद्ध ब्रह्माए जोगवी तेह ॥मा०॥ रुतुवंती ते हुती ताम, जंबुवंत उपन्यो अजिराम ॥ मा० ॥ १७ ॥ वलवंत बुद्धि तणो निधान, प्रसिद्ध जाणे सहु वेद पुराण ॥ मा० ॥ रामचंद्र तणो हुवो ते दूत, जग विख्यात ब्रह्मनो सूत ॥ मा० ॥ १८॥ गरढानी करणी ठे एह, किम ठवीए पुत्री पासे तेह ॥ मा० ॥ सृष्टिकर्ता ब्रह्मा कह्यो सार, नीपाइ नहीं एके नार ॥ मा० ॥ १९ ॥ रींठमीशुं कीधो व्यजिचार, जुंरूपणुं एहने अपार ॥ मा०॥ तापस अमे सहुको जाणुं,

ब्रह्मा लक्षण केतां वखाणुं ॥ मा० ॥ २० ॥ बीजा खंडनी इग्यारमी ढाल, सुणजो सहुको बाल गोपाल ॥ मा० ॥ रंगविजयनो कहे एम शिष्य, नेमविजयनी पहोंती जगीश ॥ मा० ॥ २१॥

दुहा.

आप कहुं वात एहनी, सांभल भाया मात ॥ वेद पुराणमां एहवी, साची कहुं एक वात ॥ १ ॥ सावित्री नार ब्रह्मा तणी, बेटी जग गुणधार ॥ सारदा कुमरी रंभा जीसी, देखी चलीयो तेणी वार ॥ २ ॥ कामे पीड्यो पुंठे थयो, भारती नाठी जाय ॥ वनमां नासी ते गइ, पुत्री पुंठे थाय ॥ ३ ॥ ब्रह्मा छेतरवा सही, मृगली रूप धर्युं सार ॥ तव ब्रह्मा कुरंगनो, रूप धरी व्यभिचार ॥ ४ ॥ पुत्रीने विलसी करी, एहवो जेनो काम ॥ तो पुत्री भाया आपणी, केम भलावीए ताम ॥ ५ ॥ तापस कहे नारी भणी, पुत्री न छोरू एह ॥ हरि हर ब्रह्मा सारिखा, पर नारी न मूके तेह ॥ ६ ॥ कर जोडी तापसी भणे, सांभल स्वामि कंत ॥ सूरज पासे सोंपीए, भाया बाला संत ॥ ७॥ तापस कहे सुण तापसी, दिनकर छे छीनाल ॥ कुंती कन्या जेणे भोगवी, किम छोरू ते बाल ॥ ८ ॥

ढाल बारमी.

दील लगारे वादल वरणी--ए देशी.

सांजल तापसी जादव राजा, समुद्रविजय सुखकारी ॥ तुमे सुणजोरे॥ आगे होइ जे वात, मूकी पर तणी तात ॥तु०॥ ए आंकणी॥ तेहनी जगनी कुंती कन्या, रूपे रंजा अवतारी ॥ तु० ॥ १ ॥ चतुर्थ स्नान करवाने बाला, जमुना नदी गइ तेह ॥ तु० ॥ वस्त्र विवर्जित स्नान करंती, सूर्यदेवे दीठी तेह ॥ तु० ॥ २ ॥ रूप देखी तव मदने पीड्यो, विप्र वेश वेगे लीधो ॥ तु० ॥ कषांवर पेहेर्या जनोइ आरोपी, सर्वांग तिलकज कीधो ॥ तु० ॥ ३ ॥ राम राम मुख बोलतो निरमल, आव्यो कुंतीनी पासे ॥ तु० ॥ आशिर्वाद देइ करी जंपे, सांजलो कुमरी उल्लासे ॥ तु० ॥ ४ ॥ काम क्रीडा अमशुं तमे खेलो, जोवननो लाहो लीजे॥ तु० ॥ कुंती कहे कुमारिका अमे छुं, अघट काम किम कीजे ॥ तु० ॥ ५ ॥ द्विज रूपी सूरज वदे वाणी, सांजलो कुमरी अजाण ॥ तु० ॥ उत्तम वर्ण ब्राह्मण वेद जाण, विना नवि धरुं प्राण ॥ तु० ॥ ६ ॥ पवित्र पात्र अमे जगत् प्रसिद्धा, अमने आपे जे दान ॥ तु० ॥ पाप जाय सुख संपत्ति पामे, स्वर्ग लोके लहे मान ॥ तु० ॥ ७ ॥ विप्र वचन कुमरी मन मान्युं, स्वस्ति जणावी का-

य ॥ तु० ॥ जोग विलास हुवो रंग रोल, हर्षं प्रीत बेउ थाय ॥ तु० ॥ ७ ॥ गर्भ धर्यों कुंतीए तेणे अवसर, जोग करी वलीयो जाण ॥ तु० ॥ कुमरी कहे किहां जाउ बो स्वामि, वृत्तांत कहो बांडी काण ॥ तु० ॥ ए ॥ द्विजवर कहे सुणो सुंदरी कन्या, सूर्यदेव अम नाम ॥ तु० ॥ रूप देखी चित्त अम तणुं चलीयुं, विप्र होइ कीधो काम ॥तु०॥ १० ॥ जुवन प्रकाश करुं दिन गगने, जावा द्यो मुज आज ॥ तु० ॥ कुंती कहे हुं बुं बाल कुमारी, उंधान रह्यो दिनराज ॥ तु० ॥११॥ जासुर जणे जामनी तुम कूखे, पुत्र होशे दातार ॥ तु० ॥ रूप कला बल बुद्धि विचक्षण, त्रीजा दिवस मोझार ॥ तु० ॥ १२ ॥ मंत्र अपूर्व वली आपुं तुमने, नर आकर्षण होय ॥ तु० ॥ समरतां आवे सहु पासे, काज करशुं आपण दोय ॥ तु०॥१३॥ मंत्र आपी करी कुंती संतोषी, जानु गयो निज गाम ॥ तु० ॥ कन्याए काने जण्यो सुत सुंदर, करण हुवो तेह नाम ॥ तु० ॥ १४ ॥ मंरूपकौशीक कहे सुण तापसी, कुंतीने जोगवे जेह ॥ तु० ॥ सूरज देवता मोटो लंपट, बायाने केम बोडे तेह ॥ तु० ॥ १५ ॥ ढाल बारमी खंड बीजानी, कही श्रोता जन सारु ॥ तु० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम पन्नणे, नेमविजय कहे वारु ॥ तु० ॥ १६ ॥

दुहा.

तापसी कहे स्वामि सुणो, चंद्र अछे महा संत ॥ पुत्री ते पासे ठवी, जात्रा जइए कंत ॥१॥ मंरूपकोशीक तव कहे, सुण गयानी मात ॥ चंद्र चपल लंपट घणो, घटती न होय वात ॥२॥ तेह कथा वली सांजलो, सोमे कीध अनाचार ॥ गुरुपत्नी तेणे जोगवी, कहेशुं तेह विचार ॥ ३ ॥ बृहस्पति वसुधामां वडो, सुर सघलानो गोर ॥ तस नारी दीठी रुयडी, चंद्रे लीधी चोर ॥ ४ ॥ व्यजिचार तेहशुं आचर्यो, रात दिवस ते चंद्र ॥ सुर गुरुए जाणी करी, राव करी तव इंद्र ॥ ५ ॥ जजमान तुमे सांजलो, चंद्रे हरी मुज नार ॥ अन्याय कीधो एणे घणो, वेगे करो अम सार ॥६॥ सुरपति सैन्य लेइ संचर्यो, जुध करवाने जाम ॥ सोमे शिव संख्या करी, आव्यो ईश्वरने धाम ॥ ७ ॥ कर जोमी शशीकर जणे, सुणो शंकर महाराज ॥ एक कला देउ लांचनी, अम तणो करो काज ॥ ८ ॥ शंकर तव सेना लइ, त्रिशुल धरी निज हाथ ॥ इंद्र सामो वेगे जइ, युद्ध करे ते साथ ॥ ए ॥ उजय दल झूझे घणां, सुरपति शंकर बेह ॥ संग्राम करतां दिन घणा, केहेतां नावे छेह ॥ १० ॥

ढाल तेरमी.

कंकण मोल लीयो–ए देशी.

संधी तव देवे करीरे साजन, संग्राम निवार्यो ताम ॥ सुगुणा सांजलो ॥ गुरुपत्नी आपो वलीरे ॥ सा० ॥ जाउ तुमे आपणे गाम ॥ सु० ॥ १ ॥ सोम कहे सुर सांजलोरे ॥ सा० ॥ बेरु बे अम तणुं जेह ॥ सु० ॥ उदर मांहीं अवला तणेरे ॥ सा० ॥ अपावो अमने तेह ॥ सु० ॥ २ ॥ सुरगुरु तव तिहां बोलीयोरे ॥ सा० ॥ सांजलो तुमे सहु देव ॥ सु० ॥ उदरे अपत्य बे माहरुंरे ॥ सा० ॥ किम अपावो ततखेव ॥ सु० ॥ ३ ॥ सोम कहे बेरु माहरोरे ॥ सा० ॥ बृहस्पति कहे ए मुज ॥ सु० ॥ गुरु जजमान झगडो करेरे ॥ सा० ॥ नवि पामे कोइ सूज ॥सु०॥४॥ वढतां थकां बेहु वारीयारे ॥ सा० ॥ न्याय कीधो तिणे एह ॥ सु० ॥ गर्जवती स्त्रीने पूबीएरे ॥ सा० ॥ साचुं कहेशे तेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुर सघले मली पूबीयुंरे ॥ सा० ॥ गुरु कामनीने ताम ॥ सु० ॥ सुधुं बोलो मावडीरे ॥ सा० ॥ केहनो अपत्य अजिराम ॥ सु० ॥ ६ ॥ गुरुपत्नी कहे सांजलोरे ॥सा०॥ उदर मांहे बे जेह ॥ सु० ॥ तेहने तमे पूबजोरे ॥सा०॥ साचुं कहेशे वली तेह ॥ सु० ॥ ७ ॥ तव तेणीए ते जनमीयोरे ॥ सा० ॥ पुत्र हुवो अजि-

राम ॥ सु० ॥ बाप तणां लक्षण घणांरे ॥सा०॥ देवे मली पूछ्यो ताम ॥ सु० ॥ ८ ॥
सुत साचुं तव उंचरेरे ॥सा०॥ सोम तणो हुं पुत्र ॥ सु० ॥ सुर सघला जाणे सहीरे॥
सा० ॥ इणी जननीए प्रसूत ॥सु०॥ए॥ सोम सूत सहुए कहेरे ॥सा०॥ जाराजात वली
नाम ॥ सु० ॥ बुधवार बुद्धि आगलोरे ॥ सा० ॥ पुराण प्रसिद्धो ताम ॥ सु० ॥ १० ॥
चंद्र तणां लक्षण एहवांरे ॥ सा० ॥ जाणे बाल गोपाल ॥ सु० ॥ एह पासे केम मूकी-
एरे ॥ सा० ॥ पुत्री छाया बाल ॥ सु० ॥ ११ ॥ तापसी कहे तापस सुणोरे ॥सा० ॥
इंद्र अपूरव आज ॥ सु० ॥ तेह पासे पुत्री मेलीनेरे ॥ सा० ॥ पछी कीजे निज काज ॥
सु० ॥ १२ ॥ तापस कहे सुण कामनीरे ॥सा०॥ इंद्र तणो व्यभिचार ॥ सु० ॥ पुराण
प्रसिद्ध जाणे सहुरे, ॥ सा० ॥ कहेशुं तेह विचार ॥ सु० ॥ १३ ॥ गंगा नदी छे निर्म-
लीरे ॥ सा० ॥ तापस वसे तिहां सार ॥ सु० ॥ गौतम ऋषि सहुमां वडोरे॥ सा० ॥
अहिल्या तणो भरतार ॥ सु० ॥ १४ ॥ एक वार स्वर्गह थकीरे ॥ सा० ॥ इंद्र सुरासुर
राय ॥ सु० ॥ विमान वेसीने आवीयोरे ॥सा०॥ वांदवा ऋषिवर पाय ॥ सु० ॥ १५ ॥
अहिल्या दीठी तिहां रुयडीरे ॥ सा० ॥ रूपे करी रंभा समान ॥ सु० ॥ देखी इंद्र
विह्वल हवोरे ॥ सा० ॥ लाग्यां अंग कामनां बाण ॥ सु० ॥ १६ ॥ रूप रची तेणे

रुयमोरे ॥ सा० ॥ अहिल्या निज वश कीध ॥ सु० ॥ मढी मांहे पेसी करीरे ॥सा०॥ इंद्रे आलिंगन दीध ॥ सु० ॥ १७ ॥ स्नान करी तव आवीयोरे ॥ सा० ॥ गौतम तापस जाम ॥ सु० ॥ द्वार दीधां देखी करीरे ॥ सा० ॥ आचंम्यो तेह ताम ॥ सु० ॥ १८ ॥ पर पुरुष देखी करीरे ॥सा० ॥ उपन्यो कोप अपार ॥सु०॥ रंडे मुंडे तापसीरे ॥सा०॥ उघाम वेगे करी बार ॥ सु० ॥ १९ ॥ जय पाम्या तव बेहु जणांरे ॥ सा० ॥ इंद्र हुवो मिंजार ॥ सु० ॥ घर मांहीं नासी गयोरे ॥सा०॥ पेठो चूला मोकार ॥ सु० ॥ ॥ २० ॥ खंड बीजानी ढाल तेरमीरे ॥ सा० ॥ आगे जे होये वात ॥ सु० ॥ रंगविजय कविरायनोरे ॥ सा० ॥ नेमने हर्ष सुखसात ॥ सु० ॥ २१ ॥

दुहा.

तव ध्रूजंती तापसी, बार उघाड्यो जाम ॥ महारंड रांमनी शुं कर्युं, गौतम पूछे ताम ॥ १ ॥ कोण पुरुष तें घालीयो, लंपट लुच्चो जार ॥ साचुं कहेरे पापणी, श्रापे करुं तुज छार ॥ २ ॥ कामनी कहे कंथ सांजलो, घरमां छे मिंजार ॥ ज्रांत पमी छे तुम घणी, नहीं कीधो व्यन्निचार ॥ ३ ॥ गौतमे ज्ञान विचारीयुं, जाण्युं बेहुनुं पाप ॥ शीला कीध पाषाणनी, अहिल्याने दीध श्राप ॥ ४ ॥ बिलामो थइ नासतो, इंद्र

धस्यो तेणी वार ॥ फिट पापी महा रंकना, तापसी कीध व्यभिचार ॥ ५ ॥ पर नारी तें भोगवी, ते उपर तुज रंग ॥ सहस्र शरीरे नीकलो, भगाकार उत्तंग ॥ ६ ॥ तापसने श्रापे करी, जोनि हुइ ततकाल ॥ मघवा शरीर भर्युं खरुं, अशुभ दीसे विकराल ॥ ७ ॥ पाय लागी इंद्र विनवे, सांभल तुं ऋषिराज ॥ लोक हांसुं होशे घणुं, लागशे वोहोली लाज ॥ ८ ॥ क्षमा करो स्वामि तुमे, भग टालो मुज अंग ॥ हुं अपराधी पापीयो, मुज उपर करो रंग ॥ ए ॥ इंद्र वचने उपशम करी, गौतम बोल्या ताम ॥ होजो माहारी कृपा थकी, सहस्र लोचन अभिराम ॥ १० ॥ सहस्राक्ष नाम तेहनो हुवो, वेद पुराणे तेह ॥ लंपट पासे केम मेलीए, छाया पुत्री एह ॥ ११ ॥ तापसी कहे तापस सुणो, बृहस्पति विद्यानो वास ॥ सुर सघलानो गुरु भलो, पुत्री छवो तेह पास ॥ १२ ॥ तापस कहे सुण कामनी, तुं मोटी छे अजाण ॥ भाइनी भामिनी भोगवी, केम छवीए होय हाण ॥ १३ ॥

ढाल चौदमी.

वावा किसनपुरी, तुम विना मढियां उजड पडी—ए देशी.

ताम तापस कहे सुण नार, सुर सघला लंपट निरधार ॥ साजन वात सुणो, सां-

जली सहुको मत अवगुणो ॥ ए आंकणी ॥ ते पासे केम ठवीए बाल, जामनी सुण तुं थइ उजमाल ॥सा०॥सां०॥१॥ एक वात में हृदय विचार, जम जग मांहीं रुडो ते सार ॥ सा० ॥ जोइ धर्म विचारे तेह, ठाया पुत्री पासे मूकीए एह ॥सा०॥ सां० ॥ २ ॥ मंडपकौशीक तापस ताम, ठाया लाव्यो जमने गाम ॥ सा० ॥ कर जोडी कहे सुण महाराय, धर्माधर्म जाणो तुमे न्याय ॥सा०॥ सां० ॥ ३ ॥ शीलवंत स्वामि गुणवंत, महीयल मोटो तुं महांत ॥ सा० ॥ निकलंक तुं सुणीए महाराज, विनति माहरी सांजलो आज ॥ सा० ॥ सां० ॥ ४ ॥ तीर्थजात्राए अमे जाउं देव, ठाया थापिण राखो हेव ॥ सा० ॥ तुम प्रासादे करुं अमे जात्र, पवित्र होशे अमारां गात्र ॥ सा०॥ सां० ॥ ५ ॥ जम कहे सुण तापस राज, ए अमने नहीं लागे लाज ॥ सा० ॥ ठेमी जाउ तुमे ठाया एह, अजोगत आवी लेजो तेह ॥ सा० ॥ सां० ॥ ६ ॥ तापस तव रलियात थयो, जम पासे मूकीने गयो ॥ सा० ॥ अडसठ तीरथ करे फरी जाम, कृतांत वात सांजलजो ताम ॥ सा० ॥ सां० ॥ ७ ॥ ठाया रूप देखी अजिराम, जम सर्वांगे व्याप्यो काम ॥ सा० ॥ मनमां चिंतवे जोगवुं एह, सफल जनम करुं मुज देह ॥ सा० ॥ सां० ॥ ८ ॥ जोलवी घर मांहे तेमी बाल, पाप करम मांड्यो विकराल ॥ सा० ॥

अघट काम कन्याशुं कीध, धर्मराज महीयल परसीध ॥ सा० ॥ सां० ॥ ए ॥ ठाया सरसुं सुख जोगवे, रात दिवस ते जनम अनुजवे ॥ सा० ॥ सुर सघले तव जाणी नार, एहवी नहीं त्रिजुवन मोकार ॥ सा० ॥ सां० ॥ १० ॥ हरवा हेरे परूीया देव, यम-मंदिरनी मांफी सेव ॥ सा० ॥ रात दिवस ते टांपे घणुं, ध्यान लाग्युं बे ठाया तणुं ॥ सा० ॥ सां० ॥ ११ ॥ जमे जाण्यो तेहनो संच, सुर सघला मुज करशे वंच ॥ सा० ॥ उपाडीने गली ततकाल, उदर मांहीं उतारी बाल ॥ सा० ॥ सां० ॥ १२ ॥ देव देखे नहीं ठाया तेह, माथुं खंजोली गया निज गेह ॥ सा० ॥ धर्मराज विमासण करे, सुर रखे मुज नारी हरे ॥ सां० ॥ सां० ॥ १३ ॥ एकलो निज मंदिरमां जइ, सघले निरखे उनो थइ ॥ सा० ॥ जोतां स्थान नवि देखे कोय, उबकीने जम काढे सोय ॥ सा० ॥ सा० ॥ १४ ॥ पाप करम तेहशुं संचरे, काम कुतूहल एणी परे करे ॥ सा० ॥ काम पड्ये काढे ततकाल, जोग करीने गले ते बाल ॥ सा० ॥ सां० ॥ १५ ॥ इणी परे काल बहु तस जाय, जमकरणी केहने ठावी न थाय ॥ सा० ॥ पवनदेव पृथ्वी मांहे जमे, जलमां थलमां आकाश ते रमे ॥सा०॥सां०॥१६॥ अदृश्य रूपे सघले संचरे, हेलाए ते कारज करे ॥ सा० ॥ तेणे दीठी ठाया जाम, अग्नि मित्रने घर आव्यो

ताम ॥ सा० ॥ सां० ॥ १७ ॥ विश्वानल तुं सांभल आज, जनम सफल करे महाराज ॥ सा० ॥ रूपवंत बायानो संजोग, तेहशुं जम करे नित भोग ॥ सा० ॥ सां० ॥१८॥ उदर मांही राखे ते बाल, काज पड्ये काढे ततकाल ॥सा०॥ विश्वानल कहे सांभल भाय, त्रिभुवन मांहे तुं मोटो वाय ॥ सा० ॥ सां०॥ १९ ॥ खंड बीजानी चौदमी ढाल, नेमविजय कहे उजमाल ॥ सा० ॥ आगल सांभलजो सहु कोय, वायुकुमार करे ते होय ॥ सा० ॥ सां० ॥ २० ॥

दुहा.

जोग मले तेहशुं करो, जीव जातो मुज राख ॥ सांभलजो वायु कहे, वचन अमारां भाख ॥ १ ॥ जम जूठो कामी घणो, घडी एक न मेले बाल ॥ केम मेलाप तेहशुं होये, उदरमां राखे ततकाल ॥ २ ॥ आज एक वात विचारी में, पुण्ये सरशे काज ॥ गंगा स्नान करवा भणी, जम राजा करी साज ॥ ३ ॥ पोहोर एक जाय ध्यानमां, बाया मेली एक ठाम ॥ संध्या जाप करे तिहां, आपणो होशे काम ॥ ४ ॥ एक पोहोर अवकाशमां, जम नावे बाया पास ॥ तेणे समे तिहां जाइने, बाया हरीए तास ॥ ५ ॥

ढाल पंदरमी.

अणसणरारे योगी—ए देशी.

विश्वानल आनंद्यो ताम, सांभल पवन अमारो कामरे ॥ सुणजो तमे भाइ ॥ जो एक पोहोर मलशे संजोग, तो नवि पडशे कांइ विजोगरे ॥सु०॥१॥ बिहूल बोलीने चाल्यो जाम, अगनि गयो गंगातट तामरे ॥ सु० ॥ स्नान करवा आव्यो जम जांहीं, विश्वानल खोसीयो त्यांहींरे ॥ सु० ॥ २ ॥ जम आव्यो जमना तट जाम, सघले देखी निरंजन ठामरे ॥ सु० ॥ वमन करी तव काढी नार, ठाया सांती कोतर मोझाररे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जम जल पेसी करे सनान, संध्या तरपण मांड्यो ध्यानरे ॥ सु० ॥ अगनि अपूरव रूपज लीध, आभूषण सघलां अंगे कीधरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ ठाया पासे आव्यो ताम, हास्य वचन बोल्यो अभिरामरे ॥ सु० ॥ साचुं सांभल सुंदरी आज, अमे सार्युं तमारुं काजरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ त्रिभुवन मांहीं मोटो हुं देव, सुर नर किंनर करे मुज सेवरे ॥ सु० ॥ तेत्रीश क्रोड तणो हुं मुख, हुं देउं सघलाने सुखरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ होम हुताशन जे करे मुज, मारो नाम राखे ते गुजरे ॥ सु० ॥ मुजने जे वली दीये दान, तेहने वाधे सुख संतानरे ॥ सु० ॥७॥ आपण वेहु बुं रूप निधान, भावे दीजीए

भोगनुं दानरे ॥ सु० ॥ ठायाने तव उपनो रंग, स्वाहा करीने आप्युं अंगरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ काम क्रीमा कीधी ततकाल, जम आवतो दीठो विकरालरे ॥ सु० ॥ ठाया कहे तुं सांभल कंत, कृतांत करशे तुमारो अंतरे ॥ सु० ॥ ए ॥ जीवता जाउ तुमे हवे आज, नहीं तो बेहुने लागशे लाजरे ॥ सु० ॥ कान नाक ठेदे तव माहारो, मारी करशे कोथलो ताहरोरे ॥ सु० ॥ १ ॥ कशी संख्या न करो ए वात, नहीं तो आपणो होशे घातरे ॥ सु० ॥ आगे जीववधी यमराय, ते उपरे कीधो अन्यायरे ॥ सु० ॥ ११ ॥ विश्वानल कहे सांभल नार, हुं पग पांगलो बुं अपाररे ॥ सु० ॥ चरण होय तो दोमुं आज, यम आगलथी करुं हुं काजरे ॥ सु० ॥ १२ ॥ यम भय पासी ठाया बाल, अगनि देव गळ्यो ततकालरे ॥ सु० ॥ धर्मराज आव्यो तेणी वार, उपाडी गली ठाया नाररे ॥ सु० ॥ १३ ॥ घर आवीने उबके जेह, भोग करीने वली गले तेहरे ॥ सु० ॥ स्नान करवा जम गंगा जाय, पोहोर एक तप जपने थायरे ॥ सु० ॥ ॥ १४ ॥ ठाया तव उबके ठे आग, पोहोर एक आवे तसु भागरे ॥ सु० ॥ यम देखीने गले आग ठाया, नारीने लागी एम मायारे ॥ सु० ॥ १५ ॥ एणी परे कामिनी भोगवे बेह, अपर वात सांभलजो तेहरे ॥ सु० ॥ दिवस मास बहु जाये एह, अगनि

नाठो जग मांहीं तेहरे ॥ सु० ॥ १६ ॥ लोक तणां तव रांधणां रहीयां, घर हाटे अंधारां वहीयांरे ॥ सु० ॥ काचो कोरो खाए लोक, पेटपीडे करी पाडे पोकरे ॥ सु० ॥ १७ ॥ सोनार लोहार पोकज पाडे, अगनि विना केम घाट घाडेरे ॥ सु० ॥ केम करे जगन जानी जाग, नहीं जाप विना कोइ लागरे ॥ सु० ॥ १८ ॥ जाप विना देव थया ठे घेला, इंद्र आगे पोकारे गया वेहेलारे ॥ सु० ॥ सुरपति चिंता उपनी जाम, पवनदेव पूछ्यो तेणे तामरे ॥ सु० ॥ १९ ॥ वायु वदे सांजल मेघवान, अगनि जोयो में सघले गामरे ॥ सु० ॥ एक जायगा ठे तेह तणी वारु, जोइने कहेशुं ठीहुंति[1] वारुरे ॥ सु० ॥ २० ॥ ढाल पंदरमी खंरू बीजानी, आगे कहेशुं वात त्रीजानीरे ॥ सु० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम बोले, नेमविजय नवि वात खोलेरे ॥सु०॥

दुहा.

पवने तव सहु नोतर्या, सुर नर किन्नर देव ॥ जमने मांड्यां वेसणां, त्रण जणांनां हेव ॥ १ ॥ जम मन मांहे चमकीयो, वायु कवण ए काम ॥ एकेको आसन सहु तणी, अमने केम त्रण ठाम ॥ २ ॥ वायु कहे साचुं कहुं, उदर मांहीं तुम तेह ॥ सहुना

१ पत्तो.

संदेह नांजशो, प्रत्यक्ष थाशे जेह ॥ ३ ॥ जमने काढी उबकी, गयाने ततकाल ॥ पवन कहे नाजी सुणो, मित्र अमारो आल ॥ ४ ॥ गयाए वमी करी, विश्वदेव कहाड्यो ताम ॥ जम जूठो कोप्यो घणुं, अग्निनो टालुं गम ॥ ५ ॥ विश्वानल नाठो तदा, कृतांत पुंठे धाय ॥ पग पांगलो अगनिदेव ते, परुतो नाठो जाय ॥ ६ ॥ तरुो-वरु नाठा बेहु जणा, व्यन्निचारी मारुं आज ॥ पेठो जइ पाषाणमां, विश्वानल तिण ताज ॥ ७ ॥

ढाल सोलमी.

सुण बेनी पीयुमो परदेशी—ए देशी.

अगनि अलोप न दीसे जाम, जम पाछो आव्यो गमरे ॥ घरे लेइ गयो गयाने सार, नोगवे कृतांत अपाररे ॥ सांनलजो साजन जे कहुं वात ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांनलो साच, वारुव बोल्युं जे वाचरे ॥ वेद पुराणे छे ए वात, साचुं जूठुं कहो न्रातरे ॥ सां० ॥ २ ॥ द्विजवर बोल्या सांनल वाच, वचन तुमारो साच-रे ॥ शास्त्र अमारे बोल्युं एम, अमे लोप्युं जाये केमरे ॥ सां० ॥ ३ ॥ मनोवेग बोल्यो वली ताम, सांनलो ब्राह्मण गुणधामरे ॥ जमदेव जाणे सहुए जगमां, अतीत

अनागत वर्तमानमांरे ॥ सां० ॥ ४ ॥ विश्वानल तस पेट मोझार, पोहोर एक जोगवे नाररे ॥ ज्ञाने करी जाण्यो नहीं तेह, जमे ढूकड़ो आपणो देहरे ॥ सां० ॥ ५ ॥ तो केम जाणे त्रिभुवन वात, दोष मोटो एक घातरे ॥ जम सघलो जाणे संसार, अगनि न जाण्यो उदर मोझाररे ॥ सां० ॥ ६ ॥ तेम मुज मीना गंधी जाय, बार जोजन अंदर न थाय रे ॥ जेम द्विज सहुए जमने मान्यो, तेम मिंजार गुणनो वानोरे ॥ सां० ॥ ७ ॥ वली सांभलो ब्राह्मण तमे वात, एक दोषे गुण नोहे घातरे ॥ उमीया ईश्वरने अर्धांग, जटा मांहीं राखे गंगरे ॥ सां०॥८॥ पारवती गंगाशुं नेह, तारक केम कहीए तेहरे ॥ नारायण लंपट अपार, गोवालणीशुं कीधो व्यभिचाररे ॥ सां० ॥ ९॥ रींछडी सुताशुं कीधो संग, ब्रह्मचर्य ब्रह्मानो भंगरे ॥ सूरजने समरो तुमे सार, कुंतीशुं कीधो व्यभिचाररे ॥ सां० ॥ १० ॥ सोम सदा सहुए आराध्यो, गुरुपत्नीनो दोष वाध्यो-रे ॥ इंद्र देव जपे सहु कर जोड, अहिल्यानी लागी खोडरे ॥ सां०॥ ११ ॥ सुरगुरुने छे वहूनुं आल, जाणे छे बाल गोपालरे ॥ विश्वानल नर घणो व्यभिचारी, हवन होमनो अधिकारीरे ॥ सां० ॥ १२ ॥ जमने सहु कहे धर्मनो राय, छाया सरसो करे अन्यायरे ॥ ऋषि तापस मिथ्याती तेह, तेहनां छिद्र अति घणां जेहरे ॥ सां० ॥ १३ ॥

परनारी तणो दोष एक, वेद पुराणे जुर्ड विवेकरे ॥ जो देव तणा नहीं लीजे दोष, तो मीनकानो श्यो रोषरे ॥ सां० ॥ १४ ॥ वाडव वचन बोल्या तव सार, तुं वादी मोटो गुणधाररे ॥ जयवाद पाम्या तुमे अपार, विप्र हार्या अमे वीश वाररे ॥ सां० ॥ १५ ॥ मनोवेग वली बोल्यो ताम, पवनवेग सुणो अभिरामरे ॥ देव तणा गुण दीठा तुममे, काम विकार कह्या अममेरे ॥सां०॥१६॥ मदन महा सुभट जीत्यो जेह, देव करी मानो तुमे तेहरे ॥ नवी चले रामा रूपने देखी, विषयने नाखे उवेखीरे ॥ सां० ॥१७॥ सराग वचन जे बोले स्वाम, ते उपर न धरे मन कामरे ॥ इंद्रिनां सुख करे असार, ते देव कहीए निरधाररे ॥सां०॥१८॥ शील सहस्र पाले अढार, ते तारण तरण संसाररे ॥ एहवा जाणो जिनवर देव, भावे भगते करो सेवरे ॥ सां० ॥ १९ ॥ त्रिभुवन नायक सेवे जेह, स्वर्ग मुक्ति पामे तेहरे ॥ जीती करी वाकवने वेगे, वनमां आव्या धरी तेगेरे ॥ सां० ॥ २० ॥ खंड बीजानी सोलमी ढाल, सांभलजो बाल गोपालरे ॥ रंगविजयनो शिष्य दयाल, नेम कहे थइ उजमालरे ॥ सां० ॥ २१ ॥

दुहा.

पवनवेग तव बोलीयो, सांभलो भाइ विचार ॥ देव दोष जे दाखव्या, सत्य वचन ते

सार ॥ १ ॥ एक उत्तर आपो वली, मनोवेग महंत ॥ देव मांहिं जे गुण अछे, ते सहु कहो तुमे संत ॥ २ ॥ मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग पवित्र ॥ सुर सघलाना गुण कहुं, मनमां विचारो चित्र ॥ ३ ॥ जुवन व्यंतर ज्योतषी, स्वर्गवासी जे देव ॥ तेह तणा गुण सांजलो, आठ कहुं संखेव॥४॥अणिमा अणुं मात्रज करे, मणिमा मेरु समान॥लघिमा लघुपणुं आचरे, गरिमा जारी जाण॥५॥ प्राप्ति सर्व प्राक्रम करे, इस तणो गुण देय ॥ काम रूप चिंत्युं करे, वशीकरण वशी तेय॥६॥ आठ गुणो छे एह जला, देव तणे जे अंग, ब्रह्मादिकने ते नहीं, एक गुण छे उत्तंग ॥ ७ ॥ लघिमा गुण ते पामीया, जेणे हो-ये वहोत्तर लाज ॥ लोक मांहीं हलवा हुवा, ते कहीशुं गुण आज ॥ ८ ॥ सहु पर्वत मांहे जलो, कैलास उत्तम ठाम ॥ शंकर तप जप तिहां करे, एकाकी गुणधाम ॥ ए ॥ नारद ऋषि तिहां आवीया, हरने करी प्रमाण ॥ कर जोमी वदे विनति, सांजलो हर मुज वाण ॥ १० ॥ पुत्र विना गति नवी होये, पहेले परणो नार ॥ पुत्र तणी उत्पत्ति करी, पछी ऋषि व्रत धार ॥ ११ ॥ ईश्वर तव तिहां बोलीयो, सांजल तुं मुनिराज ॥ कन्या जुवो तमे रुयमी, वेगे करो अम काज ॥ १२ ॥ उत्पत्ति करुं संताननी, वाधे मुज तो वंश ॥ परणाव्यानुं पुण्य घणुं, तुम होशे सुख हंस ॥ १३ ॥ नारद तव ते सांजली,

चाल्यो कन्या काज ॥ हेमाचलने जइ मल्यो, सांजल तुं गिरिराज ॥ १४ ॥ तुम कुमरी ले रुयडी, शंकरने द्यो तेह ॥ वर कन्या ए योग्य ले, महादेवशुं करो नेह ॥ १५ ॥ हेमाचल कहे नारद सुणो, पारवती में दीध ॥ लगन लेइ रुषि चालीयो, हरने जाण तव कीध ॥ १६ ॥

ढाल सत्तरमी.

चरणाली चामुंडा रण चढे—ए देशी.

ईश्वर वर तव सज थइ, वृषज पलाणी चडीयोरे ॥ जेरव जूत जोटींग घणां, जान सहित पंथ पडीयोरे ॥ सुणजो साजन वातडी ॥ ए आंकणी ॥१॥ शंकर सासु ले मीनका, वर देखी होइ ऊांखीरे ॥ मीनका कहे सहु सांजलो, मुज वेटी इहां कुणे नाखीरे ॥ सु० ॥ २ ॥ जग जीरण गरढो ए अले, चडवानो बलद ले बांडोरे ॥ गाम ठाम एहने नहीं, मात पिता नहीं रांडोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जात ने जात को नवि कहे, जस्म विजूषित देहरे ॥ कोटे ले साप बीहामणो, उढण गजचर्म तेहरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ नरमुंड माला गले अले, जांग धंतुरो ते खायरे ॥ हस्त कपाल कांखे ऊोली, शिर जटा किन्नरी वायेरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ एणे जमाइ मुज खप नहीं, जो देशो तो मरशुं आजरे ॥ जल मांहे

नाखुं ए वालिका, विष चारुं नहीं हर काजरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ ब्रह्मा वमसाले आवीया, मीनाने कहे सुणो मातरे ॥ नोली चक्रवरती ईशनी, त्रिजुवन मांहिं विख्यातरे ॥ सु० ॥ ७ ॥ पारवती परणावो ईशने, विवाह म मोको ए आजरे ॥ जो रे कोपे एह शंकरो, करशे अनरथ काजरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ सहुने श्रापी जस्म एह करे, तुम तणो टाले ए गामरे ॥ मीनाए मौन धर्युं तदा, विवाह तणो मांड्यो कामरे ॥ सु० ॥ ए ॥ वरराजा तोरण आवीयो, मलीयुं बे कामिनी थोक रे ॥ पोमादे हांसलदे जली, हरपादे सोमादे धोक रे ॥सु०॥१०॥ रंगादे नांमलदे देमादे, टहकादे खलके कर चुमीरे ॥ माणकदे आवी मलपती,रतनादे टबकादे रुमीरे॥सु०॥११॥कमलादे काकी नामादे नाजी, मामी मोकलदे फुइ फालुरे ॥ गोरी सखी चांमी चेटीका, जोगण सीकोतरी लालुरे ॥ सु०॥१२॥ वर पासे नूत जोटींग घणां,दानव जंगम जोगीरे॥ तेत्रीश क्रोम देव संचर्या, रुपि ब्रह्मा दामोदर नोगीरे ॥सु०॥१३॥ पोंखीने वर लीधो मांहरे,ब्रह्मा साधे लगन ते साररे ॥ समय वरते सहु सावधान,पाणीवल अंतर नहीं वाररे ॥सु०॥१४॥ ब्रह्माए हर गौरी तणो, हस्त मेलापक कीधरे॥ गीत गावे वर कामनी, वृद्धने लघु कन्या दीधरे॥सु०॥ १५ ॥ चोरी मांहे वेठां वर वहू, ब्रह्मा नणे वेद चाररे ॥ मंगल चार ते वरतीयां, हुवो तिहां

जय जयकाररे ॥ सु० ॥ १६ ॥ शंकर आगल संचरे, पाछलथी गौरी नारीरे ॥ फेरा दीये चोरी पाखले, ब्रह्मा वांचे वेद उचारीरे ॥ सु० ॥ १७ ॥ हुताशन साखे अक्षत नाखे, पाणेतर गौरीए पहेर्योरे ॥ छेमो लाग्यो उमीया तणो, उंचो लइ उलवतां विहर्योरे ॥ सु० ॥ १८ ॥ जंघा दीठी तव रुयकी, विकल थयो ब्रह्मा तामरे ॥ काम कुतूहल चिंतवतां, खलण हुवो तेणे गमरे ॥ सु० ॥ १९ ॥ देव सघला तिहां देखता, लाज्यो ब्रह्मा मन मांहिंरे ॥ वेलु वाली पगे मरदले, वीर्य ढांक्यो निज त्यांहिंरे ॥ सु० ॥२०॥ चुरी वेलु मांही उपन्या, सहस्र अठ्यासी रुषिरायरे ॥ कमंडल दंड हाथे धर्या, उठीने लाग्या ते पायरे ॥सु०॥२१॥ वालुष नाम आदे करीरे, ब्रह्मा पुत्र पुराणे प्रसिद्धरे ॥ वालुखल रूपे ते रुयमा, तप जप तिहां थकी लीधरे ॥ सु० ॥ २२ ॥ खंड बीजानी ढाल ए कही, सत्तरमी सुणजो वारुरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजय श्रोता सारुरे ॥ सु० ॥ २३ ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग विचार ॥ ब्रह्मचर्य ब्रह्मा तणुं, नाठुं तिहां अपार ॥१॥

सुर नर सघला देखतां, लज्जा पाम्या तेह ॥ हलुपणुं ब्रह्मा हुवो, लघिमा गुण छे तेह ॥ २ ॥ ब्रह्म पुराणे जाखीयो, मिथ्या मत विचार ॥ जिनशासन नहीं मानीए, खोटुं एह असार ॥ ३ ॥ जगगुरु जिनवर जाणजो, निकलंक स्वामि देव ॥ दोष एक दीसे नहीं, तेह तणी करो सेव ॥ ४ ॥ ईश्वर लघुपणुं पामीयो, सांजलो तेह विचार ॥ कुकविए एम जाखीयुं, लिंग पुराण मोकार ॥ ५ ॥

ढाल अढारमी.

तो चढीयो घण माण गजे—ए देशी.

हेमाचल कुमरी वरी ए, शंकर मन उल्लास तो ॥ हर कैलासे आवी करी ए, गौरीशुं जोग विलास तो ॥ १ ॥ उमीया कहे शंकर सुणो ए, नृत्य करो मनोहार तो ॥ देवदार वनमां जइने, नाटिक मांड्यो सार तो ॥ २ ॥ मस्तक शेखर शशिकला ए, गले गरल[1] वांहिं नाग तो ॥ नरमुंड माला शोजती ए, कटीमेखल कटी जाग तो ॥ ३ ॥ जस्म विलेपन अंग रच्युं ए, घुघरीनो घमकार तो ॥ नव रस नाटिक नाचतां ए, झांझरनो झमकार तो ॥ ४ ॥ नृत्य करीने चालीयो ए, जिक्षा तापस वास तो ॥ तापस तरुणी विह्वल हुइ ए,

१ झेर.

मोह धरे विश्वास तो ॥ ५ ॥ लांबुं लिंग देखी करी ए, भिक्षा घाले सार तो ॥ कंदमूल वनफल घणां ए, हरने आपे नार तो ॥ ६ ॥ भरतार भगत ओळखी करी ए, हींडे ईश्वर साथ तो ॥ सुंदरी कहे शंभु सांभलो ए, लीजे आपण बाथ तो ॥ ७ ॥ एक कहे शंकर सुणो ए, ऊंधरजो महाराज तो ॥ अंगे आलिंगन रुयडो ए, कृपा करी द्यो आज तो ॥ ८ ॥ वनमां शंकर जइ रह्यो ए, ध्यान धरे अपार तो ॥ तापस कामनी तिहां गइ ए, ईश्वरशुं भोग विकार तो॥९॥ तापस तव दुःखीआ थया ए,नारीए मूक्यो संग तो ॥ विचार करे सघला मली ए, केम रहेशे घर रंग तो ॥१०॥ देवपूजा रही आपणी ए, अंगे गयां सनान तो ॥ रांधण सिंधण सहु तज्यां ए, भूखे गया जीव ज्ञान तो ॥ ११ ॥ आपणने मूकी धरे ए, हरने सेवे नार तो ॥ शंकरने केम श्रापीए ए, ए छे त्रिभुवन तार तो ॥१२॥ नारी मोही आपणी ए, जेह देखीने अंग तो ॥ दंड करो तुमे तेहनो ए, श्रापीने करो भंग तो ॥ १३ ॥ तापस मलीने श्रापीयो ए, लिंग पड्युं ततकाल तो ॥ भुवन मांहे ते विस्तर्युं ए, कर्म करे विकराल तो ॥ १४ ॥ लिंगे लक्षण प्रगट कीयो ए, त्रिभुवन पाम्यो त्रास तो ॥ नर नारी संभावीया ए, लोक पामे बहु हास्य तो ॥ १५ ॥ रुद्र कोप्यो

रुषि उपरे ए, लिंग छेद्युं मुज आज तो ॥ शंकरे रुषि तव आपीया ए, लिंग पड्यां सवि काल तो ॥ १६ ॥ लिंग तुट्यां तापस तणां ए, वेदना व्यापी अंग तो ॥ वृद्दल रुषि सघला हुवा ए, हर शरणे गया चंग तो ॥ १७ ॥ शंकर स्वामि सांजलो ए, तुं मोटो महादेव तो ॥ कृपा करो अम उपरे ए, अमे करुं तुम सेव तो ॥ १८ ॥ हरि हर ब्रह्मा तुं जलो ए, जुवन तणो तुं त्रात तो ॥ सरजी पाली पोषे घणुं ए, सेष्ट करे वली घात तो ॥ १९ ॥ अघट काम अमे आचर्युं ए, क्षमा करो तुमे एह तो ॥ छोरु कछोरु होये घणुं ए, मावाप नहीं दीए छेह तो ॥ २० ॥ ढाल कही अढारमी ए, खंड बीजानी एह तो ॥ रंगविजयनो शिष्य कहे ए, नेमविजयने नेह तो ॥ २१ ॥

दुहा.

जोलो शंकर बोलीयो, सांजलो तापस सार ॥ लिंग अमारो लेइ करी, ठवजो योनि मोझार ॥ १ ॥ प्रतिष्ठा करो तुमे तेह तणी, पूजा रचो सुखकार ॥ जाव जगति करो घणी, आराधो नित्य सार ॥ २ ॥ कामनीशुं सुख जोगवो, लिंग लागे तुम देह ॥ तापस तव सघले मली, लिंग धर्युं तिण तेह ॥ ३ ॥ नाका दोरे लिंग बांधीयुं, वल करे तापस विवेक ॥ हाल हाल करे घणुं, तव तुट्यां दोर अनेक ॥ ४ ॥ खांध जांग्या तापस तणा,

केताकना गया प्राण ॥ दोहले थइने आणीयो, तापस आश्रम ताण ॥ ५ ॥ लिंग प्रतिष्ठा ऋषि करे, सुर नर मलीया ताम ॥ हवन होम मंत्री करी, योनि मांहीं ठव्युं जाम ॥ ६ ॥ कोटे बांधे नर केटला, राखे मस्तक मांहीं ॥ लिंगायत लोक हुवा घणा, लिंग बांध्यां बेहु बांहीं॥७॥तेह दिवस आदे करी,मूढ पूजे लिंग तेह॥आपे लिंग गली पड्युं, भांड विगोव्यो एह ॥ ८ ॥ शंकर लघुपणुं पामीयो, लिंग पुराणे सार ॥ हरि इंद्र चंद्र वा सुरपति, पर रमणी लघुपणुं धार ॥ ए ॥ मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुमे आज ॥ सुर सघलाना गुण कह्या, जिणे पामीए बहु लाज ॥ १० ॥ परनारी जे भोगवे, तेहने मोटां पाप ॥ डुरगति डुःख पामे घणां, नरके लहे संताप ॥ ११ ॥ परनारी जे भोगवे, दोषवंत ते देव ॥ पूज्यपणुं तेने नहीं, किम कीजे तस सेव ॥ १२ ॥ निष्कलंक जिन जाणजो, दोष नहींय लगार ॥ पर तारक आपे तरे, देव जाणो ते सार ॥ १३ ॥ पवनवेग तुमे सांभलो, जैनशास्त्र विचार ॥ शंकर ब्रह्मा उत्पत्ति कहुं, सत्य वचन जिन सार ॥ १४ ॥

ढाल उगणीशमी.

भभी बावाजीरी पोल, देवर आणे आवीयोरे लाल—ए देशी.

भरत क्षेत्र मांहीं सार, गंधार देश रलीआमणोरे लाल ॥ वसीपुर नगर उदार,

सत्यंधर राजा सोहामणोरे लाल ॥ १ ॥ सत्यवती राणी तास, सत्यकी सूत नामे जलोरे लाल ॥ सिंधु देश मांहीं जाण, विशाला नगरी जूपति नीलोरे लाल ॥ २ ॥ चेटक राय करे राज, सुजद्राशुं सुख जोगवेरे लाल ॥ तेहने कन्या हुइ सात, प्रीत कारणी मीवुं चवेरे लाल ॥ ३ ॥ मृगावती सुप्रजा बाल, प्रजावती चेलणा गुणवतीरे लाल ॥ ज्येष्टा छठी सार, चंदना लघु सातमी सतीरे लाल ॥ ४ ॥ राजग्रही श्रेणिक जूप, तस पुत्र बुद्धे आगलोरे लाल ॥ अजयकुमार गुणवंत, प्रधान पद जोगवे जलोरे लाल ॥५॥ पदम चितारो जेह, चेलणा पट लखी लावीउरे लाल ॥ रूप देखी अचंज्यो राय, श्रेणिक मनमां जावीयोरे लाल ॥ ६ ॥ श्रेणिक लेइ आदेश, अजयकुमार उद्यम करीरे लाल ॥ श्रेणिक पट लखी रूप, वणजारा वेशे वलद जरीरे लाल ॥ ७ ॥ विशाला नगरी उद्यान, जिन जुवने जइ उतर्योरे लाल ॥ चेलणा ज्येष्टा आवी ताम, जिन प्रतिमा वंदन कर्योरे लाल ॥ ८ ॥ कुमरे प्रसार्यो पट ताम, रूप जोइ कन्या विह्वल हुइरे लाल ॥ आ जवे ए जरतार, चेलणा कुमरी एम लवीरे लाल ॥ ए ॥ अजयकुमर जणे ताम, तुम मेलुं श्रेणिक जूपतिरे लाल ॥ सुरंगमां थइ आवजो देव, अमे लेइ जाशुं तुम सतीरे लाल ॥ १० ॥ कुमरी घर गइ दोय, चिंतातुर थइ बालिकारे लाल ॥ श्रेणिक वर मन धार, शृंगार

आवी वन विशाल, बीजे दिने बेहु बेनमीरे लाल ॥ पेहेरी ऊजमालिकारे लाल ॥ ११ ॥ आवी वन विशाल, बीजे दिने बेहु बेनमीरे लाल ॥ १२ ॥ अम विसरीयां बाइ, टालुं सोकनुं साल, चेलणाए चिंतव्युं तिण घमीरे लाल ॥ उतावलां तुमे जाइ, आजरण लावो अम तणांरे चेलणा कहे ज्येष्टा सुणोरे लाल ॥ आवी सहीयरने ठाम, लाल ॥ १३ ॥ लेवाने तव जाम, ज्येष्टा जव पाठी वलीरे लाल ॥ अपहरी अजयकुमार, लाव्यो निज पुर ठाम- चेलणा तव आवी मलीरे लाल ॥ १४ ॥ अपहरी अजयकुमार, लाव्यो निज पुर ठाम- मांरे लाल ॥ श्रेणिक चेलणा दोय, परणाव्यां उठरंगमांरे लाल ॥ १५ ॥ आजरण ज्येष्टा लेय, आवी तेणे ठामे वहीरे लाल ॥ चेलणाने वन मांहीं, जोइ जाम देखे नहींरे लाल ॥ एणे मुज नहींरे लाल ॥ १६ ॥ आवी जिनने गेह, दुःख करी पाठी वलीरे लाल ॥ ज्येष्टाए तव जाम, दीक्षा लीधी देहनो नेम, परणेवा संयम जलीरे लाल ॥ १७ ॥ जशोमती बाइ पासे खडीरे लाल ॥ १८ ॥ ज्येष्टा- रुयमीरे लाल ॥ शास्त्र शीखी ताम, जशोमती बाइ पासे खडीरे लाल ॥ हुवो जोगनो घात, मुज देवी बोली नी जे वात, सातकी राजाए सांजलीरे लाल ॥ हुवो जोगनो घात, मुज देवी बोली हतीरे लाल ॥ १९ ॥ आव्यो ते मन मांहीं, परणवानो नेम करीरे लाल ॥ दीक्षा लीधी त्यांहिं, समाधि गुप्ति गुरु पय धरीरे लाल ॥ २० ॥ उंगणीशमी कही ढाल, खंरू बीजानी ए सहीरे लाल ॥ रंगविजयनो शिष्य, नेमविजय कहे में कहीरे लाल ॥ २१ ॥

दुहा.

सातकी मुनि तप आदरे, पाले पंचाचार ॥ ध्यान धरे अति निरमलुं, गिरि गुफा मोफार ॥१॥ महावीर चोवीशमो, तीर्थंकर ते स्वाम ॥ बाइ सघली ते वांदवा, आवे छे ते धाम ॥२॥ अकाल मेघ तव ऊमट्यो, गाज वीज अपार ॥ वरसाद वरसे सरवडे, हुवो घणो अंधकार ॥ ३ ॥ चिहुं दिशि नाठी आर्जिका, भय पामी तेणे ठार ॥ ज्येष्टा तव नासी गइ, गिरि गुफा मोफार ॥ ४ ॥ अंधकार अधिको थयो, मुनि न दीठो जाम ॥ भीनां वस्त्र मूकी करी, नीचोवे तेणे ठाम ॥५॥ सातकीए देखी करी, ज्येष्टानो वली अंग ॥ चित्त चल्युं मुनिवर तणुं, कीधो शीलनो भंग ॥ ६ ॥ उदरे उंधान ऊपनो, ज्येष्टा गइ तव जाम ॥ पुनरपि दीक्षा गुरु कने, लीधी सातकी ताम ॥ ७ ॥ चिह्न जाण्यां ज्येष्टा तणां, जशोमतीए ताम ॥ चेलणा घर आणी करी, आपी तेहने नाम ॥ ८ ॥ उपासना अधिकी करे, टाली शासन लाज ॥ समकित शुधुं दृढ धरे, एह भविनां काज ॥ ९ ॥ नव मास वडे जनमीयो, ज्येष्टाए सुत जाम ॥ चेलणाए सुत प्रसवीयो, राजा बोले ताम ॥ १० ॥

ढाल वीशमी.

बे कोइ आण मेलावे साजना, साजना वेगले लागनां चे-ए देशी.

पुत्र जनम जणावीयो, लोक श्रेणिक तव महोछव कर्यो, दीधां बोहोलां दाम हो ॥ ए आंकणी ॥१॥ नंदन तव मोटो हुवो, हींडे मांही ताम हो ॥ हो साजन वात सुणो इसी ॥ राणीए रुद्र नाम देइ थाय हो ॥हो०॥२॥ रुद्र नाव करे पर तणां, पुत्रने ते अन्याय हो ॥ ढींके पाटु नासे गामो गाम हो ॥ हो०॥३॥ रुद्र नाम कहे छोकरां, कह्युं, लोक ते जपे ताम हो ॥ लोक पाडे पोकार हो ॥ हो० ॥४॥ चेलणाने दुष्टपणे दंडे हणे, चाबखे, मारे तेह अपार हो ॥ एहने नहीं कोइ गाम हो ॥ राणी मन मांही चिंतवे, आवी कह्युं, बहु लोके मली तास हो ॥ दूधे सिंच्यो जेम लींबडो, हो० ॥ ५ ॥ अणाचारथी उपन्यो, केम होए ते संत हो ॥ सांभल पापी जात हो॥ केम होए ते महंत हो ॥ हो० ॥ ६ ॥ रीस करी राणी कहे, सांभलीने रुद्र चिंतवे, कुण तन कुणे जनमीयो, कोण ताहरो तात हो ॥ हो० ॥ ७ ॥ अमे तो नहीं जमेशुं हो ॥ हो० एह कारण छे केशुं हो ॥ श्रेणिकने आवी कह्युं, राजाए मांडीने कह्युं, सहु ॥ ८ ॥ मुज माता पिता कहो, कारण शुं छे एह हो ॥ सातकी वीत्युं तेह हो ॥ हो० ॥ ए ॥ तव रुद्र तिहां गयो, ज्यां छे पिता गाम हो ॥

मुनि पिता कने, लीधी दीक्षा ताम हो ॥ हो० ॥ १० ॥ सिद्धांत शास्त्र शिखे घणुं, नणे अंग अग्यार हो ॥ दश पूरव पाठे कर्या, लीधी विद्या सार हो ॥ हो० ॥ ११ ॥ वडी विद्या वसुधा नली, जाणे ते सत पंच हो ॥ लघु विद्या बे सातसें, बोले ते वली संच हो ॥ हो० ॥ १२ ॥ पुण्य प्रनावे तुम तणे, सिधां सहु अमे आज हो ॥ कर जोमी विद्या नणे, कांइ दीयो अम काज हो ॥ हो० ॥ १३ ॥ रुद्रे विद्या वश करी, राखी सहु जाम हो ॥ गोकरण गिरि आवे घणा, श्रावक अनिराम हो ॥ हो० ॥ १४ ॥ सातकी मुनिवर वांदवा, श्रावक बहु आव्या हो ॥ वाघ सिंह रूप रुद्रे करी, घणो त्रास पडाव्या रे हो ॥ हो० ॥ १५ ॥ सातकी मुनिवर एम नणे, रुद्र सांनलो आज हो ॥ दुष्ट चेष्टा तुं कां करे, नहीं तुजने लाज हो ॥ हो० ॥ १६ ॥ नारी निमित्त तुज तप तणो, होशे तेहनो नंग हो ॥ सांनलीने रुद्र वेगे गयो, कैलास गिरि उत्तंग हो ॥ हो० १७ ॥ आतापन जोगे रह्यो, कैलास गिरिए जाम हो ॥ अवर कथा तुमे सांनलो, कहेशुं ते अनिराम हो ॥ हो० ॥ १८ ॥ विजयारध पर्वत अछे, दक्षण श्रेणि जाणी हो ॥ त्रिपुर नगर राजा हेमरथ, तस मनोरमा राणी हो ॥ हो० ॥ १९ ॥ प्रथम पुत्र ते देवदारु, बीजा विद्युत नाम हो ॥ राज्ये थापी देवदारुने, दीक्षा लीधी ताम हो ॥ हो० ॥ २० ॥ खमु बीजानी

ढाल वीशमी, श्रोताजनने काज हो ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय लहे लाज हो ॥ हो० ॥ २१ ॥

दुहा.

हेमरथ बहु तप करे, पाले पंचाचार ॥ राज करे ते रुअमो, देवदारु कुमार ॥ १ ॥ विद्युते विश्वास करी, तव मांड्यो संग्राम ॥ वमो नाइ ठंमावीयो, निज राज्यनो ठाम ॥ २ ॥ कैलासे नासी गयो, देवदारु कुमार ॥ द्रव्य कुटुंब विमान रची, आव्यो सहु परिवार ॥ ३ ॥ आठ कन्या तस रुयडी, रूपे रंजा समान ॥ रमल करती सरोवरे, गइ करवाने स्नान ॥ ४ ॥ आजरण वस्त्र मूकी करी, अंघोल करवा ताम ॥ रुडे दीठी रुयमी, कन्या रूप निधान ॥ ५ ॥ ते देखी विह्वल थयो, कामे पीड्यो अपार ॥ विद्याए वेगे करी, हर्यां वस्त्र शणगार ॥ ६ ॥ कन्या कहे मुनिवर सुणो, अम देहनो शणगार ॥ तुमे ठतां कोणे अपहर्यां, कीहां ठे स्वामि सार ॥ ७ ॥ रुद्र मुनि तव एम जणे, सांज-लजो तुमे बाल ॥ अंगीकार करो अम तणो, तो आपुं सुविशाल ॥ ८ ॥ कन्या कहे मुनि सांजलो, केम लोपीए लाज ॥ अमे विद्याधर बेटडी, पिता अणपूछ्यां काज ॥ ए ॥

रुद्र कहे कन्या सुणो, पिता जणी पूछे आज ॥ वस्त्र विभूषण तुम तणां, लेइ करजो काज ॥ १० ॥

ढाल एकवीशमी.

करेलमां घर वेरो—ए देशी.

कुमरी ते तव तिहां गइ, पिता तणे ते पास ॥ वात विचारी सहु कही, विवाहनी ते आस ॥ सुगुण जन सांजलोरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विद्याधर देवदारुए, मोकल्या तव प्रधान ॥ रुद्र पासे आवी कहे, सांजलजो सावधान ॥ सु० ॥ २ ॥ विद्युत विद्याधर अम तणो, मोटो रिपु राज ॥ राज लीधुं छे अम तणुं, तेहने मारो आज ॥ सु० ॥ ३ ॥ काज करो जो अम तणो, कन्या देशुं तेह ॥ रुद्रे तव तेहने कह्युं, काज करीशुं एह ॥ सु० ॥ ४ ॥ विद्याए विमान रची, करी कटक अपार ॥ विजयार्धे वेगे जइ, मांड्युं जुद्ध जुफार ॥ सु० ॥ ५ ॥ विद्युत तव सामो थयो, करे सुर संग्राम ॥ रुद्रे रूप घणां करी, फेड्यो तेहनो ठाम ॥ सु० ॥ ६ ॥ विद्याए विजांभीयो, सहुनो कीधो घात ॥ त्रिपुर नगर तेणे जालीयुं, लघु मार्यो तिहां भ्रात ॥ सु० ॥ ७ ॥ देवदारु राजे ठवी, कीधो अति उछाह ॥ विद्याधर सहु भेटीया, मांड्यो तिहां विवाह ॥ सु० ॥ ८ ॥ कुमरी परणी आठ ते, रुद्रे

रूपवंती नार ॥ अपर कन्या परणी घणी, नवि जाणुं तेहनो पार ॥ सु० ॥ ए ॥ सबल काम सेवा जणी, रुद्ने नहीं संतोष ॥ जे जे कामनी जोगवे, ते ते पामे दोष ॥ सु० ॥ १० ॥ मरण पामी ते अति घणी, रुद्ने मांड्यो अन्याय ॥ विद्याधर मारी करी, परण्यो कन्या जाय ॥ सु० ॥ ११ ॥ कन्यानो तेणे क्ष्य कर्यो, नवि लाजे को पार ॥ हेमाचल राजा जलो, विद्याधरनो सार ॥ सु० ॥ १२ ॥ तस नारी डे रुयरुी, मीना तेहनो नाम ॥ पुत्री पारवती तस तणी, रूपे रंजा समान ॥ सु० ॥ १३ ॥ पारवती परणी करी, रुद्ने आणी ताम ॥ काम जोग तेहशुं करे, पामे सुख सुधाम ॥ सु० ॥ १४ ॥ पारवतीशुं संग करी, उठ्यो रुद्र ते जाम ॥ अपवित्र अंगे पूजतां, नाठी विद्या ताम ॥ सु० ॥ १५ ॥ व्रमा नामे विद्या गइ, रुद्ने रच्यो उपाय ॥ प्रतिमा कीधी तसु तणी, मांरुीने ते ध्याय ॥ सु० ॥ १६ ॥ व्रमा विद्यानो जाप जपे, रुद्र रचीने ध्यान ॥ विघन करेवुं मांडीयुं, विद्याने बलतान ॥ सु० ॥ १७ ॥ नृत्यकी नारी रूप धरी, गीत गावे ते सार ॥ आकाशे उंची रही, नाचे विविध प्रकार ॥ सु० ॥ १७ ॥ नव रस नाटक सांजली, तव चलीयो ते ध्यान ॥ ईश्वर मुख उंचुं करी, जोयुं नृत्यकी तान ॥ सु० ॥ १ए ॥ ढाल ए एकवीशमी, खंरु बीजानी एह ॥ रंगविजयनो शिष्य कहे, नेमविजयने नेह ॥ सु० ॥ २० ॥

ढुहा.

मोह पाम्यो नृत्य देखतां, नाटकी नख जोइ ताम ॥ वियाए विपरीत रूप कर्युं, नीचुं रुद्रे दीठुं जाम ॥ १ ॥ प्रतिमास्थाने पुरुष एक, वदन चार दीसे तेह ॥ पांचमुं मुख उंचुं खर तणुं, झुंझुंकार झुंके जेह ॥ २ ॥ कठिण चित्त रुद्रे करी, कर नखे खुंट्युं कपाल ॥ ब्रह्मा विद्या नासी गइ, हस्त चोंट्युं विकराल ॥ ३ ॥ कपालिक नाम रुद्रनुं, ते दिनथी कहे लोक ॥ एकदा रुद्र गौरी वेहु, विमान बेसी तजी शोक ॥ ४ ॥ वणारसी वन जायतां, वीर उन्ना धरी ध्यान ॥ गौरी शंकरने कहे, तुम जाइ रह्यो मूकी मान ॥ ५ ॥ प्रिय कारणी सुत संजमी, तुमे अति लंपट नूर ॥ हास्य करी इम रुद्र जणे, ध्यान करुं एह चूर ॥ ६ ॥ रुद्रे उपसर्ग मांमीयो, मेघवृष्टि करी घोर ॥ गाज वीज घणुं गरगडे, वाघ सिंह सर्प घोर ॥ ७ ॥ वायु अने पाषाणनी, वृष्टि कीधी घणी वार ॥ रात सघली उपद्रव कर्यो, जिन मन न चल्युं लगार ॥ ८ ॥ प्रजात हुवो शिव चिंतवे, में पापी कीध अकाज ॥ मेरु सरिखो निश्चल मुनि, क्षमावंत जिनराज ॥ ९ ॥ निंदा गुरु अति घणी करी, महावीर धर्युं नाम ॥ जक्ति जावे पाय चांपीया, खर मस्तक पड्युं ताम ॥ १० ॥

ढाल बावीशमी.

बेनी प्रीत पूरव पुण्ये पामीए—ए देशी.

अज्ञानी मूढे आचर्युं, चतुर्मुख ब्रह्मा तेहहे ॥ साजन ॥ ब्रह्मविद्या नामे जाणजो, जिनशासन सत्य एहहे ॥ सा० ॥ १ ॥ सुणजो वात सोहामणी ॥ ए आंकणी ॥ जिन वांदी रुद्र घरे गयो, गौरीशुं अति बहु नेहहे ॥ सा० ॥ सांजलो काम शुं शुं करे, विद्याबले शंकर तेहहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ २ ॥ ससरो सालो घणुं पीरूीया, माने गणे नहीं केहहे ॥ सा० ॥ त्राताए पारवतीने पूछीयुं, हरथी केम रहे विद्या बेहहे ॥सा०॥सु०॥३॥ गौरी कहे जाइ सांजलो, शरीर राखे विद्या पूरहे ॥ सा० ॥ काम सेवा शंकर करे, तप विद्या रहे दूरहे ॥सा०॥सु०॥४॥ जगनी संतोषी वचन रसे, कूड रच्यो उपायहे ॥ सा० ॥ हर गौरी शंकर समे, खड्ग हण्यां बेहु कायहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ५ ॥ ईश्वर अधोगति पामीयो, विद्याए विडंबीया लोकहे ॥ सा० ॥ मरकीए माणस मरे, राजजुवन प्रजा शोकहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ६ ॥ निमित्त जोइ निमित्तिउं कहे, विद्या संतापे सारहे ॥ सा० ॥ आचरण जेने बेहु मुआं, लिंग उपर जलाधारहे ॥सा०॥ सु० ॥७॥ शिखामण एहवी करे, विद्या संतोषाए चंगहे ॥ सा० ॥ तव लोके सहु तिम कर्युं, जोनि

उपर ठव्युं लिंगहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ७ ॥ पूजी प्रतिष्ठी वंदीयो, तव रोग सोग गया दूरहे ॥ सा० ॥ विघाए विघन निवारीयां, सुख संतान घर पूरहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ए॥ हस्त पाय मस्तक नहीं, जलाधारी मांहे लिंगहे ॥ सा० ॥ निर्लज लोक लाजे नहीं, वीली धंतुरो चढे अंगहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १० ॥ मूरख मूढ मिथ्यातीआ, हस्त शिर कंठे बांधे तेहहे ॥ सा० ॥ हर हर मुख हइडे धरे, पूजे पखाले वली जेहहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ११ ॥ मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग तुमे सारहे ॥ सा० ॥ सत्य वचन जे जिन तणां, धरजो मन निरधारहे ॥सा०॥सु०॥१२॥ सत्य धरम जिनवर तणो, जिहां जोइए तिहां सारहे ॥ सा० ॥ जे नर निश्चे चित्त धरे, ते पामे जव पारहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १३ ॥ मिथ्या मत जे मोहीया, घेला ते मूढ गमारहे ॥ सा० ॥ असत्य वचन वली आचरे, जव जव जमशे संसारहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १४ ॥ पवनवेग तव बोलीउं, सांजलो जाइ चंगहे ॥ सा० ॥ सत्य धरम जिनवर तणो, ते उपर मुज रंगहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १५ ॥ कुदेव कुशास्त्र कुगुरु सहु, में परीहर्यो मिथ्या धर्महे ॥ सा० ॥ वचन तुमारां सांजली, जांग्यो सघलो मन जर्महे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १६ ॥ सुदेव सुगुरुने आदर्या, आदर्यो जैननो धर्महे ॥ सा० ॥ मित्र मनोरथ मुज फल्या,

अशुभ टल्यां मुज कर्महे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १७ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुभविजय शिष्य तेहहे ॥ सा० ॥ भावविजय शिष्य तेहना, सिद्धिविजय शिष्य एहहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १८ ॥ रूपविजय रंगे करी, कृष्णविजय कर जोडहे ॥ सा० ॥ रंगविजय कविराजनी, नावे कोइ होडहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १९ ॥ खंड बीजो पूरो थयो, ढाल बावीशे सारहे ॥ सा० ॥ नेमविजयने नित्य प्रत्ये, जग मांहीं जयकारहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ २० ॥

॥ इति श्री हरिहरब्रह्मार्कचंद्रयमसुरेंद्रसुरगुरु देवादि-
दूषणनामा द्वितीयोऽधिकारः॥

खंम ३ जो.

डुहा.

सकल जिनवर पय नमी, सद्गुरु चरण नमेव॥ त्रीजो खंड कहेशुं हवे, नेमविजय कहे हेव ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग तुमे चंग ॥ मिथ्यात पुराण वली दाखवुं, फेरवी रूप उत्तंग ॥ २ ॥

ढाल पहेली.

मन मधुकर मोही रह्यो—ए देशी.

विद्या प्रजावे रूप पालव्यां, वेहु हुवा साधु महंतरे ॥ पश्चिम पोले प्रवेश करी, द्विजशालाए आवी संतरे॥ मनोवेग बुद्धि विचक्षणो॥ ए आंकणी ॥१॥ दंड धरी जेरी आलवी, कीधो घंटारव तामरे ॥ सिंहासन बेठा मुनि रुअमा, जोवा मल्युं सउ गामरे ॥ म० ॥ २ ॥ शब्द सुणी द्विज आवीआ, बोले विरुद अनेकरे ॥ देखी जति प्रते एम कहे, जणो मुनिं प्रत्युत्तर एकरे ॥म०॥३॥ ठ दर्शन ठन्नुं मत तणा, करो अमथी वाद विशालरे ॥ कोण दर्शन कोण गुरु शिष्य, जवाब देजो दयापालरे ॥मा०॥४॥ विप्र

प्रते मनोवेग जणे, सांजलो विप्र सुजाणरे ॥ वाद विद्या अमे नवी लहु, केवां शास्त्र पुराणरे ॥ म० ॥ ५ ॥ जतिवेष आपणे पालीउं, गुरु नथी अम तणे शिषरे ॥ पाटलीपुर जोवा आवीआ, निगुरा थइए द्विज धिषरे ॥ म० ॥ ६ ॥ कोप करी द्विज बोलीआ, सुणो मुनि मूढ गमाररे ॥ वाद विवाद जाण्यो नहीं, केम कीधो जेरी प्रहाररे ॥ म० ॥ ७ ॥ घंटारव बहु वार कर्यो, सिंहासन बेठा केमरे ॥ नवी गुरु विना चेला सांजल्या, नगर कोइ प्रेमरे ॥ म० ॥ ८ ॥ माया जति कहे सांजलो, हेलाए वजाड्या घंट जेरीरे ॥ सहजे सिंहासन चांपीआं, न गमे तो बेसीए फेरीरे ॥ म० ॥ ॥ ए ॥ विप्र वचन एम उच्चरे, क्षपणक मोटा धुताररे ॥ मुनि जणे वारुव तुमे सुणो, सत्य केतां लहीए माररे ॥ म० ॥ १० ॥ ते उपर कथा कहुं, सांजलजा सउ साथरे ॥ कोइक गामे एक शेठ रहे, घरमां छे बहु आथरे ॥ म० ॥ ११ ॥ पुत्र बेहु शेठने अछे, जिनपाल अने जिनदत्तरे ॥ गुरु मल्या जिनदत्तने, लीधुं समकित सतरे ॥ म० ॥ १२ ॥ साचुं बोले वणजतां, कूड कपट नवि राखेरे ॥ साचाबोलो सहु कहे, नगर लोक एम जाखेरे ॥ म० ॥ १३ ॥ हाटे बेठो नित्य रहे, आवे लोक अनेकरे ॥ साचो जाणी आवे घणा, बोले विनय विवेकरे ॥ म० ॥ १४ ॥

ज्ञाइ मोटो मन चिंतवे, मुजने कीधो नचिंतरे ॥ व्यापारी मोटो थयो, मात पिता मन खंतरे ॥ म० ॥ १५ ॥ साच बोले लाज्ञ केम होये, कूड कपट मांहिं लाज्ञरे ॥ कूडो संसार सौए कह्यो, कूडो जलधर आज्ञरे ॥ म० ॥ १६ ॥ व्यापार करतां दिन घणा, गया तव लाज्ञ न दीसेरे ॥ मात पिता ज्ञाइ सहु मली, आवी वेठा बोले रीसेरे ॥ म० ॥ १७ ॥ कहे ज्ञाइ तुं शुं करे, लोक आवी जेलां थायरे ॥ एहवो व्यापार किहां शीखीउं, ड्रव्य लेइ किहां खायरे ॥ म० ॥ १८ ॥ के लुब्ध्यो वेश्या नारीशुं, के गुप्त दान दीधोरे ॥ के कोइ व्यसन पड्यो अछे, तुं तो दीसे छे सीधोरे ॥ म० ॥ १९ ॥ नामां लेखां संज्ञालीने, बोलावे लघु ज्ञाइरे ॥ लाज्ञ ठामे खोट केम होये, ए शी कीधी कमाइरे ॥ म० ॥ २० ॥ ढाल पेली त्रीजा खंडनी, सांज्ञलो बाल गोपालरे ॥ रंगविजय कविराय छे, नेमविजय उजमालरे ॥ म० ॥ २१ ॥

दुहा.

तव बोल्यो लघु ज्ञात ए, तमने ड्रव्यनी हुंश ॥ कोटिध्वज थाउं तमे, कूड करी लो लुंस ॥ १ ॥ अमने ए तो नावडे, तुमने तो घणो लोज्ञ ॥ वेसो हाटे जइ हवे, घरना छो तमे मोज्ञ ॥ २ ॥ साचे मारे चालवुं, कहेवुं मारे साच ॥ देवुं लेवुं साचनुं, इणी परे पालुं

वाच ॥ ३ ॥ समकित मारे पालवुं, गुरु वयण केम लोपाय ॥ जीव जाये तो पण सही, किम करुं हुं अन्याय ॥ ४ ॥ एवुं वयण ते सांजली, रीस चमी वृद्ध जाय ॥ धर्मी थइ वेगो हवे, एने केम कहेवाय ॥ ५ ॥ पांच शेरी लइ हाथमां, नाखी सामे लघु जात ॥ लागी मर्म गमे तदा, मरण पाम्यो जीव जात ॥ ६ ॥ साच बोल्याथी ए थयो, मनोवेग कहे ताम ॥ पुनरपि वात कहुं वली, सांजलजो सहु आम ॥ ७ ॥

ढाल बीजी.

आणे पडवे ससरो सूता, पहेले परूवे बाइजी ॥ एक घमीनी ढील करो तो करशुं राजी, ठेडो नांजी—ए देशी.

पुरोहित हरिजट्ट जेम लहीउं, बंधन ताकन दंरू ॥ जेहवुं होय तेहवुं जाखतां, तेम अमने थाये जंरू ॥ सहुको सुणजो ॥ हांरे तुमे सांजलीने मत कोपो ॥ स० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ द्विजवर जणे मुनि तमे सुणजो, हरिजट्ट तणी कहो वात ॥ आप वीती पठी परकाशजो, सांजलशुं तेह ख्यात ॥ स० ॥ २ ॥ वेशधारिक मनोवेग कहे तव, सुणजो विप्र सुजाण ॥ आडकथा निरमली हुं कहुं बुं, सांजलो सुखनी खाण ॥ स० ॥ ३ ॥ अंग देश चंपापुरी नगरी, गुणसागर महाराज ॥ हरि ब्राह्मण राजगर ठे तेहना, सेवे जूपति पाय

॥ स० ॥ ४ ॥ एक दिन अशूचि टालवा काजे, कारी जरी चाल्यो दूर ॥ मल मोचन करी वल्यो तव, दीठुं नदी आव्युं पूर ॥ स० ॥ ५ ॥ शिला तरती आवी जल पर, देखी अचंज्यो ताम ॥ वेगे जइने नृपने विनव्युं, सांजलो कौतक स्वाम ॥ स० ॥ ६ ॥ बाहिर जूमि गयो हुं वेगलो, नदी कीनारे जबो जाम ॥ मोटी शिला एक जलमां तरती, दीठी अमे अजिराम ॥ स० ॥ ७ ॥ पुरोहितनी वाणी सांजलीने, राजा कहे विख्यात ॥ जूत जोटिंग व्यंतरे ठलीयो, असंजव बोले वात ॥ स० ॥ ८ ॥ हरिजट्ट शाही दृढतर बांध्यो, ढींक पाटु घणी मूके ॥ जोपा आण्या मंडप तव मांड्यो, चाबख दोरी न चूके ॥ स० ॥ ए ॥ धूणे धंधोले अकृत ठांटे, हाथ पाय शिर कूटे ॥ बुंब करतो हरिजट्ट चिंते, मरण आव्युं अणखूटे ॥ स० ॥ १० ॥ पुरोहित कहे सांजलो नृप लोका, जूठुं बोल्युं नोहे साच ॥ जूत जोटिंग वलग्यो नथी मुजने, खोटुं हास्युं हस्यो वाच ॥ स० ॥ ११ ॥ शिला तरंती नदीए न दीठी, ठोडावो महाराज ॥ गुणसागरे ततखिण ठोमाव्यो, हरिजट पाम्यो घणी लाज ॥ स० ॥ १२ ॥ घरे जइ पुरोहित चित्त चिंते, मुज मुख जूपे कर्युं कालुं ॥ सत्य वचन बोलतां मुने कूट्यो, इह सादुं केम वालुं ॥ स० ॥ १३ ॥ एकदा हरिजट्ट वनमां चाल्यो, वाफीमां वानर दीठा ॥ राजागुरुए शिखव्या नृत करवा, नव रस

नाटक करे मीठ ॥ स० ॥ १४ ॥ रमवा राजा वनमां गयो तेहवे, राणीशुं प्रेम धरंतो ॥ एकलो वनवाडी जइ जोइ, दीठो वानर नृत्य करंतो ॥ स० ॥ १५ ॥ नव रस नाटक जोतां नहीं तृपति, आवो राणी जुउं एह ॥ साद सुणी राजा तणो बीना, वानर नाठा तव तेह ॥स०॥१६॥ राणीने आवी नृप कहे सुंदरी, वानरनृत्य देख्युं सार ॥ राजसभा आवी नृप बेठो, प्रोहित सहु परिवार ॥स०॥१७॥ राजा कहे सहुको सांभलजो, कौतिक दीठुं में आज ॥ नव रस नाटिक वानर करता, जोतां थका सीजे काज ॥ स० ॥ १८ ॥ तव राणी कहे में नव दीठुं, सुणजो लोक विचार ॥ नवी दीठुं सांभल्युं आज पहेलुं, भूपति भंखे असार ॥ स० ॥ १९ ॥ हरि प्रोहित कहे सांभलो सज्जन, राजाने वलगाड वन मांहीं ॥ ए वचने ताणी नृप बांध्यो, भोपा वैद मल्या त्यांहिं ॥ स० ॥ २० ॥ धूणे धंधोले अंग पछाडे, हरिभट्ट निवार्या तेह ॥ निज हस्ते राजाना बंध छोड्या, वस्त्र विभूषित देह ॥ स० ॥ २१ ॥ प्रोहित जाणे भूपति सुणो लोका, वानर नाटिक जेम वारु ॥ नदी मांहे तरती थकी दीठी, तेम शिला सत्य मन धारुं ॥ स० ॥ २२ ॥

श्लोक—असंभाव्यं न वक्तव्यं, प्रत्यक्षमपि यद्भवेत् ॥
यथा वानरसंगीतं, तथा सा तरति शिला ॥ १ ॥

वचन सुणी राजा तव हरख्यो, सत्य वाणी एह सार॥ प्रत्यक्ष दीठुं तो नवि कहेवुं, नवि माने मूढ गमार ॥ स० ॥ २३ ॥ त्रीजा खंड तणी ढाल बीजी, कही श्रोताजन सारु ॥ रंगविजयनो शिष्य एम पत्रणे, नेमविजय कहे वारु ॥ स० ॥ २४ ॥

दुहा.

हरिनट्टनी कथा रुयडी, विप्र सुणी तमे तेह ॥ अद्भुत वचन मुज बोलतां, ताडन करशो देह ॥ १ ॥ ते वाडव तव बोलीया, सांजलो जाइ जूर॥ सत्य वचन तुम बोलतां, अमे नवि थाशुं क्रूर ॥ २ ॥ माया मुनि तव बोलीयो, मनोवेग वर वाण॥ कथा कहुं वली मुज तणी, सुणजो तेह सुजाण ॥ ३ ॥

ढाल त्रीजी.

केसर वरणो हो के काढी कसुंबो मोरा लाल—ए देशी.

श्रीपुर नगरे हो वणिकोत्तम नाम ॥ मारा लाल ॥ जिनदत्त शेठ हो श्रावक कुलख्यात ॥ मारा लाल ॥ जिनदत्ता नामे हो कहीए तस नारी ॥ मारा० ॥ तेहनो हुं पुत्र हो गुणवंत धारी॥ मा० ॥ १॥ माहरो नाम दीधो हो जिनचरणदास ॥ मा० ॥ नणवा मूक्यो हो मुनिवर पास ॥ मा० ॥ नणी गणीने हो विद्या अनेक ॥ मा० ॥

गुरुने आराध्यो हो विनय विवेक ॥ मा० ॥ २ ॥ एक दिन मुजने हो दीधुं काम ॥ मा० ॥ कमंडल जरी आवो हो गुणना ग्राम ॥ मा० ॥ मारग जरवा हो चाल्यो जाम ॥ मा० ॥ ढोकरां रमतां हो दीठां ताम ॥ मा० ॥ ३ ॥ रमतां देखी हो जोवा रहीयो ॥ मा० ॥ निशालीए जइने हो गुरुने कहीयो ॥ मा० ॥ जिनचरणदास हो करे बहु क्रीडा ॥ मा० ॥ गुरुजी कमंडल हो नहीं जरे व्रीडा ॥मा०॥ ४ ॥ जति जोवाने हो नीकल्या जाम ॥ मा० ॥ ढात्र एक आवी हो कहे मुज ताम ॥ मा० ॥ नासी जाए हो गुरु आव्या एह ॥ मा० ॥ रुठ्या रीस करशे हो जारे तुज देह ॥ मा० ॥ ५ ॥ जय- जीत नाठो हो तव हुं जाम ॥ मा० ॥ कर धरी कमंडल हो बीजे गाम ॥मा०॥ जा- तां जातां हो आव्युं एक गाम ॥ मा० ॥ हस्ती पुंठे हो लाग्यो ताम ॥ मा० ॥ ६ ॥ पूर्वे कीधां हो जे जेम पाप ॥ मा० ॥ करिवर केडो हो न ढांडे आप ॥ मा० ॥ जयजीत मुजने हो कंपे देह ॥ मा० ॥ काल कृतांतज हो सरिखो तेह ॥ मा० ॥ ७ ॥ नासी न शकुं हो करिवर आगे ॥ मा० ॥ चिंतव्युं में किहां हो रहेशुं लागे ॥ मा० ॥ जीडीनो कमंडल- ढेटो हो में दीठो जाम ॥मा०॥ डाले वलगाड्यो हो कमंडल ताम ॥मा०॥८॥ कमंडल- ना मुखमां हो हुं जइ पेठो ॥ मा० ॥ रीसे जरीयो हो हाथीए दीठो ॥ मा० ॥ नालुए

हेरी हो जोयुं में जाम ॥ मा० ॥ हुं मांहीं पेठो हो दीठो ताम ॥ मा० ॥ ए ॥ माहारी पुंठे हो पेठो ते नाग ॥ मा० ॥ हुं नासंतो हो नवी देखुं लाग ॥ मा० ॥ कमंडल मांहीं हो करे बहु केड ॥ मा० ॥ उजावानी हो न करुं जेड ॥ मा० ॥ १० ॥ काल घणो मुजने हो नासंतां थयो ॥ मा० ॥ गजवर केडो हो छांडी न गयो ॥ मा० ॥ उजातां मारी हो बुटी काछडी ॥ मा० ॥ हस्तीशुं तव हो सुंढे धरी हडी ॥ मा० ॥ ॥ ११ ॥ नागो थइने हो नाठो हुं ताम ॥ मा० ॥ रीसे करिवर हो केडे जाम ॥ मा० ॥ नालुए नीकली हो जोउं हुं जेह ॥ मा० ॥ पुंठेथी हाथी हो नीकले छे तेह ॥ मा० ॥ १२ ॥ नालुउं छेदी हो नीकल्यो देह ॥ मा० ॥ पुंछनो केश हो वलग्यो छे तेह ॥ मा० ॥ कोप करी में हो दीधी गाल ॥ मा० ॥ मर मर हाथी हो तुं अकाल ॥ मा० ॥ १३ पापी जे नर हो पर पीडा करे ॥ मा० ॥ गजनी परे हो ते नहीं संचरे ॥ मा० ॥ अवकाश लहीने हो नाठो हुं जाम ॥मा०॥ अपर नगर हो दीठुं में ताम ॥मा०॥१४॥ जिनवर जुवन हो दीठुं में चंग ॥मा०॥ मुज मन उपनो हो बहोलो रंग ॥मा०॥ जाव करीने हो वांद्या अरिहंत ॥ मा० ॥ निराजरण हो जासुर माहंत ॥मा०॥१५॥ वांदी करीने हो हुं बेठो जाम ॥ मा० ॥ नर नारी नवि देखुं ताम ॥मा०॥ शून्य जुवन छे हो जिनवर केरुं ॥मा०॥ नामे ठामे हो

जोउं अजिनेरुं ॥मा०॥१६॥ उंची दृष्टि हो जायुं जाम ॥मा०॥ पींछी कमंमल हो दीठुं ताम ॥मा०॥ जतन करीने हो बांध्यां बे जेह ॥मा०॥ हस्ते करीने हो उतार्यां तेह ॥मा०॥१७॥ मन मांहीं हो विचार्युं एहवुं ॥मा०॥ वस्त्र विहुणा हो करशुं केहेवुं ॥मा०॥श्रावक सुतने हो जाचुं अहीं केम ॥मा०॥ पींछी कमंमल धरीयां तेह ॥मा०॥१७॥ गुरुजी पाखे हो दीक्षा में लीध ॥मा०॥ देश विदेशे हो विहारज कीध ॥मा०॥ पाटलीपुरमां हो आव्यो बुं आज ॥मा०॥ कथा कही बे हो में मूकी लाज ॥मा०॥१ए॥ संबंध कथानो हो कह्यो बे एह ॥मा०॥ द्विज-वर वातो हो विचारो तेह ॥ मा० ॥ साचां वचन हो कह्यां बे अमो ॥ मा० ॥ खोटां वचन हो म करशो तमो ॥ मा० ॥२०॥ खंरू त्रीजानी हो ढाल कही त्रीजी ॥ मा० ॥ श्रोता सहुको हो करे जो जीजी ॥ मा० ॥ रंगविजयनो हो शिष्य एम बोले ॥मा०॥ नेमविजयने हो नहीं कोइ तोले ॥ मा० ॥ २१ ॥

डुहा.

विप्र वचन तव बोलीया, सांजलरे अजाण ॥ जूठो किमही न बोलीए, कलि केम उगे नाण ॥ १ ॥ खोटां वचन तमे उचर्यां, दीसो बोरे लबारू ॥ डिंग मोल्यां बे अणघड्यां, तुमे धूरत महा धारू ॥ २ ॥ कमंमल मांहीं मयगल तुमो, पेठा बो एह

जूठ ॥ करि नीकलतां नालुए, केश वलग्यो महा कूट ॥ ३ ॥ माया मुनि तव बोलीयो, सांजलो विप्र विचार ॥ वचन अमारां खंकीयां, असत्य कीयां अपार ॥४॥ जूठां वचन तुमे कां कर्यां, जो नहीं मानो एह ॥ वेद पुराणे जे कह्यां, सत्य करो कांइ तेह ॥ ५ ॥ ब्राह्मण तव ते बोलीया, सांजलो जाइ सार ॥ वेद पुराणे नहीं सुण्यां, एहवां वचन लगार ॥ ६ ॥ दीठां सांजल्यां जो होये, वेद पुराणो मांहीं ॥ कपटी केता कां नथी, विलंब करो बो कांहीं ॥ ७ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, सुणजो विप्र विचार ॥ सत्य वचन मुज बोलतां, शिक्षापात लहुं मार ॥ ८ ॥ ब्राह्मण वचन वलतो जणे, सांजल मूढ गमार ॥ योग्य वचन परकाशतां, कोइ नवि दीये प्रहार ॥ ए ॥

ढाल चोथी.

एक दिन दासी दोकती, आवी श्रेणिक पास रे—ए देशी.

वेषधारी मुनि तव कहे, सांजलो द्विजवर जेहरे ॥ वेद पुराण सुण्युं एशुं, तुम पास जाखशुं तेहरे ॥ वेषधारी ॥ १ ॥ कुरुजांगल हस्तीनागपुरे, पांकव पांच ते भ्रातरे ॥ युधिष्टर जीम अर्जुन जलो, सहदेव नकुल प्रख्यातरे ॥ वे० ॥ २ ॥ धर्मराजाए मन चिंतव्युं, पुण्य कीजे अपाररे ॥ विनय करी तेकावीया, खेचर सुर नर साररे ॥ वे० ॥

॥ ३ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा, ऋषि सहस्र अठ्यासीरे ॥ कर जोडी युधिष्टर भणे, ब्रह्मा कहोने विमासीरे ॥ वे० ॥ ४ ॥ धर्म केही परे उपजे, अमे करुं ते काजरे ॥ ब्रह्मा कहे युधिष्टर सुणो, जाग मांडो महाराजरे ॥ वे० ॥ ५ ॥ अश्वमेधे तुरंगम हणो, पुंडरिक मांहे हाथीरे ॥ गोमेध पुण्य गायज हणी, अजामेध अज साथीरे ॥ वे० ॥ ६ ॥ राजसूय महा जागमां, नरपति होमो साररे ॥ विविध जीव जागे कह्या, तेहनो पुण्य नहीं पाररे ॥ वे० ॥ ७ ॥

श्लोकः—गोसुवे सुरभिर्हन्यात्, राजसूये च भूभुजम् ॥
अश्वमेधे हयं हन्यात्, पुंडरिके च हस्तिनम् ॥ १ ॥

तव राजाए प्रारंभीयो, राजसूय जागनो नामरे ॥ दैत सघला रोषे जठ्या, भांजी जागनो ठामरे ॥ वे० ॥८॥ युधिष्टर राजा तव भणे, अर्जुन सुणो तमे भाइरे ॥ शेषनाग तेडो पातालथी, साते ऋषि वेगे जाइरे ॥ वे० ॥ ९ ॥ ते आवे तो कारज सरे, नहींतो विणसे जागरे ॥ अर्जुने तव बाण मूकीयुं, फोड्यो भूमि भागरे ॥ वे० ॥१०॥ बाण छिद्र पेठो अर्जुनो, पाताल गयो तामरे ॥ नाग रिषिने सहु कह्युं, पधारो स्वामि गामरे ॥ वे० ॥ ११ ॥ शेषनाग ऋषि सातशुं, विचारी करी साररे ॥ धर्म काम करशुं अमे,

लीधो सैन केडे फाररे ॥ वे० ॥ १२ ॥ वाण ठिड्डे सहु नीकली, दश क्रोड ते सेनारे ॥
दैत्य साथे संग्राम कर्यो, जाग्या दानव वीनारे ॥ वे० ॥ १३ ॥ जगन संपूरण तव
थया, पांडव पांच ते हरख्यारे ॥ वेद पुराणे बोल्युं एहवुं, विप्र जुउ तमे परीक्षारे
॥ वे० ॥ १४ ॥ जट्ट जणे मुनिवर सुणो, सत्य वचन ए मोटुंरे ॥ स्मृति पुराण
वेदे कह्युं, केम थाये भ्रम खोटुंरे ॥ वे० ॥ १५ ॥ माया मुनि कहे सांजलो, विप्र
एहीज वातोरे ॥ हय गय पायक अहिपति, ऋषिवर चाल्या सातोरे ॥ वे० ॥ १६ ॥
वाण ठिड्डे समाया सहु, वली नीकल्या जेमरे ॥ कमंडल मुखे हुंकरी, समया
वेहु तेमरे ॥वे०॥१७॥ विप्र वचन जणे मुनि सुणो, घटतां दीसे ए दोथरे ॥ वली विचारी
कहुं अमे, उत्तर देजो सोयरे ॥ वे० ॥ १८ ॥ कमंडल मांहीं हस्ती तुमे, माया एह
संदेहरे ॥ घणो काल जमतां थका, केम न जांगी जींकी तेहरे ॥ वे० ॥ १९ ॥
नालुए कुंजर केम नीकल्यो, केम वलग्यो पुंछ वालरे ॥ चार संदेह पड्या अछे जो,
जुउ दयापालरे ॥ वें ॥ २० ॥ खंड त्रीजे ढाल ए कही, चोथी सुणो सुविशालरे ॥
रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय उजमालरे ॥ वे० ॥ २१ ॥

दुहा.

जिनचरणदास बोल्यो जति, ब्राह्मण सुणजो वात ॥ अगस्त्य ऋषिवर अभिनवो, पुराण प्रसिद्ध ए ख्यात ॥ १ ॥ जठ हस्तीनी देहकी, सायर समीपे वास ॥ तप जप ध्यान धरे बहु, सामग्री राखे पास ॥ २ ॥ झोली भाजन पात्रने, स्नाने शुद्ध करे गात्र ॥ सायर तीरे बेसी करी, जोय मेल्यां सवि पात्र ॥ ३ ॥ चाल्यो करवा स्नान ते, समुद्रनी लागी लेहेर ॥ जल कलोले लीधी सहु, उपन्यो ऋषिने जेहेर ॥ ४ ॥ पूजा सामग्री माहरी, पापी जलधिए लीध ॥ तो संहारुं एहने, तव तिहां सागर पीध ॥ ५ ॥ एक चलुमें एटलो, पीधो सागर सर्व ॥ केटलोक काल पेटमां रह्यो, हुं कहुं मूकी गर्व ॥ ६ ॥ द्विज सहु को तमे सांजलो, पुराण प्रसिद्धो ताम ॥ इंद्रिमां समायो जो सही, तो हुं हस्ती बेहु गम ॥ ७ ॥ अगस्त्य ऋषिए पीधो सहु, वहाण सायर मछ ॥ एह वात मानो खरी, तो माहरी वातो सच्च ॥ ८ ॥ विप्र बोल्या तव सहु मली, पुराणमां वात मनाय ॥ तुम वयण केम लोपीए, लाग्या तुमारे पाय ॥ ९ ॥ माया मुनि तव बोलीयो, ब्राह्मण सुणजो वात ॥ अपर वात पुराणे कही, सांजलजो विख्यात ॥ १० ॥

ढाल पांचमी.

नंद सलुणा नंदनारे लोल, तें मुने नाखी बे फंदमांरे लोल—-ए देशी.

सृष्टि उपाइ ब्रह्मानी कहीरे लोल, भूतल वायु वनस्पति महीरे लोल ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमांरे लोल, जीव उपाया जजमालमांरे लोल ॥ १ ॥ रुद्रे रुद्रपणुं तव कर्युंरे लोल, ब्रह्मा सृष्टि वेगे संहरुंरे लोल ॥ प्रलयकाल वरतावुं आजथीरे लोल, अमे ईश्वर एवुं काजथीरे लोल ॥ २ ॥ विष्णु वात विचारी एहवेरे लोल, भुवन चौद पालशुं तेहवेरे लोल ॥ उदर मांहीं जग लीधो सहुरे लोल, जीवादिक तव राख्यो वहुरे लोल ॥ ३ ॥ विष्णु पोहोड्या जइ वम पानमेरे लोल, ब्रह्मा जोवे रान रानडेरे लोल ॥ बहु काल गयो जग जोवतांरे लोल, देखे नहीं अणखोवतांरे लोल ॥४॥ तलसीनो छोरू तव दीठमोरे लोल, ब्रह्मा आव्यो दील करी मीठमोरे लोल ॥ अगस्त्य रुषि दीठा एटलेरे लोल, वेहु तापस एकठा मलेरे लोल ॥ ५ ॥ अभ्यादे अभ्यादे करीरे लोल, कोटे वलग्या बांही धरीरे लोल ॥ सन्मान दीधुं ब्रह्मा जणीरे लोल, आसन उपर बेठा धणीरे लोल ॥ ६ ॥ अगस्त्य कहे ब्रह्मा सुणोरे लोल, केम पधार्या मुजने जणोरे लोल ॥ चिंतातुर दीसो छो घणुंरे लोल, कहेजो स्वामि काज आपणुंरे लोल ॥ ७ ॥ धाता तव बोल्या

वहीरे लोल, अगस्त्य सुणो वातो सहीरे लोल ॥ सृष्टि निपाइ में आदर करारे लोल, पापी नर कोणे संहरीरे लोल ॥ ८ ॥ जोयुं जगत्र न दीठुं कहीरे लोल, घणो काल भमीयो महीरे लोल ॥ भुवन चौदनी आशा मूकी खरीरे लोल, दुर्जन कोणे कीधो विणासहीरे लोल ॥ ए ॥ अगस्त्य ऋषि बोल्या तदारे लोल, सांभलो ब्रह्मा ऋषि मुदारे लोल ॥ तलसी डाले वलग्यो एहनो रे लोल, सरसव जेवडो कमंडल तेहनो रे लोल ॥ १० ॥ कमंडल मुखमां पेसी जोयेरे लोल, विश्व आपणो वेगे होयेरे लोल ॥ ब्रह्माने आनंद आवीयोरे लोल, पेठो कमंडलमां भावीयोरे लोल ॥ ११ ॥ कुंडी मधे जोये छे जदारे लोल, वड वृक्ष मोटो दीठो तदारे लोल ॥ डाले चढी जोये पाननेरे लोल, निद्राभर दीठा तिहां काननेरे लोल ॥ १२ ॥ पासे आवी जोये जेहवेरे लोल, कोण पुरुष दीसे छे एहवेरे लोल ॥ किंवा विष्णु घटे गोवालीयोरे लोल, हरि विना नोहे भूपालीयोरे लोल ॥ १३ ॥ वडपाने सुता जगनाथजीरे लोल, उठो स्वामि मलो देइ हाथजीरे लोल ॥ साद कीधो उठ्या गोविंद धसीरे लोल, ब्रह्मा मल्या आनंद हसीरे लोल ॥ १४ ॥ नारायणे पूछ्यो तदारे लोल, तुमे पधार्या केम मुदारे लोल ॥ ब्रह्मा मुख तद बोल्या एशुंरे लोल, सांभलो विष्णु कहुं जेशुंरे लोल ॥ १५ ॥ सरजी सृष्टि न देखुं कहींरे लोल, घणो काल हुं भ-

स्यो महीरे लोल ॥ दीठा जाणी आव्या तुम कनेरे लोल, कहो स्वामि आशा अम कनेरे लोल ॥ १६ ॥ विष्णु तब बोल्या सहीरे लोल, सांभलो ब्रह्मा ऋषि वहीरे लोल ॥ चौद भुवन निपाया तुमेरे लोल, तेहनी रक्षा करवी अमे रे लोल ॥ १७ ॥ रुद्रे जब मांड्यो संहारनोरे लोल, प्रलयकाल करे अपारनोरे लोल ॥ उदरमां तब वेगे करीरे लोल, सृष्टि तमारी में उधरीरे लोल ॥ १८ ॥ वचन सुणी रीझ्या तदारे लोल, भलो कीधो तुमे अम मुदारे लोल ॥ स्वामि भुवन देखाडो हवेरे लोल, जीव अमारो घणुं लवेरे लोल ॥ १९ ॥ हरि भणे सांभलो ऋषि तमेरे लोल, मुखमां पेसो जइ उजमेरे लोल ॥ सृष्टि जुओ तमारी एहवी रे लोल, भागे मनना सहु संदेहवीरे लोल ॥ २० ॥ खंड त्रीजे ढाल पांचमीरे लोल, श्रोता सहु जनने गमीरे लोल ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहेरे लोल, नेम ते जश जगमें लहेरे लोल ॥ २१ ॥

दुहा.

ब्रह्मा मुखमां पेठा जइ, चौद भुवन दीठां त्यांहिं ॥ स्वर्ग मृत्यु नरकावासनो, पर्वत सागर मही मांहीं ॥ १ ॥ सुर नर किन्नर देवता, हय गय पंखी अनेक ॥ उदर मांहिं दीठो सहु, जोतां काल गयो छेक ॥ २ ॥ अधोद्वारे नीकलवा, ब्रह्माए विचारी वात ॥ मल

मूत्र अशूचि नंमारनो, डुर्गंध गंध उतपात ॥ ३ ॥ इहां नीकलवुं नवि घटे, वदने थाये बहु वर्ष ॥ नाभिकमल जे विष्णुनी, तेमां काढुं देह तो हर्ष ॥ ४ ॥ पहेलो काज विचारीए, तेहने नावे कोइ लाज ॥ विष्णु नाभिने छिद्र करी, ब्रह्मा नीकल्या आज ॥ ५ ॥ डुंटी वलग्यो केश अंगनो, धाता न लहे लवलेश ॥ ब्रह्मा तिहां वलगी रह्या, मादु थया वलगे केश ॥ ६ ॥ नाभिकमल रचना करी, पांखमी अष्ट प्रकार ॥ उपर आसन पूरीयुं, नाम कमलासन सार ॥ ७ ॥ दिवस तेहज आदे करी, पदम जात तेह नाम ॥ नाभिकमले हरि उपन्या, कथा जाणो ब्रह्मानी ताम ॥ ८ ॥ माया मुनि हसी बोलीयो, विप्र विचारी जोय ॥ वेद पुराणे कथा कही, साची जूठी होय ॥ ए ॥ विप्र वचन तव बोलीया, पुराण प्रसिद्धो एम ॥ सर्व शास्त्र मांहीं कह्युं, खोटुं कहीए केम ॥ १० ॥

ढाल ७ठी.

घमी एक थोने राणी सुंवरो, सुंवरो दरियोरे न जाय—ए देशी.

मनोवेग पवनवेग भणी, सामुं जोइ मित्त ॥ मित्र वचन मुज सांभलो, एक मनमां धरी चित्त ॥ साजन सहुको सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जेम कमंमल सरसव जेटले, मध्ये जग मायंत ॥ तो कमंमल मोटा मांहीं, गज अमे केम न पेसंत ॥ सा० ॥ २ ॥ जेम चौद

भुवन भारे करी, तुलसी फाल नवि भंग ॥ तेम मयगल मुज भारथी, भींडी फाल न रूंग ॥ सा० ॥ ३ ॥ जेम विष्णु उदर मांहीं भम्यो, ब्रह्मा तिहां बहु काल ॥ अपणो जग जोतां थका, एम कहे बाल गोपाल ॥ सा० ॥ ४ ॥ कमंडल मांहीं वेहु भम्या, साव कहुं गज जेम ॥ करि पुंठे भमे घणुं, नाठो जाउं तेम ॥ सा० ॥ ५ ॥ जेम नाभि-कमल ठिद्रे करी, आखो नीकल्यो देह ॥ आंरुवाल वलगी रह्यो, ब्रह्मानो वली तेह ॥ सा० ॥ ६ ॥ तेम हस्ती नालुए नीकल्यो, पुंछनो वलग्यो केश ॥ वलवतरे बहु वल कर्यो, हाल्यो नहीं लवलेश ॥ सा० ॥ ७ ॥ वचन सुणी द्विज वोलीया, सांभलो साधु नरेश ॥ कर जोडी तुज पाय पड्या, उत्तर नोही लवलेश ॥ सा० ॥ ८ ॥ मनोवेग मन उलसी, वोल्यो मधुरी वाण ॥ पवनवेग सहु सांभलो, वचन विरोध पुराण ॥ सा० ॥ ए॥ जो विश्वलोक सघलो गल्यो, विष्णुए उदरज मांहीं ॥ तो कमंकल वाहेर केम रह्युं, कहो केम पेठा त्यांहीं ॥ सा० ॥ १० ॥ अगस्त्य तुलसी काडवे, कमंकल तुठ मोझार ॥ वड वृक्ष तणे पांदडे, पोढ्या देव मोरार ॥ सा० ॥ ११ ॥ ए सौ जग वाहिर घटे, तिहां करजो विचार ॥ विप्र सहु पुराणनां, वचन विरोध अपार ॥ सा० ॥ १२ ॥ जे ब्रह्मा ध्याये थके, मूकाए भव पास ॥ विष्णुनी नाभिकमले रह्यो, पाम्यो दुःख निरास

॥ सा० ॥ १३ ॥ जो ज्ञानवंत ब्रह्मा होये, तो कां पूजे अगस्ति ॥ सृष्टि मारी को हरी गयो, कहो रुषिवर किहां वस्ति ॥ सा० ॥ १४ ॥ ब्रह्माए सहु सरजीयुं, तो सरजी नहीं एक नार ॥ रींछणीने सेवे सदा, कामांध होये गमार ॥ सा० ॥ १५ ॥ नारायण जाणे सहु, सृष्टि तणो संहार ॥ तो सीताहरण नहीं जाणीयो, पूछ्यो सयल संसार ॥ १६ ॥ नाग-पबंध बांध्या थका, बूटे सघला लोक ॥ रामचंद्र समरथ सदा, भांजे सहुनो शोक ॥ सा० ॥ १७ ॥ रावण पुत्र पराक्रमी, इंद्रजित जेहनुं नाम ॥ सकल सैन तेणे बांधीयो, लक्ष्मण ने वली राम ॥ सा० ॥ १८ ॥ शोक सहुने उपन्यो, रवि उगमते एह ॥ सल्प विसल्या औषधी, नावे तो मरे तेह ॥ सा० ॥ १९ ॥ हणुमंते वेगे करी, आणी सल्प विसल्य ॥ राम लक्ष्मण सेना तणां, भांज्या सघलां शल्य ॥ सा० ॥ २० ॥ निज बंध-न जेणे नहीं टल्यां, नहीं टल्या शोक संताप ॥ परनां ते केम टालशे, विचारो महा पाप ॥ सा० ॥ २१ ॥ खंम त्रीजे छठी ढालमां, भाख्या नवनवा भेद ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमने हर्ष उमेद ॥ सा० ॥ २२ ॥

दुहा.

ब्राह्मण सहु छाना रह्या, नहीं उपजे ते बोल ॥ मनोवेग मन उलस्यो, विप्र हुवा

निहोल ॥ १ ॥ वाद जीती वनमां गया, विद्याधर बेहु मित्र ॥ मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग पवित्र ॥ २ ॥ पूर्वापर विरोध घणा, कहेतां लागे लाज ॥ देव तणा गुण सांभलो, जेम सरे तुम काज ॥ ३ ॥ क्षुधा तृषा भय द्वेष नहीं, राग क्रोध मद लोभ ॥ मान मोह माया नहीं, जन्म जरा मृत्यु क्षोभ ॥ ४ ॥ स्वेद खेद विषाद नहीं, निद्रा चिंता नहीं जेह ॥ अष्टादश दोष वेगला, आराधो वली तेह ॥ ५ ॥ अतिशय चोत्रीश जेहने, प्रातिहार्य अरु सार ॥ अनंत चतुष्टय मंडीया, ते देव भवजल तार ॥ ६ ॥ ब्रह्मा हरि हर देवता, राग द्वेष भंमार ॥ दूषण भूषण भूषिता, पुत्र कलत्र परिवार ॥ ७ ॥ सुदेव कुदेव परीक्षा करो, धर्माधर्म विचार ॥ साचुं होय ते अंगी करो, हेम प्रकार जेम चार ॥ ८ ॥ ताप ताडन छेद घर्षण, दान दया तप जाप ॥ शस्त्री शास्त्र गुरु कुगुरुनो, परीक्षा धरो निःपाप ॥ ९ ॥

ढाल सातमी.

राधा रूपे दीसे रुडी, हाथे खलके सोनानी चुडी, मारी सइरे समाणी—ए देशी.

कुगुरु कुदेव कुधर्म तणा जेह, दोष दाखव्या पूरवे घणा एहरे ॥ मारा साजन सुणजो, ग्रंथ वधवाने कारण जेह ॥ पाछल कह्या विचारो तेहरे ॥ मारा साजन० ॥

॥ १ ॥ लोक अलोकाकाश मोजार, ऊंचो चौद राज विस्ताररे ॥ मा० ॥ सात राज हेठो अधो लोक, मेरु कंदथी गणजो थोकरे ॥ मा० ॥ २ ॥ मेरु समो ऊंचो मध्य लोक, तिहांथी सात राज मोक्ष रोकरे ॥ मा० ॥ अधो सात राज मध्य एक, पूर्वापर करजो विवेकरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ ब्रह्म लोक राज छे पांच, एक राज ऊपर वली खांचरे ॥ मा० ॥ दक्षिण उत्तर सघले तास, वायु त्रण विधो विख्यातरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ लोक मध्य उत्री तस नाल, चौद राज ऊंची विशालरे ॥ मा० ॥ त्रस नाली त्रस थावर भरी छे, एक राज विस्तारे करी छेरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ बाहेर भरीया थावर पंच, आगम कहीए एहवो संचरे ॥ मा० ॥ घनराज जाणो त्रिलोक, त्रणसें तेंताली थोकरे ॥ मा० ॥ ६ ॥ कटीकर कीधो पुरुषाकार, अथवा मादल दोढ आकाररे ॥ मा० ॥ अर्ध मादल धर्युं अधो लोक, आखुं मादल ऊपर कर्युं थोकरे ॥ मा० ॥ ७ ॥ अधो लोक छे नरकावास, छ राज मांहीं सात अवकासरे ॥ मा० ॥ एक राज अधो हेठो लोक, थावर पांच भर्यो ते थोकरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ लोक त्रणनो घणो विचार, सिद्धांत थकी सुणजो साररे ॥ मा० ॥ कोणे नहीं ए सृष्टि निपाइ, अनादि कालनी एह सदाइरे ॥ मा० ॥ ए ॥ मिथ्याती एम कहे छे केता, जल व्यापत ब्रह्मांडे वहेतारे ॥

॥ मा० ॥ जल मांहीं उपन्यो पंपोट, तेहथी इंडुं जायुं खोटरे ॥ मा० ॥ १० ॥ इंडुं कीधुं त्रण खंड, तेथी उपन्यो सहु ब्रह्मांडरे ॥ मा० ॥ जलमां मूक्युं ब्रह्माए इंडुं, तेथी जायुं छे वली रिंडुंरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ सृष्टि नहोती किहां रह्या ब्रह्म, जल पोट इंडुं केम जमारे ॥ मा० ॥ मिथ्या मतना कहुं विचार, सृष्टि उपनी घणे प्रकाररे ॥ मा० ॥ ॥ १२ ॥ आदि हो तुं एक अनादि, तेथी उपन्यो आदिता सादिरे ॥मा०॥ आदितनो उपन्यो उंकार उंकारनो वेद अपाररे ॥मा० ॥१३॥ वेदनो हव्य हव्यनो धूम, धूमनो मेघ जल रूमरे ॥ मा० ॥ जल व्याप्युं उंचुं अखंड, जइ व्याप्युं एकवीश ब्रह्मांडरे ॥ मा० ॥ १४ ॥ तेणे काल आदि विष्णु जलसार, जल साइ पोढ्या अपाररे ॥ मा० ॥ पोढ्याथी गया बहु काल, वर्ष सहस्र वही गयां रसालरे ॥ मा० ॥१५॥ तदा काल नहीं आदि अनादि, पृथ्वी अप तेउ नहीं वली सादिरे॥ मा० ॥ वायु आकाश तरुवर नहीं एह, चंद्र सूरज ग्रह नहीं वली तेहरे ॥ मा० ॥ १६ ॥ अग्नि आदि करी नहीं एक, तदा आदि विष्णुए निपायो छेकरे ॥मा०॥ प्रथम पेहेलुं निपायुं तेज, तेज थकी ज्योति उपन्यो हेजरे ॥ मा० ॥ १७ ॥ ज्योति थकी उपन्यो वली फेन, फेनथी उपन्यो अदबुद सेनरे ॥ मा० ॥ अदबुदथी उपन्यो वली अंड, अंड थकी उपन्यो

ब्रह्मा अखंरूरे ॥मा०॥१७॥ ब्रह्मानो काश्यपी रुषि जात, काश्यपथी काश्यपी रुषि संघा-
तरे ॥ मा० ॥ काश्यप रुषि पतनी हुइ तेर, दीतीए जाया दैत्य दाणव ढेररे ॥ मा० ॥
॥ १ए ॥ आदितिथी उपन्या अपार, तेत्रीश कोरू देव सुत साररे ॥ मा० ॥ करुए
जाया नवकुली नाग, वनिता सुत गरुरू विषत्नागरे ॥ मा० ॥ २० ॥ सुप्रजाए पुत्री
जणी सात, नवसें नवाणुं नदी विख्यातरे ॥ मा० ॥ एकीए जणीया द्वीपज सात,
साते सागर जाया एकीए रातरे ॥ मा० ॥ २१ ॥ एकीए जाया पर्वत वृंद, सेना
ब्राह्मणी जणीया चंदरे ॥ मा० ॥ एकीए सहुए सूरज जाया, तारा ग्रह नक्षत्र बहु
मायारे ॥ मा० ॥ २२ ॥ हव्यकाए जाया रुषिवर स्वाम, अठ्याशी सहस्र तणां वे
नामरे ॥ मा० ॥ खडनेत्री जणीया चारे खाण, स्वेद अंरू जरा अदबुद जाणरे ॥
मा० ॥ २३ ॥ चार खाणथी चोराशी लाख, जीव योनिनी उत्पत्ति जाखरे ॥ मा० ॥
बेंतालीश लाख थलचर जोय, जलचर नत्नचर बाकी होयरे ॥ मा० ॥ २४ ॥ जीव
थकी उपन्या जुग चार, कृत त्रिता द्वापर कलि साररे ॥ मा० ॥ एणी परे सृष्टि
तणो वे लाग, मिथ्यादृष्टि कह्यो वित्नागरे ॥ मा० ॥ २५ ॥ खंरू त्रीजानी सातमी

ढाल, सुणजो सहु बाल गोपालरे ॥ मा० ॥ रंगविजय शिष्य एम भाखे, नेमविजय गुण एम दाखेरे ॥ मा० ॥ २६ ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग गुणवंत ॥ मूढ मिथ्यातनी वारता, आप विगोए एकंत ॥ १ ॥

ढाल आठमी.

वणजारानी देशी.

मारा नायकरे, विष्णु ब्रह्मा बेह, वाद वदे सृष्टि कारणे ॥ मा० ॥ ब्रह्मा कहे सृष्टि एह, में सरजी सुख कारणे ॥मा०॥१॥मा०॥ विष्णु वदे मुज तणी सार, सृष्टि रक्षा करुं अमे खरी ॥ मा० ॥ मा० ॥ जुग काजे वलगता तेह, शंकर पासे गया मन धरी ॥ मा० ॥ २ ॥ मा० ॥ कहो ईश्वर महाराज, अमे बेहु मांहे सृष्टि केहु तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ शंकर कहे सुणो ब्रह्मा विष्णु, मुज लिंग छेडे जाए ते धणी ॥मा० ॥ ३ ॥मा०॥ ब्रह्मा तुमे जाउ उर्ध्व लोक, मुज लिंगनो अंत ज्यां होये ॥ मा० ॥ मा० ॥ विष्णु जाउ अधो लोक, लिंग

बेठो आवे सोइ ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ ब्रह्माए बथाव्युं लिंग, हस्त धरी उंचो चढे ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग वलगी चाल्यो कान, वेगे पाताले हरी जडे ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ जातां थयो घणो काल, लिंग अंत न पावीयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ नारायण थाक्यो ताम, पाछो वली हर कने आवीयो ॥ मा० ॥ ६ ॥ मा० ॥ विष्णु कहे सुण ईश, लिंग पार में नविलह्यो ॥ मा० ॥ मा० ॥ दुःखीउं हुवो ब्रह्मा वाट, मुख फीको करीने रह्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ मा० ॥ खसी पड्युं केवडी पत्र, लिंग उपरथी तले यदा ॥ मा० ॥ मा० पडतो झाल्यो कहे ब्रह्म, कूडी साख देजो केवडी तदा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मा० ॥ वेहु आव्या ईश्वर पास, ब्रह्मा कहे हुं ठेठे गयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग उपरथी एह, केवडी आणी साचो जयो ॥ मा० ॥ ए ॥ मा० ॥ कहे केवडी साची वात, ब्रह्मा आव्यो तुज लगे ॥ मा० ॥ मा० ॥ केवडी कहे सुण स्वाम, ब्रह्मा वचन नवि डगे ॥ मा० ॥ १० ॥ मा० ॥ ज्ञाने जोइ करी ईश, खोटुं जाणी श्रापी केवडी ॥ मा० ॥ मा० ॥ म चडीश माहरे लिंग, कांटा होजो तुज तेवडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मा० ॥ खोटा बोलो ब्रह्मा तुं जाण, सृष्टि न होशे तुज तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ सत्यवादी गोविंद, सृष्टि सहुनो ए धणी ॥ मा० १२ ॥ मा० ॥ पवनवेग विचारी जोय, मलती वात एके नहीं ॥ मा० ॥ मा० ॥ परीक्षा करी धरो चित्त, सुधुं समकित मन

ग्रही ॥ मा० ॥ १३ ॥ मा०॥ जिनशासनना भेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ वीतराग देव आराध, जैन वाक्य हृदय धारीए॥ मा०॥१४॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरिराय, शुभविजय शिष्य तेहना ॥ मा० ॥ मा० ॥ भावविजय शिष्य तास, सिद्धिविजय शिष्य एहना ॥ मा० ॥ १५ ॥ मा० ॥ रूपविजय सही एह, शिष्य कह्या जाणो सही ॥ मा० ॥ मा० ॥ कृष्णविजय कलि मांहीं, शिष्य नाम धराव्यो मही ॥ मा० ॥ १६ ॥ मा०॥ रंगविजय रंग लाय, शिष्य कहीए जगमें जदा ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय शिष्य नाम, नित्य उदय होजो तदा ॥ मा० ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह संसारमां सार, धर्मपरीक्षा जाणीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ मिथ्या मत तणो ध्वंस, त्रीजो अधिकार मन आणीए ॥ मा० ॥ १८ ॥ मा० ॥ त्रीजो पूरो थयो खंड, ढाल आठे पूरण करी ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय कहे नित्य, गुरुनुं नाम हृदय धरी ॥ मा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षायां मिथ्यादेवशास्त्रपुराणगुरुदूषण नामा तृतीयोऽधिकारः

खंड ४ थो.

दुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी बे कर जोड ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं छुं गर्वने छोड ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो जणे, पवनवेग जणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांजलजो तुमे भ्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज जणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण वेय ॥ एकांते नवि उंलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां जलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्या, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

जेर वजाडी रुयडीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे ॥ सिंहासन बेठा चडीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तापस देखी अचंत्रीयारे, न्नट्ट एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ वाद वदो तुमे अति घणारे, प्रथम वचन करुं न्नंग ॥ मा० ॥ कौ० ॥ २ ॥ घंटा धंधोली अम तणीरे, न्नेर वजावी वली आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमनुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥ कौ० ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सांन्नलो विप्र विचार ॥मा०॥ विनोद कारण वाजां वाइयांरे, सिंहासन बेठा अमे सार ॥ मा० ॥ कौ० ॥ ४ ॥ बेठा तुमने नवि गमेरे, उतरीए नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं होय केहवोरे, न्नण्या नहीं निशाल ॥ मा०॥ कौ० ॥ ५ ॥ विप्र वचन तव उचरेरे, सांन्नलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहा थकी तुमे आवीयारे, कोण उपन्यो ठे काज ॥ मा० ॥ कौ०॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण ठे तमारी जात ॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रहोरे, उत्तर देउ अम न्रात ॥ मा० ॥ कौ० ॥ ७ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ साचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बोले लहीए मार ॥ मा० ॥ कौ० ॥ ८ ॥ तरती शिला वली जेणे कहींरे, जेणे कह्यो मर्कट नाच ॥ मा० ॥ असंन्नव वाक्य लवता थकारे, ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ कौ० ॥ ए ॥ मूरख मोटा होये घणारे, सन्ना मांहीं नर वली जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

कहो तुमे सार ॥ मा० ॥ मोटा मूरख छे किसारे, बोलो तेह अधिकार ॥ मा० ॥ कौ० ॥ ११ ॥ मनोवेग तव उचरेरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ मूरख कथा तुमने कहुं रे, श्रुतसागर तुमे पार ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १२ ॥ सन्ना मांहीं मूरख नरेरे, कोइ होशे द्विजवर आज ॥ मा० ॥ तो खोटी कथा करे मुज तणीरे, नवि सरे अमारो काज ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १३ ॥ मूरख होय ते शुं करेरे, सुणजो कथानो समाज ॥ मा० ॥ एक चित्ते मौनज धरीरे, हरख उपजे जेम आज॥ मा० ॥ कौ० ॥ १४ ॥ चार नर मारग सांचर्यारे, मूरख मोटा वली तेह ॥ मा० ॥ मुनिवर एक सामो मल्योरे, उत्तम चारित्र गेह ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १५ ॥ मौन धारी जोग आगलोरे, सुमति गुपति व्रत धार ॥ मा० ॥ नगन मुद्रा परि-सह सहेरे, नव्य जीव नवजल तार ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १६ ॥ एहवो मुनिवर दीठमोरे, तव मूरख चारे चंग ॥ मा० ॥ वांद्यो मुनिवर नाव धरीरे, तव जतिवर बोल्यो रंग ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १७ ॥ धर्मवृद्धि तुमने होजोरे, वचन सुणी चारे ताम ॥ मा० ॥ मारग चाल्या मलपतारे, जोजन दोढ गया जाम ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १८ ॥ चोथा खंड तणी कहीरे, प्रथम ढाल रसाल ॥ मा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमविजय उजमाल ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १९ ॥

दुहा.

तव मूरख एक बोलीयो, आशिष दीधी मुनिराज ॥ धर्मवृद्धि मुजने कही, सरशे अमारो काज ॥ १ ॥ बीजो कहे मुजने कही, त्रीजो बोले तेणी वार ॥ चोथो कहे मूजने कह्यो, आशिष मुनि गुणधार ॥ २ ॥ मांहोमांहे वलगे घणुं, पाछा आव्या तिणे ठाम, मुनिवर तिहां दीठा नहीं, न्याय कारण अन्य ग्राम ॥३॥ बुद्धिवंत व्यवहारीआ, तेहने जइ मल्या ताम ॥ न्याय करो शेठ अम तणो, महा मूरख अम नाम ॥४॥ तव शेठे ते पूछीया, के शी मूरखाइ अंग ॥ चार मध्ये एक बोलीयो, मूरख मूरखाइ चंग ॥ ५ ॥

ढाल बीजी.

टुंक अने टोडा वचेरे, मेंदीनां दोय रूख, मेंदी रंग लागो—ए देशी.

मारे मंदिर दो नारी अछेरे, चंगी निरंगी सुखखाण ॥ साजन सांभलो ॥ एक दिवस सूतो सज्यारे, थयो निद्रावश आण ॥ सा० ॥ १ ॥ तव भामनी आवी वेहुरे, सूती झावे जमणे पास ॥ सा० ॥ एकेको हाथ मारो ग्रहीरे, हृदय उपर करी आस ॥ सा० ॥ २ ॥ तेणे अवसर मुज मंदिररे, दीपक हतो एक चंग ॥ सा० ॥ तव उंदर वलग्यो आवीरे, दीवट ताणी चाल्यो रंग ॥ सा० ॥ ३ ॥ मुज उपर उंचो रहीरे,

वामांग नेत्र पाडी वाट ॥ सा० ॥ में मनशुं विचारीथुं रे, हस्ते करी टालुं उपघात ॥ सा० ॥ ४ ॥ जो डाबो हाथ चालवुंरे, तो रंगी करे मुज रीस ॥ सा० ॥ जमणो हाथ जो फेरवुंरे, चंगी कलेशे हणे शीश ॥ सा० ॥ ५ ॥ नारी नेह तुटे रखेरे, नेत्र तणो नहीं काज ॥ सा० ॥ डाबो चक्षु तव बल्योरे, नाम दीधो शुक्रराज ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारी नेहने कारणेरे, नेत्र तणी करी हाण ॥ सा० ॥ महा मूरखपणुं माहरुंरे, विचारो तमे बुद्धि जाण ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव बीजो नर एम नणेरे, मुज मूरखनी सुणो वात ॥ सा० ॥ मुज घर नारी बे सहीरे, खरी रींढडी नामे ख्यात ॥ सा० ॥ ८ ॥ जमणो पग खरीने दीयोरे, डाबो रींढडीने ताम ॥ सा० ॥ एणी परे सुख हुं नोगवुंरे, महीला सरसो काम ॥ सा० ॥ ॥ ए ॥ एक दिवस घरे हुं गयोरे, खरी आवी जल देय ॥ सा० ॥ जमणो पग पखालवारे, रींढडी जोय दृष्टि देय ॥ सा० ॥ १० ॥ जव खरी जमणो धोइ गइरे, डाबा उपर में धर्यो पाय ॥ सा० ॥ तव रींढडी कोपे नरीरे, मुसल आणी कर्यो घाय ॥ सा० ॥ ११ ॥ जमणो पग मुज नांजीयोरे, तव खरी करी घणो रोष ॥ सा० ॥ तुं मोटी फुवड रींढडीरे, मान मच्छर अति शोष ॥ सा० ॥ १२ ॥ निज पतिने तुं नवि धरेरे, अन्य पुरुषशुं रमे रात ॥ सा० ॥ तव रींढडी कहे मुने कहोरे, आपणी ढांको आ

जूंकी जात ॥ सा० ॥ १३ ॥ चोरे चोवटे तुं रमेरे, अन्य जाणे सहु लोक ॥ सा० ॥ जरतार वापको पाधरोरे, नाक कान छेदे वीजो रोक ॥ सा० ॥ १४ ॥ तव खरीने चकी रीसकीरे, सवलो मुसल कर लीध ॥ सा० ॥ प्रहार मेल्यो पग उपरेरे, चरण कावो खोको कीध ॥ सा० ॥ १५ ॥ मारो पग तें जांजीयोरे, तारो पग कर्यो में जंग ॥ सा० ॥ साट साटुं वल्युं आपणुंरे, हवे बेहु शोक्योमां रंग ॥ सा० ॥ १६ ॥ पग बेहु कूटी जांजीयारे, नारी में डुहवी न लगार ॥ सा० ॥ मोटो मूरख मुज समोरे, कोइ नवि दीसे गमार ॥ सा० ॥ १७ ॥ चोथा खंड तणी कहीरे, ढाल बीजी सुविशाल ॥ सा० ॥ रंगविजय शिष्य नेमनेरे, होजो मंगल माल ॥ सा० ॥ १८ ॥

डुहा.

तव त्रीजो एणी परे जणे, सांजलो बुद्धि निधान ॥ मुज सरीखो मूरख नहीं, श्री गुरु केरी आण ॥ १ ॥ नागर लोक पूछे तदा, कहे मूरख तुज वात ॥ जेम न्याय विचारी कीजीए, विनोद होये विख्यात ॥ २ ॥

ढाल त्रीजी.

नाह गयो तो वाकीएरे, लाव्यो चंपानो फूल ॥ नानो नाहलोरे—ए देशी.

तव त्रीजो मूरख कहेरे, तुमे सहु सांजलो आज ॥ साजन सांजलोरे ॥ मुज मूरखपणुं वरणवुंरे, जेम सरशे मुज काज ॥ सा० ॥ १ ॥ एक दिवस नारी अमेरे, मलीयां एकण सेज ॥ सा० ॥ होड पाडी मौने रह्यांरे, एम बोली बेहु हेज ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ जे हारे ते होडे दीएरे, घृत खांड जरी दश पोली ॥ सा० ॥ साकर साथे मिश्र करीरे, सुगंध घृतमां ऊबोली ॥ सा० ॥ ३ ॥ एम परठी मौन रह्यांरे, नर नारी बेहु चंग ॥ सा० ॥ तेहवे तस्कर आवीयारे, धन हरवा उत्तंग ॥ सा० ॥ ४ ॥ खात्र देइ घरमां गयोरे, वित्त काढ्युं अपार ॥ सा० ॥ आजरण वस्त्र घणां लीयांरे, मोती लीयां दीनार ॥ सा० ॥ ५ ॥ तोहीं अमे नवि बोलीयांरे, होड हारवा माट ॥ सा० ॥ स्त्री शणगार उतारीनेरे, लेवा लाग्यो तव घाट ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारी कहे कंत सांजलोरे, चोरे हर्युं द्रव्य कोड ॥ सा० ॥ हसी करी में ताली दीधीरे, नारी तुं हारी होड ॥ सा० ॥ ७ ॥ पोली घृत खांडे जरीरे, मुज आपो तुमे आज ॥ सा० ॥ तस्कर वित्त लेइ गयारे, लोक मांहीं लागी लाज ॥ सा० ॥ ८ ॥ एवी कथा बे मुज तणीरे, महा मूरख मारो नाम ॥ सा० ॥ सकल लोक विचारजोरे, धर्म वृद्धिनो हुं ठाम ॥ सा० ॥ ॥ ए ॥ चोथो नर तव बोलीयोरे, स्वकीय कथा परसंग ॥ सा० ॥ मुज मूरखपणुं

सांजलोरे, जेम होये तुमने रंग ॥ सा० ॥ १० ॥ एक दिवस सासरे गयोरे, स्त्री आणाने काज ॥ सा० ॥ तव माता मुज शिखव्युंरे, सांजल पुत्र तुं आज ॥ सा० ॥ ११ ॥ सासरे नित्य जमीए नहींरे, उदर जरीने अपार ॥ सा० ॥ एक दिवस जूख्या रहोरे, बीजे पण थोमो आहार ॥ सा० ॥ १२ ॥ शिखामण देइ मोकल्योरे, वहु लेवाने काज ॥ सा० ॥ सासरे गयो उलट धरीरे, सहुने मल्यो हुइ लाज ॥ सा० ॥ १३ ॥ खेम कुशल पूठी सालकेरे, जमवा उठो जगनी वोर ॥ सा० ॥ अमे कह्युं तमे सांजलोरे, जमी आव्यो हुं घोर ॥ सा० ॥ १४ ॥ बीजे दिन लोक आवीयारे, जमण तणो नहीं लाग ॥ सा० ॥ रात पडी साला बोलीयारे, जमाइ आरोगो महा जाग ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ साला प्रते हुं बोलीयोरे, निशिजोजन नहीं चंग ॥ सा० ॥ जूख नथी मुज अति घणीरे, अवाधा उपनी वली अंग ॥ सा० ॥ १६ ॥ सासुए मनशुं विचारीयुंरे, हलुउं कीजे अन्न ॥ सा० ॥ चोखा जींजव्या वाटलीरे, कुर निपावाने मन्न ॥ सा० ॥ ॥ १७ ॥ जव मागशे तव पीरसशुंरे, एवो करी सुविचार ॥ सा० ॥ कचोलुं जरी तंडुल मूकीयोरे, ढोलीया हेठे आधार ॥ सा० ॥ १८ ॥ मुज महिला तव सांचरीरे, आंगणे लघु नित काज ॥ सा० ॥ नवरुं देखी में चिंतव्युंरे, तेह सांजलो धनराज ॥ सा० ॥

॥ १ए ॥ क्षुधाए पीड्यो रही नव शकुंरे, दोय लांघण थइ मुज ॥ सा० ॥ तांडुल देइ में मुख न्यूंरे, नहीं जाणे कोइ गुज ॥ सा० ॥ २० ॥ तव नारी आवी मुज तणीरे, मुख दीवुं विकराल ॥ सा० ॥ बोलाव्यो हुं बोलुं नहींरे, भामनी कीयो बुंबाल ॥ सा० ॥ २१ ॥ खंम चोथानी ए कहीरे, ढाल त्रीजी गुणखाण ॥ सा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहीरे, नेमे उलट आण ॥ सा० ॥ २२ ॥

डुहा.

मुज स्वामी मुख शुं थयुं, धाजो माइ बाप ॥ लोक बहु आवी मल्यो, कोलाहल संताप ॥ १ ॥ वेगे वैद बोलावीया, माह्या सात ने पांच ॥ ते आव्या उलट धरी, औषध मेलो करी सांच ॥ २ ॥ रोग परखे लोक अति घणा, कर्णशूल गंमोल ॥ एक कहे पीत कोपीयो, भोग मंमावो मंमोल ॥३॥ उतारणां करो शक्तिनां, कुलदेवीने भोग ॥ गोगा गणेश जक्ष पूजतां, टले गलानो रोग ॥४॥ वेगे वैद निहालीयो, खाट हेठे भर्यो वाट ॥ तांडुले भर्यो कंठ समो, मध्ये दीगे घाट ॥ ५ ॥ मस्तक धूणी ते बोलीया, न जीवे जमाइ आज ॥ तांडुल व्याधि ए उपनी, गलामां रोग असाज ॥६॥ तांडुल सरिखा उपन्या, कीटक विषम ठे अंग ॥ वित्त वस्त्र घणां आपजो, जमाइने करुं चंग ॥७॥

शस्त्र काढी गाल छेदीयो, साही रह्या जण चार ॥ धुंबारव करता थका, काढ्या तांडुल तेणी वार ॥ ८ ॥ रुधिराला ते नीकल्या, वैदे लीधां वस्त्र दान ॥ गालस्फोटक मुज नाम दीयो, मूरख मोटो नहीं सान ॥ ए ॥ मूरख चारे कथा कही, सांजली सघले लोक ॥ न्याय नहीं ए तुम तणो, शुं कहीए अमे फोक ॥ १० ॥ धर्मबुद्धि मुनीश्वरे कही, महा मूरख तमे चार ॥ वढवाड तजी जाउ मंदिरे, एकेक अक्षर लेवो तार ॥ ॥ ११ ॥ तव द्विजवर ते बोलीया, सांजलो तापस वात ॥ एवो मूरख अममां नहीं, कहो हवे तमारी ख्यात ॥ १२ ॥

ढाल चोथी.

एणे सरोवरी यारी पाली, उनी दोय नागरी मोरा लाल—ए देशी.

मनोवेग जणे द्विजराज, सुणो तमे सहु मली ॥ मारा लाल ॥ सु० ॥ साकेत्ता नामे नगरी, अछे ते निरमली ॥ मारा लाल ॥ अ० ॥ विश्वजूति नामे ब्राह्मण, एक तिहां रहे ॥ मारा लाल ॥ ए० ॥ तेहने कन्या छे एक, जोवन वयमां वहे ॥ मारा ला-ल ॥ जो० ॥१॥ मुज पिता जणी ताम, विवाह ते मेलीयो ॥ मा० ॥ वि० ॥ मांडयो विवाह मोच्छव, मनोरंगे जेलीयो ॥ मा० ॥ म० ॥ कीधो हाथ मेलावो, वर कन्या बेहु तणो

॥ मा० ॥ व० ॥ तेहवे हाल कलोल, थयो नगरीमां घणो ॥ मा० ॥थ० ॥ २ ॥ त्रास पड्यो सहु लोक, नासे रोये घणुं ॥ मारा लाल ॥ ना० ॥ रडे पडे जन्म थाय न, चाले बल को तणुं ॥ मा० ॥ चा० ॥ एक एकने पूछे लोक, जाशुं आपण किहां ॥ मा० ॥ जा० ॥ थांभो उपाडी नाठो, हाथी आवे इहां ॥ मा० ॥ हा० ॥ ३ ॥ तेहवे मुज माताने, मेली नाठो मुज पिता ॥ मा० ॥ मे ० ॥ जीव्यानी बहु आशा, लागी मनमें जीता ॥ मा० ॥ ला० ॥ नासंता लागी वांहीं, संजोगे गर्भ धर्यो ॥ मा० ॥ सं० ॥ उदर रह्यो हुं त्यांह, मातानी कुखे जर्यो ॥ मा० ॥ मा० ॥ ४ ॥ तात गयो मुज माताने, मेली एकली ॥ मा० ॥ मे० ॥ नाठी जाये मात, विकट जाणी वली ॥ मा० ॥ वि० ॥ कोमल कंपे काय ते, लोक बोले तिहां ॥ मा० ॥ लो० ॥ दीसे नहीं जरतार, ताहरो गयो किहां ॥ मा० ॥ ता० ॥ ५ ॥ चाल्यो ते परदेश, गयो जे परहरी ॥ मा० ॥ ग० ॥ दिन दिन वाधे गर्भ, लोके वात दिल धरी ॥ मा० ॥ लो० ॥ पूछे लोक अनेक, तारे गर्भ केम थयो ॥ मा० ॥ ता० ॥ अमे जाणुं हुं सर्व तुज, धणी नासी गयो ॥ मा० ॥ ध० ॥ ६ ॥ तव नारी कहे जार, पुरुष संग नवि कर्यो ॥ मा० ॥ पु० ॥ हाथ मेलावे संकट, लाग्यो तेणे धर्यो ॥ मा० ॥ ला० ॥ मानी लोके वात, कर्मगति एहनी ॥ मा० ॥

क० ॥ पीहर ते रही कुण, करे वात तेहनी ॥ मा० ॥ क० ॥ ७ ॥ नव मास वाडा, पूरण थवा आवीया ॥ मा० ॥ पू० ॥ जमवा कारण तापस, घणा तेमावीया ॥ मा० ॥ घ० ॥ विश्वनूतिए अघरणी, करी जमाम्दीया ॥ मा० ॥ क० ॥ सनमुख ऊनो विनति, करे हाथ जोमीया ॥ मा० ॥ क० ॥ ८ ॥ नारी तणो तिहां तात, पूछे तापस नणी ॥ मा० ॥ पू० ॥ नवितव्यतानो विचार, कहो बुद्धिना धणी ॥ मा० ॥ क० ॥ कहे तापस तमे सांनलो, वात कहुं नवी ॥ मा० ॥ वा० ॥ तुम देश मांहीं डुकाल, थाशे सही संनवी ॥ मा० ॥ था० ॥ए॥ बार वरसांनो काल, सही करी जाणजो ॥ मा० ॥ स० ॥ पेट मांहींथी में सुणी, वाणी परमाणजो ॥ मा० ॥ वा० ॥ हुं हवे रहुं पेट मांहीं, डुकाल एम लागीए ॥ मा० ॥ डु० ॥ बोल्या तापस वयण, थाशे एम पालीए ॥मा०॥ था० ॥ ॥ १० ॥ सुकाल थया पछी नीकलुं, तो सुखी थाइए ॥ मा० ॥ सु० ॥ जो नीकलुं डुकाल मांहीं, तो माठुं थाइए ॥ मा० ॥ तो० ॥ ते तापस तेणी वार, चाल्या परदेशमां ॥ मा० ॥ चा० ॥ बार वरस फरी आव्या, नवनवा देशमां ॥ मा० ॥ न० ॥ ११ ॥ दीधो आदरमान, आहार घणो आपीयो ॥ मा० ॥ आ० ॥ पाम्या हरख अपार, सुकाल नाम थापीयो ॥ मा० ॥ सु० ॥ उदर मांहींथी वात, सुणी में तेहवे ॥ मा० ॥

सु० ॥ नीकळ्यो हुं गर्भ मांहींथी, शीघ्र थइ एहवे ॥ मा० ॥ शी० ॥ १२ ॥ खाउं खाउं वारोवार, करुं हुं तव जदा ॥ मा० ॥ क० ॥ जमण दीयो मुज मात, कहुं तुमने मुदा ॥ मा० ॥ क० ॥ तापस कहे तेणी वार, ए पुत्र कुलक्षणो ॥ मा० ॥ ए० ॥ धन धान्यनो संहार, करे कुल भक्षणो ॥ मा० ॥ क० ॥ १३ ॥ जे भूषणे तुटे कान, ते सोने शुं कीजीए ॥ मा० ॥ ते० ॥ कोह्युं धान जो होय, वाडे नाखी दीजीए ॥ मा० ॥ वा० ॥ जा जारे मुज आगलथी, मुख लेइ पापीया ॥ मा० ॥ मु० ॥ नहीं तो फेडीश ठाम, सही दुःख व्यापीया ॥ मा० ॥ स० ॥ १४ ॥ मंदिर माहरा मांहीं, हवे तुं मत रहे ॥ मा० ॥ ह० ॥ सांभली मातानां वचण, कुमर तिहांथी वहे ॥ मा० ॥ कु० ॥ चाल्यो जाउं परदेश, तापस टोलामां भल्यो ॥ मा० ॥ ता० ॥ ऋषिनो लीधो वेश, अयोध्या आवी मल्यो ॥ मा० ॥ अ० ॥ १५ ॥ तिहां परणी मुज माय, दीठी में ते- हवे ॥ मा० ॥ दी० ॥ तापस प्रणमी पाय, पूछ्या में एहवे ॥ मा० ॥ पू० ॥ तव तापस कहे एम, सांभल तुं वारता ॥ मा० ॥ सां० ॥ स्मृति पुराण जे शास्त्र, मांहीं अमे धारता ॥ मा० ॥ मां० ॥ १६ ॥ अक्षत योनि परणी ते, नहीं दोष एहमां ॥ मा० ॥ न० ॥ जे नारीनो नाथ, गयो परदेशमां ॥ मा० ॥ ग० ॥ चार वरष लगे वाट,

ते जुवे वेशमां ॥ मा० ॥ ते० ॥ जो जरतार नाव्यो, करे बीजो देशमां ॥ मा० ॥ क० ॥ २७ ॥

स्मृत्युक्तं—सन्निर्वाचा प्रदत्ता या, यदि पूर्वतरो मृतः ॥
सा चेदक्षतयोनिः स्यात्, पुनः संस्कारमर्हति ॥ १ ॥

पुत्रवती जे नार, मुर्ड धणी तेहनो ॥ मा० ॥ मु० ॥ बेठी रहे आठ वरस, लगे मान एहनो ॥ मा० ॥ ल० ॥ फरी बीजो जरतार, करे नारी वली ॥ मा० ॥ क० ॥ तो शास्त्रे कह्यो दोष, नारीने जाये टली ॥ मा० ॥ ना० ॥ २८ ॥

श्लोकः—अष्टौ वर्षाणि सपुत्रा, ब्राह्मणी पतितंपति ॥
अप्रसूता च चत्वारि, पुरतोन्यः समाचरेत् ॥ २ ॥

परणी बे तुम माय, विचार तेहनो नहीं ॥ मा० ॥ वि० ॥ ते सांजलीने हुं आव्यो, ब्रह्मशाला मही ॥ मा० ॥ ब्र० ॥ कौतिक कारण जेर, घंटानाद में कीयो ॥ मा० ॥ घं० ॥ चाल्यो तापस साथ, तिहां वेश में लीयो ॥ मा० ॥ ति० ॥ २९ ॥ चोथा खंमनी ढाल, चोथी ए सही ॥ मा० ॥ चो० ॥ रंगविजयना शिष्य, नेमविजये कही ॥

मा० ॥ ने० ॥ सांभलजो सहु कोय, आगल वात छे घणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ वचनमां न करशो व्याघात, राखो रंग सहु मली ॥ मा० ॥ रा० ॥ २० ॥

दुहा.

तव ब्राह्मण एम बोलीया, असत्य वचन गमार ॥ पुरुष तुज लाग्या थकी, केम रहे गर्भ आधार ॥ १ ॥ गर्भ मांहींथी केम सांभले, तापस कह्यो जे विचार ॥ बार वरस कहो केम रहे, उदरमां गर्भ ते सार ॥ २ ॥ जात मात्र बालक कहो, केम ते वेश धरंत ॥ तुज सरीखो खोटो नहीं, मही मंडल जोयंत ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, सांभलो द्विजवर वाच ॥ स्मृति पुराणे जे कह्युं, ते शुं वचन असाच ? ॥ ४ ॥ तव वाडव कोपी कहे, रे तापस अजाण ॥ वेद पुराणे जे कह्युं, ते कहो अमने वाण ॥ ५ ॥

ढाल छठी.

मेडते नगारो वाजीयोरे ढोला, पडीरे दवा में ठोर ढोला, भाजी
मत जाजोरे सगताउंत ढोला—ए देशी.

मनोवेग तव बोलीयोरे, साजन सांभलो ब्राह्मण वात ॥ साजन तुम भयथी भ्रुजुं घणुंरे, सा० केम कहुं शास्त्र विख्यात ॥ सा० ॥ १ ॥ साजन सहु सुणजोरे, आगे जे होय

॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ तव द्विजवर बोल्या वलीरे, सा० सुणजो तापस चंग ॥ सा० ॥ शंका नय मेली करीरे, सा० पुराण कथा कहो रंग ॥ सा०॥ २ ॥ मनोवेग चित्त हरखीयोरे, सा० बोल्यो तव मनोहार॥सा०॥ वेद पुराण माने नहींरे,सा० ते नर जाणो गमार ॥सा०॥ ३ ॥ मनोवेग तापस तणीरे, सा० वाणी पुराणनी अनंग ॥सा०॥ अंग उपांग प्रसिद्ध छेरे, सा० वेद माने ते चंग ॥ सा०॥ ४ ॥ चिकित्सा वली वैद्यनीरे, सा० ज्योतिष शास्त्र देश आदि ॥ सा० ॥ सीधी आज्ञाए सहीरे, सा० शास्त्र वचन अनादि ॥ सा० ॥ ५ ॥

उक्तं च–पुराणमानवोधर्म–सांगोवेदचिकित्सितम् ॥
आज्ञासिद्धानि चत्वारि, न हंतव्यानि हेतुभिः ॥ १ ॥

सर्व वेद रीखीनी कहीरे, सा० वाणी करे अप्रमाण ॥ सा० ॥ ते ब्रह्म हत्यारो कह्योरे, सा० भवभव होये अजाण ॥ सा० ॥६॥

उक्तं च–मंतव्यं व्यासवासिष्टं, वचनं वेदसंयुतम् ॥
अप्रमाणं तु यो ब्रूयात्, स भवेद्ब्रह्मघातकः ॥ १ ॥

तव ते द्विजवर बोलीयारे, सा० कहो तापस ए सार ॥ सा० ॥ कांइक वचन मात्रथीरे, सा० पाप न लागे लगार ॥ सा० ॥ ७ ॥ जेम अगनि उनो घणुंरे, सा० कहेतां न

बले अंग सार ॥ सा० ॥ तेम शास्त्र तणो दोष कहाकतां, सा० कहेतां न पाप लगार ॥ सा० ॥ ८ ॥ तव वचन सुणीने एशुं रे, सा० भय तजी बोल्यो ऋषिदेव ॥ सा० ॥ हुं तो वेद पुराणनारे, सा० दोष सुणो कहुं खेव ॥ सा० ॥ ए ॥ एक नगर मांहीं रहेरे, सा० नारी दोय अति सार ॥ सा० ॥ एक भागी बीजी रथीरे, सा० जोवनभर मनोहार ॥ सा० ॥ १० ॥ बाल कुंवारी ते बेहुरे, सा० बेहु सूती सेहेज मोझार ॥ सा० ॥ ते बेहु नारी संजोगथीरे, सा० जायो सुत सुविचार ॥ सा० ॥ ११ ॥ नाम दीधुं तव तेहनोरे, सा० भागीरथी पुत्र चंग ॥ सा० ॥ ए तो भारत पुराणमांरे, सा० वखाण्यो मनने रंग ॥ सा० ॥ ॥ १२ ॥ जुर्ज नारीना जोगथीरे, सा० जायो पुत्र सुविचार ॥ सा० ॥ तो नारी नर संजोगथीरे, सा० हुं जनम्यो तेम सार ॥ सा० ॥ १३ ॥ अवर दृष्टांत वली कहुंरे, सा० सांभलो द्विजवर राज ॥ सा० ॥ जेम संदेह मन भांजशेरे, सा० सरशे तमारां काज ॥ सा० ॥ १४ ॥ गंधारी एक नारीएरे, सा० धृतराष्ट्र करे ए काज ॥ सा० ॥ एवो निश्चय कीधो तिहांरे, सा० सांभलो तुमे द्विजराज ॥ सा० ॥ १५ ॥ तव नारी गंधारी सहीरे, सा० रोमांचित हुइ जाम ॥ सा० ॥ तव नारी तणे धरमें हुइरे, सा० माथे हुइ ते ताम ॥ सा० ॥ १६ ॥ चोथे दिवसे नारीएरे, सा० स्नान कर्युं तेणी वार ॥ सा० ॥ पछी वस्त्र विहुणी हतीरे, सा०

फणस आलिंगन अपार ॥ सा० ॥ १७ ॥ तेह काल समे पछीरे, सा० मास गयो जव एक ॥ सा० ॥ तेह नाथ परएयो तिहांरे, सा० धृतराष्ट्र धरतो विवेक ॥ सा० ॥ १८ ॥ तव पुष्पवती नारी तणीरे, सा० नवि गइ मुखनी छांह ॥ सा० ॥ कंत जय थकी नारीएरे, सा० नर विष्णुनी धरी बांह ॥ सा० ॥ १९ ॥ तेह वृत्तांत गर्जनोरे, सा० जाव कह्यो तेणी वार ॥ सा० ॥ नर नारायणे करीरे, सा० मनशुं करीय विचार ॥ सा० ॥२०॥ चोथा खंड तणी कहीरे, सा० पांचमी ढाल ए सार ॥ सा० ॥ रंगविजय तस शिष्यनेरे, सा० नेमविजय जयकार ॥ सा० ॥२१॥

डुहा.

तव कुटुंब तेडावीया, अंधक विष्णु आदि सार ॥ धृतराष्ट्र बेसाडीने, कह्यो तेहने सुविचार ॥ १ ॥ तव सहुने संतोषीया, दिवस गया तेणी वार ॥ एक दिवस गंधारीए, फणस जायो उदार ॥ २ ॥ ते तो फणस माहींथी, सुत नीकल्या शत एक ॥ ए तो जारते जाखीयुं, तुम तणे शास्त्र विवेक ॥ ३ ॥ मुज माता ने तातने, संजोगे हुवो हुं सार ॥ तो मुज माता पिता तणो, केम कीजे ते विचार ॥४॥ तव पाडव बोल्या सहु, तुम तणां वचनो सत्य ॥ तमे तापस मुद्रा जली, नवि जाखो असत्य ॥ ५ ॥ पण सांजलो एक वात-

में, बोल्यो खोटो जेम ॥ गर्न्न थकी केम सांजल्युं, खोटुं वयणज एम ॥ ६ ॥ एह वचन केम मानीए, सांजलो तापस राय ॥ एह कथा अमने कहो, मन धरी बहु पसाय ॥७॥

ढाल सातमी.

प्रीतरूी न कीजेरे नारी परदेशीयारे—ए देशी.

वचन सुणी तव मनोवेग बोलीयोरे, सांजलो वारूव तुमे विचार ॥ गर्न्न मांहींथी साद ते में सुएयोरे, वाद निवारुं ते निरधार ॥ सुणजो साजन जे कहुं वातरूीरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ महाजारत मांहे वाणी जे कहीरे, ते नवि जाणो सुख अजंग ॥ एक मना थइ सुणजो सहु तमेरे, संदेह निवारण ए उत्तंग ॥ सु० ॥ २ ॥ जादव वंशे वसुदेव जाणीएरे, तेनी बेटी अमृत वाण ॥ रूप कला विज्रम विलासनीरे, सुजड्रा नाम गुण-खाण ॥ सु० ॥३॥ विष्णु तणी ए जगनी जाणजोरे, अर्जुन वर कीधो जरतार ॥ गर्न्न धर्यो सुजड्रा नारीएरे, पूरा मास हुवा जव त्यार ॥ सु० ॥ ४ ॥ असमाधि उपनी तव ते बालनेरे, कृष्ण कथा कहो जाइ विचार ॥ चक्रावो वर्णन करीने दाखव्योरे, सुजड्रा पामी निड्रा अपार ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रत्युत्तर नवि बोले को तिहांरे, गर्न्ने हुंकारो दीधो ताम ॥ नारायण तव मन विस्मय पड्योरे, ए कोइ पुरुष मोटो जाम ॥सु०॥ ६ ॥ गर्न्न

हुंकारो सुणीजे जेहवेरे, दामोदर चिंतवे तेह ॥ कथा सुणीने हुंकारो दीधोरे, तेम तापस वचन सही एह ॥ सु० ॥ ७ ॥ द्विजवर कहे सहु साचुं कह्युंरे, स्मृति पुराणे बोल्युं जेह ॥ वली अमने एक विस्मय उपन्योरे, बार वरस रह्यो गर्भे तेह ॥ सु० ॥ ८ ॥ मनोवेग बोल्यो तव फरी वलीरे, ऋषि वचन न जाणो गमार ॥ मंय नामा तापस छे एक रुयडोरे, वनमें रहे निरधार ॥ सु० ॥ ९ ॥ एक दिन रजनी सूतो छे तिहांरे, स्वप्न दीठो निद्रामां ताम ॥ नारी सरसो जोग मनशुं करेरे, वीर्य खलित हुवो आम ॥ सु० ॥ १० ॥ ते वीर्य संहर्युं हाथ मांहीं जदारे, मनशुं कीधोरे विचार ॥ रखे मुज वीर्य फोक जाये सहीरे, देखी हसशे नर नार ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोपीने वीर्यने लेइ पत्र कमलनुंरे, वींटुं वाली तेणी वार ॥ निरमल नदीना जल मांहीं तदारे, वेहेतुं मेल्युं निराधार ॥ सु० ॥ १२ ॥ देडकीए ते खाधुं पांदडुंरे, गर्भ रह्यो उदर मांहीं ॥ तव तेहने ऋतुनो समो हतोरे, डुर्दरीने पेट रह्युं त्यांहीं ॥ सु० ॥ १३ ॥ स्त्रीनां लक्षण प्रगट्यां अंगमेंरे, मास दिवस गया अपार ॥ जनम हुवो शुभ लगने करीरे, उंच ग्रह उपन्या छे फार ॥ सु० ॥ १४ ॥ बेटीनुं नाम दीधुं मंदोदरीरे, रूप सोभागी अभिराम ॥ माताने रूप जोवाथी होंश घणीरे, बोलावे लेइ नाम ॥ सु० ॥ १५ ॥

एहवुं रूप केनुं नवि होयेरे, एहने बेठां माणस जोय ॥ कीधो विचार तेणे एम चिंतवीरे, प्रौढ कमलदले मेली सोय ॥ सु० ॥ १६ ॥ स्नान करेवा नित्य जाये वहीरे, नदीए आवे मय रुषि सार ॥ कमल उपर दीठी ते कुमारिकारे, तापस चिंतवे मन मोझार ॥ सु० ॥ १७ ॥ मुज वीर्य थकी उपनी ए बालिकारे, ते कारण मुज वाधे नेह ॥ माहरी पुत्री होइ संसारमांरे, रूप लक्षणे दीसे एह ॥ सु० ॥१८॥ नाम थाप्युं बेटीनुं मंदोदरीरे, लइ आव्यो निज स्थानक ताम ॥ भोजन करीने जमाडे बालिकारे, जोबनवंती होइ जाम ॥ सु० ॥ १ए ॥ चोथा खंड तणी बठी ढालमांरे, रंगविजय कवि सार ॥ श्रोता सांभलजो सहु एक मनारे, नेमविजय जयकार॥सु० ॥२०॥

दुहा.

एक दिन रुतुवंती हुइ, कोपीन तापसनी सार ॥ वीर्य तणी खरडी अछे, पेहेरी पुत्रीए तेणी वार ॥ १ ॥ ते कोपीन परवेशथी, गर्भ रह्यो तिहां मांहीं ॥ दिन दिन वाधे अनुक्रमे, कुमरीने मुख ठांहीं ॥ २ ॥ तापस जाणे चित्तमें, मुज वीर्य निरधार॥ गर्भ धर्यो ए कुमरीए, होशे कोइक अवतार ॥ ३ ॥ जो अवर रुषि कोइ जाणशे, तो हसशे निश दिश ॥ लाज शरम जाशे खरी, स्ये मुख बोलीश जीह ॥ ४ ॥

एह्वी करी विचारणा, गर्जने राखुं गोप ॥ खीलुं मंत्र जंत्रे करी, कोइ नवि जाणे लोप ॥ ५ ॥ कमंडल लेइ हाथमां, जल छांटे जणे मंत्र ॥ जिहां लगे वर पामे नहीं, गर्ज रहेजो मांहीं जंत्र ॥ ६ ॥ बेटी बोले बापने, गर्ज खील्यो महा पाप ॥ तव मय तापस बोलीयो, जवितव्यताने प्रताप ॥ ७ ॥ राक्षस कुले लंकापति, विश्ववसु तात केकै माय ॥ रावण परण्यो मंदोदरी, बार वरसनी अवधे थाय ॥ ८ ॥ रावणने पहेलो जाणजो, सात सहस गयां वर्ष ॥ रावणने पुत्र ए कह्यो, उपन्यो पाम्या हर्ष ॥ ९ ॥ सात सहस वर्ष गये हुते, इंद्रजित नाम कुमार ॥ बार वरस हुं रह्यो गर्जमें, तो शुं करो विचार ॥ १० ॥ सांजलीने द्विज बोलीया, सत्य वचन तुम सार ॥ जात मात्र थका तुमे, वेष लीधो निरधार ॥ ११ ॥ जे नारीए जनमीयो, फरी परणी ते नार ॥ तुम जनम थया पछी, केम परणी बीजी वार ॥ १२ ॥ दोय संदेह एवा अछे, तेह निवारो आज ॥ जेम मत निश्चय अम तणा, सरे सहुनां काज ॥ १३ ॥

ढाल सातमी.

अमली लाल रंगावो वरनां मोलीयां—ए देशी.

मनोवेग कहे जाइ सांजलो, सूत्रकंठ तुमे छो सुजाणरे ॥ ज्रांति जाजे जेम

सघली मन तणी, तेम बोलुं हुं हवे वाणरे ॥ स्मृति पुराण वेदमां जुउ ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोटो पारासर रिषिमां कह्यो, एक दिवस कीधो विहाररे ॥ गंगा नदी उप- कंठे रही तिहां, नाव खेडे कन्या एक साररे ॥स्मृ०॥२॥ मछगंधा नाम छे तेहनो, कुरूप अन्नागणी देहरे ॥ गंधाय शरीर जोजन लगे, बीजुं नाम धर्युं वली तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ॥ ३ ॥ दीठी एकली कन्या पारासरे, नावे बेठो जोइ तस रूपरे ॥ जाग्यो मनोन्नव तव स्तन देखीने, विकल थयुं तव स्वरूपरे ॥ स्मृ० ॥ ४ ॥ रुषि कहे अमशुं कृपा करो, दान देउं कायानी सारीरे ॥ सुणो तपसी तव न्नणे कामनी, मुज तनु डुर्गंध धारीरे ॥ स्मृ० ॥ ५ ॥ अजुआले लोक देखे सहु, अघटतुं केम कीजे काजरे ॥ देह कीधो सुगंध हाथ फेरीने, धुंयर केरी लोपी लाजरे ॥ स्मृ० ॥ ६ ॥ न्नोग विलास करतां अनुक्रमे, जनम हुउ वेद व्यासरे ॥ मुछ कुंछने कमंरुल धर्यो हाथमें, वेद पुराण मुख बोले न्नासरे ॥ स्मृ० ॥ ७ ॥ कोटे जनोइ कर जपमालिका, मृगचर्म दंड उत्तंगरे ॥ कर जोमी लाग्यो तापस रूपे, मात तात पाय मन रंगरे ॥ स्मृ० ॥ ८ ॥ आदेश पारासुरनो लही, तप मांड्यो गंगाने तीररे ॥ वेद व्यास मोटो रुषीश्वर अछे, ध्यान धरे महावंत धीररे ॥ स्मृ० ॥ ए ॥ वनमां शिख देइ रुषि गयो, एकली

रही वाला जामरे ॥ सांत राजा क्रीडा करवा आवीयो, दीठी जोजनगंधा तामरे ॥ स्मृ० ॥ १० ॥ सुगंध शरीर देखी रंजीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ जेम कन्याए वेद व्यास जाइऊं, तास सरूप शुन्न देहरे ॥ स्मृ० ॥ ११ ॥ ततकाल जण्यो तापस जेम हुवो, तेम मुजने द्विज जाणोरे ॥ जेम परणी जोजनगंधा वली, तेम मुज जननी वखाणोरे ॥ स्मृ० ॥ १२ ॥ वलता विप्र फरी एम उचरे, सुणो तापस तुमे ठो सुजाणरे ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, ते सहु वेद पुराणरे ॥ स्मृ० ॥ १३ ॥ वली विप्र सांजलो वारता, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ अंधकवृष्टि जादव रायनो, हरिवंशी नर सेवे पायरे ॥ स्मृ० ॥ १४ ॥ कुंती नामे तेहनी कुमारिका, रूप सोजागी अजिरामरे ॥ घर छिद्रे किरण सूरज तणां, पेठां कुंता काने तामरे ॥ स्मृ० ॥ १५ ॥ गर्ज धर्यो तव ते सूरज तणो, काने करण ते वेटो जायोरे ॥ पठे पांडु राजाने परणावीने, अक्षत जोनि तणे उमायोरे ॥स्मृ०॥१६॥ करण तणी माता कन्या कही, तो मुज जननीमां शी खोडरे ॥ जेम करण हुवो तेम हुं हुवो, वली सांजलो वे कर जोमरे ॥ स्मृ० ॥ १७ ॥ चोथा खंम तणी ढाल सातमी, कही विशेष करी विगताइरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, सांजलजो सहु चित्त लाइरे ॥ स्मृ०॥ ॥१७॥

दुहा.

उदायिन तापस अछे, तप जप करे उदार ॥ क्लेश करावे क्रोधथी, तेणे वीहे नर नार ॥ १ ॥ एक दिवस सूतो थको, स्वप्नमां जोगवे काम ॥ वीर्य खलित हुवो तदा, मनशुं विचारे ताम ॥ २ ॥ वीर्य मूकवाने कारणे, गंगा गयो ततखेव ॥ कमलमां वीर्य मूकीने, स्नान कर्युं तेणे हेव ॥ ३ ॥ रघुराजानी पुत्रिका, चंद्रमती नाम विवेक ॥ गंगा नदीए जीलवा, आवी एकाएक ॥ ४ ॥ पुष्पवती ते बालिका, कमलशुं कीधी याल ॥ पदम लइ नाके धर्युं, गर्भ रह्यो तेणे काल ॥ ५ ॥

ढाल आठमी.

वाघाना जावनीरे—ए देशी.

सगर्भा बेटी दीठी मात, सांजल बेटीना तातहे ॥ ससनेही सुंदर ॥ अनाचार पुत्रीए कीधो, गर्भ पारको लीधोहे ॥स०॥ साजन सहुको सांजलो ॥ ए आंकणी ॥१॥ रघुराजाए लाज धरी मनमां, बेटी मूकी वन मांहे ॥ स० ॥ वाघ सिंहना शब्द घणा थाये, दुःखे करीने जरायेहे ॥स०॥सा०॥२॥ ते वन मांहे तापस वास, वांडु तापस मोटो आसहे ॥स०॥ बहु करे जतन तापस तेहनो, नारीने मन एहनोहे ॥स०॥सा० ॥३॥ नागकुमर तेणीए

जएयो सार, रूपे जाणे नागकुमारहे ॥ स० ॥ तव चंद्रमती एम कहे माय, पुत्र तुं तात जोवाने जायहे ॥ स० ॥ सा० ॥ ४ ॥ मजूस मांहे सुत घाल्यो जास, गंगा प्रवाहे मेल्यो तामहे ॥ स० ॥ प्रवाह मांहे मजूस ते चाली, उदायिने दीठी काली हे ॥ स० ॥ सा० ॥ ५ ॥ आणी गाम उघारी जाम, पिताए पुत्र दीठो अभिरामहे ॥ स० ॥ सुत देखी उपन्यो बहु नेह, चंद्रमती आवी तव गेहहे ॥स०॥सा०॥६॥ कुंवरी कन्या कहे छे सार, उदायिन तुं मुज भरतारहे ॥ स० ॥ विवाह करी तुमे परणो आज, जेम सरे बेहुनां काजहे ॥ स० ॥ सा० ॥७॥ उदायिन तव बोल्यो जति, ए वात अमने नहीं घटतीहे ॥ स० ॥ तुज पिता परणावे सोय, तेह तारो भरतारज होय ॥ स० ॥ सा० ॥ ८ ॥ तापसे जइ माग्यो रघु राय, बेटी अमने करो पसायहे ॥ स० ॥ नहींतो आपीने भस्मज करुं, के तुज मारुं के हुं मरुंहे ॥ स० ॥ सा० ॥ ए ॥ राजा कहे बेटीने वरो, उदायिन तमे कोप परिहरोहे ॥ स० ॥ तापस तव जमाइ कर्यो, चंद्रमतीने वेगे वर्योहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १० ॥ वेद पुराणे बोल्यो एम, चंद्रमती परणी ते केमहे ॥ स० ॥ पुत्र जणे कन्या जे होय, पछी विवाह करो ते जोयहे ॥ स० ॥ सा० ॥ ११ ॥ जेम चंद्रमती कन्या कही सार, तेम मुज मातानो कशो विचारहे ॥ स० ॥ सूत्रकंठ कहे साची वात, तुमे कह्युं

ते जग विख्यातहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १२ ॥ मनोवेग बोल्यो गुणराज, पवनवेग संबोधन काजहे ॥ स० ॥ वेद पुराण कथा कही सारी, तुम आगल कही विस्तारीहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १३ ॥ पुत्र जणी कन्या विवाह, स्त्री संजोगे उपजे गर्न उदारहे ॥ स० ॥ फणस आलिंगन नारी सार, शत बेटानो हुवो अवतारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १४ ॥ सुन्नद्रानो गर्न सांनली शब्द, नारायण हुंकारो लब्धहे ॥ स० ॥ देमकीए जणी मंदोदरी नार, गर्न रह्या पितानो सारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १५ ॥ सात सहस्र थयां बे वर्ष, पुत्र इंद्र-जित रावण हर्षे ॥ स० ॥ पारासुर नोगवतां नार, वेद व्यास सुत उपन्यो सारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १६ ॥ काने कर्ण जएयो दातार, कमल सुगंधना गर्न अपारहे ॥ स० ॥ पूर्वापर बे विरोध अपार, तुम पुराण साचां न लगारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १७ ॥ बोलतां बहु लागे खेद, तुम पुराण नहीं साचां वेदहे ॥ स० ॥ सुधर्म आराधो जो वली तमे, जिन नाष्युं ते कहीए अमेहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १८ ॥ चोथा खंमनी आठमी ढाल, कहे आगल वात रसालहे ॥ स० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम जंपे, नेमविजय एम पयं-पेहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १ए ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग तुमे आज ॥ स्मृति वेद पुराणनां, वयण विपरीत अकाज ॥ १ ॥ उपवन आपण जइ करी, कहेशुं तुमने सार ॥ जिनशासन मत दाखवुं, सुणजो सार विचार ॥ २ ॥ पूर्व वनमां तव गया, रह्या अपूरव ठाम ॥ कर्ण कथा पांरुव तणी, मनोवेग कहे ताम ॥ ३ ॥

ढाल नवमी.

धण समरथ पीयु नानडो—ए देशी.

मित्र वचन मुज सांजलो, होजी पवनवेग गुणधार ॥ कुरुजांगल देशज जलो, होजी हस्तीनागपुर सार ॥ साजन सुणजो एक मना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कुरु वंशी राजा हुवो, होजी सोमभद्र श्रेयांस ॥ तेह परंपरा उपन्या, होजी नृपति घणा अवतंस ॥ सा० ॥ २ ॥ सांतनु सुत सोहामणो, होजी व्यास नाम गुणवंत ॥ रूपणी नामा जामनी, होजी पुत्र त्रण हुवा संत ॥ सा० ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्र पहेलो जलो, होजी पांरु वीजो जेह ॥ त्रीजो विडुर मनोहरु, होजी करे राज्य सहु तेह ॥ सा० ॥ ४ ॥ पांरु कुंवर चिंता जर्यो, होजी गयो वन अजिराम ॥ कुसुम

सज्या दीठी भली, होजी मुद्रिका पडी तेणे ठाम ॥ सा० ॥ ५ ॥ अपूरव देखी मन उलस्यो, होजी कर कीधी तेणी वार ॥ विद्याधर तव आवीयो, होजी चित्रांगद कुमार ॥ सा० ॥ ६ ॥ फुलशयन जोइ घणुं, होजी ठाम ठाम अनेक ॥ पांडु दीठो रलियामणो, होजी पूछे करीय विवेक ॥ सा० ॥ ७ ॥ मुज कर मुद्रिका रुयडी, होजी पडी एहीज ठाम ॥ कामरूपी कर मुंदडी, होजी जोउं हुं अभिराम ॥ सा० ॥ ८ ॥ हाथ लेइ आगल धरी, होजी पांडु नृप कहे तेह ॥ मुद्रिका लीउं खग तुम तणी, होजी चित्रांगद हुवो नेह ॥ सा० ॥ ए ॥ कृश शरीर दीसे तुम तणुं, होजी मित्र कहोने विचार ॥ पांडु भणे वल्लभ सुणो, होजी विद्याधर तुमे सार ॥ सा० ॥ १० ॥ सुरीपुर राजा रुयडो, होजी अंधकवृष्टि नाम ॥ तस पुत्री रूपे भली, होजी कुंती छे गुणग्राम ॥ सा० ॥ ११ ॥ विवाह पहेलो मुज मेलीयो, होजी पछे जाण्यो रोग ॥ अंधकवृष्टिए अनादर्यो, होजी भोग कीधो विजोग ॥ सा० ॥ १२ ॥ विरहानल व्याप्यो घणो, होजी चिंतातुर अतीव ॥ मित्र माटे में तुज कह्यो, होजी संदेह पड्यो जीव ॥ सा० ॥ १३ ॥ चित्रांगद खग बोलीयो, होजी सांभली भाइ वात ॥ कामरूपी मुज मुंदडी, होजी रूप करेरे विख्यात ॥ सा० ॥ १४ ॥ अदृष्टि करण होये करी, होजी

जाजो वली तुमे सार ॥ रूपवंत थइ विलसजो, होजी कुंतीशुं घरवार ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ नवमी ढाल चोथा खंमनी, होजी सांजलो बाल गोपाल ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, होजी नेमने मंगल माल ॥ सा० ॥ १६ ॥

डुहा.

मुद्रडी लीधी रुयडी, चाल्यो सुरीपुर वास ॥ अदृश्य रूप लेइ करी, गयो कुंती आवास ॥ १ ॥ काम कुतूहल करी रमे, कुंतीशुं करे वात॥रात्रि दिवस एम जोगवे, गया वासर सात ॥ २ ॥ पांमु कुमर निज घर गयो, गर्न धर्यो कुंती कुमार॥सुनद्रा जननीए जाणीयो, प्रगट गर्न आकार॥३॥ गुप्तपणे घरमां रही, पुत्र जण्यो विख्यात॥ कुटुंब बेसी विचारीयुं, वाधशे अपक्षपात ॥ ४ ॥ मंजूस मांहीं घाली करी, मूक्यो जमुना मांहीं ॥ चंपापुरी गइ पाधरी, आदित्य राजा ले त्यांहीं ॥ ५ ॥

ढाल दशमी.

काली पीली वादली राज, वरसण लाग्यो मेह, साहीबोरे, मारो कवहीक घर आवे हो रंग लाय—ए देशी.

निज मंदिर आणी करी राज, मजूस उघामी जाम ॥ वालक दीठो रुयमो राज,

संतोष थयो वली ताम ॥ मारा साजनरे ॥ सुणजो एक मना थइ, वात चित्त लाय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ उत्तम लक्षण एह तणां राज, कर दोय कीधा कान ॥ गात्र पवित्र देखी करीरे राज, करण धर्युं अभिधान ॥ मा० ॥ २ ॥ अपुत्रीयो राजा रवि राज, रतनादे राणी तास ॥ तेहने हस्ते समरपीयो राज, हुवो ते सुख निवास ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांरु पुत्र पावन भलोरे राज, करण ते महा राय ॥ काने सुत ते केम जण्यो राज, धातु रहित रवि राय ॥ मा० ॥ ४ ॥ अंधकवृष्टिए तेरूी करी राज, पांरु कीधो विवाह ॥ कुंती मुंद्री परणावीया राज, कीधो अति उच्छाह ॥ मा० ॥ ५ ॥ अंधकवृष्टि भाइ भलो राज, नरपति विष्टि नाम ॥ गंधारी पुत्री रुयरूी राज, धृतराष्ट्र परणी ताम ॥ मा० ॥ ६ ॥ पांरु कुंतीए पुत्र जण्या राज, युधिष्टर भीम ने पार्थ ॥ मुंद्रीए बे जनमीया राज, नकुल सहदेव सार्थ ॥ मा० ॥ ७ ॥ धृतराष्ट्र राजा थकी राज, गंधारी अभिराम ॥ शत पुत्र कुखे उपन्या राज, डुर्योधनादिक नाम ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ पांरूव करण उत्पत्ति कही राज, कौरवनी वात एह ॥ जरासंध चक्री भलो राज, उत्तम नर बे तेह ॥ मा० ॥ ए॥ अघट मान तुमे परिहरो राज, रवि सुत नोहे करण ॥ युधिष्टर नोहे जम तणो राज, उत्तम नर ए वरण ॥ मा० ॥ १० ॥

वायु पुत्र नोहे नीमडो राज, नोहे शक्रनो अर्जुन ॥ अश्वनीकुमारथी नहीं उपन्या राज, सहदेव नकुल बे धन ॥ मा० ॥ ११ ॥ अर्जुन नारी रुयडी राज, सती डुपदी जे सार ॥ मिथ्या वचन नवि मानीए राज, जे खोटां ठे असार ॥ मा० ॥१२॥ मय विद्याधर महीपति राज, मदनसुंदरी नार॥ तस बेटी मंदोदरी राज, सती शिरोमणि सार ॥ मा० ॥ १३ ॥ रावण रंगे परणीउ राज, मंदोदरी शुज नार ॥ इंद्रजित सुत उपन्यो राज, मोक्षगामी नवतार ॥ मा० ॥ १४ ॥ दशमी ढाल चोथा खंडनी राज, सांजलजो नर नार ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे राज, नेमने जयजयकार ॥मा० ॥१५॥

डुहा.

मिथ्या वचन न मानीए, पवनवेग खगेश ॥ व्यासे महाजारत रच्यो, सत्य तणो नहीं लेश ॥ १ ॥

ढाल अगीयारमी.

नदी जमुनाके तीर उडे दोय पंखीया—ए देशी.

सांजलो जाइ वात जे वेद पुराणनी, व्यासे रच्यो ग्रंथ लाख ॥ सचाइ चुरणनी सें न विचार्युं, एम मूरख सहु लोकमां ॥ महाजारतनी वात करशे सहु फोकमां ॥ १ ॥

किंवा सत्य करशे एह किंवा नहीं करे, ए वातनो संदेह ते मनमां अति धरे॥पुस्तक लेइने चाल्यो व्यास जात्रा भणी, गंगा आव्यो शुभ गात्र करवा हुंश घणी ॥ २ ॥ ताम्र तणुं एक भाजन भलुं छे माहरुं, रखे तस्कर लेइ जाय इहांथी परुं ॥ वेलुनो कीधो पुंज गंगा तटमां जइ, ते मांही घाल्यो भाजन शंका मननी गइ ॥ ३ ॥ गंगा नदी मांही व्यास पेठो आवी वही, हरि हरि करी मुख जंपे उछाले जल रही ॥ जात्रा करण बहु लोक मली सहु आवीया, व्यासे कीधो वेलु थोक देखी मन भावीया॥ ॥ ४ ॥ कोइ कहे एवुं लिंग होये ईश्वर तणुं, हुं पण थापुं एहवुं करीने अतिपणुं ॥ जे आव्या हता लोक तेणे पुंज थापीया, वेलु तणा हुवा गंज अन्योअन्य व्यापीया॥ ॥५॥ स्नान तर्पण करी व्यास नीकल्यो उतावलो, ताम्र भाजनना पुंज देखी थयो भां-भलो॥पोता तणो कीधो पुंज ते नवि उलख्यो,सरखा सरखुं रूप देखी मनमां धख्यो ॥ ६ ॥ जो भांजुं सवि पुंज तो अपजश सहु करे, ईश्वर देवना लिंग तणो रूप केम फिरे ॥ ताम्र तणुं मुज भाजन जाउ तो जाउ परुं, अपजश बोले लोक तेहथी हुं डरुं ॥ ७ ॥ तेम माहरी कथा फोक ते केम होये वली,जेम एक ढगली देखी कर्या सहुए मली ॥ एक करे तेम सर्व करे लोक एणी परे, परमारथनी बुरू कोइ मन नहीं

धरे ॥ ८ ॥ मूरख लोक मल्या छे ए सहु स्वारथी, ताम्र भाजन खोयुं ताम एणी परे हारथी ॥ महाभारतनी वात विस्तारे थायशे, साचुं खोटुं परीक्षा करीने जायशे ॥ ९ ॥

श्लोक—गतानुगतिको लोको, न लोकः परमार्थिकः ॥
पश्य लोकस्य मूर्खत्वं, हारितं ताम्रभाजनम् ॥ १ ॥

पवनवेग सुणो मित्र विचार जे एटला, मिथ्या वचन विचार कहुं लकु केटला ॥ जिनशासननो धर्म साकर सम जाणीए, खाइए जे वारे तेह मीठो परमाणीए ॥१०॥ आठ करमना वारक देवता ते खरा, तरण तारण गुरु नाम कहीए जे नरा ॥ केवली भाषित धर्म कहीए ते खरो, अवर मिथ्या भर्म तेहने कां वरो ॥ ११ ॥ सूत्र सिद्धांत ने शास्त्र भाख्यां जे जिन तणां, तेहमां विनय विवेक गहन अर्थ छे घणा ॥ जिनवाणीनी वात साची करी मानीए, तो सरशे तुम काज शिवसुखने जाणीए ॥ ॥ १२ ॥ सांभली पवनवेग कहे पावन थया, द्विज सघला मली ताम कहे संदेह गया ॥ जगमां जोतां जेने धरमनो आधार छे, भूला जे भवि लोक तेहने ए पार छे ॥ १३ ॥ हे भाइ तुम वात हश्ये मारे वसी, पाम्यो शुद्ध आचार फिकर नहीं कसी ॥ मनोवेग तुमे भाइ साचा छो सही, एटला दिवस गम मुजने रही नहीं ॥ १४ ॥ ब्राह्मण

बोले तव वाणी मनोवेग सांजलो, धर्म परीक्षा कीध नथी कांइ आंमलो ॥ पूरण चोथो खंरू ढाल अग्यारमी, श्रोता सुधड होये तो दिल तेहने रमी ॥ १५ ॥ हीरविजय सूरिराय तपगछनो धणी, अकबर शाह प्रतिबोधित अमार पमावी घणी ॥ शुन्नविजय तस शिष्य जावविजय कवि, सिद्धिविजय तस शिष्य वात हुइ तेवी ॥ १६ ॥ रूपविजय रंग लाय कृष्णविजय कहुं, रंगविजयने नित्य हुं प्रणिपति वहुं ॥ नेमविजय कहे एम ढाल अग्यारमी, पूरण चोथो खंरू कर्यो ते सहुने गमी ॥ १७ ॥

इति धर्मपरीक्षारासे मिथ्यातपुराणडूषणे मिथ्यामतध्वंसनो नामा चतुर्थोऽधिकारः

खंड ५ मो.

दुहा.

पवनवेग जाइ सांजलो, मनोवेग कहे सार ॥ अवर पुराण वली दाखवुं, जेम लहो विवेक विचार ॥ १ ॥ शुद्धो जिन धर्म कीजीए, नहीं विरुद्ध लगार ॥ मिथ्या मारग परिहरो, जेम तरो संसार ॥ २ ॥ बोध रूप वेहु जणे धर्या, पहेर्यां रक्त सुवस्त्र ॥ शिर मुंडा ऊोली बांही ठे, कर दंड धरीने शस्त्र ॥ ३ ॥ पाटलीपुर प्रवेश करी, वाद-शालाए गया चंग ॥ जेर घंटारव तव कीयो, बेठा सिंहासन रंग ॥ ४ ॥ नाद सुणी विप्र आवीया, देखी बोल्या ताम ॥ खट् दर्शन विवाद करो, उंचा बेठा अम ठाम ॥ ५ ॥ मनोवेग कहे सांजलो, विप्र तमो ठो सुजाण ॥ वाद शास्त्र जाणुं नहीं, अमे खरे हुं अजाण ॥ ६ ॥ विप्र कहे मूरख सुणो, केम कर्यो घंटानाद ॥ केम सिंहासन चांपीयुं, जो नहीं जाण्या विवाद ॥ ७ ॥ कुण गाम ठामथी आवीया, कुण दीक्षा धरी अंग ॥ कपट तजी साचुं कहो, नहींतो लहेशो जंग ॥ ८ ॥ बोध रूपे मनोवेग वदे, सुणो जट्ट जाइ सार ॥ साचुं कहेतां अमे एकला, कुटाइए निराधार ॥ ए ॥ तुम

सन्ना मांही को नरवर, विघन संतोषी होय ॥ तो तुम आगल केम कहुं, अम तणी वातो सोय ॥ १० ॥ तव ते द्विजवर बोलीया, विघन संतोषी नर केह ॥ प्रथम कथा कहो ते तणी, जय नहीं धरशो देह ॥ ११ ॥

ढाल पहेली.

नगर रतनपुर जाणीए, ते सुरनिधि समो वखाणीए, आणीए अवर उपम कहो कोण तणी ए—ए देशी.

मनोवेग कहे ब्राह्मण सुणो, आहीर देश रायपुर ते गणो, नरपति राजा राज्य पाले जलो ए ॥ राजाए सेवक थापीयो, लुब्धदत्त नामे ते पापीयो, दया दान रहित दुष्ट ते प्राणीयो ए ॥ १ ॥ परधन देखी द्वेषज धरे, कुड कपट मनमां धरे, दंडावे राय कने उपाय करी ए ॥ खोटां आल चडावे बहु, लोक संताप्या तेणे सहु, धण कण वस्त्र विज्रूषित टालीयां ए ॥ २ ॥ नगर लोक घणुं दुःख वहे, गाम कुटन तेहनुं नाम कहे, लुब्धदत्तने पर पीड्या विना संतोष नहीं ए ॥ तिहां कणबी एक वसे जलो, तुंगजद्र नाम धण कण नीलो, दान पुण्ये लोक मांही महिमा अति घणो ए ॥ ३ ॥ तुंगजद्र उपर कोप करे, दंडावबा लुब्धदत्त पुंठे फरे, कणबीए धन बहोलुं

तेहने दीधुं ए ॥ जव मन जाणे तेह तणुं, तव लांच आपे ते धन घणुं, एणी परे बुद्धि बले काम निगमे ए ॥ ४ ॥ लुब्धनी देहे उपन्यो, पाप प्रजावे रोग उपन्यो, औषध अनेक कर्यां तोही नवि टले ए ॥ जूमि घाल्यो लुब्धदत्त जेहवे, आयुकर्म तुछ हतुं तेहवे, आरतध्यान पाम्यो ते तरफडे ए ॥ ५ ॥ पुत्र कहे पिताजी सांजलो, चिंतातुर कांइ टलवलो, दान पुण्य जे कहो ते कीजीए ए ॥ वृद्ध पापी ते कहे ताम, धर्म दान नहीं मुज काम, पुत्र तमे सांजलजो जे हुं कहुं ए ॥६॥ नेम जांग्यो एक मुज तणो, कार्य करो तुमे अति घणो, तो वली प्राण जाये सुख माहरो ए ॥ सकल लोक दंमावीया, तुंगजद्र दंम नहीं फावीया, लांच आपीने एणे हुं वारीयो ए ॥ ७ ॥ लाजे काज एहनो सिद्धो, राजदंम शिरमें नवि कीधो, गो महिषी धण कण एहने छे बहु ए ॥ माहरी बुद्धि इश्डे धरो, छकनी वात रखे कंइए करो, रोउं तो आण देउं हुं मुज तणी ए ॥ ८ ॥ प्राण गया पछी मुज वली, वस्त्र शृंगार पहेरावो वली, पाछली रात्रि मुज लेइ उजो राखजो ए ॥ तुंगजद्र खेत्र सेढे रही, मुज हस्ते काढी ग्रही, गाय जेंस घाली तुमे उलवी रहो ए ॥ ए ॥ कणबी आवी मुज लमथमशे, जीव रहित अंग जूमि पमशे, बूम पामी तुमे लोक बहु मेलजो ए ॥ मुज तातनो कीधो

घात, हत्यारो ए लोक सुणो वात, पोकारी राजा कने दंडावजो ए ॥ १० ॥ मुज हस्ते तुमे बोल देउं, शिख सघली पाली लेउं, तव पुत्र बोल दीधो पिता करे ए ॥ प्राण गया लुब्धदत्तना, नरक द्वारे पहोंच्या ततेना, शिख सहु करी पुत्रे तुंगजद्र दंडावीयो ए ॥ ११ ॥ पर विघन संतोषीयो, नर होये जो एहवो राशीयो, तो केम विप्र सजामां बोलीए ए ॥ वाडव कहे तुमे सांजलो, अममां एहवो मा वोलो, साचां ते वचन बोलो तुमे आपणां ए ॥ १२ ॥ पांचमा खंड तणी कही, ढाल पहेली ए सही, श्रोता सांजलजो तुमे सहु मली ए ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय ते सद्दहे, निरवहे साचो नर संसारमां ए ॥ १३ ॥

डुहा.

खगपति कहे द्विजवर सुणो, पूरव दिशि सुखखाण ॥ विक्रमपुर सोहामणुं, चतुर नर नारी वखाण ॥ १ ॥ तात मात मुज तिहां वसे, बोध जक्ति करे तेह ॥ बोध पासे अम मूकीया, लेवा विद्यानो छेह ॥ २ ॥ जणुं गणुं शास्त्रज घणां, गुरुनां करुं बहु काम ॥ एक वार गुरु लुगडां, नदीए धोइ सुकाव्यां ताम ॥ ३ ॥

ढाल बीजी.

मारी अरज सुणजो हो, गछरा नायक, विनति अवधारी गुजर पधारजोजी—ए देशी.

पाणी बाहिर जली जूमि हो, गुण नायक, सुकवीए रतांवर अमे बेहु जणाजी ॥ शियाल बे आव्यां ताम हो, गु० जय उपन्या अमने अति घणाजी ॥ १ ॥ रातां लुगडां लेइ दोय हो, गु० जाइ अमे दोय नाठा उतावला ॥ पुंठे धायां ते शियाल हो, गु० तव गिरि उपर चड्या अमे बलाजी ॥ २ ॥ बूम पाडी अमे बेहु जाय हो, गु० धाउ लोक अम रक्षा करोजी ॥ डुंगर उचेली ताम हो, गु० अम बेहु सहित आकाशे धरोजी ॥ ३ ॥ लेइ गया शियाल हो, गु० जोजन बार विक्रमपुर थकीजी ॥ मूकी वन मोकार हो, गु० जक्षण लाग्यां शियाल बे बकीजी ॥ ४ ॥ बेहु जंबुक मली जाम हो, गु० अमने खाशे क्षुधा वश पड्याजी ॥ पारधी आव्या ताम हो, गु० श्वान सहित पापे नड्याजी ॥ ५ ॥ श्वान जयथी तेह हो, गु० नाठां बेहु ते शियालीयांजी ॥ डुंगरथी उतर्यां बेह हो, गु० पारधी पुंठे चालीयाजी ॥ ६ ॥ जयजीत थया अमे बेह हो, गु० जूमि जोइ तव अति घणीजी ॥

संबल रहित अपार हो, गु० वार नहीं वली केह तणीजी ॥ ७ ॥ वली विचार्युं एम हो, गु० बोध धर्म ठे अम तणोजी ॥ लेइए दीक्षा बेह हो, गु० रक्त वस्त्र ठे गुरु गुणाजी ॥ ८ ॥ बेहु जाइ चिंतवी एम हो, गु० मस्तक मुंमाव्यां बेहु जणाजी ॥ रातां वस्त्र पहेरेय हो, गु० बौध धर्म मुखे जण्योजी ॥ ए ॥ काठी कर धरेव हो, गु० घर घर भिक्षा बेहु भमुंजी ॥ पात्र पडे ते लेय हो, गु० सात सात घमी मांहे जमुंजी ॥१०॥ भमतां देश विदेश हो, गु० तुम नगरे आवीयाजी ॥ तव बोल्या द्विजराज हो, गु० असत्य वचन तुमे लावीयाजी ॥ ११ ॥ जे सहु खोटुं संसार हो, गु० तोली करी तुने घड्याजी ॥ तव बोल्यो मनोवेग हो, गु० ए सहु तुम पुराणे जड्याजी ॥ १२ ॥ सांजलजो द्विजराज हो, गु० देखाडुं जेजे जिहां कह्युंजी ॥ रामायण पुराण हो, गु० वाल्मिके जाख्युं ते लह्युंजी ॥ १३ ॥ एक वार श्रीराम हो, गु० सीताशुं वनवासे गयाजी ॥ खरदूषण मारी जाम हो, गु० लक्ष्मण सहु वन मांही रह्याजी ॥ १४ ॥ सुर्पनखा गइ ताम हो, गु० रावण राजा उपाइउंजी ॥ सीता लेवाने काज हो, गु० धसमस्यो रावण धाइयोजी ॥ १५ ॥ सीता लेइ गयो तेह हो, गु० मोहथी राम दुःखीयो हुवोजी ॥ एहवे

वानर राज हो, गु० सुग्रीवनो विचार तुयोजी ॥ १६ ॥ सुग्रीव तणी जे नार हो, गु० वाली वानर लेइ हारीयोजी ॥ तव श्रीरामे तेह हो, गु० वाली वानर ते मारीयोजी ॥ १७ ॥ सुग्रीव थापीयो राज हो, गु० नारी आवी तारा रंग जरीजी ॥ तव बोल्यो सुग्रीव राय हो, गु० कार्य कहो स्वामि कृपा करीजी ॥ १८ ॥ तुमे परउपकारी हो, गु० कीधो स्वामि मुज अति घणोजी ॥ नेह थकी तुमे देव हो, गु० सेवक हुं बुं स्वामि तुम तणोजी ॥ १९ ॥ राम कहे सुणो मित्र हो, गु० नारी गइ बे मुज तणीजी ॥ तेहनो करो संजाल हो, गु० किहां बे सीता वल्लज घणीजी ॥ २० ॥ पांचमा खंम तणी ढाल हो, गु० बीजीए कही निरमलीजी ॥ रंगविजयनो शिष्य हो, गु० नेमविजय कहे अति जलीजी ॥ २१ ॥

ऽहा सोरठी.

सुग्रीवे तेड्यो ताम, हनुमंत वीर सोहामणो ॥ ते गयो लंकाए सार, शुद्ध करेवा जामणो ॥१॥ मुद्रिका आपी सार, संदेशा कह्या श्रीराम तणा ॥ प्रशंसी सीता नार, कह्यो कुशल बे बेहु जणा ॥ २ ॥ लंका बाली हनुए, शुद्ध आणी सीता तणी ॥ श्रीराम हुवो संतोष, सैन्य चाल्युं लंका जणी ॥३॥ वानर सहु मिलेव, परवत उचेली

आणीया ॥ बांधी समुद्रमां पाज, पाणी उपर तर्या पाहाणीया ॥ ४ ॥ राम लक्ष्मणना सेन, सागर पाजे उतारीया ॥ लंका जइ कीधुं युद्ध, रावण राक्षस मारीया ॥ ५ ॥ सल्य विसल्या काज, औषधिगिरि उचेली धरीय ॥ आण्यो लंकापुरी मांही, हनुमंत सेन बेठो करीय ॥ ६ ॥ रामायण वाल्मिक रिषि, ज्ञाषित ते मांही कह्युं ॥ जो साचुं होय एह, मुज ज्ञाख्युं खोटुं केम लह्युं ॥ ७ ॥ तव बोल्या द्विजराज, ए खोटुं केम ज्ञाखीए ॥ वली मनोवेग कहे वात, एक वयण तुम दाखीए ॥ ८ ॥ वानर पांचे मिलेव, डुंगर मोटा उचेलीया ॥ लाव्या जोजन लाख, सागर बांध्यो ज्युं ज्ञेलीया ॥ ॥ ए ॥ तो लघु डुंगर तेह, शियाल बे केम नवि धरे ॥ वचन सुणी द्विजराज, सत्य सत्य कही गया घरे ॥ १० ॥ वाद जीपी वन मांही, आव्या पूर्वली परे ॥ मनोवेग कहे सुणो ज्ञाय, सुग्रीव हनुमंत वानर करे ॥११॥ विद्याधर हुवा राम, रावण राक्षस नवि होये॥ खगपति तणो वंश चंग, पवनवेग तुमे सांज्ञलो ॥ १२ ॥

ढाल त्रीजी.

राम पुरा बजारमां—ए देशी.

कोशल देश अयोध्यापुरी, राज पाले नाज्ञि नरिंद ॥ तोरी बलीहारीरे आदि जिणंदनी॥

ए आंकणी ॥ हाजी मरुदेवी उदरे उपन्या, रिषन्नदेव प्रथम जिणंद ॥ तो० ॥ १ ॥ त्याशी लाख पूरव गया पछी, न्नरतने आप्युं निज राज ॥ तो० ॥ आदि देवे दीक्षा ते अनुसरी, कायोत्सर्ग धरी करे काज ॥ तो० ॥ २ ॥ ध्यान धरे जिन जेहवे, तेहवे आव्या साला वेह ॥ तो० ॥ नमि विनमी नामे न्नला, आदि देव प्रते कहे तेह ॥ तो० ॥ ३ ॥ पुत्र सहुने व्हेंची आपीया, देश नगर तुमे देव ॥ तो०॥ अमने कांइ नहीं आपीयुं, तुमारी घणी कीधी सेव ॥तो०॥४॥ एणी परे मागे साला दोय, हठ लेइ धरी रक्षा पाय ॥ तो० ॥ ध्यान विघन स्वामीने करे, दीन वचने कृपा थाय ॥ तो० ॥ ५ ॥ आसन कंप्युं धरणेंद्रनुं, नागराज आवी करे काज ॥ तो०॥ विद्या आपी बेहुने घणी, रूप धरी जिनराज ॥ तो० ॥ ६ ॥ विजयारध लेइ चालीयो, दक्षिण श्रेण नगर पचास ॥ तो० ॥ पचास कोमी गाम तिहां न्नलां, नमि थाप्यो चक्रवालपुर वास ॥ तो० ॥ ७ ॥ उत्तर श्रेणि नगर साठ, तेटला कोम ठे वली गाम ॥ तो० ॥ रथनोपुर स्वामी विनमी करी, नागराज गयो निज ठाम ॥ तो० ॥ ८ ॥ नमिवंशे विद्याधर घणा हुवा, चक्रवालपुर तणा ईश ॥ तो० ॥ अनुक्रमे पूर्णमेघ नृप हुवो, दक्षिण श्रेण तणो महीश ॥ तो० ॥ ए ॥ विनमी अनुक्रमे नृप हुवा, उत्तर श्रेणना राय ॥ तो०॥ शत-

लोचन खगपति जलो, रथनुपुर सेवे नर पाय ॥ तो० ॥ १० ॥ चक्रवालपुर जइ वीटीयो, शतलोचने तेणी वार ॥ तो० ॥ पूर्णमेघ रणवट करी, हणीयो शतलोचन मार ॥ तो० ॥ ११ ॥ सहस्रलोचन तिहां आवीयो, पिता तणो सांजली मरण ॥ तो० ॥ विषम संग्राम ताम तव तेणे कर्या, पूर्णमेघ गयो जम शरण ॥ तो० ॥ १२ ॥ तेह तणो सुत मेघवाहन, सहस्रलोचन साथे संग्राम ॥ तो० ॥ मेघवाहन नाठो जाजीने, विमाने बेसी निज जाम ॥ तो० ॥ १३ ॥ सहस्रलोचन पुंठे थयो, समोसरण दीठुं मनोहार ॥ तो० ॥ मेघवाहने प्रवेश कर्यो, अजितनाथ वांद्या जवतार ॥ तो० ॥ १४ ॥ पाछलथी शत्रु आवीयो, सहस्रलोचन वली काल ॥ तो० ॥ मानस्थंज दीठे मानज गल्युं, शांत रूप थइ वांद्या दयाल ॥ तो० ॥ १५ ॥ वयर मूकी दोय जण मल्या, नर कोठे बेठा बे जाम ॥ तो० ॥ पूर्व जवांतर जिनेश्वर कह्या, सांजली हरखीया ताम ॥ तो० ॥ १६ ॥ पांचमा खंड तणी जली, ढाल त्रीजी कही सुविशाल ॥ तो० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम जणे, नेमविजयने मंगल माल ॥ तो० ॥ १७ ॥

दुहा.

राक्स इंद्र जीम महाजीम, व्यंतर कोटी सुण तेह ॥ मेघवाहन जवांतर जा-

णीयो, पूर्वें श्रम पुत्र एह ॥ १ ॥ राक्सने स्नेह उपन्यो, राक्सी विद्या दीध ॥ नवसर हार श्राप्यो जलो, नव मुख दीसे मांही सीध ॥ २ ॥ मेघवाहन लंका द्वीप, सातसें जोजन मान ॥ त्रिकुट गढ नव जोजन लगे, बत्रीश जोजन पुर थांन ॥ ३ ॥ ठत्र मुगट धजादिक शीरे, राक्स लांठन सोय ॥ जीम महाजीमे सहु दीयो, मेघवाहन लंकापति मोय ॥ ४ ॥

ढाल चोथी.

ए केम विसरेरे सुखडां, वालाजीना जोवा मुखडा ॥ मुखडे मोह्यारे इंदा, वदन कमल जाणे शारद चंदा—ए देशी.

मेघवाहन राणी तनुमती, महा राक्स सुत हुवो शुज मति ॥ गुणवंती राणीना पुत्र वेह, जानु राक्स देव राक्स तेह ॥ १ ॥ समुद्र मांही द्वीप अनेक, लोक वसाव्या तेणे विवेक ॥ जानु राक्स देव राक्स केडे, एकसठ राजा गया ठे तेडे ॥ २ ॥ कीर्तिधवल राजानो वंश, लंका राज करे परशंस ॥ लक्ष्मीमती ठे राणी तास, सुख जोगवे करेय विलास ॥ ३ ॥ रतनसंचय पुर दक्षिण श्रेण, श्रीकंठ खगपति राजा तेण ॥ तिहांथी लंकापुरी श्राव्यो, बेन बनेवी मलवा धायो ॥ ४ ॥ कीर्तिधवल

राजा आनंद, सालाने आलिंग्या जन वृंद ॥ लक्ष्मीमती मली जाइने, मान सनमान दीधां धाइने ॥ ५ ॥ कीर्तिधवल कहे सांजलो सार, तुज साथे मुज स्नेह अपार ॥ जे जे लक्ष्मी छे अमारे, ते ते श्रीकंठ छे तुमारे ॥ ६ ॥ द्वीप देश पुर पाटण जाणो, जे आपणे छे ते तुमे माणो ॥ जे जोइए ते मागो आज, रत्नद्वीपादिक जोगवो राज ॥ ७ ॥ वानरद्वीप माग्युं अजिराम, श्रीकंठ सालाने आप्युं ताम ॥ वेन वनेवीने मोकलावी, वानरद्वीपे आण पलावी ॥ ८ ॥ कुटुंब सेनादिक परिवार, द्वीपे आणी वास्या नर नार ॥ वानरद्वीप मध्ये छे सार, कीष्कंध पर्वत उंचो अपार ॥ ए ॥ कंधपुर वास्यो श्रीकंठ, राज्य जोगवे मन उत्कंठ ॥ खगे विद्या वानरी साधी, ते माटे कहेवाय हरिबांधी ॥ १० ॥ वानरद्वीपे घणा वानर, विनोद क्रीडा करे ते फरफर ॥ श्रीकंठ विद्याधर नरवरेश, वानर रमत करे विशेष ॥ ११ ॥ मुगट छत्र धजादिक गेह, सघले वानर लीखीया तेह ॥ वानर कहे लोक अजाण, विद्याधर राजाए सुजाण ॥ १२ ॥ एणी परे मेघवाहन लंकेश, मुगट ध्वज छत्रे राक्षस ॥ मेघवाहन कुले उपन्या राय, त्रिखंड पति रावण ते थाय ॥ १३ ॥ श्रीकंठ खगेश परंपरा जाण, वाली सुग्रीव पवनादिक जाण ॥ नमि विनमी वंशे विख्यात, वानर राक्षस नोहि

वात ॥ १४ ॥ वानर तो तिर्यंचनी जाति, व्यंतर राक्षस होये जाति ॥ पशु व्यंतर केम होय युद्ध, ए सहु जाणो महा विरुद्ध ॥ १५ ॥ विद्याधर विद्याबल चाले, गिरि उचलतां ततक्षिण झाले ॥ कदाचित् होये तो सबली होय, सागर बंधन घटतुं जोय ॥१६॥ मनोवेगे कथा कही साची, पवनवेग मनमां रह्यो राची ॥ जिनवर वचन कर्यां अंगीकार, मिथ्या वचन कीधां परिहार ॥ १७ ॥ पांचमा खंड तणी ढाल, चोथी कहीए निपट रसाल ॥ रंगविजय शिष्य एम बोले, नेमविजयने नहीं कोइ तोले ॥ १८ ॥

दुहा.

पवनवेग कहे जाइने, रावण केरो वृत्तांत ॥ के मिथ्यातिए अछे, के जिनशासन सांत ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, रावण केरी वात ॥ जेम निश्चय तुमने पडे, भांगे मननी भ्रांत ॥ २ ॥ त्रिकुट गढ लंका तणो, मोटो महीयल मांहीं ॥ रावण राज तिहां भोगवे, हार तणे महीमाहीं ॥ ३ ॥ त्रिखंड राज्य तणो धणी, नव ग्रह बांध्या पाय ॥ वीश भुजा तेणे करी, सुर नर सेवे पाय ॥ ४ ॥ त्रीश सहस वर्षां तणी, आयुस्थिति कहेवाय ॥ नव धनुष काया तणो, मान कह्यो जिनराय ॥ ५ ॥ बत्रीश सहस नारी अछे, पुत्र पुत्री परिवार ॥ जामाताए जस घणा, कहेतां नावे

पार ॥ ६ ॥ लाख बेंतालीश गज तुरी, लाख बेंतालीश रथ ॥ कोरु अमतालीश पायक जला, आयुध बत्रीशें सब ॥ ७ ॥ सोल सहस सामंत छे, कोरु आमतालीश गाम ॥ अढार कोणी कटक तणो, राजा रावण नाम ॥ ८ ॥

ढाल पांचमी.

वयरागी थयो—ए देशी.

लंका परिसर एकदारे, मुनिसुव्रत जिनराय ॥ विहार करंता आवीयारे, साधु तणो समुदायोरे ॥ सुगुण सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ खरदूषण नृपति जलोरे, रावण बनेवी तेह ॥ चंद्रनखा नारी तणोरे, पति कहेवाये एहोरे ॥ सु० ॥ २ ॥ समोसरण देवे रच्युंरे, जामंमले करी सार ॥ त्रगडे बेठा देशनारे, करे जविक जन निस्तारोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ वनपालक जइ विनवेरे, सांजलो स्वामिरे वात ॥ आज आव्या छे आपणेरे, त्रिजुवन स्वामी विख्यातोरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ वारु दीध वधामणीरे, थयो मन उछरंग ॥ चतुरंग सेना लेइ करीरे, वाजते ढोल मृदंगोरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ बेठा जिन वांदी करीरे, अजिगम सांचवी पांच ॥ देशना सांजली जिन

तणीरे, मूकी मन खल खांचोरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ दीजे अमने सुखासिकारे, स्वामि आपो सेस ॥ अरथ सरें असने घणोरे, तुमने लाज्ज विशेषोरे ॥सु०॥७॥ तव त्रिजुवन स्वामी कहेरे, सांजलो राय सुजाण ॥ जोग करम तुमने घणोरे, केम पालशो पच-खाणोरे ॥ ८ ॥ तव रावण फरी विनवेरे, मुजथी थाये जेह ॥ तेह उपाय कहो ह-वेरे, पालुं निश्चय तेहोरे ॥ सु० ॥ ए ॥ वीशमा स्वामी तव कहेरे, तुमथी थाशे जेह ॥ नव ज्ञेदे जे शील छेरे, तेहनो जांगो एहोरे ॥ सु० ॥ १० ॥ जे स्त्री राजी थइ कहेरे, तेहशुं जोग विलास ॥ राजी विना अरूशो मतीरे, एहवो व्रत उल्लासोरे ॥ सु० ॥ ११ ॥ तव व्रत लीधो जिनने मुखेरे, रावण मनने रंग ॥ तव खरदूषण एम कहेरे, व्रत लेवा उछरंगोरे ॥ सु० ॥ १२ ॥ जिननी मूरति नित्य प्रतेरे, पूजीने लेउं अन्न ॥ न करुं दातण पूज्या विनारे, त्रिकरण राखुं मन्नरे ॥ सु० ॥ १३ ॥ व्रत लीधो वे जणे तिहांरे, आव्या आपणे वास ॥ मन शुद्धे पाले तिहांरे, पाम्या हरख उल्लासोरे ॥ सु० ॥ १४ ॥ विद्यानी शक्तिए करीरे, चाले अंवर वेग ॥ तीर्थयात्रा करता फरेरे, सवली जेहनी तेगोरे ॥ सु० ॥ १५ ॥ विहार कर्यो जिनवरे तिहांरे, फ-रता देश विदेश ॥ जविजनने प्रतिबोधवारे, तरण तारण विशेषोरे ॥ १६ ॥ पांचमा

खंड तणी कहीरे, पांचमी ढाल रसाल ॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमने मंगल मालोरे ॥ सु० ॥ १७ ॥

दुहा.

सवि सामग्री सज करी, रावण राजा जाय ॥ मंदोदरी राणी सहित, अष्टापद तीरथ आय ॥ १ ॥ विद्या तणी शक्ते करी, चढी उंचा ततकाल ॥ प्रणम्या रिषन्न-देवने, पहेरावी मंगल माल ॥ २ ॥ धूप दीप आरती करी, सवि सजी शणगार ॥ मंदोदरी अधर रही, नाचे देवल मोझार ॥३॥ रावण जंत्री लेइने, गाये वाये गीत ॥ न्नावे न्नावे न्नावना, बत्रीश बद्धनां नृत्य ॥ ४ ॥ श्रीमंरुलने सज करी, तांत बत्रीशे तार ॥ उल्लट आणी अंगमें, तान मान ऊणकार ॥ ५ ॥ अढलिक न्नावे जे न्नवि, न्नावे अधिक जे न्नाव ॥ तेहने सागर संसारनो, उतारे न्नव नाव ॥६॥ न्नाव बले करी न्ना-वतां, वातां तांतनो तार ॥ तुट्यो तेण समे रावणे, नस काढी तेणी वार ॥ ७ ॥ सां-धी तांत तेणे समे, खंरुित न कर्यो लगार ॥ नहींतो मंदोदरी नारीनो, मरण होत तेणी वार ॥ ८ ॥ लान्न उपायो अति घणो, लीधो तीर्थंकर पाट ॥ आवती चोवी-शीमां होशे, जिनरूपी सम घाट ॥ ए ॥

ढाल ७मी.

द्रौपदीनी वे कर जोमी तामरे ञद्र विनवे—ए देशी.

तिहांथी आव्या निज घरेरे, रावणनो परिवार, चंद्रनखा जगनी सही ए ॥ तेहनो पुत्र ठे एकरे, विघनपति नामे, नित्य जाये ठे वन वही ए ॥ १ ॥ पर विघननी विचारे, साधवाने काजे, वंशजाल गुफा मांही ए ॥ साधे नित्य प्रते तेइरे, एकाकी वन मांहे, नवी देखे कोइ तांहे ए ॥ २ ॥ तेहने जोजन काजरे, माता तेहनी, लइ आवे ठे नित्य प्रते ए ॥ एम करतां एक दिनरे, राम ने लक्ष्मण, सीता साथे लेइ ठते ए ॥ ३ ॥ आव्या ठे वनवासरे, तेह निज ठामे, लक्ष्मण चोकी करता फरे ए ॥ चिंतवी मनमां एमरे, डुर्धर कोइक जीव, उपद्रव आवीने करे ए ॥ ४ ॥ ते माटे लेइ खमगरे, वांसनी जालमां, ठेदे ते खड्गे करी ए ॥ ते कुंवर विघनपतिरे, वेठो ठे ध्याने, घा वाग्ये गयो मरी ए ॥ ५ ॥ दीठो लक्ष्मणे तामरे, उरतो कर्यो घणो, निमित्त मात्र मिटे नहीं ए ॥ पाठा फरी वली आवेरे, कुंवरनी माता तिहां ॥ जोजन लेइ आवी वही ए ॥ ६ ॥ देखी कलेवर तामरे, रुदन करे घणुं, पुत्र कोणे मारो मारीयो ए ॥ शीश कुटे लट तोडेरे, हृदये आस्फाले, नयणे आंसु जारीयो ए ॥ ७ ॥ मनमां चिंतवे एमरे, कोण होशे डु-

इमन, जइ नीहालुं तेहने ए ॥ आवे पग जोती तामरे, दीठो लखमण, आवीने कहे एहने ए ॥ ८ ॥ देखी लक्ष्मण रूपरे, विकल थइ मने, पुत्र चिंता मटी गइ ए ॥ कहे मुखथी तव बोलरे, अहो अहो सोभागी, हुं तुम पर राजी थइ ए ॥ ए ॥ तुं माहरो भरतारहे, माहरे इण भवे, एम निश्चय करी जाणजो ए ॥ ताहरी उत्तम अजातरे, जो होये तो सही, नाकारो मत आणजो ए ॥ १० ॥ लक्ष्मण कहे तव वातरे, ए काम हुं नवि करुं, परनी स्त्री केम भोगवुं ए ॥ मीठुं पण थयुं एठुंरे, परनुं जे चाख्युं, ते तो हुं नवि जोगवुं ए ॥ ११ ॥ चंद्रनखा कहे वातरे, माहरे में कह्युं, मत उथापे तुं हवे ए ॥ जो सुख वांछे एमरे, तो मन धारजे, कुरू वयण तुं मत लवे ए ॥ १२ ॥ लक्ष्मण कहे हवे एमरे, जगनी माहरी, धर्मनी माता तुं अछे ए ॥ क्रोधातुर थइ एमरे, खबर राखे माहरी, एम कहीने पाछी गछे ए ॥ १३ ॥ तुज सरीखो छे भाइरे, तो चिंता कशी, एम हुं नित्य जाणती हती ए ॥ माहरो विघनपति पुत्ररे, मार्यो लक्ष्मणे, तो हुं नारी अछती छती ए ॥ १४ ॥ वार करो हवे मारीरे, ढील न करो कशी, जे घमी जाये जुग समी ए ॥ सांभली रावण तामरे, दूत एक मोकल्यो, सामंत भेला कर्या भमी ए ॥ १५ ॥ खरदूषण परिवाररे, लश्कर करी भेलो, चढ्या कटक गेडी थइ ए ॥ आवी फेरा दीधारे,

सायरने कांठे, प्रतिमा घरे विसरी गइ ए ॥ १६ ॥ दातण करवा नीमरे, दीधो पचखाण, ।जनवचन केम भांगीए ए ॥ गण वेलु करी भेलोरे, विंव कीधो नवो, पूजा करी पगे लागीए ए ॥ १७ ॥ अनुक्रमे दरशन कीधोरे, प्रतिमा कुपक मांही. मूकीने सहु चालीया ए ॥ घणा काल लगी मांहींरे, अधिष्टाता तिहां, धरणेंद्र तिहां भालीया ए ॥ १८ ॥ आवी काढ्यो विंवरे, अंवर अधर राखी, अंतरिक नाम थापीयो ए ॥ आगे एहनो विस्ताररे, वहुश्रुत ते जाणे, माहरी मत सारु व्यापीयो ए ॥ १९॥ पांचमा खंड तणीरे, ढाल छठी ए कही, श्रोता सुगुण भणी गमी ए ॥ रंगविजयनो शिष्यरे, नेमविजय कहे, माहरा दिलमां ए रमी ए ॥ २० ॥

दुहा.

लश्कर सहु भेलो मली, आव्या वन वंशजाल ॥ रामचंद्र लक्ष्मण वेने, खवर थइ ततकाल ॥ १ ॥ लक्ष्मण कहे रामचंद्रने, तुमे सीताने पास ॥ रहेजो सावधान थका, हुं जाउं लडवा तास ॥ २ ॥ जो हुं नाद करुं सिंहनो, तो मुज करजो वार ॥ मेलशो मां सीता रली, कहुं छुं वारंवार ॥ ३ ॥ लक्ष्मण चाल्या झुझवा, लश्कर सन-

मुख जाय ॥ एक बाण नाखे थके, सहस्र संख्या थाय ॥ ४ ॥ वासुदेव बल आगले, सहस पचवीश देव ॥ एता शरीरना देवता, रक्षा करे नित्यमेव ॥ ५ ॥ जे आयुध लश्कर तणां, लक्ष्मण उपर आवे ॥ ते देवता रक्षा करे, ते सर्वे निष्फल थावे ॥ ६ ॥ जे लक्ष्मण नाखे तदा, जे उपर ताणी बाण ॥ तेहने सहस गमे सही, जाये तेहना प्राण ॥ ७ ॥ खरदूषण राजा तिहां, मरण गयो ततकाल ॥ तेणे अवसर लक्ष्मण तव, मनशुं थइ उजमाल ॥ ८ ॥ सिंहनाद करुं जो हवे, कटक जाये सवी नाज ॥ एम चिंतवी तेणे कर्यो, सिंह समो आवाज ॥ ए ॥ ते अवसर रामे तिहां, सुणीयो सिंहनो नाद ॥ सीता मूकी एकली, आव्यो करवा वाद ॥ १० ॥ बे नाइ मली एकठा, मार्यो काढ्यो दूर ॥ नाठो लेइ लश्कर वेगलो, जीतनां वाग्यां तूर ॥ ११ ॥ चंद्रनखा उतावली, गइ रावणनी पास ॥ आकुल व्याकुल थाती थकी, मूकती मुख निःश्वास ॥ १२ ॥ कहेवा लागी नाइने, मार्यो मुज नरतार ॥ मुख शुं देखाडे लोकमें, लाजे नहीं लगार ॥ १३ ॥ रावण उठ्यो सांनली, पुष्फक लेइ विमान ॥ अद्भुत रूप नवो करी, आव्यो सीता गाम ॥ १४ ॥

ढाल सातमी.

शियालो हे नले आवीयो—ए देशी.

सीता दीठी एकली, चिंतवे मन मांही रावण विचार के ॥ कोइक बुद्धि हवे केलवुं, जेम आवे हे माहरे हाथे नार के ॥ सुगुण सोनागी सांनलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अतित रूप करी अति नलो, निक्षा कारण हे आव्यो ततकाल के ॥ अलेक जगाव्यो आंगणे, सीता आवी हे उनी उजमाल के ॥ सु० ॥ २ ॥ केम स्वामि तुमे आवीया, तव जोगी हे बोले मुख वाण के ॥ ताहरे पीयु मने मोकल्यो, तेरूवा आव्यो हे तुमने तिण ठाण के ॥ सु० ॥ ३ ॥ लश्कर आव्यो हे घणो, कोइ दुश्मन हे तुमने लेइ जाय के ॥ ते माटे उतावलां, तुमे बेसो हे आ विमान मांय के ॥ सु० ॥ ४ ॥ सीताए जाण्युं ए सही, मांहे बेगं हे उघाड्युं विमान के ॥ आगल जातां सामो मिल्यो, विद्याधर हे एकलो तेणे स्थान के ॥ सु० ॥५॥ पूछ्युं रावणने तिहां, कुण नारी हे केहनी कहेवाय के ॥ तव रावण कहे रामनी, सीता नारी हे कहेजे लेइ जाय के ॥ सु० ॥ ६ ॥ ते विद्याधरें रामने, संनलावी हे सीतानी वात के ॥ रामने लक्ष्मण बे मली, दुःख पाम्या हे कहेतां नावे घात के ॥ सु० ॥ ७ ॥ राम रोइ घणुं टलवले, मुख

जंपे हे तरुवर जणी एम के ॥ कहो मुजने तुम इहां रह्या, केम मलशे हे सीता मुज जेम के ॥ सु० ॥ ८ ॥ तरुवर वाये डोलतां, राम जाणे हे कहे धुणीने शीश के ॥ अमे न जाणुं किहां गइ, एम धारी हे मुजने करे रीस के ॥ सु० ॥ ए ॥ तव केकी पंखी प्रते, राम बोले हे तुमे उडो आकाश के ॥ सीता माहरीनी वातडी, बतावो हे हुं आपुं शाबाश के ॥ सु० ॥ १० ॥ तव पंखी बोले मुख थकी, क्यां वा क्यां वाहे न जाणुं अमे आप के ॥ राम जाणे ए जे कहे, किम खोवे हे आपनो माप के ॥ सु० ॥ ११ ॥ पशु चोपगने पूछे वली, जातां वलतां हे दीठी सीता नार के ॥ शियाल बोल्यां ततक्षणे, सांजलीने हे रामे कीधो विचार के ॥ सु० ॥ १२ ॥ उंउंउं जे मुखथी कहे, लेइ जातां हे न दीठी उण ठाण के ॥ लक्ष्मण राम जणी कहे, जंजालनां हे बोलो मुख वाण के ॥ सु० ॥ १३ ॥ जाइ तुमने केम घटे, स्त्री माटे हे श्यो करो वेखास के ॥ जो विद्यमान बेठा तुमे, काले लावशुं हे राखो विश्वास के ॥ सु० ॥ १४ ॥ रोयां राज न पामीए, राखो धीरज हे आवे आपण लाज के ॥ लाजे काज बगाडीए, जाइ तुमने हे केम घटे आज के ॥ सु० ॥ १५ ॥ धीरा धीरा राउंता, धीरां धीरां हे सर्वे काज होय के ॥ चार पहोरने आंतरे, दूध फीटी

हे दहीं थाये जोय के ॥ सु० ॥ १६ ॥ धीरा धीरा जे करे, मालीनी परे हे सो घडा सिंचाय के ॥ पण ऋतु आवे नीपजे; ऋतु वगर हे फल कीणी परे थाय के ॥ सु० ॥ १७ ॥ तो हवे उद्यम कीजीए, तेहथी जाये हे आरति सवी दूर के ॥ हनुमानने ते- डावीए, मोकलीए हे तेरुवा दलपूर के ॥ सु० ॥ १८ ॥ विद्याधर वाली वानरा, रा- उत राणा हे जक्ष सरूप के ॥ हाथी घोमा रथ पालखी, उंट पोठी हे अणावो अनुप के ॥ सु० ॥ १९ ॥ पांचमा खंड तणी कही, ढाल सातमी हे सहु सुणजो सुजाण के ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय हे कीधां रुमां वखाण के ॥ सु० ॥ २० ॥

दुहा.

वोलाव्यो हनुमानने, संजलावी सवी वात ॥ देशे परदेशे फरी, जेली करो सहु न्यात ॥१॥ हनुमान तिहांथी चालीयो, गयो देश विदेश ॥ उमराव अनेक जेला हुवा, विद्याधर वानर विशेष ॥२॥ यक्ष राक्षस वली आवीया, चतुरंग दल परिवार ॥ संख्या करतां नवि वने, लश्कर मलीयो अपार ॥३॥ आसो सुदि दशम दिने, शुज वेला शुज वार ॥ शुज शुकने सिद्ध करी, थइ घोडे अश्वार ॥ ४ ॥ सायर कांठे आवीया, दीठुं देवल एक ॥ ते पासे आवी उतर्या, दर्शन कीध विवेक ॥५॥ करे अरदास वेग तिहां,

सायर केम उतराय ॥ सात मास ने नव दिने, सायर पाज बंधाय ॥ ६ ॥ सीताने लेइ गयो, रावण लंका मांय ॥ फुलवाडी आवासमां, राखी छे तेणे ठाय ॥ ७ ॥ नित्य आवे सीता प्रते, पूछे वारंवार ॥ पट्टराणी थापुं करी, मान वचन निरधार ॥ ८ ॥

ढाल आठमी.

बेडले भार घणो छे राज—ए देशी.

जनक सुता हुं नाम धरावुं, राम छे अंतर जामी ॥ पालो अमारो छोडी दे पापी, कुलमां लागशे खामी ॥ मुजने अडसो मां जो राज, नाहलीयो दुहवाशे ॥ ए आंकणी ॥१॥ मरु महीधर ठाम तजे जो, पथ्थर पंकज उगे ॥ सायर जो मरजादा मूके, पांगलो अंबर पुगे ॥ मु० ॥ २ ॥ तोपण तुं सांभलरे रावण, निश्चे हुं शील न खंडुं ॥ प्राण अमारा परलोके जाये, तोपण सत न छंडुं ॥ मु० ॥ ३ ॥ हुं धणीयाती पीयु गुणराती, हाथ छे माहरे छाती ॥ रहे अलगो न चलुं तुज वयणे, कां कुल वाये काती ॥ मु० ॥ ४ ॥ कोण मणिधरनी मणि लेवाने, हडडे घाले हाम ॥ सतीय संघाते स्नेह धरीने, कहो कोण साधे काम ॥ मु० ॥५॥ कहो परदारा संग करीने, आखो कोण उगरीयो ॥ उंडुं तुं तो जोय आलोची, सही तुज दहाडो फरीयो ॥ मु० ॥६॥ अग्निकुंडमां निज

तनु होमे, वाम्युं विष कोण लेवे ॥ जेह अगंजित कुलना जोगी, ते केम फरी विष सेवे ॥मु०
॥ ७ ॥ लोक हसे निज गुण सवि नीकसे, विकसे डुरगति वारी ॥ एम जाणीने कहो कोण सेवे, पाप पंक पर नारी ॥मु०॥ ८ ॥ वलीय विशेषे स्त्रीने संगे, बोध बीज वली जावे ॥ लोको मांही अपजश थावे,तो केम मरण न आवे ॥मु०॥ए॥ कोइ मूरख चंदन काजे, ठारके कोयला आणे ॥ विष हलाहल पीधा थकी जे, कोण चिरंजीवित माणे ॥ मु०
॥ १० ॥ सीता बोली वचन रसालां, जेम अंकुश शुंडाल ॥ तोपण रावण न मेले चाला, एहनां कर्मनां काला ॥ मु० ॥ ११ ॥ एहवी सीतानी जे वाणी, सांजले नित्य एम जाणी ॥ सती जाणीने न कहे ताणी, आणतां शुं तो आणी ॥ मु० ॥ १२ ॥ लीधा मेली वात थइ ते, अहिए ठबुंदरी पकमी ॥ मेले तो थाय आंखे अंधो, खाधे मरे पड्यो जकमी ॥ मु० ॥ १३ ॥ एणी परे मनमां जाणे रावण, करतां शुं तो कीधी ॥ थानारो थाशे जे आगल, लेतां शुं जे लीधी ॥ मु० ॥१४॥ पांचमा खंम तणी ए ढाल, आठमी सही करी जाणो ॥ रंगविजयनो शिष्य एम पजणे, नेमनी वात वखाणो ॥ मु०॥१५॥

डुहा.

सात मास नव दिन लगे, पूज्या थंजणपास ॥ अधिष्ठाता शेषनागजी, पसाय

कीधो तास ॥ १ ॥ लश्कर पाजे उतर्यो, लंका नेडी लीध ॥ खबर थइ रावण तणी, नगरमां वात प्रसिद्ध ॥ २ ॥ बिभीषण भाइने कहे, राम चढी आव्या आज ॥ भाइ करीने थापीए, सरवे सरशे काज ॥ ३ ॥ रावण कहे भाइ सुणो, राम छे दुश्मन जात ॥ बनेवी आपणो मारीयो, विघनपति नाम सुजात ॥ ४ ॥ एवो वेरी मेलीए, तो अप-जश जग होय ॥ घर आंगण आव्यो थको, जावा दे कहो कोय ॥ ५ ॥ बिभीषण कहे रामशुं, भाइजी म करो वेर ॥ वेध पडशे ए वातमां, थाशे ए कामे फेर ॥ ६ ॥ तव रावण कहे भाइने, न गमे तुजने एम ॥ तो तुं राम भेलो जइ, थापे भाइ करी जेम ॥ ७ ॥ बिभीषण राम भेलो मल्यो, रावणने चड्यो मान ॥ सेना सरवे सज करी, डेरा दीधा रण थान ॥ ८ ॥

ढाल नवमी.

कडखानी देशी.

दल वादल चड्या मेह सम गाजीया, वाजिंत्रनी ध्वंस आकाश वागी ॥ छत्रीश आयुध सज्यां आमुहा सामुहा, फूडनी हुब उमंग लागी ॥ द० ॥१॥ सिंदूरीया गज दल आगल कर्या, अश्व तणी पाखरे रोल जाजी ॥ नाल घोडा तणी धसमस पडे

घणी, आवी अड्या घणा शूरमांजी ॥ द० ॥ २ ॥ सिंधूर्ड राग सरणाइए टहुकीयो, वंदीए सरस गाया पवाफा ॥ चारणे चरचीया विरुद डुहडालफा, मेली मेला कर्या मल अखाफा ॥द०॥ ३ ॥ शक्ति विद्या तणी अंबर चफी फूफता, रूप करी कारीमा फूफ मांडे ॥ आयुध आकाशमां घन जेम गडगफे,वीज फलका सम ज्योति खांफे ॥द०॥४॥ त्रीठीयो वर ठीयो पार निरठीयो, सणण वहे बाण अरि वेग हरवा ॥ चणण गोली वहे ढाल तिहां खफखडे, कडकफे तुंड रहमांही फरवा ॥ द० ॥ ५ ॥ गोलीए केइ मुआ बाण लाग्यां घणां, केइ पड्या हय गय पय पसारी ॥ आरफे केइ आकुल व्याकुल थका, जाणे वणजारनी पोठ उतारी ॥ द० ॥ ६ ॥ जफ लोहा थकी जे नर जागीया, लडथफता धड उठे वली एम ॥ शूर फूफे तिहां कायर कंपे घणा, थरथरे काय मुख तृण लीधां जेम ॥ द० ॥७॥ केइ रथ चूरीया नालशुं फूरीया, केइ उफी गया छत्रधारी ॥ केइ सुखासन मांहे वेगा थका, अकाल मरणे गया घणुंज हारी ॥ द० ॥ ८ ॥ दश मस्तकी तणी तत्र आवी बनी, वासुदेव उपरे चक्र फेर्यो ॥ त्रेसठ शलाखा पुरुष ते उपरे, सहस पचवीश ते देवे घेर्यो ॥ द० ॥ ९ ॥ अवरना मारीया केम मरे एहवा, तेहवे चक्र पाछो चलायो ॥ लक्ष्मणे रावण मारवा कारणे, शीश दश छेदी धराशुं

भलायो ॥ द० ॥ १० ॥ तेहवे तिहां हाहाकार वरत्यो घणो, रामनी जीत जगति प्रसिद्धी ॥ लक्ष्मण बिभीषण बेहु भेला मली, नगरी लंका ततकाल लीधी ॥ द० ॥ ॥ ११ ॥ पाट थाप्यो बिभीषणने बहीसमां, त्रिकूट गढमे आण फेरी ॥ तेहवे राम ने लक्ष्मण बेहु जणे, तेडावी नारी सीताजी आप केरी ॥ द० ॥ १२ ॥ दंपती बेहु मल्यां हर्षमां सहु भल्या, बिभीषणे तिहां बहु भक्ति कीधी ॥ वणा दिवस रही रिद्ध समृद्धि लही, शीख दीधी वल्या पाज सिसि ॥ द०॥ १३॥ अनुक्रमे आवीया थंभण-पासे देवले, मास चोमास रह्या तेह गामे॥ पूजा प्रभावना मोछव कीधा घणा, थापना कीधी थंभणोपास नामे ॥ द० ॥ १४ ॥ पांचमा खंड तणी ढाल नवमी भली, रंगविजय गणि शिष्य भाखी ॥ नेमविजय कहे श्रोता सहु सांभलो, रावण रायनी वात आखी ॥ द० ॥ १५ ॥

दुहा.

अनुक्रमे सीता नारीने, स्वकीय उदर मांय॥ गर्भ वाधे दिन दिन भलो, हइडे हरख न माय ॥ १ ॥ एक दिन लक्ष्मण सीता बंने, सूतां छे बे जण पास ॥ लक्ष्मणने माता समी, सीता नारी तास ॥ २ ॥ निद्रावश सूतां थकां, वस्त्र रहित थयां देह ॥

दीठां रामचंद्र तिहां, शंका उपनी तेह ॥ ३ ॥ लक्ष्मण सरिखो जाइ मुज, मारवो न घटे मुज ॥ सीताने हुं जाणतो, सीतानां लक्षण शुक्र ॥ ४ ॥ ए तो वगमी छे सही, मार्ये अपजश थाय ॥ तो केम हुं हवे करुं, काढी मेलुं वन मांय ॥ ५ ॥ लक्ष्मणने वातो कही, एहने मेलो वनवास ॥ तव लक्ष्मण बोल्या तिहां, जाइ तुमने श्यावास ॥ ६ ॥ कष्ट उपजावी लावीया, सीता सुलक्षणी नार ॥ एहने वनवासे मेलतां, लाज जाये संसार ॥ ७ ॥ रामचंद्र माने नहीं, मनमां पमी बहु भ्रांत ॥ साचे साचुं चालशे, कर्म न जाणे नाति जात ॥ ८ ॥

ढाल दशमी.

निद्रमी वेरण हुइ रही—ए देशी.

रामे मेली सीता वनवासमां, तिहांथी आवी हो तापसने आवास के ॥ गिरि कंदर गुफा जिहां, तापसनां हो आश्रम निवास के ॥ सुगुण सोभागी सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अंतराय कर्मना योगथी, आवी लाग्यां हो कर्मनां फल एह के ॥ राम गया घर आपणे, सीता नारी हो विसारी मेली तेह के ॥ सु० ॥ २ ॥ अनुक्रमे मास पूरण थया, दोय कुमर हो जनम्या श्रीकार के ॥ लव ने कुश नाम थापीयां,

सेवा चाकरी हो करें तापस नार के ॥ सु० ॥ ३ ॥ खिणखिणमां करे आवीने, पुण्य योगे हो सर्व विधि व्यवहार के ॥ अनुक्रमे कुंवर मोटा थया, नर जोबन हो पाम्या तेणी वार के ॥ सु० ॥ ४ ॥ करम जोगे आवी मल्यो, लश्कर भेलो हो कीधो अपार के ॥ वनिता नगरी उपरे, चडी आव्या हो लडवाने तेणी वार के ॥ सु० ॥ ५ ॥ कोइ विद्याधर आवी विनवे, तुम जनक हो रामचंदर राय के ॥ ते साथे तुम लडतां थका, जगमां अपजश हो तुमने घणो थाय के ॥ सु० ॥ ६ ॥ वली विद्याधर जइ कहे, राम आगल हो विनवे महाराज के ॥ ए कुंवर दोय तुम तणा, तेहने तेडी हो मनावो आज के ॥ सु० ॥ ७ ॥ तव राम ने लक्ष्मण बे मली, दोय कुमर हो तेडाव्या तेणी वार के ॥ साजन सहु आवी मल्या, अंग उलट हो उपन्यो अपार के ॥ सु० ॥ ८ ॥ सीता तेडावी ततक्षणे, शंका टाली हो मननी ततकाल के ॥ उजम अंगमें अति घणा, सुख विलसे हो दंपती उजमाल के ॥ सु० ॥ ए ॥ सीतानी शोक ते एम कहे, राम आगल हो कुड कपटनी वात के ॥ सीता नारी जे तुम तणी, रावणे राखी हो लंपट कुजात के ॥ सु० ॥ १० ॥ बगडी नारी जे तेहने, केम राखवी हो घटे घर मांय के ॥ निंदा थाय बे नातिमां, काढी मेलो हो बीजे कोय ठाय के ॥

सु० ॥ ११ ॥ तव राम मनमां चिंतवे, शोकनो संबंध हो लागे मनमां खार के ॥ ते माटे सहु एम कहे, मुज न घटे हो काढवी घर बार के ॥ सु० ॥ १२ ॥ एक दिन वस्त्र ते धोयवा, धोबीने दीधां हो रामचंद्र तेणी वार के ॥ राते पलाळी मूकीयां, प्रजात उठी हो जगाडे नार के ॥ सु० ॥१३॥ उठरे रांड तुं सुइ रही, राजा करशे हो आपणने रीस के ॥ वेहेलां वस्त्र जो आपीए, तो जूपति हो आपे आशीष के ॥ सु० ॥ १४ ॥ तव धोबण मुखथी कहे, उ मूरख हो शुं लव करे आज के ॥ तुं ने राजा बे जण मली, जाउ उंचा हो ज्यां बे जमराज के ॥ सु० ॥१५॥ राजानो सेवक एक जणो, सूची थावा हो बेठो तेणे ठाम के॥ सांजले धोबीनी वातकी, कहे नारीने हो तुं सांजल आम के ॥ सु० ॥ १६ ॥ ताहरा नाक कान वाढुं हुं तो, राजाने घरे हो एहवा थाये चयन के ॥ रावणे बार वरस लगे, सीता राखी हो कीधां मोटां फयन के॥ सु० ॥ १७ ॥ ते वगकी घर मांय बे, हुं तो नवि राखुं हो एहवी जे नार के ॥ ते सेवके वात सांजली, राय पासे हो विनवे तेणी वार के ॥ सु० ॥ १८ ॥ रामचंद्र मन चिंतवे, नारी माये हो कलंक चड्यो जेह के ॥ सीता सती माहरी खरी, पण एहनो हो उतारुं एह

के ॥ सु० ॥ १९ ॥ पांचमा खंड तणी कही, ढाल दशमी हो सुणजो नर नारी के ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय हो नित्य नित्य जयकारी के ॥ सु० ॥२०॥

दुहा.

रामचंद्र सीता प्रते, कहे एक दिन वात ॥ निंदा करे छे लोक सहु, कलंक चडावे नात ॥ १ ॥ तेहनो साच करो तुमे, पावकमां द्यो पग ॥ निंदा न थाये नातमां, वातो आवे वग ॥ २ ॥ सीता कहे साचुं कह्युं, लोकापवाद न जाय ॥ साहेब करशे ते सही, थानारो ते थाय ॥ ३ ॥ त्रणसें हाथ खाइ खणी, त्र्यों खेर अंगार ॥ राउ राणा जेगा मल्या, आव्या जोवा नर नार ॥ ४ ॥ नाइ धोइ सीता सती, पहेरी उत्तम चीर ॥ समरण करी साहेब तणो, संभार्यो इष्ट वीर ॥ ५ ॥ पावक मांही प्रवेश कर्यो, अगन फीटी थयो नीर ॥ अचरिज पाम्यां आदमी, धन धन एहनी धीर ॥ ६ ॥ धन धन एहना शीलने, धन धन एहनी जाति ॥ धन एहना मावित्रने, धन कुंवरी सुजाति ॥ ७ ॥ पावक मांहींथी नीकली, प्रगटी अगननी झाल ॥ सती सती मुख सहु कहे, देव वाणी ततकाल ॥ ८ ॥ पुष्पवृष्टि थइ तदा, जयजयकारनी वाण ॥ चरम शरीरी ते अछे, मुक्तिरूप निरवाण ॥ ९ ॥

ढाल अगीयारमी.

मयणरे हा सती—ए देशी.

उठरंगे सीता जणीरे हां,रामचंद रंग लाय॥ सुगुण सांजलो ॥ घाम्रा हाथी शणगारीया रे हां, गीत गान गवराय ॥ सु० ॥ १ ॥ सुखासने वेसारुीनेरे हां, आव्या निज घर मांय ॥ सु० ॥ शोक सरवे रीसे वलीरे हां, नीचुं मुख करी जाय ॥ सु० ॥ २ ॥ तेणे अवसर सीता सतीरे हां, विनवे निज पति पास ॥ सु० ॥ जो आज्ञा आपो तुमेरे हां, दीक्षा हरख उल्लास ॥ सु० ॥ ३ ॥ रामचंद्र सीता जणीरे हां, कहे वचन अमोल ॥ सु० ॥ न घटे एवुं वोलतांरे हां, राखो मोटो तोल ॥ सु० ॥ ४ ॥ स्वामि कर्म घणां अछेरे हां, ते क्षय करवा काज ॥ सु० ॥ तप जप करुं एक ध्यान-शीरे हां, आज्ञा आपो आज ॥ सु० ॥ ५ ॥ आज्ञा लीधी निज पतिरे हां, सहुशुं कीधी शीख॥ सु०॥ साधुना संजोगथीरे हां, उठरंगे लीधी दीख ॥ सु० ॥ ६ ॥ विहार कर्यो अन्य देशमांरे हां, पाले चारित्र पांच ॥ सु०॥पांच महाव्रत पालतांरे हां, पांच सुम-तिना संच ॥ सु०॥ ७ ॥ त्रण गुपतिने गोपवीरे हां, चार कषायने वार॥ सु० ॥ राग द्वेषने टालीनेरे हां, उतार्यो कर्मनो जार ॥ सु० ॥ ८ ॥ आयुस्थिति पूरी करीरे हां, मास

सलेखणा कीध ॥ सु० ॥ अंते अणसण आदरीरे हां, पहोती शिवपुर सीध ॥ सु० ॥ लक्ष्मणनो जीव नाए ॥ रामचंद्र पण नावथीरे हां, पोहोता सिद्धने गाम ॥ सु० ॥ लक्ष्मणनो जीव नारकीरे हां, कर्म तणां एह काम ॥ सु० ॥ १० ॥ लव ने कुश राज थापीयारे हां, सुख विलसे संसार ॥ सु० ॥ ए अधिकार एम जाणजोरे हां, सूत्र थकी निरधार ॥ सु० ॥ ११ ॥ बहु श्रुत होशे ते जाणशेरे हां, निर्बुद्धि शुं जाणे लोक ॥ सु० ॥ शास्त्र प्रमाणे कथा कहीरे हां, वांची जोजो थोक ॥ सु० ॥ १२ ॥ हीरविजय सूरिसरुरे हां, शुत्नविजय तस शिष्य ॥ सु० ॥ नावविजय नगते करीरे हां, सिद्धि नमुं निश दिस ॥ सु० ॥ १३ ॥ रूपविजय रंगे करीरे हां, कृष्णविजय कर जोरू ॥ सु० ॥ रंगविजयना रूपनेरे हां, नावे अवर कोइ होरू ॥ सु० ॥ १४ ॥ पांचमो खंरु पूरो थयोरे हां, ढाल अग्यारे रसाल ॥ सु० ॥ नेमविजयने नित्य प्रतेरे हां, होजो मंगल माल ॥ सु० ॥ १५ ॥

इति श्रीमिथ्यातूखंरून, रावणोत्पत्ति, सीताहरण, रामचंद्रमिलण, धर्मपरीक्षारासे पांचमो खंड संपूर्ण.

खंम ६ ठो.

दुहा.

मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग सुजाण ॥ ठहो अधिकार दाखवुं, मिथ्यामत अवर पुराण ॥ १ ॥

ढाल पहेली.

जाटणनी देशी.

विद्याधर कुंवर वेहु जणे, कीधां जोगीनां रूप ॥ पाटलीपुर मांहे सांचर्या, लोक जोवे अकल सरूप ॥ १ ॥ जाइ तुमे जोजो मिथ्यात वातडी ॥ ए आंकणी ॥ ब्रह्म-शालाए वेहु जण आवीया, कीधो जेरी घंटानाद ॥ कनक सिंहासन आरोहीयुं, द्विज आव्या करवा वाद ॥ जा० ॥ २ ॥ जोगी सिंहासन देखीने, विप्र कहे सुणो तमे वात ॥ वाद जीती वेसो आसने, नहींतो थाशे तुम तणो घात ॥ जा० ॥ ३ ॥ मनोवेग तिहां वोलीयो, नहीं गमे जो तुमने एम ॥ तो अमे उतरी हेठा वेसशुं, सहु सुख पामो द्विज तेम ॥ जा० ॥ ४ ॥ जट्ट वोले सुणजो जाइ तुमे, कोण वाद

करशो सुजाण ॥ शैव सांख्य बौध जैनना, जे जाणो ते बोलो वाण ॥ जा० ॥ ५ ॥ कोण देश कोण तुम गाम ठे, कोण जातिना कोण गोर ॥ कोण कारण इहां आवीया, सत्य कहो मांमीने धूर ॥ जा० ॥ ६ ॥ जोगी रूपे खगपति ते जणे, सांजलो द्विजवर तुमे सार ॥ वाद विवाद अमे जाणुं नहीं , केवा कहीए शास्त्र प्रकार ॥ जा० ॥ ७ ॥ आपणपो वेष अमे धर्यो, गुरु नवि दीगे कोय जोय ॥ गाम ठाम कुल जाति हुं कहुं, सुणजो द्विजवर वातो सोय ॥ जा० ॥ ८ ॥ ठ्ठा खंम तणी ए में कही, पहेली ढाल ए सोय ॥ रंगविजयनो शिष्य ते एम कहे, नेमनी आशा पूरण होय ॥ जा० ॥ ए ॥

ढाल बीजी.

आ चित्रशाली आ सुख सज्यांरे—ए देशी.

गुर्जर देश वंशवाडे सुणो गामरे, जरवाम वासो वसे अजिरामरे ॥ अम तणो पिता मांमण जरवामरे, ढालां ढाली गामर बहु धामरे ॥ १ ॥ ढालां गामरनो घणो ऊफाणोरे, सकल कुटुंब सुखीयो तुमे जाणोरे ॥ अमो गाडर रक्षक गोवालरे, गामर सहु राखुं वनमालरे ॥ २ ॥ एक दिवस पिता मांदो पमीयोरे, पुत्र सांजलो अमने ज्वर

चडीयोरे ॥ ठालां गाडर रक्षक तुमे जाउरे, सुखे करी घर निरवाउरे ॥ ३ ॥ मांरूण घरढे एम शीख दीधीरे, तात आज्ञा अमे मस्तक कीधीरे ॥ गारूर रक्षण गया अमे वेयरे, वम्हो नाइ हुं लघु नाइ एहरे ॥ ४ ॥ वन मांहीं गारूर राखुं तुं जेहरे, वनक्रीमा करीए वली नाइ वेहरे ॥ कोठ वृक्ष दीठो तिहां साररे, पाकां कोठ दीठां अपाररे॥ ५ ॥ लघु नाइने कह्युं में तामरे, गारूर मेंढां राखो तुमे जामरे ॥ कोठ तणां फल खाउं एहरे, तिहां लगे राखो ठालां तेहरे ॥ ६ ॥ कपीठ फल लावुं घणां तुमनेरे, क्षुधा तणी वेदन जाये अमनेरे ॥ गारूर वन नणी हांकी जायरे, तेम चारे जेम सुखीयां थायरे ॥ ७ ॥ मढां ठालां चारी लावजे इहांरे, पठे आपण वे मलशुं तिहांरे ॥ गारूर हांकी चाल्यो वन मांहींरे, कोठ खाशाने रह्यो हुं त्यांहिंरे ॥ ८ ॥ कोठ वृक्ष दीठो उत्तंगरे, चमवा शक्ति नहीं मुज अंगरे ॥ विचार्यो में वृक्ष घणो उंचोरे, चमाय नहीं हुं बुं नीचोरे ॥ ए ॥ कटी मांहींथी कातुं काढीरे, मस्तक निज हाथेशुं वाढीरे ॥ उंचुं ठेलीने मूक्युं हाथेरे, चडी वेतुं कोठा तणे माथेरे ॥१०॥ दांते नोमी खाधां घणां कोठरे, मुख नरायुं नवि आवे वेठरे ॥ जेम जेम माथे खाधुं कोठ वेठरे, तेम तेम पेट नरायुं हेठरे ॥ ११ ॥ तृप्ति पाम्यां मुज मस्तक देहरे,

पछी विचार कर्यो में एहरे ॥ नाइ काजे फल घणां जोयेरे, दांते चुंटी नाख्यां नूमि सोयरे ॥ १२ ॥ देह बले वृक्ष धंधोव्यो जामरे, मस्तक लाग्युं आवी निज ठामरे ॥ माथुं धरु हुवा बेउ एकरे, पोटली कोठ बांध्यां वली ठेकरे ॥ १३ ॥ कोठ गांठमो मस्तक लेइरे, वन मांहीं नाइ जोयो फरी तेहीरे ॥ जोतां थकां दीठो लघु नातरे, सूतो निद्रानर तेहशुं जातरे ॥ १४॥ साद करी उठाड्यो नाइरे, गामर क्यां ठेरे किहां जाइरे॥ लघु नाइ नणे बांधव तुमे सुणजोरे, क्षुधा दोष मुज उपन्यो गणजोरे ॥१५॥ तरुवर तले सूतो हुं जामरे, मेंढां न जाणुं गया कोण ठामरे॥ बेहु नाइ मली जोयां वन मांहींरे, नहीं दीठां गामर अज त्यांहींरे ॥ १६ ॥ मन नयनीत हुवो हुं जामरे, लघु नाइने कहुं बुं तामरे ॥ सांनल नाइ आपणो पितारे, कोप करशे आपणने नी-तारे ॥ १७ ॥ माता आपणी जूठी बहु अछेरे, मंदिर पेसवा नहीं दीए पछेरे ॥ वारु विचार घटे बे एहरे, आपण जइए परदेश बेहेरे ॥ १८॥ पेट नरवानी परेज कीधीरे, मस्तक मुंडावी दीक्षा लीधीरे ॥ कंठ कंठा काने मुद्रा कीधरे, हस्त दंम धर्यो हुवा एम सिद्धरे ॥ १९ ॥ देश विदेशे निक्षाने नमतांरे, एणी परे काल बेहु निगमतारे ॥ पाटलीपुरमां फरता आव्यारे, जोतां देखी नूमिका फाव्यारे ॥२०॥ वादशालाने

देखी हरख्यारे, भेर घंटा वजामी परख्यारे ॥ कोडे वजाड्यां अमे वाजांरे, सिंहासन वेठा न रही माजारे ॥ २१ ॥ द्विजवर वादी वोले छे एमरे, खोटा मांहेला दीसो छो तेमरे ॥ माया कपटी जूठावोलारे, तुम तोले आवे कोइ गोलारे ॥ २२ ॥ छठा खंम तणी ढाल वीजीरे, श्रोता सहुको कहेजो जीजीरे ॥ रंगविजयनो शिष्य कहे वारुरे, नेमविजय कहे श्रोता सारुरे ॥२३॥

डुहा.

मनोवेग तव वोलीयो, सांजलो जाइ जट्ट ॥ स्मृति पुराणे जे कह्युं, नवि सांजल्युं तुमे कट्ट ॥ १ ॥ विप्र वादी तव बोलीया, कहेरे किहां छे एम ॥ ढींक पाटुए करशुं जाजरा, जो खोटुं कहेशो तेम ॥ २ ॥ स्मृति पुराण जाण्यां घणां, प्रमाण शास्त्र वली वेद ॥ जोग जुगति वली जाखतां, अमे न धरवो खेद ॥ ३ ॥

ढाल त्रीजी.

वे वे मुनिवर वहिरण पांगर्यारे—ए देशी.

वेषधारी मनोवेग वोलीयोरे, सांजलो विप्र विचाररे ॥ साचां वचनरे मुजने वोलतांरे, खेद नवि करवो लगाररे ॥ दं० ॥ १ ॥ दशमुख रावण राणो जाणीएरे, सवल शरीर अपार-

रे॥ त्रिभुवन धणी थावाने कारणेरे, उपाय रचे तेणी वाररे ॥ द० ॥ २ ॥ ईश्वरने जावे जो आराधीएरे, तो आपे त्रिभुवन राजरे ॥ एम मनमां विचारीने गयोरे, हर प्रासादे करवा काजरे ॥ द० ॥ ३ ॥ एक दिन ईश्वरनी पूजा करीरे, आराधे अतिही चंगरे ॥ नव मस्तक हस्ते छेदी करीरे, पूज्युं ईश्वरनुं लिंगरे ॥ द० ॥ ४ ॥ एक मस्तक राख्युं धड उपरेरे, नवि कीधी एह तणी पूजरे ॥ ईश्वर तो मुजने त्रसे नहींरे, केशुं करुंरे अबुजरे ॥ द० ॥ ५ ॥ नव शिरकमले शंकर अरचीयारे, लोचनकमल अढाररे ॥ ईश्वरे वरदान नहीं आपीयोरे, कशो वली करुं हुं विचाररे ॥ द० ॥ ६ ॥ रावणे निज बांहीं सघला छेदीयारे, नस काढी वली देहरे ॥ रावणहथो बांधी तेणे कीयोरे, नसा जाली गुंथी तेहरे ॥ द० ॥ ७ ॥ सा री ग म प ध नी सरस जलीरे, तान मान ध्यान उल्लासरे ॥ गीत गान गाये अति घणुं रे, छ राग छत्रीशे जासरे ॥ द० ॥ ८ ॥ तांडव नाटिक नृत्य करे वलीरे, गीत तणो उछले घोषरे ॥ ईश्वर तव मनमां उलस्यारे, पाम्या अतिही संतोषरे ॥ द० ॥ ९ ॥ चौद चोकडी राज जोगवोरे, मस्तक मलजो ठामरे ॥ रामायण वाल्मिके एम बोलीयुंरे, अन्य पुराणे वली तामरे ॥ द० ॥ १० ॥ विप्र वचन वलतुं बोलीयारे, सांभल जाइ अम तणी वाचरे ॥ पुराण प्रसिद्ध रावण तणीरे, कथा कही ते साचरे

॥ द० ॥ ११ ॥ नव मस्तक छेदी हस्ते करीरे, पूज्युं ईश्वर तणुं लिंगरे ॥ चौद चोकमी राज्य आप्युं खरुं रे, माथां वलग्यां तेह तणां अंगरे॥ द०॥ १२॥ रावणहथो राजाए करीरे, गीत गान नृत्य कीधरे ॥ हर तुठ्या ते अमे सुएयुं वणुंरे, पुराण मांही छे प्रसिद्धरे ॥ द० ॥ १३ ॥ मनोवेग तव एवुं बोलीयोरे, सांजलो द्विजवर एहरे ॥ नव शिर चोठ्यां जो रावण तणांरे, तो एक शिर लाग्यो मुज देहरे ॥ द० ॥ १४ ॥ मनोवेग वली एम बोलीयोरे, सांजलो विप्र विचाररे ॥ तापस सघले ईश्वर आपीयोरे, लिंग पड्युं तेहज साररे ॥ द० ॥ १५ ॥ईश्वरे वलता ऋषिवर आपीयारे, तापस लिंग पड्यां साररे ॥ पर मरणादिक डुःख टालीएरे, आपण सहीए अपाररे ॥ द० ॥ १६ ॥ अपर कथा पुराणनी सांजलोरे, विप्र करोरे विचाररे ॥ मस्तक मात्रज जे वली उपन्योरे, दधिमुख नामे कुमाररे ॥ द० ॥ १७ ॥ छहा खंरू तणी ढाल त्रीजीएरे, वात कही सुविचाररे ॥ आगल सहुको साजन सांजलोरे, नेमविजय कहे विस्ताररे ॥ द० ॥ १८ ॥

डुहा.

श्रीकंठ नगर सोहामणुं, विप्र वसे तिहां एक ॥ तेहनी ब्राह्मणी रुयमी, दधिमुख

सुत विवेक ॥ १ ॥ मस्तक जणीयुं केवल, देह नहीं ते सार ॥ दधिमुख वेद पुराण जणे, नगर प्रसिद्ध कुमार ॥ २ ॥ पुण्य दान दिन दिन करे, पिता तणे घर रहे रंग ॥ अगस्त्य ऋषि तव आवीयो, दधिमुख मंदिर चंग ॥ ३ ॥ मान सनमान दीधां घणां, अभ्यादे करीय प्रणाम ॥ पवित्र मंदिर आज अम तणो, बोले दधिमुख जाम ॥ ४ ॥ विनय करी कहे पग धुई, भोजन करो ऋषिराय ॥ जनम सफल होये अम तणो, तुम दरशने सुख थाय ॥ ५ ॥

ढाल चोथी.

आज हजारी ढोलो प्राहुणो—ए देशी.

अगस्त्य ऋषि बोल्या एशुं, सांभलो दधिमुख तुमे वाण ॥ साजन मारा हे ॥ विनय विवेकी तुज समो, नहीं दीठो कोइ सुजाण ॥ साजन मारा हे ॥ श्रोता सुणजो एक मना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दधिमुख तुं छे कुंवारडो, नारी परण्यो नहीं सार ॥ सा० ॥ कुंवाराने घेर जमवो नहीं घटे, अघटतो दीसे आचार ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ २ ॥ दान देवा नर योग्य ते, जेहने घरे नारी होय ॥ सा० ॥ स्त्री विना दान पुण्य नहीं, स्मृति श्लोक एहवो जोय ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ३ ॥

श्लोकः—दानयोग्यो गृहस्थश्च, कुमारो न क्षमो जवेत् ॥
दानधर्मक्षमः साधु– र्गृहीणी गृहमुच्यते ॥ १ ॥

एम कहीने अगस्ति गया, दधिमुख तव निज गेह ॥ सा० ॥ आदर कर्यो विवाह तणो, मात तात परणावे वेह ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ४ ॥ पिता कहे पुत्र तुमे सुणो, कन्या नवि दीए विप्र कोय ॥ सा० ॥ परण्या विना जोजन तणो, दधिमुख निम लीधो सोय ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ५ ॥ मातपिता शोक उपन्यो, तेह नगरे विप्रज एक ॥ सा० ॥ डुर्वलने धन आप्युं घणुं, तेहनी पुत्री परणी विवेक ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ६ ॥ विवाह करी घरे आवीया, घरे डव्य नहींरे लगार ॥ सा० ॥ चार माणस घर खरच घणो, पिता तव कहे तेणी वार ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ७ ॥ दधिमुख सुत तमे सांजलो, वित्त खरच्युं अमे विवाह ॥ सा० ॥ अमे उद्यम हवे नहीं थाये, तुमे करो खर्च निर्वाह ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ८ ॥ दधिमुख कहे कामनी सुणो, मातपितानो अपमान ॥ सा० ॥ घर रहेवा घटतुं नथी, जो होय हइयामां सान ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ए ॥ दधिमुख शिर सीके धर्युं, तेह नारी लेइ चाली ताम ॥ सा० ॥ देश नगर गामे सांचरे, पतिव्रता नारीनो नाम ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १० ॥ जरतार जगति घणी करे, सती

जाणीने सहु लोक ॥ सा० ॥ धण कण दान दीये घणुं, सुख पाम्यां दोये गयो शोक ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ११ ॥ भमतां भमतां उजेणी गया, द्यूतनी शाला मोझार ॥ सा० ॥ जुआरी घणा जुवटे रमे, तिहां लावी तेह भरतार ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १२ ॥ सीकुं खुंटे बांधीने गइ, सती हाट शेरी भिक्षा काज ॥ सा० ॥ एहवे जुआरीने क्रुद्ध हुवो, खड्ग हण्यो द्यूतराज ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १३ ॥ शिर तुटी भूमिए पड्युं, सीकुं छेदाणुं वली ताम ॥ सा० ॥ दधिमुख पुण्य प्रगट थयुं, मस्तक लाग्युं धड ठाम ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १४ ॥ अन्य कबंध शिरपर तणुं, दधिमुख निपन्यो एह ॥ सा० ॥ विप्र कहो केम नवि मिले, मुज शिर मुज तणो देह ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १५ ॥ छट्ठा खंडनी ढाल चोथीए, विवेक तणी कही वात ॥ सा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजयने सुख सात ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १६ ॥

दुहा.

ब्राह्मण कहे जोगी सुणो, सत्य वचन तुम एह ॥ स्मृति पुराणे अमे सांभल्युं, खोटुं कहीए केम तेह ॥ १ ॥ खग कहे अपर वली सुणो, रावण लाव्यो हरी सीत ॥ हनुमंत अंगद मोकल्यो, रामे विस्टाली प्रीत ॥ २ ॥ वाली पुत्र अंगद भलो, बोल्यो

मोटा वोल ॥ रावणे रीसे मारीयो, खड्गे कीधो बे तोल ॥ ३ ॥ अंगद फाडी दोय फाडीयां, हनुमंते लीधां वेह ॥ वनमां आणी सांधीयां, लाग्यो तेहनो देह ॥ ४ ॥ पुनरपि ते वली जीवीयो, अंगद अपूरव जेह ॥ माहरुं मस्तक मुज धड चड्युं, केम न मले मुज तेह ॥ ५ ॥

ढाल पांचमी.

चोपाइनी देशी.

अपर कथा ब्राह्मण तुमे सुणो, संबंध कहुं पुराण तुम तणो ॥ दानवपति ते दशरथ नाम, बे नारी तेहने अभिराम ॥ १ ॥ पुत्र पाखे ते दुःखीयां थया, ईश्वर भणी ते बणे गयां ॥ महादेवनी मांडी भक्ति, आराधे पूजे बहु युक्ति ॥ २ ॥ महादेव तव तुठ्या तेह, पुत्र होशे तुमारे देह ॥ मुज लाडु भरीयो छे एक, भक्षण भामनी करो विवेक ॥ ३ ॥ में वरदान दीधो छे आज, पुत्र होशे तुमारे काज ॥ घर निज लइ गया लाडु तेह, बे फाडी कीधो वली एह ॥ ४ ॥ भामनी बेहुने वेंची दीध, भार्याए ते भक्षण कीध ॥ गर्भ रह्या बेहुने वली ताम, नव मास वाडा गया ते जाम ॥ ५ ॥ एके दिवसे ते बेहु जण्या, अरधो अरध अंग तेहज भण्यां ॥ जइ

संजळाव्यो दशरथ तात, पुत्र एक दोय खंरुज जात ॥ ६ ॥ बापे दीधी आज्ञा तेह, लेइ नाखो वनमां एह ॥ माताने तव उपन्यो नेह, जोर करी संधाड्यो देह ॥ ७ ॥ जरासंध परख्यो वळी तेह, जोरे बंधाणो तेहज देह ॥ जरासंध ते नामज धर्युं, नारायणाशुं वेरज कर्युं ॥ ८ ॥ सबल संग्रामे ते कुफार, शरीर मळ्युं बे खंरु अपार ॥ तेम मुज माथुं माहरे देह, एह वातनो नहीं संदेह ॥ ए ॥ अपर वळी कहुं सांजलो वात, शास्त्र पुराणे तेह विख्यात ॥ ईश्वर मोटो सबलो देव, पारवती नारीशुं टेव ॥ १० ॥ उमीयाने जोगवतां गयां, सहस वरस देवतानां थयां ॥ सुर सघलाने चिंता थाय, केम करीशुं आपण जाय ॥ ११ ॥ पुत्र उपजशे एहनो जेह, सबल संतापी होशे तेह ॥ देव दानवने करशे तारु, जगत् जगरुशे ते महा पाप ॥ १२ ॥ तो आपण हवे करीए एम, जोग दिजोग उपाइए तेम ॥ देव मळी विचार ए कीध, गोरी बांधवने आज्ञा दीध ॥ १३ ॥ विश्वानर तुमे विश्वना देव, सुर नर करे तुमारी सेव ॥ पार्वतीना जाइ जणी, काज आवो सहु देवज तणी ॥ १४ ॥ ईश्वर जोग करो अंतराय, तो सहुने सुख हर्षज थाय ॥ अग्निदेव तेणे मान्यो बोल, उमीया ईश तिहां गयो निटोल ॥ १५ ॥ जइ खोंखारो बाहीर जाम, विघन उपन्युं वीर्य खलतां

ताम ॥ पार्वती उठी तेणी वार, जाइ देखी लाजी अपार ॥ १६ ॥ ईश्वरने बहु कोपज चड्यो, लष्टि मुष्टि विश्वानर पड्यो ॥ साला माटे मार्यो नहीं, मुख धररे वीर्य मूकुं सही ॥ १७ ॥ वीर्य पृथ्वी रेलाइ सहु, ते माटे मुख धररे कहुं ॥ तव विश्वानरे मुख ते धर्युं, उदरे वीर्य सघलुं सांचर्युं ॥ १८ ॥ वीर्य बले तव कोढी थयो, अग्निदेव ते दुःखीयो जयो ॥ ऋषिपत्नी तव गंगा जइ, स्नान करी आवे ते सही ॥ १९ ॥ नारी कार्तिका तेहनो नाम, अग्नि सगरूीए तापे छे ताम ॥ वीर्य काल्युं मुख मांही थुंक, योनि संचार्युं मांहीं फुंक ॥ २० ॥ गर्भ वाधे हवे नारी तणो, ऋषिए जाएयो नहीं आपणो ॥ पेट मांहींथी काढी करी, सर्वेण वनमां मूक्यो धरी ॥ २१ ॥ गर्भ तणा छ कटका तेह, एकठा मेली कीधो देह ॥ कार्तिकेय हुवो तस नाम, षड्जनमा बीजो अभिराम ॥ २२ ॥ षड्मुख नाम कहे ते सहु, षड्मातुर जाणे ते बहु ॥ छ कटका तस देहज मले, तो मुज शिर धडसें नवि मले ॥ २३ ॥ छठा खंडनी पांचमी ढाल, सांभलजो तमे बाल गोपाल ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजयनो वयण सद्दहे ॥ २४ ॥

दुहा.

अपर कथा तुमे सांजलो, गोरीनंदन गणपत ॥ पार्वती एक अवसरे, मज्जन करवा निमित्त ॥ १ ॥ अंग मेल उतारवा, सखी संघाते बेठ ॥ अंग उगटणो घणो, पुरुष निपायो तेठ ॥ २ ॥ गणेश रूप करी थापीयो, जीवतो कीधो तेह ॥ खड्ग आप्यो निज हाथमें, समजावे वली जेह ॥ ३ ॥ बेसाड्यो ते बारणे, चोकी करवा काज ॥ अवर म देजे आववा, नावा बेठी आज ॥ ४ ॥ ईश्वर आव्या उतावला, बेठो दीठो तेह ॥ अन्योअन्य पूछे फरी, कोण तुं माहरे गेह ॥ ५ ॥

ढाल छठी.

चोपाइनी देशी.

गणेश बोल्यो तव कोण छे तुं, घरमां पेसण नहीं देउं हुं ॥ तव ते लाग्यो जुरू अपार, गणेश ईश्वर जुऊे जुऊार ॥ १ ॥ तव ते ईश्वर कोपे करी, खड्गे मार्युं मस्तक धरी ॥ उमी गयुं मस्तक ते तणुं, ब्यासी जोजन पोच्युं घणुं ॥ २ ॥ ईश्वर तव आव्या घर मांहीं, पार्वती नाहे छे त्यांहीं ॥ केम स्वामि आव्या इहां ईश, द्वारपाल मार्यो में रीस ॥ ३ ॥ पार्वती बोल्यां जगदीश, एह पाप शुं कीधुं ईश ॥ पुत्र माहरो

मार्यो तुमे, नहीं बोलुं हवे तुमशुं अमे ॥ ४ ॥ पुत्र हत्या लागी तुज हाथ, ए अघटतुं कीधुं काज ॥ पुत्र हत्यारा घरथी जाय, काला मुखवालो केम थाय ॥ ५ ॥ जो जीवंतो करशो एह, तो तुमशुं धरीशुं स्नेह ॥ ईश्वर तव आवी जोये बार, धरू दीठुं एकलुं तेणी वार ॥ ६ ॥ खेत्रपालने तव दीधी शीख, जोइ लावो गणपतिनुं शीश ॥ खेत्रपाल जोवे जग मांहीं, नवि देखे मस्तक वली कयांहीं ॥ ७ ॥ गाम गाम जोयुं ते मुंरू, नवि दीसे गणपतिनुं तुंरू ॥ मुआ हस्तीनी आणी सुंढ, चोडी गणेश तणे जे रुंरू ॥ ८ ॥ गजवदन हुवो तसु नाम, जीवतो हुवो तेहज ताम ॥ मिथ्याति सहु पूजे लोक, एह वचन साचां के फोक ॥ ए ॥ विप्र सांजलो एहज साच, अमारी नहीं मानो तुमे वाच ॥ आपणुं वचन आपणने गमे, बाकी सहु ते फोके धमे ॥१०॥ शूद्र अन्य अग्राह्य एम कहे, घृत पक्क ते सहुने ग्रहे ॥ द्विजवर सहु ते जांखा थया, मौन धरीने वलता रह्या ॥११॥ ब्राह्मण एक बोल्यो वली एम, धूर्त बेहु दीसो छो तेम ॥ तुमे कह्या ते मान्या सहु, एक संदेह छे अमने बहु ॥ १२ ॥ कोठ उपरथी खाधां मुंरू, हेठुं केम धरायुं रुंरू ॥ पर खाय ने पर केम ध्राय, एह वात केम घटती थाय ॥ १३ ॥ मनोवेग तव बोल्यो वाण, सांजलो बारूव तुमे अजाण ॥ इह लोके विप्र

भोजन करे, परलोके पूर्वज तृप्ति धरे ॥ १४ ॥ मातपिता सहु मुवा घणां, चोराशी लाख जोनिए जएयां ॥ काल घणो हुवो छे तेह, न जाणीए अवतरीया केह ॥ १५ ॥ अर्ध पक्कना पंदर दीस, संवछरी छमासी त्रीस ॥ ब्राह्मण सगां जमे छे सहु, ते पामे पूरवज वली बहु ॥ १६ ॥ पितर जवांतर पाम्या जेह, विप्र सगां जमतां पामे तेह ॥ तो मुज माथुं कोठां खाय, मारुं पेट कहो केम न जराय ॥ १७ ॥ छठी ढाल खंड छठा तणी, एहवी वात ते द्विजवर सुणी ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजयनी वात एम रहे ॥ १८ ॥

दुहा.

ब्राह्मण सहु हाथ जोडीया, बोले वचन अनाथ ॥ जीत्यो जीत्यो मुखथी वदे, हार्या अमे जगनाथ ॥ १ ॥ तुम साथे अमे बोलतां, नथी पुरवतो कोय ॥ साचा संघाते केम घटे, स्मृति पुराणे होय ॥ २ ॥ वाद जीती वनमां गया, मित्र बेहु आणंद ॥ पवनवेग कहे नाइ सुणो, मिथ्या पुराण कह्यो वृंद ॥ ३ ॥ ते में खोटां जाणीयां, जिनवचननो नहीं भेद ॥ तेह कथा कहो निरमली, मिथ्या कथा करो छेद ॥ ४ ॥

ढाल सातमी

आंगण वावुं एलचीरे, परुवे नागरवेल, धणरा ढोला—ए देशी.

मनोवेग तव वोलीयोरे, सांजलो मित्र सुजाण ॥ मतरा लोन्नी ॥ रावण आदे देइ कहुंरे, जिन जावित सुख खाण ॥ म० ॥ १ ॥ मानो मानोरे सुगुण कहीयो मानो, माहारी एक अरदास ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ मेघवाहन अनुक्रमे हुवारे, लंका-पति नरेश ॥ म० ॥ संख्या पार न पामीएरे, कहुं शास्त्र लवलेशरे ॥ म० ॥ मा० ॥ २ ॥ रतनश्रवा लंका धणीरे, केकै जसी राणी राय ॥ म० ॥ रावण पुत्र ते अवतर्योरे, सुर नर सेवे पाय ॥ म० ॥ मा० ॥ ३ ॥ मय विद्याधर पुत्री न्नलीरे, मंदोदरी रूपनी खाणी ॥ म० ॥ ते आदे रावण परणीयोरे, अढार सहस्र घर राणी ॥ म० ॥ मा० ॥ ४ ॥ हय गय रथ सुजट तणोरे, चक्रीनो अरधो मान ॥ म० ॥ प्रतिनारायण आठमोरे, जिन पूजे दीये दान ॥ म० ॥ मा० ॥ ५ ॥ हार प्रन्नावे नव मुख होयेरे, मुलगुं एकज देह ॥ म० ॥ दशमुख नाम हारे करीरे, लोक मांहीं हुवो तेह ॥ म० ॥ मा० ॥ ६ ॥ राम नारी सीता हरीरे, राम रावण हुवो संग्राम ॥ म० ॥ रावणनुं दल न्नांजीयुंरे, राम सुन्नटे फेड्यो ठाम ॥ म० ॥ मा० ॥ ७ ॥ लक्ष्मणे मार्यो लंकापतिरे, नरक चोथी

गयो तेह ॥ म० ॥ अनागत चोवीशीए जिन होशेरे, पंच कल्याणक गेह ॥ म० ॥ मा० ॥ ८ ॥ जैन रामायण मांही कहीरे, विस्तारपूर्वक कथा राम ॥ म० ॥ दधिमुख कथा तिहां जाणजोरे, बीजा अधिकार मांही ताम ॥ म० ॥ मा० ॥ ए ॥ ईश्वर लिंग तणी कथारे, बीजे अधिकारे कह्यो जेद ॥ म० ॥ जिन-मत शिवमत बेहु तणेरे, ते जोइ करजो जेद ॥ म० ॥ मा० ॥ १० ॥ जरासंधनी उत्पत्ति सुणोरे, संखेपे कहुंरे विचार ॥ म० ॥मगध देश राजग्रहीरे, नृप हुवा संख्या न पार ॥ म० ॥ मा० ॥ ११ ॥ हरिवंशे मुनिसुव्रत हुवारे, तेहज अनुक्रमे जाण ॥ म० बृहद्रथ राजा रुयमोरे, श्रीमती राणी गुणखाण ॥ म० ॥ मा० ॥ १२ ॥ जरासंध सुत उपन्योरे, अरध चक्री तुमे एह ॥ म० ॥ कालिंदी आदि करीरे, सोल सहस्र गुण गेह ॥ म० ॥ मा० ॥ १३ ॥ कालयवन आदे करीरे, पुत्र हुवा महा शूर ॥ म० ॥ अश्व करि रथ सुजट जलारे, त्रिखंड लक्ष्मी जरपूर ॥ म० ॥ मा० ॥ १४ ॥ आठ विद्याधर प्रतिहरिरे, जूचर नवमो जरासंध ॥ म० ॥ कुरुक्षेत्रे संग्राम हुउरे, नारा-यणे छेद्यो कंध ॥ म० ॥ मा० ॥ १५ ॥ त्रीजी पृथ्वी गया ते दोइरे, होशे तीर्थंकर देव ॥ म० ॥ पवनवेग विचारजोरे, शास्त्र कह्युं में संखेव ॥ म० ॥ मा० ॥ १६ ॥

सातमी ढाल रुडा खंरुनीरे, सुणजो सहु नर नार ॥ म० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमने हर्ष अपार ॥ म० ॥ मा० ॥ १७ ॥

डुहा.

गणेश कर्यो देहमेलनो, केम आव्यो जीव मांही ॥ सप्त धात केम नीपजे, समजावो मुज आंही ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांजलो, गणेश संबंध अधिकार ॥ जिनशासन मतमां घणो, सुणजो ते सुविचार ॥ २ ॥ अयोध्या नगरी अनोपम कही, रामचंद्र नामे राय ॥ तेहनो हस्ती मद जर्यो, मुनि पुंठे मारण धाय ॥ ३ ॥ समीपे आव्यो जेहवे, मुनि देखी उपसंत ॥ पूरव जव मुनीश्वरे कह्यो, सुणतां उपनी खंत ॥ ४ ॥ जातिस्मरण गज उपन्यो, वैराग पाम्यो अजिराम ॥ मुनि पासे व्रत उचर्यां, द्वादश जिनमत ताम ॥५॥ फासु आहार करे निरमलो, फासु जल पीए ताम ॥ लोक मांहीं जस वाध्यो घणो, वेठो रहे एक ठाम ॥ ६ ॥ धर्मथी सामी सहु कर्या, थाप्यो विनायक नाम ॥ संयम पाली निरमलो, गज मरी देवलोक ठाम ॥ ७ ॥ ते लोक मांहीं व्यापीयो, गणेश विनायक नाम ॥ विपरीत रूप करी सहु, पूजे राखी धाम ॥ ८ ॥ सिद्धि बुद्धि नामे नारी दो, लख लाज दो पुत्र ॥ मूढ मिथ्याति मानवी,

मागे घरनां सूत्र ॥ ए ॥ अढार दोषथी वेगला, वीतराग गुणवंत ॥ तेहने पूज्ये पामीए, सुगति सुख अनंत ॥ १० ॥ पवनवेग तुमे सांभलो, कार्तिकेय वृत्तांत ॥ जिन-वचने जेम भाखीयुं, एक मना सुणो शांत ॥ ११ ॥

ढाल आठमी.

सुविवेक विचारी जुउ, जुउ वस्तु स्वभाव—ए देशी.

कार्तिकपुर नगर भलुंजी, अगनिदश नामे बे राय ॥ विमलमति ते भामनीजी, उमीया सरखी काय ॥ पवनवेग जाणजो जैन विचार, करजो मिथ्यात परिहार, पव-नवेग ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कृतिका पुत्री रूयमीजी, रूपे रंभ समान ॥ अष्टानिका व्रत आचरीजी, महोत्सव नृत्यज ग्यान ॥ प० ॥ २ ॥ श्रावक साथे सहु घणाजी, राजा गयो वन मांहीं ॥ नवण कीधां जिनवर तणांजी, उपवास अष्टमी त्यांहीं ॥ प० ॥ ३ ॥ कार्तिका गंधोदक लेइजी, पिता भणी आवी ताम ॥ तात वांदो ए निरम-लुंजी, शेष लेजो जिन स्वाम ॥ प० ॥ ४॥ शरीर देखी पुत्री तणुंजी, रूपे मोह्योरे राय ॥ कामबाणे करी ताम्रीयोजी, नृपचित्त विह्वल थाय ॥ प० ॥ ५ ॥ राजसभाए आवी करीजी, खट् दर्शन तेमी लोक ॥ शैव सांख्य बौध पूबीयाजी, भट्ट सन्यासीना थोक ॥ प० ॥ ६ ॥ मुज

मंदिर रतन उपज्युंजी, कहेजो केनुंरे तेह ॥ प्रत्येक पंच दरशनी कहेजी, राजा तणुं होय एह ॥ प० ॥ ७ ॥ मुनि पूछ्या जिन दरशनीजी, कहो जति केहनो स्त्रीरत्न ॥ मुनिवर वोल्या नृप सुणोजी, जैन मारग कह्यां यत्न ॥ प० ॥ ८ ॥ चौद रतन विचार घणोजी, सात चेतन शुद्ध होय ॥ अचेतन सात जाणजोजी, घर उपन्युं स्त्रीरतन जोय ॥ प० ॥ ए ॥ वचन सुणी नृप कोपीयोजी, निंद्या तिहां मुनि तेह ॥ देशे न रहेवुं अम तणेजी, जाजो सहु जैन ठेह ॥ प० ॥ १० ॥ मुनिवर तिहांथी चालीयाजी, दक्षिण देश मोझार ॥ पापी राजा परणीयोजी, पुत्री कीधी घर नार ॥ प० ॥ ११ ॥ अग्नीश कामांधो थकोजी, पुत्रीशुं नोगवे नोग ॥ गर्न रह्यो कृतिका उदरेजी, जनक तणे संनोग ॥ प० ॥ १२ ॥ पूरे मासे सुत जनमीयोजी, कार्तिकेय तेहनुं नाम ॥ रूपे सहु लोक रंजीयाजी, महोत्सव कीधो अनिराम ॥ प० ॥ १३ ॥ पुत्री जणी एक निरमलीजी, वीरमति नामे सार ॥ रूप सोनागे आगलीजी, कार्तिकेय सम मनोहार ॥ प० ॥ १४ ॥ क्रौच नाम नरपति नलोजी, रोहीरू नयरनो राय ॥ वीरमती परणावी तेहनेजी, महोत्सव करी उठाह ॥ प० ॥१५॥ क्रौच परणी निज गामे गयोजी, वीरमतीने लेइ ताम ॥ कार्तिकेय नणवा मूकीयोजी, गुरु पासे पढी शास्त्र जाम

॥ प० ॥ १६ ॥ नीशालीआ ते अनेक जणेजी, सहु साथे रमे वली तेह ॥ एक दिवस सुखडी आवीजी, मोशालथी घणी जेह ॥ प० ॥ १७ ॥ लाडु खाजां अति घणांजी, मेवा मीठाइ अपार ॥ वस्त्र आजूषण जंपतांजी, पहेर्यां सघले तेणी वार ॥ प० ॥ १८ ॥ सुखडी वेहेंची आप आपणीजी, नीशालीए अनेक ॥ कार्तिकेय जाइ तुमे लेउजी, मोशालनी ढे प्रत्येक ॥ प० ॥ १९ ॥ कार्तिकेय कोमामणोजी, वर्ष चौदनो कुमार ॥ घरे आवी वेगे पूढीयुंजी, मुज कहो माय विचार ॥ प० ॥ २० ॥ अमने मोशालनी सुखडीजी, नवि आवे कांइ माय ॥ अश्रुपात माताए कर्योजी, मन मांहे दुःख घणुं थाय ॥ प० ॥ २१ ॥ कृतिका बोले सुत सांजलोजी, कर्म काणी कहुं केम ॥ घाट न आवे कहेतां वणुंजी, पूढीश मां वली तेम ॥ प० ॥ २२ ॥ सुत बोल्यो माता सुणोजी, तो जमशुं अमे आज ॥ जेवुं होय तेहवुं कहोजी, मुज आगल ढोडी लाज ॥ प० ॥ २३ ॥ माता कहे तुज तणो पिताजी, मुज बाप तेहज होय ॥ अन्याय कीधो राजाए घणोजी, बाप बेहुनो सोय ॥ प० ॥ २४ ॥ ढहा खंडनी आठमीजी, ढाल कही सुविशाल ॥ रंगविजयनो शिष्य कहेजी, नेमविजय मंगल माल ॥ प० ॥ २५ ॥

दुहा.

कार्तिकेय नंदन कहे, सांजलो मोरी माय ॥ काम निवार्यो कोणे नहीं, एहवो जे अन्याय ॥ १ ॥ अघट मान एणे कीयो, को नहीं हुवो तव धर्म ॥ पापी अन्यायी जीवमा, ते बांधे निज कर्म ॥ २ ॥ मात कहे सुत सांजलो, मुनिवर जे गुरुराय ॥ तेणे घणी परे प्रीठव्यो, तोही कीधो अन्याय ॥ ३ ॥

ढाल नवमी.

वर वाघेलो वाळीए उतर्यो—ए देशी.

कार्तिकेयरे कहे माता सुणो, किहां ठे मुनिवर वली तेहरे ॥ जननी वोलेरे सुतजी सांजलो, जैन मुनिवर हता जेहरे ॥ साजन सहुकोरे सुणजो एक मना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तुज पिताएरे ते निरघाटीया, इहांथी गया दक्षिण देशरे ॥ जिहां तुज तात-नी आण फरे नहीं, लोक सहु जिनधर्म शीशरे ॥ सा० ॥ २ ॥ मात कहो ते आचार केहवो, जेहनो आवो निरमल धर्मरे ॥ राजा अन्यायेरे जेणे वारीयो, दूषण रहित करे ठे कर्मरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ कुमरने मात कहे तुमे सुणो, चोवीश परिग्रहथी ते

दूररे ॥ निर्ग्रंथ साचा ते गुरु जाणीए, मोह मद टालण ते कह्या शूररे ॥ सा० ॥ ४ ॥ उंघो मुहपत्ति माला कर धरे, तप जप संजमनां ते गेहरे ॥ दोष बेंतालीश टाली आहार करे, अंतराय बत्रीश पाले तेहरे ॥ सा० ॥ ५ ॥ वचन एहवांरे सुणी माता तणां, वैराग उपन्यो सुतने अंगरे ॥ क्षमा करीने तिहांथी नीकल्यो, मुनिवर गुरुने जोवा रंगरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ दक्षिण देश कार्तिकेय गयो, वांद्या जइने मुनिना चरणरे ॥ दीक्षा मागे श्रीगुरुनी कने, संसारसागर स्वामि तरणरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ गुरु तव बोल्या वत्स तुमे सांभलो, दीक्षा मारग डुक्कर तेहरे ॥ तुमे छो बालक लघुमतिना धणी, नवि संचवाए साधुपंथ जेहरे ॥ सा० ॥ ८ ॥ अति आग्रह करी संजम लीयो, चारित्र आचर्युं पांच प्रकाररे ॥ गुरुनी सेवा शास्त्र भणे घणां, राग द्वेष तजीने अहंकाररे ॥ सा० ॥ ९ ॥ कृत्तिका नारी पुत्रविजोगथी, आरत ध्याने तजीने देहरे ॥ व्यंतर गतिमां जीव जइ उपन्यो, सुख विलसे तिहां तेहरे ॥ सा० ॥ १० ॥ विहार करंता कार्तिकेय मुनि, रोहिरु नगरे पोत्या जामरे ॥ ज्येष्ठ मास अमावास्याने दिने, पारणुं करवाने ते तामरे ॥ सा० ॥ ११ ॥ इर्यापथिकी भूमिका शोधता, मौनव्रती मुनि अधीशरे ॥ क्रौंच राजानी सप्त भूमि तले, सुतो राणी खोले शीशरे ॥ सा० ॥ १२ ॥ भगिनीए भाइ

तिहां देखीयो, मुनिवर साधुनो रूपरे ॥ जाइ जाणीने मोह व्यापीयो, उंसीसे मस्तक धरी जूपरे ॥ सा० ॥ १३ ॥ वीरमती राणी हेठी उतरी, बांधवने कर्यो रे प्रणामरे ॥ आलिंगन देइ घणुं जीकीयो, पोहोंचो जाइ आपणे धामरे ॥ सा० ॥ १४ ॥ क्रौंच राजा तिहां तव जागीयो, राणी किहां गइ कहो आजरे ॥ डुष्ट मंत्री तिहां तव एम जणे, जुउं जुउं राणीने महाराजरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ खमणो वलग्यो तुम राणी जणी, हस्ते करी देखाडे तेहरे ॥ क्रौंच राजाए कोपी धनुष्य धर्युं, बाणे जेद्यो मुनिवर देहरे ॥ सा० ॥ १६ ॥ विषम बाण लाग्युं मुनिने घणुं, जूमि पडीयो मुनिवर खामरे ॥ राग द्वेष मोह मान परिहरी, मन धरी जिनवरना गुणग्रामरे ॥ १७ ॥ वीरमती ते देखी डुःख जयो, जाइ तणो उपन्यो सोगरे ॥ विलाप करे अति घणुं वलवले, धाजो सहु श्रावक लोकरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ छठा खंमनी नवमी ढालमां, सुणजो सहुको बाल-गोपालरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एणी परे जणे, नेमविजयने हर्ष उजमालरे॥सा० ॥१९॥

डुहा.

वीरमति विलाप करे अति, मुख करे हाहाकार ॥ बांधव ए मुज सोहामणो,

मुनिवर ए व्रतधार ॥ १ ॥ वह्लन्न जाइ उठो तमे, मुज घर लेजो आहार ॥ निराधार हुं बेनमी, एक वार दीउं आधार ॥ २ ॥ जो वीरा तमे बोलशो, तो डुःख सुख कहुं वात ॥ पापी राजाए शुं कर्युं, हणीयो मारो भ्रात ॥ ३ ॥ लघु वेशे संयम ग्रह्यो, मूकी माय ने बाप ॥ राज रिद्धि सुख परिहरी, खम्यो परिसह ताप ॥४॥ मास पारणे पहोत्या मुज घरे, बाणे वींध्यो शुभ अंग ॥ वेदना व्यापी हशे घणी, दैव कीधो रंगनो भंग ॥ ५ ॥

ढाल दशमी.

उठ कलालणी भर घडो रे—ए देशी.

एम विलपंती कूटे हैयुं हे, शिर फोडे पाडे पोक ॥ हाहाकार हुवो घणो हे, मलीया नगरना लोक ॥ साजन सांभलो हे, कर्म तणी ए वात ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ महीपति पासे आवीयो हे, जाण्यो सहु वृत्तांत ॥ काम कीधो में पारुउं ए, डुःख धरेरे एकांत ॥ सा० ॥ २ ॥ पापी मंत्रीए आज तो हे, कराव्यो वृथा पाप ॥ नरक निदान बंधावीयो हे, मुनि हत्यानो संताप ॥ सा० ॥ ३ ॥ व्यंतरीए तव जाणीयो हे, पुत्रने कष्ट अपार ॥ वेगे करी आवी तिहां हे, पूरव माय गणधार ॥ सा० ॥ ४ ॥

रूप रच्युं मयूर तणुं हे, ञ्जी कार्तिकेय पास ॥ मूर्छा पामी मुनिवर पड्यो हे, लीधो वृष्टि निवास ॥ सा० ॥ ५ ॥ मयूर चाल्यो सामी लेश्ने हे, वन मांहीं छे प्रासाद ॥ शीतल जिनवरदेवनो हे, दीठे टले विषवाद ॥सा०॥ ६ ॥ तिहां मूक्यो जति निरमलो हे, श्रावक करे बहु सेव ॥ मूर्छा गइ सावधान थइ हे, मुनि ध्याये जिनदेव ॥ सा० ॥ ॥ ७ ॥ करीय संन्यासी मन चिंतवे हे, अनुपेक्षा ते वार ॥ पवनवेग तुमे सांजलो हे, जावना संखेप विचार ॥ सा० ॥ ८ ॥ धण कण शरीर अथिर छे हे, नहीं थिर कुटुंब परिवार ॥ राज रिद्ध सहु अथिर अछे हे, जेसो वीज ऊबकार ॥ सा० ॥ ए ॥ शक्र सचीवने राखवा हे, समरथ नोहीं स्वछ ॥ मरण काले प्राणीने जथा हे, सिंह धर्यो मृग वछ ॥ सा० ॥ १० ॥ चार गति जीव डुःख सहे हे, कहेतां न लहुं पार ॥ ड्रव्य खेत्र ज़व जावे जम्यो हे, काल ते पंच संसार ॥ सा० ॥ ११ ॥ चार गते जीव एकलो हे, साथे नहीं तिहां कोय ॥ डुःख सुख सहे ते एकलो हे, चोराशी लाख जोनि जोय ॥ सा० ॥ १२ ॥ अन्य कलेवर अन्य जीवडो हे, अन्य सहु परिवार ॥ जनम जनम ते जुजुया हे, मोह म करशो लगार ॥ सा० ॥ १३ ॥ शरीर अछे सात धातुमें हे, मल मुत्र तणो जंमार ॥ रेत ने रुधिरे उपन्युं हे, अशुचि देह मोकार ॥

सा० ॥ १४॥ मिथ्या मत अविरत कषायना हे, तेहना भेद अपार ॥ पन्नर प्रमाद वली जोगना हे, कर्माश्रव ए धार ॥ सा०॥ १५ ॥ समकित सुधे संजम हे, सुमति गुपति वर धर्म ॥ परिसर संवर उपजे हे, सुगति मुगति होय शर्म ॥ सा० ॥१६॥ चार गतिना जीवने हे, निर्जरा होये सविपाक ॥ मुनिवर स्वामी तपवले हे, निर्जरा करे अविपाक ॥ सा० ॥ १७॥ अधो मध्य ऊर्ध्व कह्यो हे, त्रण प्रकारे लोक ॥ उंचो राज चौद तणो हे, त्रणसें त्रितालां थोक ॥ सा०॥१८॥ नरभव दुलहो जाणवो हे, दुलहो श्रावक धर्म ॥ रतन त्रय व्रत दुलहो हे, मुगति गमन जिहां शर्म ॥ सा०॥१ए॥ क्षमा मार्दव आर्जव गुणे हे, संजम शौच तप त्याग ॥ सत्य निर्ग्रंथ व्रत पालवुं हे, एह धर्म तणा दश भाग ॥ सा० ॥ २० ॥ ढाल दशमी छठा खंमनी हे, सांभलजो सहु कोय ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे हे, नेमविजय सुख होय ॥सा०॥ २१॥

दुहा सोरठी.

कार्तिकेय मुनि नाम, शुभ ध्यान मनमां धरी ॥ आतम ध्याये सुख, होय सुगति मुगति जीवे वरी ॥१॥ छेद्यो भेद्यो नवि जाय, तेह शरीर छेदन भेदन सहे ॥ अप्पा

अप्पे जावजो तेम, जेम पासे मुगति रहे ॥ २ ॥ पाषाण हेम घृत दूध, तिल मांहीं जेम तेल रह्यो ॥ करमे वींट्यो ए जीव, शरीर मेल जिनजीए कह्यो ॥ ३ ॥

ढाल अगीआरमी.

मोरा साहेब हो श्री शीतलनाथके विनति सुणो एक मोरडी—ए देशी.

पुरुषाकारे हो ध्याउं आतमा सारके, शरीर मांहे तेज पुतलो ॥ जेम कोस मांहि हो रहे तरवारके, तेम आतमा अति उजलो ॥ १ ॥ सासो सासे हो रुंधी करी तास-के, दशमे दुआरे वली लीजीए ॥ टालीए एम हो संकल्प विकल्प विचारके, मन नि-श्चल दृढ कीजीए ॥ २ ॥ शुध बुध हो चेतन चिदानंदके, केवलज्ञान सरूप छे ॥ शुद्ध चिद्रूप हो हुं वली सिद्धके, परम जोति सुख कूप छे ॥ ३ ॥ एम चिंतवी हो आतम ध्यानके, कार्तिकेय स्वामी मन रली ॥ समाधिमरणे हो साधी हुवो कालके, सर्वार्थ सिद्धि विमन फली ॥४॥ तेत्रीश सागर हो जोगवी आपके, मध्य लोके नरजव लही ॥ कर्म हणीने हो लही केवलज्ञानके, शीवरमणे वरशे सही ॥ ५ ॥ देव सहु तिहां हो आव्या ततकालके, पूजा महोछव घणो कर्यो ॥ लोक सहुए हो ए आदर्यु तीर्थके, प्रसिद्ध सामी महिमा विस्तर्यो ॥ ६ ॥ माता व्यंतरी हो तेणे उपाइ व्याधके,

लोक पीका घणी करे ॥ आवे जात्राए हो जे नर नारके, तेहनां रोग संकट हरे ॥ ७ ॥
मयूरवाहनो हो स्वामी कार्तिकेयके, नाम कही लोक तीर्थे जाये ॥ वीरमती जगि-
नीथी होये जावला बीजके, पर्व हवुं ते दिनथी थाये ॥ ८ ॥ श्रीजिनवरदेवे हो
कह्यो सकल विचारके, कुमार स्वामी कार्तिकेय तणो ॥ पवनवेग तुम हो ए जाणजो
सत्यके, अपर ग्रंथ विस्तार घणो ॥ ए ॥ मिथ्यात्वीनां हो ए वचन असारके, मन
मांही थकी ए टालजो ॥ जोला लोकज हो जूला जमे गमारके, जिनवर वचनज
पालजो ॥ १० ॥ पवनवेगने हो आणंद जयो तामके, समकितधारी श्रावक थयो ॥
मनोवेग मित्रने हो करी प्रणामके, विमान रची लेइ निज गामे गयो ॥ ११ ॥ मनो-
वेग कहे हो सांजलो मित्रके, श्रावकनो धर्म हुं कहुं ॥ आदि समकित हो सुधुं धरे
चित्तके, सात व्यसनथी दूरे रहुं ॥ १२ ॥ मूल गुण हो पाले आठज नेमके, कंदमूल
सहु परिहरे ॥ व्रत पाले हो श्रावकनां बारके, सामायिक त्रण काल करे ॥ १३ ॥ ति-
थि पर्वणी हो पोसो करे शुरूके, सचित वस्तु दूरे तजो ॥ रात्रिजोजन हो निवारो
ब्रह्मचर्यके, पालो नव जेद शील जजो ॥ १४ ॥ गृह व्यापारे हो टालो पापारंजके,
परिग्रह दूरे टालीए ॥ विवाह आदे हो अनुमत नवि देयके, उदेस्यो आहारने

निहालीए ॥ १५ ॥ एकादश हो प्रतिमा ए सारके, श्रावकनी शुद्धि कही ॥ सांजलीने हो हरख्यो कुमारके, पवनवेगे मन दृढ ग्रही ॥ १६ ॥ पवनवेग हो पवित्र व्रतधारके, जैनधर्म लीधो खरो ॥ दोय मित्रज हो आनंद हुवो सारके, जव्य जीव धर्म स्नेह धरो ॥ १७ ॥ व्रत पालीने हो आयुषा अंतके, बेहु मित्र स्वर्गे गया ॥ पाम्या अति घणी हो देवीनी रिद्धके, देवीशुं जोग सुखीया थया ॥ १८ ॥ अवतरीने हो पामशे मनुष्यनो जन्मके, चारित्र पाली जिन तणुं ॥ अष्ट करमनो हो वली करीने घातके, मोक्ष लक्ष्मी पामशे घणुं ॥ १९ ॥ हीरविजय सूरि हो तपगछ मंमाणके, शुजविजय शिष्य जाणीए ॥ जावविजय हो जगमें जयवंतके, सिद्धिविजय परमाणीए ॥ २० ॥ रूपविजय हो रूपवंत कहेवायके, कृष्णविजय कर जोमीने ॥ रंगविजयने हो प्रणमुं निशदीसके, अंग उठे अंग मोमीने ॥ २१ ॥ खंम उठो हो पूरो थयो आजके, ढाल अग्यारे सुणो सही ॥ नेमविजये हो उलट मन आणके, वात अनोपममें कही ॥२२॥

इति धर्मपरीक्षारासे षष्ठोऽधिकारः संपूर्णः ॥

खंम ७ मो.

डुहा.

एकदा पाटलीपुर जणी, विहार करंता एम ॥ आव्या आर्यसुहस्ती सूरि, परिवारे करी तेम ॥ १ ॥ वनपालक दे वधामणी, संप्रति राजा जणी जाय ॥ सघलो साथ लेइ करी, वंदण आव्यो राय ॥ २ ॥ द्विज आव्या सघला मली, सुणवाने उपदेश ॥ गुरु कहे मूल ठे धर्मनो, समकित मर्म विशेष ॥ ३ ॥ समकित विण शिवपद नहीं, सांजलजो सहु कोय ॥ आण सहित क्रिया अलप, बहु फलदायक होय ॥ ४ ॥ जिनवरदेव सुसाधु गुरु, केवली जाषित धर्म ॥ सद्दहीए सुधां सहित, ए समकितनो मर्म ॥ ५ ॥ तेणे कारण जवियण तुमे, वारी विकथा वात ॥ एक मना अवधारजो, समकितनां अवदात ॥ ६ ॥

ढाल पहेली.

समुद्रपाल मुनिवर जयो—ए देशी.

जंबुद्वीप जरत क्षेत्रमां, ए तो मगध देश मनोहार ॥ सनेही ॥ राजग्रही नयरी राजा

तिहां, ए तो श्रेणिक चेलणा नार॥ सनेही ॥ १ ॥ संप्रति राजा सांजलो, समकित कथा सुजाण सनेही ॥ ए आंकणी ॥ बुद्धिनिधान वडो पुत्र छे, ए तो नामे अजयकुमार॥ सनेही॥ सर्व कला कही पुरुषनी, ए तो राजधुरंधर धार ॥ स० सं० ॥ २ ॥ अर्हदास शेठ तिहां वसे, जेहने घर वित्त जरपूर ॥ स० ॥ चित्त उदार जिन चरचीने, डुःखी जन करे डुःख दूर ॥ स० सं० ॥ ३ ॥ आठ रमणीशुं सुख जोगवे, पाले ते नव वाडे शील ॥ स० ॥ समकित सुधुं सद्दहे, धर्म करतो न करे ढील ॥ स० सं० ॥ ४ ॥ गिरि वैजारे एकदा, समोसर्या श्रीमहावीर ॥ स० ॥ वनपालके वधामणी, पासे गोतमस्वामी वजीर ॥ स० सं० ॥ ५॥ सांजली संतोष्यो शुज परे, पृथ्वीपतिए पर-जात ॥ स० ॥ महा मोछव करी वांदवा, आव्यो आणंद अंग न मात ॥स० सं०॥६॥ पांच अजिगम साचवी, जगवंत उपर धरी जाव ॥ स० ॥ वांदी बेठा विधिपूर्वके, कहे जवजल तारण नाव ॥ स० सं० ॥ ७ ॥ पूजाजाव आणे चित्तमें, ए तो चोथ तणो फल जोय ॥ स० ॥ पूजोपगरण हाथे ग्रहे, छठ तणो फल होय ॥ स० सं० ॥ ८ ॥ गमणागमणे फल अठमे, पासे आव्यो दशम फल जाण ॥ स० ॥ डुवालस फल जिन परवेशे, प्रदक्षिणे पक्ष फल आण ॥ स० सं० ॥ ए ॥ मास फल जिन-

बिंब देखीए, पमजणे शत उपवास ॥ स० ॥ सहस्र फल विलेपने कह्यो, फुलमा-
लाए लाख फल तास ॥ स० सं० ॥ १० ॥ अनंत फल गीत नृत्यथी, एहवां फल
सुणी शेठे तास ॥ स० ॥ नीम धार्यो त्रण कालनो, जिनपूजा विना उपवास
॥ स० सं० ॥ ११ ॥ आव्यो उच्छव एहवे, कौमुदी कौतिककार ॥ स० ॥ सुंदर वेश
सजी सवे, नगर बहार आवे नर नार ॥ स० सं० ॥ १२ ॥ खेलो हसो मन खांतशुं,
हुकम करे राजान ॥ स० ॥ कार्तिक पुनेमने दिने, गाउ वजाउ तान ॥ स० सं० ॥
॥ १३ ॥ बार वरसने अंतरे, पमहो वजामे एम ॥ स० ॥ अर्हदास शेठ मन चिंतवे,
मुज व्रत रहेशे हवे केम ॥ स० सं० ॥ १४ ॥ उंडुं मनमां आलोचीने, आव्यो शेठ
नृपने पासे ॥ स० ॥ मोती आगल मूकीने, उन्नो अरज करे उल्लासे ॥ स० सं० ॥
॥ १५ ॥ में लीधुं छे व्रत नेम जे, ते तुमे जाणो छो स्वाम ॥ स० ॥ आज आदेश
हुवो एसो, केवुं करवुं हवे काम ॥ स० सं० ॥ १६ ॥ धन देइ धन धन कही, ए तो
घणुं प्रशंसे राज ॥ स० ॥ जिनधरमी जयवंत तुं, करो जइ घरनां काज ॥ स०
सं० ॥ १७ ॥ चोकी मेली चिहुं दसे, ए तो सुन्नट रह्या सावधान ॥ स० ॥ रात
पमी राजा कहे, ए तो सांजल तुं परधान ॥ स० सं० ॥ १८ ॥ पहेली ढाल खंम

सातमे, सांजलजो सहु नर नार ॥ स० ॥ रंगविजय कविराजनो, नेमविजय जय-
कार ॥ स० सं० ॥ १ए ॥

डुहा.

चालो जोवा जाइए, बोले श्रेणिक राय ॥ अजयकुमार वलतुं कहे, नावे मारे दाय ॥ १ ॥ नारी जाति मली तिहां, पुरुष नहीं ठे बेक ॥ आपण केम जइए तिहां, मनमां धरो विवेक ॥ २ ॥ इंडि पांच जीती जीके, ते विनयी कहेवाय ॥ गुणवंत कहीए ते नरा, सहु जनमां पूजाय ॥ ३ ॥ राजा कहे परधानने, हुं हुं इंड समान ॥ लोको शुं करशे मने, बलवंत हुं राजान ॥ ४ ॥ प्रधान वलतुं एम कहे, अजिमान न कीजे फोक ॥ परजा थकी सुख पामीए, डुःख न दीजे लोक ॥ ५ ॥ वली नरपति एम उचरे, घणे न सीजे काज ॥ सूरज उग्यो एकलो, तारा जाये जाज ॥ ६ ॥ प्रधान कहे नरपति तमे, बहुशुं न करो वेर ॥ घणां मली कल्याण करे, घणांथी उपजे केर ॥ ७ ॥ ते उपरे कथा कहुं, सुजोधन नृपनी वात ॥ वातो मन शीतल करे, वात करे उतपात ॥ ८ ॥

ढाल बीजी.

कोस्या कामनी कहे चांदला, चांदा तुं छे परउपगारीरे—ए देशी.

हस्तीनागपुर वर जलो, राजा सुजोधन तिहां रायरे ॥ मंत्री पुरुषोत्तम तेहने, राजा पुरोहित कापिल कहेवायरे ॥ १ ॥ जमदंरू नामे कोटवाल छे, राजा बेठा सजा मोझाररे ॥ दूत आवी एक एम कहे, राजा अरिदल आव्युं अपाररे ॥ २ ॥ दूतनुं वयण सुणी एह्युं, राजा ज्रकुटी चढावी जालरे ॥ घाउ निसाणे घमकीया, राजा कोप्यो रिपुनो कालरे ॥ ३ ॥ हय गय रथ पायक सजी, राजा राये प्रयाणज कीधरे ॥ राज नगरनी रक्षा करे, राजा जमदंरूने जलामण दीधरे ॥ ४ ॥ लश्कर लेइ अरि उपरे, राजा बेहु दल फुझे अपाररे ॥ दिवस घणा तिहां लागीया, राजा सांजलो वात विचाररे ॥ ५ ॥ जमदंडे जस उपराजीउ, राजा रूमी परे प्रजा राखेरे ॥ राजकुंवर लोक वश थया, राजा यमदंड वयण जे जाखेरे ॥ ६ ॥ अरि जीती नृप आवीउ, राजा सनमुख सहु लोक जायरे ॥ राजा पूछे कुशल सहु, राजा कहे यमदंरू पसायरे ॥ ७ ॥ विलंब करी पूछे वली, राजा तुमने अछे समाधिरे ॥ यमदंरूना परसादथी, राजा कशी नथी असमाधिरे ॥ ८ ॥ चिंतवे नृपति चित्तमें, राजा राज्य

सुखे जे जायरे ॥ दूध विलाकी राखवा, राजा पढे ते पस्तायरे ॥ ए ॥ कूड राखी मनमां घणो, राजा मौन करे नूपालरे ॥ इंगित आकारे उंलखे, राजा जाणे मनमें कोटवालरे ॥ १० ॥ मंत्री पुरोहित नूपति, राजा त्रणे मली एक गयरे ॥ यमदंकने यमघर नणी, राजा मूकण विचार करायरे ॥ ११ ॥ देखो डुरजन दुरमति, राजा पर जश देख्यो न सुहायरे ॥ राजा परधान पुरोहित मली, राजा कुकरम एह कमायरे ॥ १२ ॥ खजानो निज खोसवा, राजा मध्य रात्रे पेठो तेहरे ॥ कूम कपट करे घणां, राजा अंते पडी मुख खेहरे ॥ १३ ॥ मुद्रा जनोइ पादुका, राजा मुखे मूके लेइ खात्ररे ॥ धन काढे ते धसमसी, राजा काम करे एह कुपात्ररे ॥ १४ ॥ खात्र मुखे विसरी गया, राजा पादुका मुद्रा जनोइरे ॥ प्रातः समे यमदंकने, राजा तेडीने नाखे सोइरे ॥ १५ ॥ रे निर्लज्ज तुं नगरने, राजा राखे वे रुडी रीतरे ॥ आज नंडार फाडी गया, राजा तुं सुइ रह्यो निचिंतरे ॥ १६ ॥ वस्तु सहित जो चोरने, राजा नहीं लावे माहरी पासरे ॥ चोर तणो दंक तुजने, राजा थाशे सही एम विमासरे ॥ १७ ॥ तुरत गयो मुख खात्रने, राजा पाडुकादिक पड्या दीठरे ॥ पाम्या चोर ते पापीया, राजा मन मांहीं हरख पइठरे ॥ १८ ॥ कोटवाल

चित्त चिंतवे, राजा जुर्ज राय एम करंतरे ॥ तो कहीए केहने जइ, राजा सुणजो सर्व जन संतरे ॥ १ए ॥ राजा आगल आवीने, राजा चोर न लाध्यो स्वामरे ॥ कोपे करी राय एम कहे, राजा एहने मारो तस ठामरे ॥ २० ॥ मली महाजन विनवे, राजा अवध दीजे दिन सातरे ॥ चोर वस्तु आणे नहीं, राजा मनमानी करजो वातरे ॥२१॥ कष्ट नृपे कह्युं कर्युं, राजा परजानुं राख्युं मन्नरे ॥ यमदंड सहु आगल कहे, राजा सुणजो एक वचनरे ॥ २२ ॥ राजानुं मन एहवुं, राजा कहोने हवे कीजे केमरे ॥ महाजन कहे बीजो रखे, राजा न्यायीने थाशे खेमरे ॥ २३ ॥ परमेश्वर पदु न्यायनो, राजा करशे सही जाणो साचरे ॥ ढाल बीजी खंरू सातमे, राजा नेमविजयनी वाचरे ॥ २४ ॥

दुहा.

शठपणे सघले फरे, चोर गवेषण काज ॥ पहेले दिवस सत्ता गयो, तव पूछे महाराज ॥ १ ॥ चोर न लाव्यो चोरटा, जमदंरू कहे नरनाथ ॥ ठाम ठाम में जोइयो, चोर न आव्यो हाथ ॥ २ ॥ एवमी वार किहां रह्यो, कहे कोटवाल ते वार ॥ कथा

एक कहेतो हतो, सांजलतां थइ वार ॥ ३ ॥ जेणे मरण तुज विसर्युं, ते कहे मुजने वात ॥ उत्पातकी बुद्धे करी, कथा कहेशे सात ॥ ४ ॥

ढाल त्रीजी.

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी—ए देशी.

कहे कथा यमदंड युक्तिशुं, सांजल राय सुजोधरे ॥ मन मांहीं जाणे यमदंड जो वली, पासे किमही प्रतिवोधरे ॥ कहे कथा० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वन मांहीं एक मोटो सरोवर, सजल कमल विस्ताररे ॥ तेहनी पाले सरलो अति उंचो, तरुवर अछे उदाररे ॥ क० ॥ २ ॥ हंस घणा रहे छे तरु उपरे, व्याध तणो नहीं लागरे ॥ वेले अंकुर तस मूले देखी, वृद्ध हंस कहे महाजागरे ॥ क० ॥ ३ ॥ चंचुपुटे करी अंकुर त्रोडो, तो तुमने सुख थायरे ॥ वधती वधती एहज वेलना, थाशे तुम दुःखदायरे ॥क० ॥४॥ तरुना हंस हस्या सवि तेहने, बीकण मोटो तुं वृद्धरे ॥ एम सांजली मोन कर्युं तेणे, पामशो आपणुं कीधुं रे ॥ क० ॥ ५ ॥ काले वधी ते सवली वेलडी, जइ लागी तरु शीशरे ॥ ते व्याध चडीउं ते अवलंबीने, नाख्यो पास जगीशरे ॥ क० ॥६॥ चुण करीने सांजे हंस सघला, पासे पडीआ आयरे ॥ आक्रंद करतारे पूछे वृद्धने,

बुटण तणो उपायरे ॥ क० ॥ ७ ॥ जोवन मद मतवाला मुरख जे, नवि मान्युं मुज वयणरे ॥ तेह तणां फल ए वे प्रत्यक्ष, देखो आपणे नयणरे ॥ क० ॥ ८ ॥ अण-जाणे अथवा परमादे, कारज विणतुं संजालरे ॥ पडे प्रयास होये विफल सघलो, जल गये बांधी पालरे ॥ क० ॥ ए ॥ दीन वचने बोले उं दादाजी, तुमे गे बुद्धि-निधानरे ॥ दया करी निज बालक उपरे, दीजे वंछित दानरे ॥ क० ॥ १० ॥ प्राण रहित सरीखा थइ रहेजो, सघले मानी शीखरे ॥ पञ्चाते देखी ते पापीयो, चिंते जांगी जीखरे ॥ क० ॥ ११ ॥ हंस सकलने हेठा नाखीया, उड्या ते समकालरे ॥ मान्युं वचन वरुानुं तेमणे, पाम्या सुख विशालरे ॥ १२ ॥

गाथा—दीहकालंठीया जठ, पायवे निरुवदवे ।
मुलाउं उठीयावल्ली, जायं सरणं उज्जयं ॥ १ ॥

गाथा एह कही वे वडे हंसे, समजो राय मयालरे ॥ कथा पहेली संपूरण ए कही, समजो श्रोता दयालरे ॥ क० ॥ १३ ॥ सातमा खंड तणी ढाल त्रीजीए, समजाव्यो राय सुजाणरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजय परमाणरे ॥ क० ॥ १४ ॥

दुहा.

अभिप्राय पूछ्यो नहीं, दुराग्रहवंत नरिंद ॥ मगसेलीयो भींजे नहीं, वरसे पुष्कर वृंद ॥ १ ॥ बीजो दिन आव्यो वली, पूछे तेम महीराय ॥ कथा एक कहेतो हतो, ते मुज आवी दाय ॥ २ ॥ कोइक नगर कुंभार एक, खाण खणी मन खंत ॥ भाजन निपजावी भलां, वेची थयो धनवंत ॥ ३ ॥ भुवन कराव्युं अति भलुं, पुत्र विवाहज कीध ॥ जाचक जन संतोषीया, नगर थयो प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ माटी खणवा एक दिन, गयो खाण मोझार ॥ तड तुटी उपर पडी, गाथा कहे कुंभार ॥ ५ ॥

गाथा—जेण भिखं वलिंदमि । जेण पोसेमीनायउं ॥
तेण मे पडिया भगा । जायं सरणं उभयं ॥ १ ॥

कथा कही निज घर गयो, समज्यो नहीं राजान ॥ त्रीजे दिन कथा कहे, ते सुणजो सावधान ॥ ६ ॥

ढाल चोथी.

वंगालो राग.

देश पांचाल कांपिलपुर सार, सुधरमा राजा सिरदार ॥ सुणो वारता ॥ जैन धरम

उपरे तसु राग, मंत्री जयदेव छे चार्वाक ॥ सु० ॥ १ ॥ शत्रु तणो पराभव जाण, चाल्यो नरपति निग्रह जाण ॥ सु० ॥ जीती नगरमां आवे जाम, पोल वडी पडी आगल ताम ॥ सु० ॥ २ ॥ अपशुकन जाणी निरधार, बहार रह्यो राजा तेणी वार ॥ सु० ॥ उतावली कीधी ते पोल, पेसे बीजे दिन करत कलोल ॥ सु० ॥ ३ ॥ पडी वली तिमहीज ते पोल, मंत्री करावी देइ बहु मोल ॥सु०॥ त्रीजे दिने पेसे जव भूप, पुनरपि थयो तेह सरूप ॥सु० ॥४॥ मंत्री कहे राजन अवधार, कोइक सुर कोप्यो सुविचार ॥सु०॥ निज हाथे माणस एक मार, तेहने रुधिरे जो दीजे धार ॥ सु० ॥ ५ ॥ तो निश्चय ए थाये स्थाम, अवर पूजा बलि नावे काम ॥ सु० ॥ भूप भणे हिंसा जिहां होय, तेह नगरशुं काम न कोय ॥ सु० ॥ ६ ॥जे सुवरणे तुटे कान, पहेरे तेने कोण अजाण ॥ सु० ॥ जिहां हुं तिहां नगर विशाल, कोण करे एहवो जंजाल ॥ सु० ॥ ७ ॥ निश्चय राजानो ए जाण, मंत्री महाजनशुं करे वाण ॥सु०॥ राजा नवि माने ए वात, निज नगर केम छोड्यो जात ॥ सु० ॥ ८ ॥ सहु मली विनवीउं राय, अमे करशुं एह उपाय ॥सु०॥ पुण्य तणो जेम छह्यो विभाग, पामे नरपति पाप विभाग ॥ सु० ॥ ए ॥ पाप तणुं फल अमने देव, तमे पुण्यवंत प्रभु नित्यमेव ॥ कंचन पुरुष कराव्यो एक, अलंकर्यो तेने सुविवेक ॥ सु०

॥ १० ॥ रथ आरूढ करी नर तेय, जाखे पुत्र आपे सो लेय ॥ सु० ॥ वरदत्त नामे ब्राह्मण रंक, रुद्रदत्ताशुं कहे निःशंक ॥ सु० ॥ ११ ॥ सातमो रुद्रदत्त देइने दान, सोनुं लीजें जेम वाधे वान ॥ सु० ॥ एम आलोच करी निज वाल, दीधो कनक लीधो तत-काल ॥ सु० ॥ १२ ॥ चिंते रुद्रदत्त मन मोझार, अहो स्वारथी मीठो संसार ॥ सु० ॥ आव्यो कुंवर राजाने पास, हस्यो कुंवर पूछे नृप तास ॥ सु० ॥ १३ ॥ वच्चा मरणथी नहीं तुज वीह, कारण हसवानुं कहे सीह ॥ सु० ॥ माता मारे सुतने जाम, पिता कने पुत्र जाये ताम ॥ सु० ॥ १४ ॥ मात पिता पीड्यो नृप पास, नृप पीड्यो महाजन आवास ॥ सु० ॥ जो माता हाथे विष देय, तात गले ठरी वाहेय ॥ सु० ॥ १५ ॥

श्लोक—माता यदि विषं दद्यात् । पिता विक्रयते सुतम् ॥
राजा हरति सर्वस्वं । का तत्र प्रतिवेदना ॥ १ ॥

नरपति प्रेरे तेहने वली, मारण महाजन धन दे मली ॥ सु० ॥ तो कहो केहवो हवे शोग, जुओ करम तणो कोण जोग ॥ सु० ॥ १६ ॥ पोल नगरशुं नहीं मुज काज, करुणासागर कहे महाराज ॥ सु० ॥ धराधवनुं धीरज देख, नयर देवी तुठी सुवि-

शेष ॥ सु० ॥ १७ ॥ कीधी फूल तणी तिहां वृष्टि, धरापतिने थइ सुख स्रष्टि ॥ सु० ॥ सातमा खंरुनी चोथी ढाल, नेमविजय कहे रंग रसाल ॥ सु० ॥ १८ ॥

दुहा.

आरक्षक वली आवीउं, चोथे दिवस अकाल ॥ रे नवि लाव्यो चोरने, एम पूछे नरपाल ॥ १ ॥ मारग मांहीं आवतां, आज अपूरव नाथ ॥ कथा एक में सांजली, सहु सांजलजो साथ ॥ २ ॥

ढाल पांचमी.

रे जाया तुज विण घडीय न जाय—ए देशी.

वन मांहीं एक हरणलीजी, निज बालकने संग ॥ हरी चरे निऊरण तणांजी, जल पीए मनरंग ॥ सुजोघन सांजलजो मुज वात, मत करजो व्याघात ॥ सुजोधन० ए आंकणी ॥ १ ॥ वनने पासे ढुंकडुंजी, नयर वसे मनोहार ॥ नयर तणा राजाननेजी, वहोला बाल कुमार ॥ सु० ॥ २ ॥ आहेडे वन एकदाजी, जइने मांड्यो जाल ॥ बीजा मृग नासी गयाजी, पास पड्यो एक बाल ॥ सु० ॥ ३ ॥ कोइक नृपना कुंवरनेजी, आणीने ते दीध ॥ बीजाने रमवा नवि दीएजी, तेणे सघले रढ लीध ॥ सु० ॥ ४ ॥

पारधी तेरूी पूछीयुंजी, कुरंग घणां छे केथ ॥ वन तेणे तेह बतावीयुंजी, चाल्यो राजा तेथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ व्याध वेष राये पहेरीयोजी, पारधीनो परिवार ॥ पीडे मृगने पापीयोजी, व्याप्यो मोह अंधकार ॥ सु० ॥ ६ ॥ खणी अजारूी खांतशुंजी, फोरूी सरोवर पाल ॥ बंधन सघले मांरूीनेजी, काल्यां मृगनां बाल ॥ सु० ॥ ७ ॥ पारधीने परशंसतोजी, हरूहड नृप हसंत ॥ कोइक पंमित देखीनेजी, गाथा एम नणंत ॥ सु० ॥ ८ ॥

गाथा—सबदिंसंजहिं सलीलं । सवारणं च कुवसंथन्नं ॥
राया य सयंवाहो । तब्रमियाणं कउं वासो ॥ १ ॥

मूरख नृप समज्यो नहींजी, बुद्धि बरूी संसार ॥ धन पामवुं ते सोहेलुंजी, समजण दोहिली नर नार ॥ सु० ॥ ९ ॥ पूछे वली दिन पांचमेजी, तिणहीज परे नूपाल ॥ आज कथा में सांजलीजी, कहे वलतुं कोटवाल ॥ सु० ॥ १० ॥ देश नेपाल पाटलीपुरेजी, वस्तुपाल महीपाल ॥ कवित कला शुद्धि लहेजी, जाणे बालगोपाल ॥ सु० ॥ ११ ॥ नारतीनूषण तेहनोजी, मंत्रीश्वर कहेवाय ॥ राय कवित तेणे दुःखीयोजी, वेगा महा कविराय ॥ सु० ॥ १२ ॥ रीसे नूपति धमहड्योजी, मंत्री बंधाव्यो ताम ॥

गंगा मांहीं नखावीयोजी, वहेतो जाये जाम ॥ सु० ॥ १३ ॥ पुण्य जोगे थल पामीनेजी, ह्ये विश्राम जे वार ॥ अकस्मात् पुर आवीयोजी, कहेवे करी पोकार ॥ सु० ॥ १४ ॥

यतः—जेण बीयावरोहन्ति । जेण सिच्चंति पायवा ॥
तस्स मज्झे मरिस्सांमि । जायं सरणं उन्नयं ॥ १ ॥

शीतल जल गुण ताहरोजी, निरमल छे तुज देह ॥ अशुचि शुचि संगत हरेजी, थाये नहीं संदेह ॥ सु० ॥ १५ ॥ ताहरा गुण केता कहुंजी, तुं जीवन आधार ॥ नीच पंथ तुं आदरेजी, तो कोण तारणहार ॥ सु० ॥ १६ ॥ छाना चर मूक्या हताजी, सांभल्युं तेणे सर्व ॥ राजाने आवी कहेजी, गिरुआ न करे गर्व ॥ सु० ॥ १७ ॥ निंदा करतो आपणीजी, कोमल करी प्रणाम ॥ जलथी तुरत कढावीनेजी, थाप्यो पहेले ठाम ॥ सु० ॥ १८ ॥ वात सुणावी एहवीजी, गयो जमदंड निज गेह ॥ सातमा खंडनी पांचमीजी, ढाल कही नेमे एह ॥ सु० ॥ १९ ॥

दुहा.

जब आव्यो तव पूछीयो, छठे दिन भूपाल ॥ तस्कर खबर नवि करे, दीसे वडो वाचाल ॥ १ ॥ सूनां मंदिर शोधीयां, वेश्या तणां निवास ॥ जुआरी घर जोइयां, पग

नवि पामुं तास ॥ २ ॥ सरस कथा में सांजली, लाग्यो तेणे मन्न ॥ प्रजु पासे मुज आवतां, अधिको आव्यो दन्न ॥ ३ ॥

ढाल ७ठी.

में तोजी खणावी वावडी—ए देशी.

आज कथा में सांजली, सुणजो सहु सावधानरे; राज ॥ गजपुर नयर कुरु देशमां, नर कुवेर नयर समानरे ॥ रा०आ० ॥ ए आं० ॥१॥ राज करे तिहां रंगशुं, नामे सुजद्र नरिंदरे ॥ रा० ॥ वम्वमा राणा राजीया, वांदे चरण अरिवृंदरे ॥ रा० आ० ॥ २ ॥ परितापे रवि सारिखो, कोइ न खंडे आणरे ॥ रा० ॥ शीपे फुल जेम सहु धरे, दिन दिन वधते वानरे ॥ रा० आ० ॥३॥ क्रीडा वानर तेहना, निरजय नगर ज्रमंतरे ॥ रा० ॥ उपद्रव अति घणो करे, नवि कोइ वरजंतरे ॥ रा० आ० ॥ ४ ॥ विविध जातिनां वृक्ष तिहां, वेल अनेक प्रकाररे ॥ रा० ॥ पान फुल फले जर्युं, उद्यान ठे सुखकाररे ॥ रा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ वनथी आवी वांदरा, ताकी पी थया मत्तवालरे ॥ रा० ॥ रक्षके वार्या नवि रहे, तोडे तरुवर कालरे ॥ रा० आ० ॥ ६ ॥ वनपालक आवी कहे, विनतकी अवधारोरे ॥ रा० ॥ बाग विणासे वांदरा, वनचर वेगे वारोरे ॥ रा० आ० ॥ ७ ॥ कीका

कपि राये मूकीया, तेहने जीतण काजेरे ॥ रा० ॥ जइ मळीया निज जातिशुं, वृद्ध विशेष ज्ञांजेरे ॥ रा० आ० ॥ ८ ॥ असमंजस देखी एशुं, एम चिंते रखवाळरे ॥ रा० ॥ गाथा एक तिहां जणी, सुणो ते कहुं प्रजापाळरे ॥ रा० आ० ॥ ए ॥

आमरष्यया जथ्थ मक्कडा । सुरारष्यया मुंडा ॥
अजारस्याविजया जथ । मूल विणठंतु कज्जं ॥ १ ॥

अपूरव वात संजळावीने, कही यमदंड गयो घेररे ॥रा०॥ अणसमजु समजे नहीं, तेहनी शी करवी पेररे ॥रा०आ०॥१०॥ सातमे दिन सविशेषथी, मोडो आव्यो मांडरे ॥ रा० ॥ त्रकुटी ज्ञाले चडावीने, जडक्यो जूत जराडरे ॥ रा० आ० ॥ ११ ॥ रे निर्लज्ज निरलक्षणा, सांजल माहरी वातरे ॥ रा० ॥ पारिपंथक पाम्या विना, केम बूटीश तरजातरे ॥ रा० आ० ॥ १२ ॥ त्रिक चाचर ने चोवटा, धूरत लंपटनां ठामरे ॥ वन गहवर में जोइआं, चोर न लाध्यो स्वामरे ॥ रा० आ० ॥ १३ ॥ पासे तुमारे आवतां, सुण्यो में एक विरतंतरे ॥ रा० ॥ कहुं हुं ते तुमने कथा, मन धरजो मतिवंतरे ॥ रा० आ० ॥ १४ ॥ देश सकलमां दीपतो, मोटो मालव देशरे ॥ रा० ॥ उज्जेणी नगरी जली, जितशत्रु नामे नरेशरे ॥ रा० आ० ॥ १५ ॥ गढ मठ मंदिर गोरडी, नदी

निर्वाण अनुपरे ॥ रा० ॥ शिव मंदिर जिन देहरां, सरगपुरी सम रूपरे ॥ रा० आ० ॥ १६ ॥ देवदत्त नामे कापडी, तीरथ करे सुविवेकरे ॥रा०॥ देश नगर बहोला नमी, अचरिज देखी अनेकरे ॥ रा० ॥ रा० आ० ॥ १७ ॥ जरा पहोती जाणीने, उज्जेणी थिर वासरे ॥ रा० ॥अरूसठ तीरथ एणे कर्यां, सेवे बहु जन तासरे ॥ रा०आ०॥१८॥ आव्यो पर्व हवे एकदा, पाम्यो सरस आहाररे ॥ रा० ॥ लालचपणे लीधो घणो, निशि थयो उदर विकाररे ॥ रा० आ० ॥ १९ ॥ जीरण तने जरे नहीं, नारी सबलुं अन्नरे ॥ रा० ॥ मंदानल जेम मोटके, इंधणे शमे अगनरे ॥ रा० आ० ॥ २० ॥ उपचार कीधा अति घणा, नवि उपशमीउं रोगरे ॥ रा० ॥ गाथा एक कहे कापडी, सांभलजो सहु लोगरे ॥ रा० आ० ॥ २१ ॥

गाथा–जया जीवंति विश्वानि, जया तुष्यन्ति देवता ।
तयाहं मारितो लोका, जातं सरणतोऽभयं ॥ १ ॥

एम नृपति प्रतिबोधवा, कही कथा करी बुझरे ॥ रा० ॥ समस्या मांहीं समज्यो नहीं, मोटो राजा मूढरे ॥ रा० आ० ॥ २२ ॥ सातमा खंडनी ए कही, ढाल

ठठीए आव्यो आवासरे ॥ रा॰ ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजयनी पूरवा आ-
शरे ॥ रा॰ आ॰ ॥ २३ ॥

डुहा.

आव्यो वासर आठमे, यमदंड सजा मोझार ॥ तेमज नृप पूब्यो तुरत, तस्कर तणो विचार ॥ १ ॥ देव न लाध्यो एम सुणी, नरपति कीधो रोष ॥ परजाने कहे सांजलो, मारो नहीं कांइ दोष ॥ २ ॥ कथा कही मुज वंचीयो, सात दिवस पर्यंत ॥ दंड चोरनो देइने, एहनो करशुं अंत ॥ ३ ॥ कहे माजन यमदंडने, चोर तणुं कोइ चिह्न ॥ देख्युं होय तो दाखवो, मत करजो नय मन्न ॥ ४ ॥

ढाल सातमी.

बांगरीयानी बाइरे गरबडो–ए देशी.

वयण सुणी महाजन तणुंरे, एम बोले यमदंडरे ॥ परज सुणो ॥ अहिनाणी आएया पठीरे, श्यो करशो तस दंडरे ॥ प॰ ॥ १ ॥ राजसुतादिक सहु कहेरे, जो होशे नरराजरे ॥ प॰ ॥ चोर तणो दंड एहनेरे, करशुं मूकी लाजरे ॥ ॥ प॰ ॥ २ ॥ निश्चय एहवो जाणीनेरे, काढ्यां त्रणे वस्तरे ॥ प॰ ॥ सजा मांहे मेली

कहेरे, ए चोर मोटो मस्तरे ॥ प० ॥ ३ ॥ पावकीए नृप परखीजेरे, वींटीए परधानरे ॥ प० ॥ यज्ञसूत्रि करी जाणीजेरे, पुरोहित पापनिधानरे ॥ प० ॥ ४ ॥ वोलावो चोरी करेरे, वाड चीभडां खायरे ॥ प० ॥ दांत विणासे जीभनेरे, तिहां कोण आभो थायरे ॥ प० ॥ ५ ॥ चमक्या देखी चित्तमेंरे, चोर तणां अहिनाणरे ॥ प० ॥ जे मन माने ते करोरे, जेम न करे ए कामरे ॥ प० ॥ ६ ॥ नृपति कपिल प्रधाननांरे, तुरत थयां मुख श्यामरे ॥ प० ॥ सहुको कहे हवे तेम करोरे, आगोह आमयदानरे ॥ प० ॥ ७ ॥ नगर थकी ते काढीनेरे, पाटीए निज निज पुत्ररे ॥ प० ॥ थाप्या महाजन मली करीरे, सहु राख्युं एम सूत्ररे ॥ प० ॥ ८ ॥

यतः—मित्रं शाठ्यपदं कलत्रमसतीं पुत्रं कुलध्वंसिनम् ।
मूर्खमंत्रिणमुत्सुकं नरपतिं वैद्यं प्रमादास्पदम् ॥
देवं रागयुतं गुरुं विषयिणं धर्मं दयावर्जितम् ।
यो नैवं त्रजति प्रमादवशतः स त्यज्यते श्रेयसा ॥ १ ॥

सुणी सुजोधन वारतारे, श्रेणिक करे प्रशंसरे ॥ प० ॥ धन्य प्रधान मति ताहरीरे, तुं मुज कुल अवतंसरे ॥ प० ॥ ए ॥ राजा कहे रजनी घणीरे, छे हजी अभयकुमा-

ररे ॥प०॥ कांइक अचरिज जोइएरे, जमीए नगर मोझाररे ॥प०॥१०॥ जमतां एकण चाचरेरे, दीठी माणस ठांहरे ॥ प० ॥ पुरुष नारी दीसे नहींरे, अचरिज थयुं मन मांहीरे ॥ प० ॥ ११ ॥ कहो प्रधान दीसे किशुंरे, लोहखुरो प्रजु चोररे ॥ प० ॥ अंजन बल अदृश्य थइरे, नगर पडावे सोररे ॥ प० ॥१२॥ जोइए ए किहां जाय बेरे, कौतके चाल्या पीठरे ॥ प० ॥ अर्हदास घर आंगणेरे, वडे चढी बेठो धीठरे ॥ प० ॥ ॥ १३ ॥ अलक्ष थका बेहु जणारे, आवी बेठा हेठरे ॥ प० ॥ एहवे कुंदलता कहेरे, सुणो वयण मुज शेठरे ॥ प० ॥ १४ ॥ महोछव मूकी कौमुदीरे, देव पूजादिक कर्मरे ॥ प० ॥मांडी बेठा मेहेलमांरे, केणे लगाड्यो जर्मरे ॥ प० ॥ १५ ॥ परलोकार्थी कीजीएरे, ए करणी सुणी वामरे ॥ प० ॥ केणे दीठो परलोकनेरे, इहलोके सुख कामरे ॥ प० ॥ १६ ॥ परलोके सही पामीएरे, धर्म थकी सुख लक्षरे ॥ प० ॥ इहलोके फल एहवुंरे, में दीठुं प्रत्यक्षरे ॥ प० ॥ १७ ॥ कांता ते तुजने कहुंरे, धर्म तणां अवदातरे ॥ प० ॥ खंड सातमानी ए थइरे, ढाल सातमी नेम विख्यातरे ॥ प० ॥ १८ ॥

दुहा.

इणहीज नगरे राजवी, थयो प्रसेनजीत नाम ॥ तास पुत्र राजा अछे,

श्रेणिक गुणनो धाम ॥ १ ॥ जिनदत्त शेठ हुवो इहां, पिता माहरो जेह ॥ नंदन रूपखुरा तणो, लोहखुरो छे तेह ॥ २ ॥ सांभली चिंते चोर एम, कांइक मारी वात ॥ करशे तेणे निश्चल सुणो, राजा ते पण धात ॥ ३ ॥

ढाल आठमी.

रामचंद्रके बाग चांपो मोरी रह्योरी—ए देशी.

शेठ कहे सुण नार, रूपखुरो जे तस्कर ॥ चोरी करे अपार, साथे कोइ न लश्कर ॥ १ ॥ अंजन विद्या सिद्ध, नगर मांहीं परसीधो ॥ हाथ न आवे तेह, नृप उपाय बहु कीधो ॥ २ ॥ जाणी ते दुःख साध्य, राजा एम पयंपे ॥ घरघर दीठ दीनार, दीजे तसु एम जंपे ॥ ३ ॥ मांरूवीए वली तास, एक विश्वो करी दीधो ॥ वृत्तिए थयो निचिंत, वानरने मद पीधो ॥ ४ ॥ रूाकण चडीय जरख, कोण तेहने कह्यो पाले ॥ नगरे फरे निःशंक, मन गमते पंथ माले ॥ ५ ॥ नट विटने रहे साथ, सात व्यसनने सेवे ॥ द्यूत मांस परदार, मदिरा चोरी लेवे ॥६॥ जइ आहेडे जीव, जात जातना मारे ॥ वेश्याशुं बहु प्रीत, रात दिवस चित्त धारे ॥ ७ ॥ रूपखुरो एक दिन, नृप घर परिसर जावे ॥ रसवती सरस सुगंध, परिमल

तेहनो आवे ॥८॥ चिंते चित्तमां एम, अहो अहो ए जोजन ॥ करी कोइ दाय उपाय, जमीए तो धन दिन ॥ ए ॥ साली दाली घृत गोल, जात जातनां व्यंजन ॥ बेसी राजा साथ , जमे नयन करी अंजन ॥ १० ॥ रसलंपट थयो चोर, स्वाद ते न मूकाए ॥ खाइ जाये नित्य, राजा डुर्बल थाये ॥ ११ ॥ मतिसागर परधान, पूछे नृपने जाखो ॥ देव डुबला कांय, कारण मुजने दाखो ॥ १२ ॥ अन्न अरुचि तुम कोय, अथवा बीजी चिंता ॥ कहेवा सरखी वात, होये तो कहो गुणवंता ॥ १३ ॥ तुजथी छानी वात, मारे नहीं कहे जूप ॥ पण छे अचरिज एक, सांजलो तेह सरूप ॥ १४ ॥ घणुं जमुं दिन दिन, तृप्ति न पामे देह ॥ हास्य वचन छे ए मांहे, कह्युं न जाये तेह ॥ १५ ॥ सांजली ए विरतंत, मंत्री चित्त धरेरी ॥ अदृश्य थको नर कोय, जोजन नक्की करेरी ॥ १६ ॥ निश्चय करी परधान, जोजन मंरूप आगे ॥ सूकां अर्कनां पान, फूल विखेर्यां विजागे ॥ १७ ॥ आप रह्यो परछंन, जोजन अवसर आयो ॥ चरणे चांप्यां पान, मंत्रीसर मन जायो ॥ १८ ॥ दीधां दृढतर बार, सुजट चिहुं दिश मूक्या ॥ करीख तणां जे छाम, धूम अरथे ते फुंक्यां ॥ १ए ॥ धूम तणे संजोग, नयन अंजन सवि नाठो ॥ रूपखुरो प्रत्यक्ष, सघले सुजटे दीठो ॥२०॥ पाछेवाइ बांध, आएयो

नृपनी पासे ॥ ते वेला ते चार, मन मांही एम विमासे ॥ २१ ॥ हा शुं कीधुं काम, जीव जीवन केम राखुं ॥ विणठ्यां बेहु काज, हवे हुं केहने जाखुं ॥ २२ ॥ शो कीजे पस्ताव, ज्ञवितव्यता बलवंत ॥ देह गया जिम तेह, उलंघी नवि जंत ॥ २३ ॥ राजाने आदेश, तस्कर शूली दीधो ॥ एहशुं बोले जेह, तेहने ए दंड सीधो ॥ २४ ॥ मूक्या जोवा काज, ठाना चर पोताना ॥ कोइ न जाये पास, पामीजे बोतानां ॥ ॥२५॥ एणे अवसर ए ढाल, आठमी थइ ए पूरी ॥ नेमविजय कहे एह, कथा अछे अधुरी ॥२६॥

डुहा.

मुजने साथे लेइने, चैत्य वांदवा शेठ ॥ गया हता वलतां थकां, पापी पमीयो देठ ॥ १ ॥ तव में पूब्युं तातने, कवण पुरुष ठे एह ॥ रूपखुरो व्यसनी जिको, राये विमंब्यो तेह ॥ २॥ द्यूत थकी सुत धर्मनो, मांस थकी वक जोय ॥ मद्य थकी यडु-नंदना, वेश्या चारु विगोय ॥ ३ ॥ ब्रह्मदत्त नृप मृगया थकी, चोरीथी शिवज्रूत ॥ परदाराना दोषथी, रावण तेह विगुत ॥ ४ ॥ एक एक व्यसने करी,ए सहु पाम्या डुःख ॥ सात व्वसन पूरां होये, ते केम पामे सुख ॥ ५ ॥

ढाल नवमी.

नमणी खमणी ने गयगमणी—ए देशी.

चोर कहे सांजल व्यवहारी, तुं तो मोटो परउपगारी ॥ शियाले खाधा मुज चरण, कागे मस्तके पाड्यां वरण ॥ १॥ पूरव कर्मे कमाया पोते, ते सवि उदय आव्यां जोते ॥ पाणी माग्युं बहु जण पासे, कोइ न पाये सहुको नासे ॥ २ ॥ त्रण दीवसनो तरस्यो हुं बुं, तुजथी पाणी पीवा वांबुं ॥ तुं धरमी पाणी जो पाये, तो मुज प्राण सुखे सही जाये ॥ ३ ॥ उलसीत करुणा कहे शेठ वाणी, हमणां तुजने पाइशुं पाणी ॥ हुं लेवा जउं बुं आप, पंच परमेष्ठी जपे तुं जाप ॥ ४ ॥ एम कहीने तस मंत्रज जाख्यो, मुजने तेने थानके राख्यो ॥ जल लेइने आवे वेहेला, चोरे प्राण तज्या ते पेहेला ॥ ५ ॥ महा मंत्र मन निश्चल ध्यायो, पहेले देवलोके देवगति पायो ॥ जल लेइने आव्यो मुज तात, चोर तणी दीठी ते घात ॥ ६ ॥ मुजने घरनो डुउं दीधो, पोते देहरे काउस्सग्ग कीधो ॥ माणस जे मूक्यांतां ठाने, तेणे वात कही राजाने ॥ ७ ॥ शेठ तणे घर मूड्रा धारो, कोप्यो नृप कहे जइने मारो ॥ दोड्या सेवक मारण सही, अवधिनाण दीठो सुर तवही ॥ ८ ॥ आप सोनो ठे उपकारी,

एणे माहरी डुरगति वारी ॥ मारा गुरुने ए डुःख देशे, द्वारे रह्यो दंम धरीने वेषे ॥ ए ॥ एटले जण राजाना आव्या, हांक्या पेसण मांहि नव पाव्या ॥ रोष करी हणवा ते सुंड्या, देवे निज दंमे ते कुड्या ॥ १० ॥ पछी नृपे मूक्यो कोटवाल, तेहने पण सुरे देइ गाल ॥ दंडे हणीने वली ते पाड्यो, नूप सुणीने अति घणुं त्राड्यो ॥ ११ ॥ पोते वल वाहन लेइ चाल्यो, जव नजरे ते देवे निहाल्यो ॥ मारी हांक कटक सवी त्राठो, प्राण लेइने राजा नाठो ॥ १२ ॥ एकले सकल नगर एम जीत्युं, मतिसागर मंत्रीसरे चिंत्युं ॥ माणस रूप नहीं सुण नूप, ए तो दीसे देव सरूप ॥ १३ ॥ धूप क्षेप वल वाकुल दीधो, विनति करीने परगट कीधो ॥ केणे अपराध कर्यो तुज स्वामि, नाखो नाम कहुं शीर नामी ॥ १४ ॥ अविवेक ए राजा ताहारो, सज्ञान शिरोमण धर्मगुरु माहारो ॥ जिनदत्त शेठने निरापराध, करवा मांमी अति आवाध ॥ १५ ॥ तेणे हुं नगर लोकने मारुं, माहारा गुरुनी पीडा वारु ॥ तुम गुरु शेठ थयो केम हेव, पूरव नव दाख्यो तव देव ॥ १६ ॥ धन्य तुं देव मंत्रीसर बोले, जन्मांतर उपगारी तुं तोले ॥ पहेली वय पाणी जे पीधुं, अंतकाले श्रीफल ते दीधुं ॥ १७ ॥

यतः—प्रथमवयसि पीतं तोयमल्पं स्मरंतः ।
शिरसि निहितभारा नालिकेरा नराणाम् ॥
उदकममृतकल्पं दद्युराजीवितांतं ।
न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति ॥ १ ॥

नगर तणुं टालो डुःख देव, जे कहो ते हवे कीजे सेव ॥ सहुको शरण करो जिनदत्तनुं, जो मन बे तुमने जीवितनुं ॥ १७ ॥ राजा प्रजा सहु देहरे आवे, पगे लागी अपराध खमावे ॥ हाथीपर बेसारी शीषे, नगर मांहीं आएयो अवनीशे ॥ १ए ॥ उव्या सुजट थयो जयकार, सोवन वृष्टि करी अति सार ॥ रतन त्रण असुलक दीधां, शेठ तणां मनवंछित सीधां ॥ २० ॥ सहुको लोक करे परशंसा, धर्म तणी न करे कोइ खींसा ॥ देखो धर्म तणां फल वीर, नवमी ढाल नेमे कही सधीर ॥२१॥

डुहा.

रतन लेइ ते मुज पिता, शेत्रुंजय गिरनार ॥ चैत्य करावी अजिनवां, तिलक चमाव्यां सार ॥ १ ॥ प्रसेनजीतने आपीयां, रतन त्रण उदार ॥ माहरा गुरुनो जक्त ए, एम मन करी विचार ॥ २ ॥ लोहपुराने वली दीयां, रतन त्रण सुखकार ॥ तेणे यूते ते

हारीयां, सुर गयो स्वर्ग मोझार ॥ ३ ॥ केणे दीक्षा केणे बार व्रत, केणे समकित सुविशेष ॥ बालपणे दृढ हुं थयो, धरम तणां फल देख ॥ ४ ॥ कहे सघली साचुं कह्युं, कुंदलता कहे जूठ ॥ राजा श्रेणिक चिंतवे, अहो नारी ए धूठ ॥ ५ ॥ मुज पिताना राजमां, ए थइ सघली वात ॥ पापण ए माने नहीं, पूछीश हुं परभात ॥ ६ ॥ शेठ कहे जयश्री प्रते, सुण गोरी गुणराश ॥ तें दीठुं कंइ सांभल्युं, धर्मफल तेह प्रकाश ॥ ७ ॥

ढाल दशमी.

चोपाइनी देशी.

कहे पहेली नारी सुणो कंत, नगरी उज्जेणीए नृप गुणवंत ॥ संग्रामसुर नामे जयकारी, शेठ रिषभसेन समकितधारी ॥ १ ॥ तेहने घर जयसेना नारी, शील गुणे सीता अवतारी ॥ समकितवंत सदा सत्य संधा, कर्म वशे करी ते छे वंध्या ॥ २ ॥ एकदा नाह भणी ते भाखे, पुत्र विना कोण वंशने राखे ॥ एक घडीमां घडी जल बुडे, नंदन विण नाम क्षणमां डुबे ॥ ३ ॥ बीजी नारी तणो विवाह, कंत करो करी मन उच्छाह ॥ वय परिणत थइ सुण नारी, वात म काढे ए मुख बहारी ॥

४ ॥ लोक हसे कहे बुढो बेल, वरघोडे चढीउं थइ छेल ॥ संतति काजे नहीं कोइ दूषण, पुत्र थया पछी थाशे जूषण ॥ ५ ॥ जोरे इभ्य तणी एक बेटी, परणावी सुंदरी गुण पेटी ॥ सुंदरीने सोंपी घर ज्ञार, जयसेना करे धर्म व्यापार ॥ ६ ॥ सुंदरीने जन्म्यो सुत सार, वांऊीयानां उघड्यां घरबार ॥ पीहर सुंदरी पहोती जाम, बंधूसरी माता पूछे ताम ॥ ७ ॥ सुखणी तुं छे माहरी जाइ, शोक्य संकटमां केशो सुख माइ ॥ शोक उपर दीधी तुमे जाणी, पूछवुं घर पीने पाणी ॥ ८ ॥ शोक मांही घाली सुख इच्छा, माथुं मुंमावी नक्षत्रनी प्रीछा ॥ जयसेना मुज घणुं संतापे, माहारी छांम देखे तिहां कापे ॥ ए ॥ जंजेरी मूक्यो ज्ञरतार, दासीथी अवगणे अपार ॥ बंधूसरी सुणी ए वचन्न, जंपे पुत्री धीरज धर मन्न ॥ १० ॥ जयसेनानुं जीवित हरशुं, तुजने सुख थाशे तेम करशुं ॥ एहवे एक जोगी तिहां आव्यो, बंधूसरी मन अधिको सोहाव्यो ॥ ११ ॥ उठी ज्ञत्ती थइ चरणे लागी, सरस ज्ञिक्षा दीधी अनुरागी ॥ संतोष्यो आसन बेसारी, मुज घर ज्ञिक्षा लेजो हितकारी ॥ १२ ॥ आवे ते दिन दिन आवासे, नवि रसवती आपे उल्लासे ॥ जगते रीऊयो जोगी बोले, ताहरे

॥ २४५ ॥

कोइ न माइ तोले ॥ १३ ॥ मन माने ते हवे तुं माग, वंधूसरी चिंते मुज लाग ॥ गद्गद साद पुत्री विरतंत, जयसेनाने मारो महंत ॥ १४ ॥ कालीचौदश कहे क-पाली, विद्या साधीश समरीश वाली ॥ हरखी वंधूसरी मन रूली, दशमी ढाल नेमे कही रुली ॥ १५ ॥

दुहा.

कालीचौदशने दिने, जोगी जइ मसाण ॥ वेताली देवी तणुं, समरण करे सु-जाण ॥ १ ॥ प्रत्यक्ष थइ देवी कहे, वच्छ समरी श्ये काज ॥ जयसेनाने मारो जइ, करो वेगे ए काज ॥ २ ॥ देवी आवी मारवा, कर साही करवाल ॥ सामुं जोइ नवि शकी, पोसह व्रत रखवाल ॥ ३ ॥ त्रण प्रदक्षणा देइने, आवी जोगी पास ॥ तिम-हिज पाछी मोकली, जयसेना आवास ॥ ४ ॥ वार त्रण एम देवता, आवी फरी म-साण ॥ जोगी चिंते मुजने, मारे हवे निदान ॥ ५ ॥ जयसेना अथ सुंदरी, वेहुमां विरुइ जेह ॥ मारो माता तेहने, म करो कोइ संदेह ॥ ६ ॥ जइने मारी सुंदरी, देवीए ततकाल ॥ परने चिंते पाडुउं, तेना एवा हाल ॥ ७ ॥

ढाल अगीआरमी.

हठीला जादव हठ करी हरीय मनावीए हो लाल—ए देशी.

जयसेनाए धारीयोरे लाल, पोसह व्रत परजातरे॥ शासनदेवी॥ मूइ दीठी सुंदरीरे लाल, हा केणे कीधी घातरे ॥ शा० ॥ सार करो मुज सामनीरे लाल॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साच जूठ कोण जाणशेरे लाल, शोक्या तणो व्यवहाररे ॥शा०॥ सहु कहेशे मारी होशेरे लाल, कलंक तणो अवताररे ॥ शा० सा०॥॥२॥ शासनसुरी आराधवारे लाल, काउस्सग्ग कीधो साररे ॥ शा० ॥ परगट थइ देवी कहेरे लाल, म करो दुःख लगाररे ॥ शा० सा० ॥ ३ ॥ बंधूसरी हरखित थकीरे लाल, जमाइने घर जायरे ॥ शा० ॥ जाएयुं जयसेना मूइ हशेरे लाल, सुंदरी देखी दुःख थायरे ॥ शा० सा० ॥ ४ ॥ रोती माथुं कूटतीरे लाल, आक्रंद करती अपाररे ॥ शा० ॥ जयसेनाए मारी सुंदरीरे लाल, जइ पोकारी दरबाररे ॥ शा० सा० ॥ ५ ॥ जयसेनाने तेडवारे लाल, माणस मूके रायरे ॥ शा० ॥ तव शासन रखवालीकारे लाल, जोगीने उपायरे ॥ शा० सा० ॥ ६ ॥ जयसेना मोटी सतीरे लाल, एहवां न करे कामरे ॥ शा० ॥ राय आगल जोगी कहेरे लाल, सोने न लागे श्यामरे ॥ शा० सा० ॥ ७ ॥ बंधूसरीए मु-

जनेरे लाल, जमाकी जली जातरे ॥ शा० ॥ प्रारथना एहवी करीरे लाल, जयसेना करो घातरे ॥ शा० सा० ॥ ८ ॥ में वेताली आराधीनेरे लाल, मूकी मारण तासरे ॥ शा० ॥ कोण मारे पुण्यवंतनेरे लाल, सुंदरी मारी पापराशरे ॥ शा० सा० ॥ ए ॥ एहवे शासनदेवतारे लाल, आवी जाखे साखरे ॥ शा० ॥ वचन मळ्यां वेउ सारिखांरे लाल, वलतुं राजा जाखरे ॥ शा० सा० ॥ १० ॥ बंधूसरी देश बाहरेरे लाल, काढो करे हुकमरे ॥ शा० ॥ आज पछी कोइ एहवांरे लाल, न करे अशुज कामरे ॥ शा० सा० ॥ ११ ॥ रिषजसेननी नारीनेरे लाल, महोच्छव करे महाराजरे ॥ शा० ॥ निज मंदिर पोहोती करीरे लाल, सिध्यां वंछित काजरे ॥ शा० सा० ॥ १२ ॥ सोवन वृष्टि करी तिहांरे लाल, महिमा कीधो देवरे ॥ शा० ॥ साचो धरम संसारमांरे लाल, सहु करजो नित्यमेवरे ॥ शा० सा० ॥ १३ ॥ राजा समकित पामीउंरे लाल, धरम तणां फल देखरे ॥ शा० ॥ हुं धरमे निश्चल थइरे लाल, ते देखी सुविशेषरे ॥ शा० सा० ॥ १४ ॥ शेठ सहित ब्रामनीरे लाल, कहे साचुं कह्युं एहरे ॥ शा० ॥ लता कहे मानुं नहींरे लाल, जाख्युं कूडुं तेहरे ॥ शा० सा० ॥ १५ ॥ श्रेणिकादिक चिंतवेरे लाल, जुउ हठीली नाररे ॥ शा० ॥ सातमो खंरू पूरो थयोरे लाल, नेमविजय सुख-

काररे ॥ शा० सा० ॥ १६ ॥ हीरविजय सूरि तणोरे लाल, शुन्नविजय तस शिष्यरे ॥ शा० ॥ न्नावविजय कवि दीपतारे लाल, सिद्धि नमुं निशदिसरे ॥ शा० सा० ॥ १७ ॥ रूपविजय रंगे करीरे लाल, कृष्णविजय कर जोडरे ॥ शा० ॥ रंगविजय गुरु माहरारे लाल, नावे कोइ एहनी होमरे ॥ शा० सा० ॥ १८ ॥ सातमा खंड तणी कहीरे लाल, अग्यारमी ढाल रसालरे ॥ शा० ॥ नेम कहे न्नवियण तुमेरे लाल, सांन्नलो बालगोपालरे ॥ शा० सा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षारासे सप्तम खंड संपूर्ण.

खंड ८ मो.

दुहा.

पूछे चंदनश्री प्रते, अर्हदास उल्लास ॥ जामनी तें जगवंतनो, लह्यो धर्म तेम जास ॥ १ ॥ कहे नारी कपीथपुरे, अरिमर्दन राजान ॥ सोमदत्त ब्राह्मण वसे, दारिद्र तणो निधान ॥ २ ॥ तेहनी नारी सोमीला, ताप थकी मूइ सोय ॥ रति नवि पामे द्विज किहां, करे दुःख बहु रोय ॥ ३ ॥ सोमदत्त वनमां गयो, मळ्यो साधु महाजाग ॥ तेहने वचने उपन्यो, निर्ग्रंथ मन वैराग ॥ ४ ॥

यतः– नवश्रोतविलेऽमुष्मिन् । कलेवरगृहे किल ॥
जीवस्य वसतः काल–व्यालतः कुशलं कियत् ॥ १ ॥

श्रावकनां व्रत आदरी, आव्यो नगर मोझार ॥ धर्म प्रजावे धन मळ्युं, तज्या पाप व्यापार ॥ ५ ॥ बाळवने माने घणुं, व्यवहारी धनपाल ॥ स्वामी जाणी आपणो, करे सार संजाल ॥ ६ ॥ रोगाकुल थयो एकदा, ब्राह्मण ते सोमदत्त ॥ तेडावी धनपालने, कहे बांधव सुण वत्त ॥ ७ ॥

ढाल पहेली.

मुज लाज वधारो रे—ए देशी.

ब्राह्मण कहे वातरे, सुण शेठ सुजातरे, दिन रयणी न जात चिंता छे मुजनेरे ॥ ते टालो जाइरे, जेम सद्गति थाइरे, तुं परम सखाइ कहुं छुं तुजनेरे ॥ १ ॥ चिंता हेतु दाखोरे, कांइ मनमां न राखो, जे मुजने जाखो ते करशुं सहीरे ॥ सोमदत्त वली बोलेरे, तुं पुरुष अमोलेरे, तारे कोण तोले आवे इण महीरे ॥ २ ॥ सोमा मुज कन्यारे, गुण लक्षणे धन्यारे, नहीं एवी अन्या सोपुं तुज जणीरे ॥ ब्राह्मण नहीं खीणोरे, जिन धर्मे लीणोरे, जोइ प्रवीणो करजो एहनो धणीरे ॥ ३ ॥ शेठे कह्युं वारुरे, परमेसर सारुरे, एम करशुं विचारी आणी निज मंदिरेरे ॥ द्विज सरगे पहो-तरे, जिहां सुख बहोतरे, शेठ गुणयुत पाले पुत्रीनी परेरे ॥ ४ ॥ संगति साध्वीनीरे, साते धाते जीनीरे, जिन धरमे लीनी करती जिन पूजनारे ॥ दीठी रुद्रदत्तेरे, लागी तस चित्तेरे, निज मित्रने पूछे ए केहनी धूआरे ॥ ५ ॥ मित्र कहे सुण जाइरे, सोमदत्तनी जाइरे, धनपाल घरे आइ वाधे सुंदरीरे ॥ रुद्रदत्त कहे परणीरे, करीश हुं घरणीरे, ए अनोपम तरुणी सोवन मुद्रडीरे ॥ ६ ॥ हुती वरुजागीरे, दीक्षिता-

दिक मागीरे,हुआ वहु रागी जिन त्रिण थइ नहींरे ॥ तुं तो जुआरीरे, सात व्यस-ननो धारीरे, केणी परे अविचारी पामशे एहनेरे ॥ ७ ॥ बोले अहंकारीरे, जो जो मति मारीरे, न परणुं ए नारी तो कहेजो पशुरे ॥ चाल्यो पर द्वीपेरे, एक साधु समीपेरे, सघली विधि दीपे जेम श्रावक शिशुरे ॥ ८ ॥ फरी आव्यो वेगेरे, मनने उद्वेगेरे, देहरे संवेगे आवी पूजा करीरे ॥ गाये गीत रसा-लरे, चोखी कहे ढालरे, देखी धनपाल पूछे उलट धरीरे ॥ ए ॥ किहांथी तुमे आव्यारे, कोण जाते कहाव्यारे, मनमां वहु भाव्या वाणारसी नयरे वसुंरे ॥ मा-बापे कालरे, कीधो अकालरे, ब्राह्मण दयाल अबुं कहुं केशुंरे ॥ १० ॥ धीरज मन धरतारे, तीरथ जात्रा करतारे, एणी परे फरतां एक दिन मुनिवर मल्योरे ॥ तेणे भाख्यो धर्मरे, जेहथी शिव शर्मरे, सुणी जिनधर्म मुज मिथ्या मत टल्योरे ॥ ११ ॥ चैत्यवंदन काजरे, आव्यो इहां आजरे, अवधारो महाराज शेठ कहे अशुंरे ॥ घर आवो देवरे, करशुं तुम सेवरे, सोमा ततखेव तुजने परणावशुंरे ॥ १२ ॥ विष सरी-खी वामरे, तेहशुं नहीं कामरे, तस लीजे नहीं नाम ठग एम कहेरे ॥ आग्रहअति कीधरे, जाएयुं कारज सीधरे, परणीने परसीध संधा निरवहीरे ॥ १३॥ जुवारी जेथरे,

जाइ नाखे तेथरे, सहु आवो एथ कंकण बांधी आवीउरे ॥ कीधो परपंचरे, हुवो रोमंचरे, जुठ मुज संच सोमा घर लावीउरे ॥ १४ ॥ करे के तव प्रशंसारे, कर जोमी नमस्यारे, न करे कोइ खींसा ते सुख नोगवेरे ॥ पूरे मन आशरे, नर-नारी आवासरे, सवि विलास रयणी दिन जोगवेरे ॥ १५ ॥ गयो केतो कालरे, वली तेहज हवालरे, नवि जाये ढाल जेहने जे पमीरे ॥ प्रकृति जासरीररे, विचले नवि धीररे, पहेली सुणो वीर ढाल खंरू आठमे नमीरे ॥ १६ ॥

डुहा.

मरजादा पाली नली, दिवस केटला सीम ॥ द्यूतासक्त वली थयो, श्यो कपटीनो नीम ॥ १ ॥ सुमित्रा वेश्या सुता, कामलता तसु नाम ॥ तेहशुं विलसे रातदिन, तजी आपणी वाम ॥ २ ॥ सोमा मनमां डुःख धरे, नयणे मूके नीर ॥ सुणी वात शेठे सहु, दे पुत्रीने धीर ॥ ३ ॥ बेटी डुःख कीजे नहीं, दीजे कर्मने दोष ॥ सुख डुःख सरज्यां पामीए, श्यो कीजे हवे शोष ॥ ४ ॥ आशा तजी नरतारनी, धरी बेठी धर्म ध्यान ॥ इह नव परनव जेहथी, सुख पामशे निरवाण ॥ ५ ॥ मानी वात पिता तणी, एक प्रासाद कराव ॥ प्रतिमा श्री शांतिनाथनी, थापी मनने नाव ॥ ६ ॥ प्रतिष्ठा कीधी

पठी, संघ जगत करी सार ॥ सुमित्रा कामलता सहित, तेड्यो रुड जुवार ॥ ७ ॥ जोजन जलां करावीने, दीधां फोफल पान ॥ जजे न उत्तम अधम पाप, चंद तणो अहिनाण ॥ ८ ॥

यतः—निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु । दयां कुर्वंति साधवः ॥
न हि संहरति ज्योत्स्नां । चंद्रश्चांडालवेश्मनि ॥ २ ॥

ढाल बीजी.

काची कलीय म तोड लविंगरी मालीयां, पीयु चाल्या परदेश बेठी होती मालीयां—ए देशी.

सोमानुं रूप देखी सुमित्रा शिर धूणे, चिंते चित्त मांही एम अहो ए किम बने ॥ एहवी सुंदर नारी तजी केम पापीए, अथवा कै तव बुद्धि विचारे नवि हीये ॥ १ ॥ काम एह कर्युं जे पुत्रीने जायगे, जो रहे जीवती एह थाये शल्य जायगे ॥ एम विचारी फूव सर्प घाली घडे, कामलता देइ साथ आवी आदर वडे ॥ २ ॥ सरस कुसुमनी माल आणी में जोवती, पूजी एणे जिनराज पापमल धोवती ॥ सरलपणे करस्पर्शी कर्यो घटे जेटले, जुजंगम फूलमाल थयो ते तेटले ॥ ३ ॥ लेइ सुगंधी

फूल जिनेश्वर अरचीया, केसर चंदन अगर कपूरे चरचीया ॥ कामलता गले हार घाल्यो रमत मिषे, नाग डस्यो ततकाल पमी जोंय तसे ॥ ४ ॥ मृत पुत्रीने देख अका कूटे हैयुं, आक्रंद करे अपार देव तें शुं कीयुं ॥ करे विलाप अनेक नयणे आंसु ऊरे, घट सरप लेइ वेगे आवी नृप मंदिरे ॥ ५ ॥ करती हाहाकार कहे पोकार करी, देव सुणो अरदास सोमा अति मद जरी ॥ माहरी बाल हवे हुं केम करुं, हुं मोशी निराधार जीवित केणी परे धरुं ॥ ६ ॥ सोमा तेमावी राय कहे कुल खांपणी, कामलताने कांइ मारी तें पापिणी ॥ कहे सोमा महाराज वचन अवधारीए, जयणा सूक्ष्म जीव थूल केम मारीए ॥ ७ ॥ मांमी पूरव वात सोमाए सवी कही, देखा-ड्यो घट साप मित्रा अवसर लही ॥ पंच वरण फूलमाल सोमा हाथे धरी, मित्रा काले हाथ अहि थाये फरी ॥ ८ ॥ वार त्रण एम नाग कुसुममाला हुवो, कहे सजा सहु कोय सोमा साची जुर्ज ॥ देखी चमक्यो जूप नहीं ए मानवी, प्रत्यक्ष देवी तेह एम मन आ-णवी ॥ए॥ कर जोमी करे राय सोमाशुं विनति, कामलता जीवामो अहो तुम महा सती ॥ मंत्र नवकार प्रजाव मूर्गा मटी गइ, सती तणे करस्पर्शे ऊठी बेठी थइ ॥ १० ॥ सुमित्रा निज करतूक प्रकाशी शुज मते, धर्म तणां फल देख लह्यो धर्म जूप ते ॥

रुद्रदत्तादिक अवर तिहां श्रावक थया, तेणे ठामे सुणी स्वामि पाप सवि मुज गयां ॥ ११ ॥ शेठ शेठाणी सर्व कहे साचुं कह्युं, कुंदलता कहे जूठ में नवि सद्दह्युं ॥ श्रेणिक अजयकुमार वचन ते सांजली, चिंते हठीली नार न दीसे ए जली ॥ १२ ॥ देशुं दंरु प्रजात राते नवि बोलीए, वेचीने निज जंघ उजागरो कोण लीए ॥ आठमे खंडे ढाल वीजी ए सोहती, कहेशे मित्रश्री वात नेम मन मोहती ॥ १३ ॥

दुहा.

अर्हदास मित्रश्री प्रते, पूछे बहु धरी प्रेम ॥ केम प्राप्ति थइ धर्मनी, सा पामी कहे तेम ॥ १ ॥ वच्छ देशे नगरी वरी, कोसंबी सुख थान ॥ धनंजय राजा तिहां, सोमशर्मा परधान ॥ २ ॥ मासोपवासी एकदा, आव्यो साधु उद्यान ॥ तास प्रजावे वन थयां, नवां फूल फल पान ॥ ३ ॥ मासखमणने पारणे, नगरमां ऋषिराय ॥ आव्या वोहोरण देखीने, प्रणमे मंत्री पाय ॥ ४ ॥ शुद्ध पान असने करी, प्रतिलाज्यो धरी जाव ॥ पंच दिव्य प्रगट थयां, पात्र दान प्रस्ताव ॥ ५ ॥ विस्मय पाम्यो वेगशुं, आव्यो जिहां अणगार ॥ पूछे बे कर जोडीने, जगवन् कहो विचार ॥ ६ ॥ अग्निहोत्री दिक्षित जणी, दीधां में बहु दान ॥ कनक नाग तिल अश्व रथ, दासी मही

परधान ॥ ७ ॥ कन्या कपिला धेनु वली, महादान दश एह ॥ पण अतिशय दीठो नहीं, शुं कारण छे तेह ॥ ८ ॥

ढाल त्रीजी.

नणदलनी देशी.

मुनिवर कहे महेता सुणो, असंजति एह अजाण ॥ शुभ मन ॥ छ कायनी हिंसा करे, तेणे फल नहीं मन आण ॥ शु० मु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उखर खेत्रे वावीयो, जेम निष्फल थाये बीज ॥ शु० ॥ तेम दीधुं कुपात्रने, ते पण गणो तिमहीज ॥ शु० मु० ॥ २ ॥ ज्ञानवंत क्रिया करे, ते जाणीजे सुपात्र ॥ शु० ॥ तेहने दीधुं बहु फले, तप करे निरमल गात्र ॥ शु० मु० ॥ ३ ॥

यतः—एकवापीजलं सिक्त—माम्रे मधुरतां व्रजेत् ।
निंबे च कटुतां याति । पात्रापात्रनियोजनात् ॥ १ ॥

पूछे मंत्री मुनि प्रते, चित्त कोमल नहीं धीठ ॥ शु० ॥माहारी परे बीजे केणे, दान तणां फल दीठ ॥ शु० मु० ॥ ४॥ विश्वभूति ब्राह्मण तणी, कथा कहे मुनिराज ॥ शु० ॥ देश वैराट दक्षिण दिशे, सोमप्रभ तिहां राज ॥ शु० मु० ॥ ५ ॥ ब्राह्मणने माने घणुं,

नक्ति करे नित्यमेव ॥ शु० ॥ बेठो सना मांहे एम कहे, वामव जगमां देव ॥ शु० मु० ॥ ६ ॥ वित्त सफल करवा नणी, बहु सुवरण नामे जाग ॥ शु० ॥ ब्राह्मण पासे मंका-वीयो, पुण्य उपर धरी राग ॥ शु० मु० ॥ ७ ॥ जगन करे तिहां ढुकमो, विश्वनूति रहे विप्र ॥ शु० ॥ खले जइ जव जाचीने, साचुं करे ते खिप्र ॥ शु० मु० ॥ ८ ॥ चार पींमी करे तेहनी; पहेली हुतवह पोख ॥ शु० ॥ बीजी अतिथि त्रीजी पोते, चोथी नारी संतोष ॥ शु० मु० ॥ ए ॥ आव्यो मुनिवर गोचरी, विश्वनूतिने बार ॥ शु० ॥ बीजे पिंमे निमंत्रीयो, नवि लीधो अणगार ॥ शु० मु० ॥ १० ॥ मुज पिंमी ल्यो स्वा-मिजी, सचित्ते मिश्रित दीठ ॥ शु० ॥ ते पण मुनि लीधी नहीं, नारी बोले मीठ ॥ शु० मु० ॥ ११ ॥ आहार माहारो प्रनु दीजीए; ए छे मोटुं पात्र ॥ शु० ॥ आज सफल दिन आपणो, जंगम तीरथ जात्र ॥ शु० मु० ॥ १२ ॥ आहार लीधो मुनिए सूजतो, हेम रतन थइ वृष्टि ॥ शु० ॥ नर नारी बेहु थयां, सुधां समकितदृष्टि ॥ शु० मु० ॥ १३ ॥ नरपतिने जइ द्विज कहे, देखो जगन फल देव ॥ शु० ॥ कनक धारा वूठी घणी, नूप जणे ततखेव ॥ शु० मु० ॥ १४ ॥ में धन दीधुं तुम नणी, जइने ल्यो तुमे तेह ॥ शु० ॥ त्रीजी ढाल खंम आठमे, नेमविजय कहे एह ॥ शु० मु० ॥ १५ ॥

दुहा.

धन लेवा ब्राह्मण गया, तव ते थया अंगाल ॥ क्षण एक रहीने वली ग्रहे, जव थाये ते व्याल ॥ १ ॥ वृद्ध नृपतिने कह्युं, नहीं जगन फल नाथ ॥ विश्वभूति कृत दान फल, इह नव परभव साथ ॥ २ ॥ नृप भणे विश्वभूतिने, हुं आव्यो तुज गेह ॥ जगन्य आध फल लेइने, दान आध फल देह ॥ ३ ॥ विश्वभूति बोले हसी, दान फल न देवाय ॥ देव तणुं वित्त ल्यो तमे, अध फल द्यो कहे राय ॥ ४ ॥ विश्वभूति वलतुं कहे, सांभल राय सुजाण ॥ स्वर्ग मुक्ति सुख जेहथी, ते कोण वेचे दान ॥ ५ ॥ देखी सत्य नृप द्विज तणुं, तुठ्यो आपे रिद्ध ॥ दलिद्र गयुं विश्वभूतिनुं, जिहां साहस तिहां सिद्ध ॥ ६ ॥ नृपति पूछे मुनि प्रते, दान केतां कहो स्वाम ॥ त्रिधा दान मुनिवर कहे, दीधे सीजे काम ॥ ७ ॥

ढाल चोथी.

नयरो नगीनो मारो, हाररो हीरो मारो, केसररो भीनो मारो साहेबो,
राजेंद्र मारा, घडी एक रहो भूकाय हो—ए देशी.

शास्त्रे दान ते जाणीए, राजेंद्र मारा, रा० लिख लिखावी ग्रंथ हो ॥ साधु भणी

ते दीजीए, रा० वावे मुक्तिनो पंथ हो ॥१॥ ए आंकणी ॥ दान ज्ञविक जन दीजीए, रा० दाने दोलत थाय हो ॥ जश कीरति इह ज्ञव लहे, रा० परज्ञव सुगति जाय हो ॥ दा० ॥ २ ॥ अज्ञयदान नर जे दीए, रा० तेहने ज्ञय नवि कोय हो ॥ इह ज्ञव परज्ञव जाणजो, रा० शिवपुरनां सुख होय हो ॥ दा० ॥ ३॥ आहार उंषध वस्त्रे करी, रा० थिर धरमे थापीजे हो ॥ धरम थयो ज्ञाव दानथी, रा० आठ करम कापीजे हो ॥ दा० ॥ ४ ॥ कर नीचा जिनवर करे, रा० अन्नदान परधान हो ॥ तेहनी उपम कुण कहुं, रा० दीजे देइ मान हो ॥ दा० ॥ ५ ॥

यतः—ददस्वान्नं ददस्वान्नं । ददस्वान्नं युधिष्ठिर ॥
अन्नदः प्राणदो लोके । प्राणदः सर्वकामदः ॥ १ ॥
रोगिज्यो ज्ञेषजं देयं । रोगा देहविनाशकाः ॥
देहनाशे कुतो ज्ञानं । ज्ञानाज्ञावे न निवृत्तिः ॥ २ ॥

वस्त्र विविध प्रकारनां, रा० हित करी आपे हाथे हो ॥ तेहनुं फल सद्गुरु कहे, रा० छत्र धरावे माथे हो ॥ दा० ॥ ६ ॥ दान ज्ञण एम सांज्ञली, रा० पृथ्वी-पति प्रतिबुद्ध हो ॥ विश्वज्ञूति पण तिहां थयो, रा० व्रतधर श्रावक शुद्ध हो ॥

दा० ॥ ७ ॥ सोमशर्मा मंत्रीश्वरे, रा० कथा सुणी नीम लीध हो ॥ लोहायुध धरुं नहीं, रा० काठ कृपाणज कीध हो ॥ दा० ॥ ८ ॥ पिशुने काठ कृपाणनी, रा० नृपतिने वात ते जाषी हो ॥ सजा मांहे नृप बेसीने, रा० असिनी वात प्रकाशी हो ॥ दा० ॥ए॥ खड्ग जोइ क्षत्रिय तणां, रा० मंत्रीनो असि माग्यो हो ॥ खल विलसित जाएयुं खरुं, रा० जरम सही मुज जांग्यो हो ॥ दा० ॥ १० ॥

यतः—परवादे दशवदनः । पररंध्रनिरीक्षणे सहस्राक्षः ॥
सधृती वित्तहरणे । बाहुसहस्रार्जुन पिशुनः ॥ १ ॥

साचो धरम जो माहरो, रा० तो लोहमय असि थाजो हो ॥ एम कही राजाने दीयो, रा० संकट दूरे जाजो हो ॥ दा० ॥ ११ ॥ कोश थकी राये काढीउं, रा० लोह फलहलतो दीठ हो ॥ खल साहमुं जोइ कहे, रा० केम जूठुं कह्युं धीठ हो ॥दा०॥१२॥

यतः—सर्वदेवमयो राजा । वदंति विबुधा जनाः ॥
तस्मात्तत्पुरो नैव । वदेन्मृषा कथंचन ॥ १ ॥

फालो चुगलने नृप वदे, रा० तव मंत्री एम आखे हो ॥ कोप प्रजुजी मत करो, रा० ए जूठुं नवि जाखे हो ॥ दा० ॥१३॥ में जिनधर्मज आदर्यो, रा० जाण्यो लोहनो

दोष हो ॥ काष्ठ कृपाण करावीयो, रा० पुण्य तणो थयो पोष हो ॥ दा० ॥ १४ ॥ इमणां धर्म प्रनावथी, रा० लोह खड्ग ए दीसे हो ॥ सांजले राजा प्रजा सहु, रा० धरम करो निशदिसे हो ॥ दा० ॥ १५ ॥ हुं धरमे निश्चल थइ, रा० प्रत्यक्ष प्रत्यय जोय हो ॥ शेठ प्रमुख साचुं कहे, रा० लता न माने सोय हो ॥ दा० ॥ १६ ॥ चोर मंत्री राजा कहे, रा० तजे न डुरजन चाल हो ॥ खंम आठमे चोथी जली, रा० नेमविजय कहे ढाल हो ॥ दा० ॥ १७ ॥

डुहा.

नागश्री पूछे थकी, जंपे मधुरी वाण ॥ में एम समकित पामीयुं, प्रीतम हयडे आण ॥ १ ॥ नगरी नाम वणारसी, जीतारि तिहां नूप ॥ कनकचित्रा राणी रतन, रंजा सरखी रूप ॥ २ ॥ सुता सुमित्रा तेहनी, माटी वहोली खाय ॥ पांडु रोग तेथी थयो, आर्या मली एक आय ॥ ३ ॥ तस उपदेशे तिणे तज्यां, अनंतकाय अनक्ष ॥ निरुज थइ ते कन्यका, फल्यो नियम प्रत्यक्ष ॥ ४ ॥ जोवन आवी जाणीने, नृप विवाह निमित्त ॥ पट्ट अनेक देखामीया, कोइ न आव्यो चित्त ॥ ५ ॥

ढाल पांचमी.

सुरुला संदेशो कहे मारा पूज्यनेरे, मानीश तुज उपगाररे—ए देशी.

एहवे अंगदेशनो धणीरे, जवदत्त नामे जूपालरे ॥ जीतारि नृप प्रते एम कहेरे, मुजशुं करो विवसालरे ॥ ए० ॥ १ ॥ दासीना पुत्र तुज केम देउंरे, जाति हीण मनमां जाणरे ॥ राजकन्या जोग ए केम होयेरे, बोलजे विमासी वाणरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जवदत्त कहे जाति शुं करेरे, जो मांहि गुण नवि होयरे ॥ गुणने आदर सहु करेरे, जाति न माने कोयरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ गुणवंत तो पिण तुज जणीरे, कन्या केम देवायरे ॥ जो लाखिणी तोपण वाणहीरे, तेहिज पेहेरवी पायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ राज्य तणी करे कामनारे, तो पुत्री परणावरे ॥ नहिंतर बेवे लेयशुंरे, मुज वचन मन लावरे ॥ ए० ॥ ५ ॥ जीतारि कहे जीतशेरे, संग्रामे मुज जेहरे ॥ मुजथी अधिको जे होशेरे, कुंवरी पति गणे तेहरे ॥ ए० ॥ ६ ॥ घर आवी सेना सजीरे, जव चाले जवदत्तरे ॥ राणी कहे तिणे अवसरेरे, एक सुणो प्रभु वत्तरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ कन्या काजे कलह किशोरे, सरखे कुले विवाहरे ॥ नृप कहे वचन जीतारिनुंरे, कारण करण उच्छाहरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ जवदत्त आव्यो उतावलोरे, अरिनी सीम नजीकरे ॥

जीतारिए ते सांजलीरे, वदे वचन निरजीकरे ॥ ए० ॥ ए ॥ मूषक जेम मंजारी त-णारे, दिल करे पाफण दंतरे ॥ मृगलो सिंहने जेम मारवारे, खरी धरे मन खंतरे ॥ ए० ॥ १० ॥ वींटी नगरी ते चिहुं दिसेरे, मंत्री कहे तेणी वाररे ॥ कन्या स्वामि आपणी दीजीएरे, नीति वचन संजाररे ॥ ए० ॥ ११ ॥

यतः—त्यजेदेकं कुलस्यार्थे । ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ॥
ग्रामं जनपदार्थे च । आत्मार्थे पृथ्वीं त्यजेत् ॥ १ ॥

वोले जीतारि रखे वीहोरे, अरि बल नाखुं तोफरे ॥ साचुं कह्युं तुमे स्वामिजीरे, पण परदल वहु जोररे ॥ ए० ॥ १२ ॥ साहस सिद्धि होशे सहीरे, जेली करो वहु जेडरे ॥ सत धरी राम लक्ष्मणेरे, रावण नाख्यो उथेफरे ॥ ए० ॥ १३ ॥ दूत मूकीने कहावीयोरे, जवदत्ते जली जातरे ॥ सुता देइने सुखे रहोरे, कां पमो मृत्युनी पां-तरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ वचन सुणीने परजल्योरे, दूतने कीधो दूररे ॥ रणफंका वजफा-वीनेरे, चफीउ प्रवल पफुररे ॥ ए० ॥ १५ ॥ जेला सुजट मली जड्यारे, जारी थयो जारथरे ॥ नाठी सेना जीतारिनीरे, वोले मंत्रीसर तथरे ॥ ए० ॥ १६ ॥ राजन इहां र-

हेवुं नहींरे, जीतारि कहे तामरे ॥ जीत्यो नर लक्ष्मी लहेरे, वरे मृतने सुरवामरे ॥ ए० ॥ १७ ॥

जीवे च लभ्यते लक्ष्मीः । मृते चापि सुरांगना ॥
कायोऽयं क्षणविध्वंसी । का चिंता मरणे रणे ॥ १ ॥

पामे शिवसुख जीवतोरे, एम समजाव्यो नरंदरे ॥ आठमा खंडनी पांचमीरे, ढाल कही नेमे आणंदरे ॥ ए० ॥ १८ ॥

दुहा.

जीतारि गढमां रह्यो, जवदत्त जांजी पोल ॥ नगर लुंटवा मांडीयो, थयो हाल कलोल ॥ १ ॥ मुज कारण अनरथ होये, सुमित्रा देख सरूप ॥ सागारी अणसण करी, जाइ पडी जल कूप ॥ २ ॥ पुण्य प्रजावे थल थयुं, आवी सुरवर कोड ॥ सती थापी सिंहासने, उन्ना बे कर जोड ॥३॥ राजजुवनमां पेसतां, देवे थंन्यो जवदत्त ॥ एहवे किणही आवीने, कहे सुमित्रा वत्त ॥ ४ ॥ तज्यो क्रोध अहंकार सुण, पाम्यो परम समाध ॥ सुमित्राने आवी कहे, जगिनी खम अपराध ॥ ५ ॥ जीतारि जवदत्त

वे, मलीया मांहो मांह ॥ पाटे थापी निज पुत्रने, लीधी दीक्ष उछांह ॥ ६ ॥ प्रत्यक्ष पुण्य फल देखीने, हुं थइ समकित धार ॥ कुंदलता कहे ए असत्य, तें नाख्युं निरधार ॥ ७ ॥

ढाल छठी.

रसीया राचोरे दान तणे रसे—ए देशी.

पूछे पदमलताने शेठजी, केम थइ समकित प्राप्ति ॥ सोजागी ॥ सा कहे स्वामि कंपिलपुरवरे, हरिवाहन राजा शुज मति ॥ सो० पु० ॥ १ ॥ रिषजदास शेठ तिहां वसे, पदमावती प्रिया आधार ॥ सो० ॥ पदमश्री पुत्री छे तेहने, प्रत्यक्ष लक्ष्मीनो अवतार ॥ सो० पु० ॥ २ ॥ जरजोवन युवति आवी जली, एक दिन देहरे जातां दीठ ॥ सो० ॥ बुधदास शेठ तणे सुते वली, बुद्धसिंह घरे आव्यो नीठ ॥ सो० पु० ॥ ३ ॥ काम तणे बाणे करी पीडीयो, पडीयो जाइ जुने खाट ॥ सो० ॥ जमणवेला थइ पूछे शेठजी, जमे नहीं नंदन श्या माट ॥ सो० पु० ॥ ४ ॥ लाज तजीने वात कही तेणे, बेटा जूठी न कीजे जक्ष ॥ सो० ॥ मदिरा मांस जखी जे आपणे, चंडालश्री तिण गणे अधिक ॥ सो० पु० ॥ ५ ॥ तेहनी पुत्रीनी आशा

कीसी, वलतुं बोले बुद्धसिंह बोल ॥ सो० ॥ के परणुं के सरणुं आगनुं, ए मुज जाणो वचन अफोल ॥ सो० पु० ॥ ६ ॥ आश्वासीने तेह जमाडीयो, करशुं ताहरुं वेगुं काम ॥ सो० ॥ दिन दिन देहरे जाइ उपासरे, श्रावक थयो कपट परणाम ॥ सो० पु० ॥ ७ ॥ बुद्धसिंहे परणी रिषन्न सुता, पदमश्री आणी आवास ॥ सो० ॥ मिथ्या करणी देखी तेहनी, दिल मांही ते रही विमास ॥ सो० पु० ॥ ८ ॥ पदमश्रीने बुध गुरु एम कहे, पुत्री सिध्यां वंछित काम ॥ सो० ॥ सर्व धर्म मांहे बोध धर्म वडो, जिहां दुःख तणुं नहीं नाम ॥ सो० पु० ॥ ए ॥ उत्तर वलतो पदमश्री दीए, हंस सरिखा जे नर होय ॥ सो० ॥ पाणी दूध पटंतर ते करे, अरिहंत धर्म समो नहीं कोय ॥ सो० पु० ॥ १० ॥ रिषन्नदास अणसण करी आराधना, काळे थहोतो मुगति मोझार ॥ सो० ॥ सासु ससरो नणंद विशेषथी, संतापे वली तस जरतार ॥ सो० पु० ॥ ११ ॥ तोपण धरम न मूके मानिनी, ससरो कहे वहु सांजल वात ॥ सो० ॥ तारो बाप मरी मृगलो थयो, वनमां मुज गुरु लही अवदात ॥ सो० ॥ १२ ॥ जो तुम गुरु एवा ज्ञानी अछे, तो परजाते तेह जमारु ॥ सो० ॥ हुं पण साचो धरम समाचरुं, नाखुं मिथ्यामति सवि छांरु ॥ सो० पु० ॥ १३ ॥ वहुनुं वचन सु-

पीने हरखीयो, तेड्यो जोजन करवा बुध ॥ सो० ॥ पग जावानुं गुरुनुं पगरखुं, ठानुं लीधुं न जाणे मूढ ॥ सो० पु० ॥ १४ ॥ सुक्ष्म खंड करी वघारीयुं, दहींनो दीधो जाजो जोल ॥ सो० ॥ शाक करी पीरसे निज हाथशुं, गुरु शिष्य जमतां करे कलोल ॥ सो० पु०॥ १५ ॥ अद्भुत व्यंजन शाक समारीयो, पदमश्रीने दे श्याबास ॥ सो० ॥ आठमा खंडनी ढाल छठी कही, नेमविजयनी बुद्धि प्रकाश ॥ सो० पु० ॥ १६ ॥

डुहा.

जोजन करीने उठीया, दीधां फोफल पान ॥ आज कृतारथ हुं थयो, गणुं जनम सुप्रमाण ॥ १ ॥ वाहिर आवी वाणही, जोवे गुरुजी जाम ॥ एक अछे बीजी नहीं, पूछे सेवक ताम ॥ २ ॥ शोध करी सघले कह्युं, अमे न जाणुं पूज्य ॥ पदमश्री आवीने कहे, तुमने न पडे सूज ॥ ३ ॥ गति जाणो मुज तातनी, पेट पड्युं पगत्राण ॥ पोताने प्रीछो नहीं, अहो जलुं तुम ज्ञान ॥ ४ ॥ बुध गुरु रीसे धडधड्यो, मुखथी बोले गाल ॥ खाधुं अमे शुं खासकुं, पापिणी बोल संजाल ॥ ५ ॥

ढाल सातमी.

बिंदलीनी देशी.

रिखजी रीस न कीजे, क्रोधे करी संजम छीजे हो ॥ नारी मति निरखोजी ॥ हुं नवि बोलुं मरखा, प्रत्यक्ष देखाडुं परीक्षा हो ॥ ना० ॥ १ ॥ जो कुडी थइ रंड, देवो तुज एहवो दंड हो ॥ ना० ॥ मुंडी मस्तक खर चाडी, तुजने मूकीशुं कहाडी हो ॥ ना० ॥ २ ॥ जो हुं थाउं साची, तुमे जैन धरमे रहो राची हो ॥ ना० ॥ एम मांहो मांहे नाखी, पाडोशी राख्या साखी हो ॥ ना० ॥ ३ ॥ तवकाव्या ते भोगा, मिंढल-ना करी प्रयोगा हो ॥ ना० ॥ खंड चरमना डीणा, देखाडी कीधा दीणा हो ॥ ना० ॥ ४ ॥ मठ पोताने आव्यो, बुधदास शेठ तेडाव्यो हो ॥ ना० ॥ कहे वहुने काढ घरथी, कुटुंबनो जो होये अरथी हो ॥ ना० ॥ ५ ॥ काढी वहु झाली हाथे, बुद्धसिंह निसरीयो साथे हो ॥ ना० ॥ मान जिहां नवि लहीए, ते नगरी मांहे नवि रहीए हो ॥ ना० ॥ ६ ॥ एम चिंतवी नीकलीयां, सारथवाहने जइ मलीयां हो ॥ ना० ॥ पदमश्री देखी छलीयो, सारथवाहनो मन चलीयो हो ॥ ना० ॥ ७ ॥ आदर बहोलो

१ मूर्ख.

तस कीधो, अरधासन वेसण दीधो हो ॥ ना० ॥ जो ए जम घर जावे, तो नारी मु-
ज घर आवे हो ॥ ना० ॥ ८ ॥ चिंतवी एम रसोइ, विष सहित करावे सोइ हो ॥
ना० ॥ भोजनवेला सुविसाले, जमवा बेठा एक थाले हो ॥ ना० ॥ ए ॥ रसवती
पीरसी जुइ, बुद्धसिंह मन शंका हुइ हो ॥ ना० ॥ भला बेठा भाइ, एक थाल किसी
जुदाइ हो ॥ ना० ॥ १० ॥ एम कही भेलुं अन्न, कीधुं जम्या विण मन्न हो ॥ ना० ॥
पड्या मूरछा खाइ, लोके कह्युं शेठने जाइ हो ॥ ना० ॥ ११ ॥ शोकाकुल तिहां आवे,
पदमश्री एम बोलावे हो ॥ ना० ॥ पुत्र सारथवाह खांणी, में साकणी तुं सही जाणी
हो ॥ ना० ॥ १२ ॥ एहने तुं जीवाडे, नहींतर घालुं तुज खांडे हो ॥ ना० ॥ संकट
ए कोण आव्युं, पदमश्री मनमां भाव्युं हो ॥ ना० ॥ १३ ॥ सतीए जपी नवकार,
उतार्यो विषनो भार हो ॥ ना० ॥ पंच दिव्य तिहां वूठां, शासननी देवा तुठा हो ॥
ना० ॥ १४ ॥ पदमश्री प्रिय साथे, नगरे आणी नरनाथे हो ॥ ना० ॥ बोध जति
बुधदास, करे जैन धरम उल्लास हो ॥ ना० ॥ १५ ॥ हुं तिहां समकित पामी, प्रत्यक्ष
फल देखी स्वामि हो ॥ ना० ॥ कुंदलतानी कसोटी, ए वातां सघली खोटी हो ॥ ना०

॥ १६ ॥ आठमा खंमनी ढाल, सातमी कही निपट रसाल हो ॥ ना० ॥ रंगविजयनो शिष्य, नेम प्रणति करे निशदिस हो ॥ ना० ॥ १७ ॥

दुहा.

हवे कनकमाला प्रते, पूछे शेठ विचार ॥ तुज समकितनी वात कहे, रे गुणवंती नार ॥ १ ॥ ते बोली पीउ सांजलो, सूर्यपुरे नरपाल ॥ जूपति शेठ समुद्रदत्त, सागरदत्ता सुकुमाल ॥ २ ॥ तेहनी कुखे उपनो, सागर नामे कुमार ॥ जिनदत्ता बेटी वली, मातपिता सुखकार ॥ ३ ॥ शेठ कोसंबी नगरने, जिनदत्ते परणी तेह ॥ सागर करम वशे करे, व्यसन सातशुं नेह ॥ ४ ॥ वचन न माने बापनुं, घणी वार तलार ॥ जाली मूक्यो तेहने, गणी शेठ सुत सार ॥ ५ ॥ आरक्षक वली एकदा, जाली सोंप्यो राय ॥ कोमी जतन जो कीजीए, मूर्ख स्वजाव न जाय ॥ ६ ॥ तेडी तेहना तातने, राजा जाखे एम ॥ काढ एहने घर थकी, जो तुं वांछे खेम ॥ ७ ॥

दुर्जनजनसंसर्गात् । साधोरपि जवंति विपदो वा ॥
दशमुखकृतेऽपराधे । वारिधिरपि बंधनं प्राप्तः ॥ १ ॥

ढाल आठमी.

कोयलो परवत धुंधलोरे लोल—ए देशी.

मंदिरथी सुत काढीयोरे लोल, सांभली नृपनी वाणरे॥ सुगुण नर ॥ सागर कोसंबी गयोरे लोल, जिन भगिनीने जाणरे ॥ सु० ॥ १ ॥ व्यसन निवारो वेगलां रे लोल, (ए आं०) व्यसन अछे दुःखदायरे ॥सु०॥ व्यसन संगति वारजोरे लोल, जेम तुमने सुख थायरे ॥ सु० व्य० ॥२॥ व्यसनी सांभली तेहनेरे लोल, बेहेने न दीधो मानरे ॥ सु०॥ भाग्यहिण जाये जिहांरे लोल, तिहां पामे अपमानरे ॥ सु० व्य० ॥ ३ ॥ नगर मांही सागर भमेरे लोल, कोइ न पूछे वातरे ॥ सु०॥ मुनि दीठो एक तेहवेरे लोल, हयडे हरख न मातरे ॥ सु० व्य० ॥ ४ ॥ चरणकमल नमी तेहनां रे लोल, सुणे उपदेश सुजाणरे ॥ सु०॥ अनंतकाय अभक्ष्य तज्यांरे लोल, व्यसन तणां पच्चक्खाणरे ॥सु० व्य०॥५॥ हरखी जिनदत्त हयफूलेरे लोल, धरमी सांभली भायरे ॥सु०॥ माणस मूकी तेडावीयोरे लोल, भगति करे मन लायरे ॥ सु० व्य०॥ ६ ॥ आपीने धन आपणुंरे लोल, मंडाव्यो व्यापाररे ॥ सु०॥ हलवे हलवे पामीयोरे लोल, शोभा द्रव्य अपाररे ॥ सु० व्य० ॥ ७ ॥ तिहां व्यापारे आवीयारे लोल, सूरजपुरना शाहरे ॥ सु० ॥

तेहने देखी तातनेरे लोल, मलवा करे उमाहरे ॥ सु० व्य० ॥ ७ ॥ गाडां उंट ने पोठीयारे लोल, जलां जरी कयाणरे ॥ सु०॥ बेहेन तणी अनुमति लेइरे लोल, सागर कीध प्रयाणरे ॥ सु० व्य० ॥ ए ॥ नगर आव्युं जव ढूकडुंरे लोल, निसरीया साथ मूकरे ॥ सु०॥ उतावला घर जाइएरे लोल, राते गया वाट चूकरे ॥ सु० व्य० ॥ १० ॥ अटवी मांही जइ पड्योरे लोल, जूखे अति पीडायरे ॥ सु०॥ फल पाकां ने फूटरांरे लोल, सहुने आव्यां दायरे ॥ सु० व्य० ॥ ११ ॥ सागर पूछे तेहनेरे लोल, कहो एहनुं तुमे नामरे ॥सु०॥ नाम अमे जाणुं नहींरे लोल, एशुं नहीं मुज कामरे ॥ सु० व्य० ॥ १२ ॥ जेणे फल खाधां ते ढळयारे लोल, धरणी तले ध्रसकायरे ॥ सु० ॥ स्त्रीरूप धरी वनदेवतारे लोल,नियम परीक्षा आयरे ॥ सु० व्य० ॥१३॥ सरस सुगंध फल आगलेरे लोल, मूकी जाखे नारीरे ॥ सु० ॥ ए फल सुंदर जे जखेरे लोल, रोग जरा दे निवारीरे ॥ सु० व्य० ॥ १४ ॥ जरा जाजरी हुं हतीरे लोल, तरुणी थइ फल खायरे ॥ सु० ॥ सागर कहे नाम एहनुंरे लोल, मुजने सुणावो मायरे ॥ सु० व्य० ॥ १५ ॥ नाम नथी हुं जाणतीरे लोल, तो मुजने छे निमरे ॥ सु० ॥ व्रतनो जंग करुं नहींरे लोल, ज्यां जीवुं त्यां सीमरे ॥ सु० व्य० ॥ १६ ॥ दृढपणुं देखी

देवतारे लोल, तुठी कहे वर मागरे ॥ सु०॥ मित्र उगाम्नो माहरारे लोल, जेम डुःख जाये नागरे ॥ सु० व्य० ॥ १७ ॥ टाली मूरठा तेहनीरे लोल, आएया सूरजपुर पासरे ॥ सु० ॥ रतनमंरूपे सागर ठवेरे लोल, नाटक करे उल्लासरे ॥ सु० व्य० ॥ ॥ १८ ॥ राजा अचरिज सांजलीरे लोल, आव्यो जोवा काजरे ॥ सु० ॥ मातपिता आवी मल्यांरे लोल, धर्मथी सीध्यां काजरे ॥ सु० व्य० ॥ १९ ॥ धर्म जिनेश्वरनो तिहांरे लोल, में पाम्यो मन नावरे ॥ सु० ॥ कुंदलता माने नहींरे लोल, तुमे कहो वात वनावरे ॥ सु० व्य० ॥ २० ॥ नूप सचिव मन चिंतवेरे लोल, पापणी न माने साचरे ॥सु०॥ आठमा खंरूनी आठमीरे लोल, ढाल कही नेमे वाचरे ॥सु० व्य० ॥२१॥

डुहा.

विद्युल्लता प्रते वारता, हवे शेठ पूठंत ॥ तुजने प्राप्ति धर्मनी, केम थइ कहो विरतंत ॥ १ ॥ बोले ते विद्युल्लता, चंपापुरे सुदंरू ॥ नूपति राज करे नलो, वरते आण अखंड ॥ २ ॥ शेठ नाम सुरदेव ठे, गयो व्यापारे विदेश ॥ अश्वरतन लेइ आवीयो, कुशल आपणे देश ॥ ३ ॥ मूल देइ राजा लीया, घोरुा घणा प्रधान ॥ वधी प्रीति नृप शेठने, ते दिनथी बहु मान ॥ ४ ॥ मासखमणने पारणे, शेठ घरे

एक साथ ॥ आव्यो देखी चिंतवे, चिंतामणि में लाध ॥ ५ ॥ मोदक तस प्रतिलाभीने, वांदे बे कर जोड ॥ देवे करी घर आंगणे, वृष्टि कनकनी क्रोड ॥ ६ ॥ समुद्रदत्त नामे वणिक, दान तणां फल देख ॥ निंदे निज निरधनपणुं, शेठ प्रशंस विशेख ॥७॥

ढाल नवमी.

सुण मेरी सजनी रजनी न जावेरे—ए देशी.

हुं हवे परदेशे जइ धन खाटुंरे, दलिद्री तणुं नाम दूरे दाटुंरे ॥ चार मित्रशुं समुद्रदत्त चाल्योरे, सिंहलद्वीप जइ नयणे निहाल्योरे ॥ १ ॥ पलास गाम अनुक्रमे पहोतारे, मांहो मांही कहे गहगहतारे ॥ समुद्रदत्त कहे रहेशुं अहींयारे, मन माने ते जाओ तिहांरे ॥ २ ॥ सहुको वली इहां एकठा थाशुंरे, पछी आपणी दिशे जाशुंरे ॥ बीजो साथ नगरमां पेठोरे, सरोवर पाळे समुद्रदत्त बेठोरे ॥ ३ ॥ अशोक नामे सोदागर आव्योरे, समुद्रदत्तने तेणे बोलाव्योरे ॥ जो तुं माहरा घोडा पालेरे, ताहरुं माग्युं करुं हवालेरे ॥ ४ ॥ दिन मांहे दोय वेला जूतिरे, खट मास अंतरे कंबल जूतिरे ॥ त्रण वरसनी अवधि कीजेरे, अश्व युगल मन गमता लीजेरे ॥ ५ ॥ एम परठीने रह्यो समुद्रदत्तरे, अशोक पुत्रीशुं लाग्युं चित्तरे ॥ मीठां फल

तस आणी आपेरे, कमलश्री पति तेहने थापेरे ॥ ६ ॥ एक दिन कमलश्री प्रते भाख्युंरे, निज देश जवा में मन राख्युंरे ॥ ते कहे हुं तुज आवीश साथेरे, लखीयो पति तुं माहरे माथेरे ॥ ७ ॥ ईश्वर पुत्री तुं मृदु अंगीरे, सिंहण लंकी नयण कुरंगीरे ॥ हुं निरधनने पंथिक विदेशीरे, केम तुं माहरे साथ आवेशीरे ॥ ८ ॥ तुज गुण राती प्रीतम मोरारे, वचन न बोलो एवां कठोरारे ॥ रागे महिला सोंपेरे प्राणरे, वीरवी रामा करे तस हाणरे ॥ ९ ॥

ददाति रागिणी प्राणान् । हन्ति द्वेषिणं पुनः ॥
अहो रागो विरागो वा । कोपि लोकोत्तरः स्त्रियः ॥ १ ॥

जब मुज तात देखाडे घोडारे, तव डुबला बे लेजो सजोडारे ॥ जे धोलो ते आकाशे उडेरे, रातो ते जलमां नवि बुडेरे ॥ १० ॥ एम संकेत करी ते रहीयारे, चारे मित्र आव्या उमीहारे ॥ चालो आपणे देशे जइएरे, कुटुंबशुं मली सुखीया थइएरे ॥ ११ ॥ समुद्रदत्त आवी अशोकने आगेरे, त्रण वर्षेनी मस्तुकी मागेरे ॥ मंडुरा मोटी

१ चाकरी. २ अश्वशाळा.

ते देखावेरे, अश्व युगल लो जे दाय आवेरे ॥१२॥ डुबला दीठा ते बे लीधारे, समुद्र-दत्तनां वांछित सिधांरे॥ आठमा खंडनी नवमी ढालरे, नेमविजये कही उजमालरे ॥१३॥

डुहा.

अशोक कहेरे मूढ तुं, आज कालमां प्राण ॥ मूके एहवा अश्वने, कां ले ए अंध जाण ॥ १ ॥ कनकाजरण अलंकर्या, माता उंचा वाह ॥ बीजा ले तुं बापडा, छांमी एहनी चाह ॥ २ ॥ समुद्रदत्त कहे एणे सर्युं, नहीं अवरशुं काम ॥ पासे उजा ते कहे, जरू डुराग्रही नाम ॥ ३ ॥ हित उपदेश एहने विषे, दीधो निष्फल थाय ॥ मूरखनुं औषध नहीं, कहे महा कविराय ॥ ४ ॥

यतः– मूर्खस्य षड्चिह्नानि । गर्वं डुर्वचनं मुखम् ॥
विवादी विरोधी च । कृत्याकृत्यं न मन्यते ॥ १ ॥

मुज पुत्री आसक्त छे, कह्यो हशे एह जेद ॥ गहन चरित्र छे नारीनो, किसो करुं मन खेद ॥ ५ ॥ जो ए अश्व आपुं नहीं, थाय प्रतिज्ञा जंग ॥ कमलश्री परणावीने, दीधा तेह तुरंग ॥ ६ ॥

ढाल दशमी.

उदया ते पुररो मांमवोरे, गढ अरबुदरी जान महाराजा, अमा मोरी,
केसरीयो वर रुमोजी लागे–ए देशी.

समुद्रदत्त हवे चालीयोरे, साथे कमलश्री लेय ॥ जन जोजो ॥ अशोक नौवाहक शिखव्यारे, उतरतां कहे तेय ॥ जन जोजो सहु कोय ॥ वात अपूरव जे होय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जिनधर्म सखाइ जीवनेरे, इण जव परजव जोय ॥ जन० ॥ धर्म विना धंधे पड्यारे, सुख नवि पामे कोय ॥ ज० वा० ॥ २ ॥ अश्व युगल जो तुं दीएरे, नदी उतारुं तुज ॥ ज० ॥ समुद्रदत्त कहे तुमे चोरटारे, वोलो एहवुं अबुज ॥ ज० वा० ॥ ३ ॥ जो तुं बेसीश नावमांरे, तो रहेशे हय दोय ॥ ज० ॥ कमलश्री कहे पीयुजीरे, सवि चिंता नाखो खोय ॥ ज० वा० ॥ ४ ॥ आकाशगामी उपरेरे, चढी वेसो मुज संग ॥ ज० ॥ जलगामी हाथे धरीरे, जलनिधि तरो निःशंक ॥ ज० वा० ॥ ५ ॥ तेम करीने ते उतर्यारे, आव्यां चंपापुरी मांह ॥ ज० ॥ एक अश्व नृपने दीयोरे, नृप पुत्री दे उछाह ॥ ज० वा० ॥ ६ ॥ अर्ध राज वली उपरेरे, बे नारीशुं सुख ॥ ज० ॥ समुद्रदत्त नित जोगवेरे, दूर गयां सवि दुःख ॥ ज० वा० ॥ ७ ॥

सुरदेवने आपीयोरे, हय नृप रक्षा काज ॥ ज० ॥ सुर तीरथयात्रा करेरे, चढी विजय-तर वाज ॥ ज० वा० ॥ ८ ॥ गगने जातां देखीयोरे, पल्लिपतिए एक वार ॥ ज० ॥ सुभट सहुने ते कहेरे, वेगो सभा मोझार ॥ ज० वा० ॥ ए ॥ ए अश्व आणी आपे जीकेरे, पुत्री सहित अर्ध राज ॥ ज० ॥ तेहने आंपुं सांभलीरे, कुंतल कहे लावुं वाज ॥ ज० वा० ॥ १० ॥ चंपा मांहे आवीनेरे, जइ हय हरण उपाय ॥ ज० ॥ कोय न लाभे तव तिहांरे, कपट श्रावक ते थाय ॥ ज० वा० ११ ॥ सुरदेवने देहरेरे, आंखे पाटा बांध ॥ ज० ॥ पडीयो पूछे तेहनेरे, कहे मुजने आबाध ॥ ज० वा० ॥ १२ ॥ सुरदेव जिन पूजीनेरे, पूछ्युं ए छे कुण ॥ ज० ॥ महा श्रावक अचाक कहेरे, नेत्रा मइ गांठीन तुण ॥ ज० वा० ॥ १३ ॥ पथ प्रणमीने विनवेरे, दयावंत सुरदेव ॥ ज० ॥ वाले आवो आ-पणेरे, घर करुं तुमारां सेव ॥ ज० ॥ वा० ॥ १४ ॥ मंदिर तेड्यो हाथशुंरे, करे परि-चर्या तास ॥ ज० ॥ कपटी निशि अवसर लहीरे, हय चढी चाल्यो आकाश ॥ ज० वा० ॥ १५ ॥ वहेता वाहने चाबखोरे, मार्यो कुंतल वीट ॥ ज० ॥ पाड्यो हेठो पापीनेरे, शत खंड थयो शरीर ॥ ज० वा० ॥ १६ ॥ अश्व जइ अष्टापदेरे, चैत्य तणे रह्यो बार ॥ ज० ॥ विद्याधर हरि देखीनेरे, ऋषिने पूछे विचार ॥ ज० वा० ॥ १७ ॥

चारण मुनिए अवधे करीरे, कह्युं गंधर्व सरूप ॥ ज० ॥ तुरंग विना सुरदेवनेरे, वेदन करशे नूप ॥ ज० वा० ॥ १ठ ॥ आठमा खंड तणी कहीरे, दशमी ढाल रसाल ॥ ज० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमविजय उजमाल ॥ ज० वा० ॥ १ए ॥

डुहा.

सूतो उठ्यो शेठजी, हय नवि दीठो तेथ ॥ अश्वपालने पूछीयुं, कोण जाणे गयो केथ ॥ १ ॥ ठगी गयो ते धर्म ठग, श्यो उत्तर नृप देश ॥ धर्म करंतां एहवो, आवी पमीयो क्लेश ॥ २ ॥ टाले श्री नगवंतजी, मरणांतग उवसग्ग ॥ शरण करी जिन-धर्मनो, चैत्य कर्यो काउस्सग्ग ॥३॥ चुगले जइ चाडी करी, कह्यो अश्व उदंत ॥ घर लुंटी नूपति कहे, करो एहनो अंत ॥४॥ चाकर चैत्ये दोमीया, कर साही करवाल ॥ देरा मांही पेसतां, देवे थंन्या ततकाल ॥ ५ ॥ सेनानी नृप मूकीयो, कहेवा तेह हे-वाल ॥ कोपी सेना सज करी, चमी आव्यो नूपाल ॥ ६ ॥ नूप विना सहु थंनीया, चिंते राजा चित्त ॥ कोइ उपाय इसो होये, रहे रतन ने मित ॥ ७ ॥ विद्याधर जिन-वर नमी, सामी साहाय्य निमित्त ॥ अश्व लेइने आवीया, चंपापुरी तुरत ॥ ठ ॥

ढाल अगीआरमी.

जगजीवन जग वालहो—ए देशी.

अश्वने मूकी आंगणे, जिनहर मांही जाय लालरे ॥ पदपंकज परमेष्ठिनां, प्रणमी जणे सुणीताय लालरे ॥ साचो धरम संसारमां ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साचो धरम संसारमां, धरम करो सहु कोय लालरे ॥ धरमे धण कण संपजे, धरमथी शिवसुख होय लालरे ॥ सा० ॥ २ ॥ अमे विद्याधर आवीया, अष्टापदनी जात्र लालरे ॥ अश्व तुमारो आणीयो, तुज दीठे ठर्यां गात्र लालरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ शरण करी नृप शेठनो, चरण नमे वारंवार लालरे ॥ मूकी सेना मोकली, देवे थंजी जे द्वार लालरे ॥ सा० ॥ ४ ॥ सुरदेव काउस्सग्ग पारीने, हय सोंप्यो नृप हाथ लालरे ॥ वय गये संयम लीयो, शेठ नृपति बे साथ लालरे ॥ ५ ॥ विद्याधर उंछव करी, पहोत्या निज आवास लालरे ॥ एम प्रत्यक्ष फल देखीने, धरम कर्यो उल्लास लालरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारी सहित कहे शेठजी, तें जाख्युं ए सत्य लालरे ॥ कुंदलता कहे एकली, ए पण वात असत्य लालरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ चित्त मांहे एम चिंतवे, श्रेणिक अजयकुमार लालरे ॥ प्रत्यक्ष दीठुं उलवे, अहो पापिणी ए नार लालरे ॥ सा० ॥ ८ ॥ हुं एहने रुडी परे,

देशुं शिक्षा सवार लालरे ॥ आज पठी जेम एहवुं, न कहे कूकुं केवार लालरे ॥ सा०
॥ ए ॥ अरुणोदय देखी हवे, कुकडे कीधो सोर लालरे ॥ आव्यो मंदिर आपणे, रा-
जा मंत्री चोर लालरे ॥ सा० ॥ १० ॥ परजाते परिवारशुं, परवरीयो जूपाल लालरे ॥
अर्हदासने घर आवीयो, शेठ रतन जरी थाल लालरे ॥ सा० ॥ ११ ॥ आगल मूकी
जेटणुं, कर जोमी पाये लाग लालरे ॥ जजो एम विनति करे, माहरो मोटो जाग
लालरे ॥ सा० ॥ १२ ॥ जंगम तीरथ माहरे, घर आव्या महाराज लालरे ॥ प्रसन्न
थइ प्रजु जाखीए, मुज सरिखुं जे काज लालरे ॥ सा० ॥ १३ ॥ अवनिपति कहे धर्म-
नी, कथा कही तुमे रात लालरे ॥ निंदी नारी जेणीए, दाखवो ते मुज ज्रात लालरे
॥ सा० ॥ १४ ॥ निग्रह करशुं तेहनो, सुणी शेठ ऊांखो थाय लालरे ॥ शुं जूप पोते
आवीयो, के ड़ुर्जने कह्युं जाय लालरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ असत्ये नृप दंरू पामीए, सा-
चे नारी नाश लालरे ॥ एम त्यां जन कहेवे सहु, अर्हदास रह्यो विमास लालरे ॥
सा० ॥ १६ ॥ कुंदलता निसुणी एशुं, आवी नृपने पास लालरे ॥ ड़ुष्ट नारी ते हुं
अतुं, पण सुणजो अरदास लालरे ॥ सा० ॥ १७ ॥ धणी शोकने आवीयो, परियागत
जिनधर्म लालरे ॥ पितर न जाणे माहरा, श्रीजिनशासन मर्म लालरे ॥ सा० ॥ १८ ॥

तोपण ए फल सांजली, पामी बुं वैराग लालरे ॥ प्रिय पूठी करी पारणुं, व्रत लेशुं धरी राग लालरे ॥ सा० ॥ १ए ॥ महीमा दीठो धरमनो, एणे सघले साक्षात् लालरे ॥ तोपण जोग तजे नहीं, तेणे जूठी कहुं वात लालरे ॥ सा० ॥ २० ॥ आठमा खंड तणी कही, अग्यारमी ढाल रसाल लालरे ॥ रंगविजय शिष्य एम जणे, नेमविजय उजमाल लालरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

डुहा.

जो ए संयम आदरे, तो सघलुं कहुं सत्य ॥ जूपादिक सहुको कहे, अहो अहो ताहरी मत्य ॥ १ ॥ व्रत लेवा मुज मन हतुं, पड्यो जोगने पास ॥ दीक्षा लेशुं हवे अमे, एम जंपे अर्हदास ॥ २ ॥ जोजन जक्ति करी जली, नृप संप्रेड्यो धाम ॥ आठ दिवस उंडव करी, धन खरच्युं शुज गम ॥ ३ ॥ सद्गुरु पासे संयम लीयो, आठ नारीशुं अर्हदास ॥ तप जप कर्म खपावीने, कीधो शिवपुर वास ॥ ४ ॥ सुहस्ती सूरि देशन सुणी, संप्रति नाम नरेश ॥ जिनवर धर्म विशेषथी, वरतावे निज देश ॥ ५ ॥ धरम करो जवियण सदा, धरमे जावठ जाय ॥धरमे मनवंछित फले, वसे शिवपुर मांय ॥ ६ ॥ जिन प्रासाद करावीयां, दीधां बहु परे दान ॥ जनम सफल करी आपणो,

पाम्यो अमर विमान ॥ ७ ॥ श्री हीरविजय सूरीसरु, शुभविजय तस शिष्य ॥ भाव-विजय कविजन भला, सिद्धि नमुं निशदिस ॥ ८ ॥ रूपविजय कविराजमां, कृष्णवि-जय कर जोड ॥ रंगविजय छे रंगीला, नावे एहनी होड ॥ ९ ॥ आठमो खंड पूरो थयो, ढाल अग्यारे सार ॥ नेमविजयने नित्य प्रते, होजो जयजयकार ॥ १० ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षारासे अष्टम खंडः

खंड ए मो.

ढाल पहेली.

ते मुज मिछामि डुक्कडं—ए देशी.

सांजलरे तुं प्राणीया, सद्गुरु उपदेश ॥ मानवजव दोहिलो लह्यो, उत्तम कुल एश ॥ सां० ॥ १ ॥ देवतत्त्व नवि उंलख्यो, गुरुतत्त्व न जाएयो ॥ धरमतत्त्व नवि सद्दह्यो, हयडे ज्ञान न आएयो ॥ सां० ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी जिन सूर प्रते, सरिखा करी जाएया ॥ गुण अवगुण नवि उंलख्या, वयणे वखाएया ॥ सां० ॥ ३ ॥ देव थया मोहे ग्रह्या, पासे राखे बे नारी ॥ काम तणे वशे जे पड्या, अवगुण अधिकारी ॥ सां० ॥ ४ ॥ कोइक क्रोधी देवता, वली क्रोधना वाह्या ॥ को कीणथी ते बीहता, हथियार संवाह्या ॥ सां० ॥ ५ ॥ क्रूर नर जेहने घणुं, देखंतां मरीए ॥ मुद्रा जेहनी एहवी, तेहथी शुं तरीए ॥ सां० ॥ ६ ॥ आठ करम सांकल जड्या, जमे जवही मोझारो ॥ जनम मरणां जव देखीने, पाम्यो नहीं पारो ॥ सां० ॥ ७ ॥ देव थइ नाटक करे, नाचे जण जण आगे ॥ वेष करी राजा कृष्णनो, वली जिक्षा मागे ॥ सां० ॥ ८ ॥ मुखकर वाये वांसली, पहेरे तन वागा ॥ जावतां मन जोजन करे, एहवा ज्रम लागा ॥ सां० ॥ ए ॥ दे-

खो दैत्य संहारवा, थया उद्यमवंतो ॥ हरि हरणांकस मारीयो, नरसिंह बलवंतो ॥ सां० ॥ १० ॥ मछ कछ अवतार लेइ, सहु असुर विदार्या ॥ दश अवतारे जुजुआ, दश दैत्य संहार्या ॥सां०॥ ११॥ माने मूढ मिथ्यामति, एहवा पण देवो ॥ फेर फेर अवतार ले, देखो कर्मनी टेवो ॥ सां० ॥ १२ ॥ स्वामि शोने जेहवो, तेहवो परिवारो ॥ एम जाणीने परिहरो, नेमविजय विचारो ॥ सां० ॥ १३ ॥

ढाल बीजी.

उंधव माधवने केजो—ए देशी.

जगनायक जिनराजने, दाखवीए देव ॥ मूकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव ॥ ज० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया नहीं, ठंड्यां आठे मदथान ॥ रति अरति वेदे नहीं, नहीं लोज अज्ञान ॥ ज० ॥ २ ॥ निद्रा शोक चोरी नहीं, नहीं वयण अलीक ॥ मछर जय वंध प्राणीनो, न करे त्रण तीक ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रेम क्रीमा न करे कदी, नहीं नारी प्रसंग ॥ हास्यादिक अढार ए, नहीं जेहने अंग ॥ ज० ॥ ४ ॥ पद्मासन पूरी करी, वेठा अरिहंत ॥ निश्चल लोयण जेहनां, नाशाग्र रहंत ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिनमुद्रा जिनराजनी, दीठे परम उल्लास ॥ समकित थाये निरमलुं, दीपे ज्ञान उजास

॥ ज० ॥ ६ ॥ गत आगत सहु जीवनी, देखे लोकालोक ॥ जिन देखे सवि वस्तुने, केवलज्ञाने अलोक ॥ ज० ॥ ७ ॥ मूरत श्री जिनराजनी, समतारस भंडार ॥ शीतल नयण सोहामणां, नहीं वांक लगार ॥ ज० ॥ ८ ॥ हसित वदन हरखे हीयो, देखी श्री जिनराय ॥ सुंदर ठबी प्रभु देहनी, शोभा वरणी न जाय ॥ ज० ॥ ए ॥ अवर तणी एहवी ठबी, कीहांए न दीसंत ॥ देवतत्त्व एम जाणीए, सहु सुणजो संत ॥ ज० ॥ १० ॥ नवमा खंड तणी कही, ढाल बीजी ए सार ॥ रंगविजय शिष्य नेमने, होजो जय-जयकार ॥ ज० ॥ ११ ॥

ढाल त्रीजी.

यत्तनी देशी.

श्री जिनवर प्रवचन भाख्या, मांही कुगुरु तणा गुण दाख्या ॥ पासत्थादिक पंचेइ, पाप श्रमण कह्या पंचेइ ॥ १ ॥ गृहीनां मंदिरथी आणी, आहार करे भात पाणी ॥ सुइ उंघे जे निशदिस, मरमादि विसवा वीस ॥ २ ॥ क्रिया न करे केणे वार, पडिक्कमणुं सांज सवार ॥ न करे सूत्र अरथ सझाय, विकथा करतां दिन जाय ॥ ३ ॥ घृत दूध दहीं अप्रमाण, खाये न करे पच्चक्काण ॥ ज्ञान दर्शन ने चारित्र, मूकी दीधां ते सुपवित्र ॥ ४ ॥ सु-

विहित मुनि समाचारी, पाले नहीं ते अणगारी ॥ आहारना दोष बायाल, टाले नहीं कीणही काल ॥ ५ ॥ धब धब धसमसतो चाले, काचे जले देह पखाले ॥ चरचा अरचना वंदावे, वस्त्रादिक शोभ बनावे ॥ ६ ॥ परिग्रह वली काजो राखे, वली वली अधिकाने धांखे ॥ माठी जे करणी कहीए, ते सघली जिणमें लहीए ॥ ७ ॥ एवा जेह कुगुरु आरंभी, मुनि साधु कहेवाये दंभी ॥ किय कम्म प्रशंसा करीए, भव भव ग्रहमां अवतरीए ॥ ८ ॥ लोढानी नावाने तोले, भवसायरमां जे बोले ॥ नेम कहे भलो अहि कालो, पण कुगुरुनी संगति टालो ॥ ए ॥

ढाल चोथी.

कर जोडी आगल रही—ए देशी.

गुण गिरुआ गुरु उलखो, हृयडे सुमति विचारीरे ॥ गुरु सुपरीक्षा दोहली, भूलां पडे नर नारीरे ॥ गु० ॥ १ ॥ पांचे इंद्रि वश करे, पंच महाव्रत पालेरे ॥ चार कषाय तजी जेणे, पांचे किरिया टालेरे ॥ गु० ॥ २ ॥ पांचे सुमते सूमता रहे, तीन गुपति जे धारेरे ॥ दोष बेंतालीश टालीने, पाणी भात आहारेरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ ममता छांडी देहनी, निरलोभी निरमायीरे ॥ नवविध परिग्रह परिहरे, चित्तमें चिंत न कांइरे

॥ गु० ॥ ४ ॥ पडिलेहण नित्ये विधे, करे प्रमाद निवारीरे ॥ काळे शुद्ध क्रिया करे, पन्नर हाथांग निवारीरे ॥ गु० ॥ ५ ॥ धर्म तणां उपग्रण धरे, संयम पालवा काजेरे ॥ जोय जोइ पगलां भरे, लोक विरुद्धथी लाजेरे ॥ गु० ॥ ६ ॥ वस्त्रादिक शुद्ध एषणी, ल्ये देखी सुविशेषरे ॥ काळ प्रमाणे खप करे, दूषण टलता देखेरे ॥ गु० ॥७॥ कुषी संबल जे कह्या, सानिध्य केमही न राखेरे ॥ दे उपदेश यथास्थिते, सत्य वचन मुख भाखेरे ॥ गु० ॥ ८ ॥ तन मेला मन उजला, तप करी क्षीण देहरे ॥ बंधन बे भेदी करी, विचरे जन निसनेहीरे ॥ गु० ॥ ए ॥ एहवा गुरु जोइ करी, आदरीए शुभ भावेरे ॥ बीजो तत्त्व सुगुरु तणो, जगमां एम कहावेरे ॥ गु० ॥ १० ॥ नवमा खंडनी ए कही, ढाल चोथी ए वारुरे ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय श्रोता सारुरे ॥ गु० ॥ ११ ॥

ढाल पांचमी.

करम न छूटेरे प्राणीया—ए देशी.

भवसायर तरवा भणी, धरम करे सारंभ ॥ पथ्थर नावेरे बेसणे, तरवो समुद्र

१ कर्मादान.

दुर्लभ ॥ज०॥१॥ आपे गोकुल गायनां, आपे कन्यारे दान ॥ आपे क्षेत्रे पुण्यारथे, ब्राह्मणने देइ मान ॥ ज० ॥ २ ॥ लुटावे धाणी वली, पृथ्वी दानशुं प्रेम ॥ गोला कलसारे मोरीया, आपे हल तिल हेम ॥ ज० ॥ ३ ॥ वली खणावेरे खांतशुं, कुवा सुंदर वाव ॥ पुष्करणी करणी भली, सरवर सखर तलाव ॥ ज० ॥ ४ ॥ कंदमूल मूके नहीं, अग्यारस व्रत दीस ॥ आरंभ ते दिन अति घणो, धरम किहां जगदीश ॥ ज० ॥ ५ ॥ याग करे होमे तिहां, घोडा नर नेरे छाग ॥ होमे जलचर मींभकां, धर्म किहां वीतराग ॥ ज० ॥ ६ ॥ करे सदाइरे नोरतां, जीव तणा आ आरंभ ॥ हणे भेंसारे बोकडा, जेहथी नरक सुलंभ ॥ ज० ॥ ७ ॥ सरावे ब्राह्मण कने, पूर्वज तणोरे श्राद्ध ॥ तेभी पोंखेरे कागभा, देखो एह उपाध ॥ ज० ॥ ८ ॥ तीरथ जाये गोदावरी, गंगा गयारे प्रयाग ॥ नाहे अणगल नीरमां, धरम तणो नहीं लाग ॥ ज० ॥ ९ ॥ इत्यादिक करणी करे, परभव सुखनेरे काज ॥ एणी करणी मले नहीं, एहथी शिवपुर राज ॥ ज० ॥ १० ॥ नवमा खंभ तणी भली, पांचमी ढाल रसाल ॥ रंगविजय शिष्य एम भणे, नेमने मंगल माल ॥ ज० ॥ ११ ॥

ढाल ७ठी.

जंबूद्वीपना जरतमां—ए देशी.

धरम खरो जिनवर तणोरें, शिवसुखनो दातार ॥ श्री जिनराजे प्रकाशीयोरे, जेहना चार प्रकारोरे ॥ ज्ञान विचारी जोय ॥ मुरगति पमतां जीवनेरे, धारे ते धर्म होयरे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ पांच महाव्रत साधुनांरे, दश विध धर्म विचार ॥ हितकारी जिनवर कह्यांरे, श्रावकनां व्रत बारोरे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ पांचुंबर चारे वगेरे, विष सहु माटी हेम ॥ रात्रिजोजनने कह्यारे, बहुबीजांनो नेमरे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ घोलवमां वली रींगणांरे, अनंतकाय बत्रीश ॥ अणजाण्यां फल फूलमांरे, संधाणां निशदिसोरे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ चलित अन्न वासी कह्योरे, उंच सहु फल दक ॥ धरमी नर खाये नहींरे, ए बावीश अजक्षरे ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ न करे निधंधसपणेरे, घरना पण आरंज ॥ जीव तणी जयणा घणीरे, न पीए अणगल अंबरे ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ घृत परे पाणी वावरेरे, बीहे करतो पाप ॥ सामायिक व्रत पोषधेरे, टाले जवना तापोरे ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनीरे, सेवा जगति सदीव ॥ धर्मशास्त्र सुणतां थकारे, समजे कोमल जीवोरे ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ मास मासने आंतरेरे, कुश अग्र जुंजे बाल ॥

ला न पहोंचे सोलमीरे, श्री जिनधर्म विशालोरे ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ जिनधर्म मुक्तिपुरी दीएरे, चोगति भ्रमण मिथ्यात ॥ एम जिनवर प्रकाशीयोरे, त्रीजो तत्त्व विख्यातोरे ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥

ढाल सातमी.

घर आवोजी आंबो मोरीयो—ए देशी.

श्री जिनधर्म आराधीए, करी निज समकित शुद्ध ॥ नवि तप जप क्रिया कीधली, लेखे पडे ते विशुद्ध ॥ १ ॥ कंचन कसी कसी लीजीए, नाणुं लीजे परीख ॥ देव गुरु धर्म जोइने, आदरीए सुणो शीख ॥ कं० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने, परिहरीए विष जेम ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मने, ग्रहीए अमृत करी तेम ॥ कं० ॥ ३ ॥ मूल धरम जिनवरे कह्यो, समकित सुरतरु एह ॥ परभव सुख संपत्ति थकी, समकितशुं धरी नेह ॥ कं० ॥ ४ ॥ सकल वाभव प्रतिबूझीया, केइ ग्रह्यां व्रत बार ॥ केइए चोथा व्रतने ग्रह्यो, केइ थया अणगार ॥ कं० ॥ ५ ॥ केइ मृषावाद उचरे, के पाले शुद्ध आचार ॥ समकतिधारी सहु थया, विनयी विवेकी नर नार ॥ कं० ॥ ६ ॥ सुहस्ती सूरिना उपदेशथी, पाम्या धर्मनो मर्म ॥ केइ जाशे सुरलोकमें, केइ पामशे मृत्यु-

लोक धर्म ॥ कं० ॥ ७ ॥ संवत् अढार एकवीशमां, मास वैशाक सुद पक्ष ॥ तिथि पांचम गुरुवासरे, गाया गुण में सक्ष ॥ कं० ॥ ८ ॥ विजापुरमां विराजता, वृद्ध तपा पक्ष सनूर ॥ चंद्र गछमां दीपता, श्री जिनसागर सूर ॥ कं० ॥ ए ॥ तेहनी सानिध में सही, गायो रास उल्लास ॥ उंगो अधिको अक्षर होये, शुद्ध करजो पंमित तास ॥ कं० ॥ १० ॥ रास कर्या कविए घणा, पण धर्मपरीक्षानो रास ॥ एह समोवम को नहीं, जेमां अधिकार छे खास ॥ कं० ॥ ११ ॥ सर्व संख्याए ग्रंथ कह्यो, पांच हजार उपर पांच ॥ ढालो कही नव खंमनी, एकसो ने दश वांच ॥ कं० ॥ १२ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुभविजय तस शिष्य ॥ भावविजय कवि दीपता, सिद्धि नमुं निशदिस ॥ कं० ॥ १३ ॥ रूपविजय रंगे करी, कृष्ण नमुं कर जोम ॥ रंगविजय गुरु माहरा, मुज प्रणम्यानो कोम ॥ कं० ॥ १४ ॥ नवमो खंम पूरो थयो, साते ढाले करी सत्य ॥ नेमविजय कहे नित्य प्रते, राखजो धर्मशुं चित्त ॥ कं० ॥ १५ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षारासे नवम खंमः समाप्तः